Anybook

2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें

संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

नाम : रमेश प्रसाद

जन्म तिथि : 25 अगस्त, 1953

धर्मपत्नी : मंजू प्रसाद (परिणय 22 जून 1978)

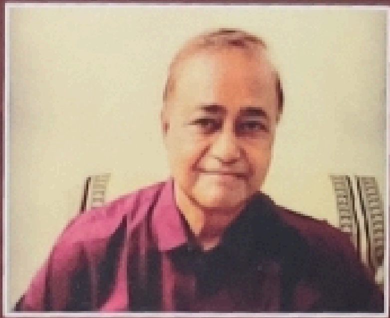

मुहब्बतों का शायर
रमेश "कँवल"

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह

- लम्स का सूरज (उर्दू) • सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में
- शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में • रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में
- स्पर्श की चाँदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल-नज़्म) 2019 में
- अक़ीदत के फूल : संकलित काव्य संग्रह (ग़ज़ल-नज़्म) 2020

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :

- रंगारंग शायरी (संपादक - प्रकाश पंडित)
- ग़ज़ल इंटरनेशनल (संपादक - मंसूर उस्मानी)
- ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक - दीक्षित दनकौरी)
- बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक - अताउल्लाह ख़ाँ अल्वी)
- 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक - नीरज गोस्वामी)
- संदल सुगंध भाग ४ (संपादक - पवन जैन, क्षिप्रा खरे)
- हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक - अनिरुद्ध सिन्हा)

कविताकोश :

- www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
- www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें
- www.rekhta.org पर 10 ख़ूबसूरत ग़ज़लें
- 2 e-book 1. लम्स का सूरज (उर्दू)
  2. रंग-ए –हुनर (उर्दू)

सम्प्रति : बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत (पटना में लगभग 3 साल तक ए. डी. एम. लॉ एण्ड आर्डर रहे) अब सफ़ीरे-शहरे-शेरो-अदब

चेयरपर्सन : बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ पटना - 800014

सम्पर्क : 70915 96715 / 87897 61287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com

Anybook

www.anybook.org

ISBN 978-93-86619-693

₹ 499.00

2020
की नुमाइन्दा ग़ज़लें

संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

2020
की नुमाइन्दा ग़ज़लें

संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति

रमेश 'कँवल'

Anybook

Published By

Anybook

Cell : 9971698930

E-mail : contactanybook@gmail.com

Website : www.anybook.org

Price in India : 499.00 /- INR

First published by Anybook in 2020

Copyright © 2020 Ramesh Kanwal

Printed and bound in India

Cover Design by Kavi Siddheshwar

Typesetting by Anybook

ISBN : 978-93-86619-69-3

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

All right reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by means, electronic or mechanical and including photocopying, recording or by any information storage and stored in retrieval system, without the prior permission in writing of the Publisher and Author, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similer condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

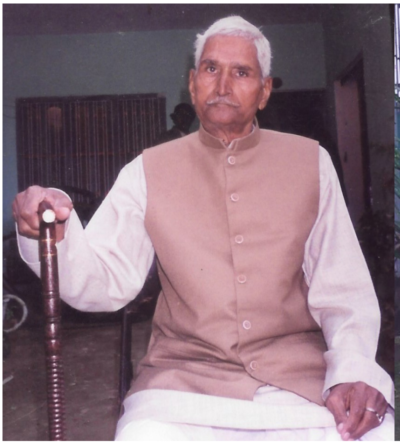

स्मृतिशेष पूजनीया माँ कमला देवी
महाप्रयाण : 22 जुलाई, 2020
एवं
स्मृतिशेष पूज्य पिताश्री हाकिम चन्द प्रसाद
महाप्रयाण : 5 फ़रवरी, 1999

जिन्होंने मुझे बोलना, चलना, ठुमकना, लिखना, पढ़ना एवं जीना सिखाया
की पावन स्मृतियों को सादर समर्पित

पुण्य कर्मों के फल थे बाबूजी
सोच ऊँची, सरल थे बाबूजी

मुश्किलों में भी मुस्कुराते थे
मन से कितने प्रबल थे बाबूजी

चलना, ठुमकना, बोलना, लिखना सिखाया है
माँ ने शऊर जीने का सुन्दर बताया है

आँखों में तैरते हैं करम उसके हर घड़ी
जो कुछ भी आज मैं हूँ, उसी ने बनाया है

रमेश 'कँवल'

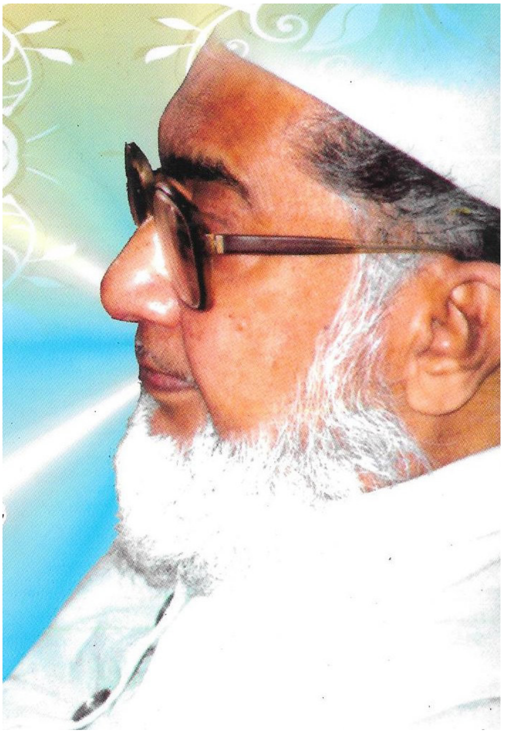

इल्मो-शऊर, शाइरी की जान आप हैं
रंगे-हुनर की ताज़गी और शान आप हैं

अहले-नज़र नवाज़ते हैं इस हक़ीर को
दुनिया में ख़ाकसार की पहचान आप हैं

© रमेश 'कंवल'

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की दूसरी पेशकश

रमेश कँवल
चेयर पर्सन

सुख़नवर

वफ़ा सिकंदरपुरी

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

नीरज गोस्वामी

रमेश कँवल

कैलाश झा किंकर, खगड़िया

अकमल नईम सिद्दीक़ी, जोधपुर

अक़ील नोमानी

अखिलेश तिवारी, जयपुर

अजय अज्ञात, फ़रीदाबाद

अजय नमन, सीतापुरा

अनिरुद्ध सिन्हा

अनिल कुमार सिंह

अशोक अंजुम

अशोक मिज़ाज

आराधना प्रसाद

ए. एफ़. नज़र

इकराम हुसैन शाद, भागलपुर

कमलेश भट्ट 'कमल'

करन कटारिया, भटिंडा

कविता विकास, धनबाद

कुँवर कुसुमेश

कुंदन आनंद

कुमार नयन

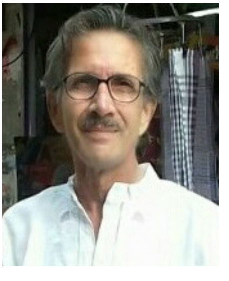
कृष्ण सुकुमार

कुमार पंकजेश, पटना

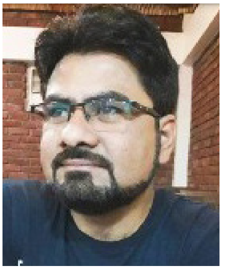

के. पी. अनमोल

केशव शरण

ख़ुर्शीद तलब

गोविन्द गुलशन

गोविन्द राकेश

गौरव कुमार नायक, रामपुर

चाँद शुक्ला हादियाबादी

जगजीत काफ़िर, लुधियाना

ज़फ़र सिद्दीक़ी

ज़मीर दरवेश

जया गोस्वामी, जयपुर

ज़हीर क़ुरैशी

ज़ाहिद अबरोल

ज़िया ज़मीर, मुरादाबाद

ज़ीनत एहसान क़ुरैशी, मुंबई

ज्योति मिश्रा, पटना

डॉ. अब्दुल क़ादिर

डॉ. आरती कुमारी, मुज़फ़्फ़रपुर

डॉ. एहसान शाम

डॉ. कुमार प्रजापति, राउरकेला

डॉ. कृष्ण कुमार नाज़, मुरादाबाद

डॉ. नलिनी विभा नाज़ली

डॉ. नूतन सिंह

डॉ. पंकज कर्ण

डॉ. प्रेम भंडारी

डॉ. फ़रहत हुसैन 'ख़ुशदिल'

डॉ.भावना, मुज़फ़्फ़रपुर

डॉ. मुजाहिद फ़राज़

डॉ. राकेश जोशी, पौड़ी गढ़वाल

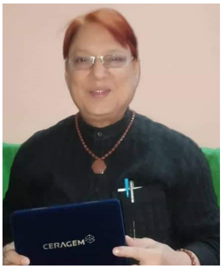

डॉ. शँकर प्रसाद

डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'

डॉ. सुनीता सिंह 'शोहरत', वाराणसी

दिनेश तपन

दिनेश बंसल

देववंश दुबे, अंबिकापुर

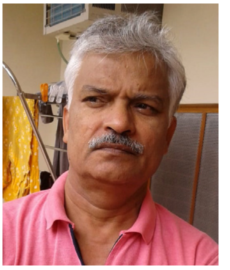

देवेन्द्र आर्य

देवेन्द्र गौतम

देवेन्द्र माँझी

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल', वाराणसी

नकुल गौतम

नज़्म सुभाष, लखनऊ

नवीन जोशी 'नवा'

नवीन सी. चतुर्वेदी, मुंबई

नाशाद औरंगाबादी

निर्मल आर्या

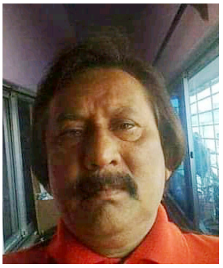

नूर मुहम्मद नूर

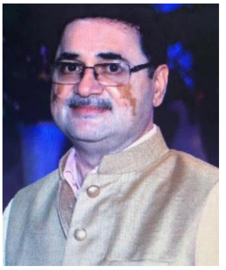

पंकज गर्ग, रूड़की

प्रताप सोमवंशी

प्रमोद रामावत 'प्रमोद', नीमच

पवन शर्मा, भादरा

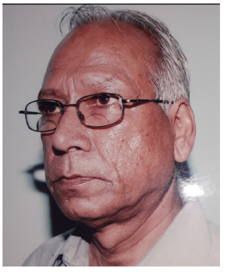

प्रेम किरण

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

पूजा भाटिया, मुंबई

फ़रीदा अंजुम, पटना सिटी

भगवती प्रसाद द्विवेदी

मंगल सिंह 'नाचीज़'

मंसूर उस्मानी

मधुवेश

मनीष मोहक, बेगूसराय

मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'

महेश कटारे 'सुगम'

मोहसिन आफ़्ताब केलापुरी

रणविजय कुमार श्रीवास्तव

रवि खंडेलवाल, इंदौर

रश्मि शर्मा, चंडीगढ़

रहमतुल्लाह अली

राजबाला राज

राजेश कुमारी 'राज', मुंबई

रामनाथ 'बेख़बर'

रेखा किंगर 'रौशनी'

लोकेश कुमार 'साहिल'

वशिष्ठ अनूप, वाराणसी

विकास, मुंगेर

विजय वाजिद

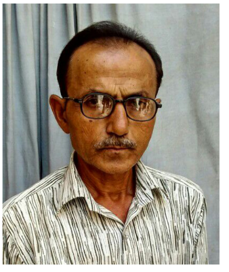
विनय सागर, बरेली

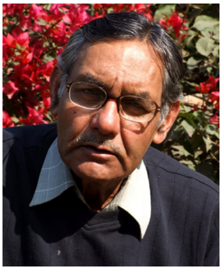
विज्ञान व्रत

शब्बीर सहसरामी

शरद रंजन 'शरद'

शाहजहाँ 'शाद'

शिव कुमार 'पराग'

शुचि 'भवि'

सन्देश जैन 'सन्देश', बाँसवाड़ा

सईद रहमानी, कटक

सत्य चन्दन

सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'

सागर सियालकोटी

सुधीर कुमार

सुभाष पाठक 'ज़िया', सीतापुर

सुमित सिंह 'मीत', मुरादाबाद

सोनिया वर्मा, छतीसगढ़

हरेराम 'समीप', फ़रीदाबाद

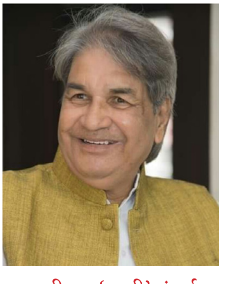

हस्तीमल 'हस्ती', मुंबई

हिमकर श्याम

हृदयेश 'मयंक'

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

ज्ञान प्रकाश विवेक

सिद्धेश्वर

अनुक्रमणिका

सुख़नवरों की रंगीन तसावीर	7
माँ के लिए	23
पिता के लिए	27
गुरू /उस्ताद के लिए	29
आमुख	30
यानी हमने तो दिल जलाकर सरेआम रख दिया : नीरज गोस्वामी	33
सम्पादकीय	35
धरोहर	58
कोरोना का दंश	62
सरोकार	64
2020 के नुमाइन्दा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शाइरों के)	68
2020 के नुमाइन्दा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शाइरात के)	72
सुख़नवर और उनका कलाम	
अकमल नईम सिद्दीक़ी	76
अक़ील नोमानी	78
अखिलेश तिवारी	80
अजय अज्ञात	82
अजय नमन	84
अनिरुद्ध सिन्हा	86
अनिल कुमार सिंह	88
अशोक ‘अंजुम’	90
अशोक मिज़ाज	92
आराधना प्रसाद	94
ए.एफ नज़र	96
इकराम हुसैन शाद	98
कमलेश भट्ट कमल	100
कमल कटारिया ‘करन’	102
कविता विकास	104
कुँवर कुसुमेश	106

कुंदन आनंद	108
कुमार नयन	110
कृष्ण सुकुमार	112
कुमार पंकजेश	114
के. पी. अनमोल	116
केशव शरण	118
ख़ुर्शीद तलब बेरमो	120
गोविन्द गुलशन	122
गोविन्द राकेश	124
गौरव कुमार नायक	126
चाँद शुक्ल हादियाबादी	128
जगजीत काफ़िर	130
ज़फ़र सिद्दिक़ी	132
ज़मीर दरवेश	134
जया गोस्वामी	136
ज़हीर क़ुरैशी	138
ज़ाहिद अबरोल	140
ज़िया ज़मीर	142
जीनत एहसान क़ुरैशी	144
ज्योति मिश्रा	146
डॉ. अब्दुल क़ादिर	148
डॉ. आरती कुमारी	150
डॉ. एहसान शाम	152
डॉ. कुमार प्रजापति	154
डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'	156
डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'	158
डॉ. नूतन सिंह	160
डॉ. पंकज कर्ण	162
डॉ. प्रेम भंडारी	164
डॉ. फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल	166

डॉ. ब्रम्ह्जीत गौतम	168
डॉ. भावना	170
डॉ. मुजाहिद फ़राज़	172
डॉ. राकेश जोशी	174
डॉ. शँकर सागर	176
डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर	178
डॉ.सीमा विजयवर्गीय	180
डॉ. सुधा सिन्हा ‘सावी’	182
डॉ. सुनीता सिंह ‘शोहरत’	184
दिनेश तपन	186
दिनेश बंसल	188
देववंश दुबे	190
देवेन्द्र आर्य	192
देवेन्द्र गौतम	194
देवेन्द्र माँझी	196
धर्मेन्द्र गुप्त ‘साहिल’	198
नकुल गौतम	200
नज़्म सुभाष	202
नवीन जोशी ‘नवा’	204
नवीन सी चतुर्वेदी	206
नाशाद औरंगाबादी	208
निर्मल आर्या	210
नूर मोहमद नूर	212
पंकज गर्ग	214
प्रताप सोमवंशी	216
प्रमोद रामावत ‘प्रमोद’	218
पवन शर्मा	220
प्रेम किरण	222
प्रेम रंजन ‘अनिमेष’	224
पूजा भाटिया	226
फ़रीदा अंजुम	228
भगवती प्रसाद द्विवेदी	230

मंगल सिंह 'नाचीज़'	232
मंसूर उस्मानी	234
मधुवेश	236
मनीष 'मोहक'	238
मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'	240
महेश कटारे सुगम	242
मोहसिन आफ़ताब केलापुरी	244
रणविजय कुमार श्रीवास्तव	246
रमेश 'कँवल'	248
रवि खण्डेलवाल	250
रश्मि शर्मा	252
रहमत अली	254
राज बाला 'राज'	256
राजेश कुमारी 'राज'	258
रामनाथ 'बेख़बर'	260
रेखा किंगर 'रौशनी'	262
लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'	264
वशिष्ठ अनूप	266
विकास	268
विजय वाजिद	270
विनय सागर	272
विज्ञान व्रत	274
शब्बीर सासारामी	276
शरद रंजन 'शरद'	278
शिव कुमार 'पराग'	280
शाहजहाँ 'शाद'	282
शुचि 'भवि'	284
संदेश जैन 'संदेश'	286
सईद रहमानी	288
सत्य चंदन	290
सरफराज़ हुसैन 'फ़राज़'	292
सागर सियालकोटी	294

सुधीर कुमार 'प्रोग्रामर'	296
सुभाष पाठक 'ज़िया'	298
सुमित सिंह 'मीत'	300
सोनिया वर्मा	302
हरेराम समीप	304
हस्तीमल हस्ती	306
हिमकर श्याम	308
हृदयेश 'मयंक'	310
ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	312
ज्ञान प्रकाश विवेक	314
सिद्धेश्वर	316

****

सुख़नवरों के शहर	317
सुख़नवरों की डिग्रियाँ	323
सुख़नवरों की शिक्षा-तालिका	328
महिला ग़ज़लकार	329
सुख़नवरों के जन्मदिन	330
सुख़नवरों का अवतरण दर्पण	336
सुख़नवरों के नुमाइन्दा अशआर	337
हार्दिक आभार संसूचन	340

❀ माँ के लिए ❀

❀

जाने चल दी कहाँ, मेरी माई
कितनी अच्छी थी माँ, मेरी माई

कितना संतुष्ट थी वो हम सबसे
कितनी ख़ुश थी यहाँ मेरी माई

घेरे रहते थे सबके सब उसको
दरमियाँ रहती थी मेरी माई

मेरी आँखों में ख़्वाब थे उसके
कामयाबी की जाँ, मेरी माई

हौसला रखना, जूझना, लड़ना
सीख की गुलसिताँ, मेरी माई

अब 'कँवल' मैं कहाँ तलाश करूँ
आएगी अब कहाँ, मेरी माई

रमेश 'कँवल'

अम्मा तू भी कैसे-कैसे जादू दिनभर करती है
कैसे बाधा विपदाओं पर क़ाबू दिन भर करती है

जीरे वाली छौंक कभी तो धूप, कपूर, अगरबत्ती
घर के जिसकोने में रहती ख़ुशबू दिनभर करती है

अनिल कुमार सिंह

❀

शम्अ कुछ पल झिलमिलायी, झिलमिलाकर बुझ गयी
ज़िन्दगानी मुस्कुरायी मुस्कुराकर बुझ गयी

माँ तुम्हारी शान में हम इससे बढ़कर क्या कहें
एक शख़्सीयत हमें जलना सिखाकर बुझ गयी

नवीन सी. चतुर्वेदी

❀

❀

प्यार ममता की तू मूरत है माँ
तेरे क़दमों ही में जन्नत है माँ

दूध का क़र्ज़ चुकाये कोई
ये किसी में नहीं हिम्मत है माँ

अरुण कुमार आर्य

माँ से बढ़कर कौन महान
माँ से है अपनी पहचान

ख़ुद झेले दुनिया के ग़म
चाहे सुखी हरदम संतान

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'

❀

बाबूजी पर कैसा मरती थी अम्मा
बूढ़ी थी पर ख़ूब सँवरती थी अम्मा

तुलसी-चौरा हो या पूजा की थाली
घी का दीपक ख़ुद ही धरती थी अम्मा

घर में जब भी कोई मंगल उत्सव हो
अद्भुत गीतों में तब झरती थी अम्मा

जब भी कोई बात बिगड़ती लगती थी
समाधान के साथ उभरती थी अम्मा

रोता-रोता भी मैं हँसने लगता था
ज़रा गुदगुदी जब भी करती थी अम्मा

माथे पर हल्की-हल्की सी थपकी दे
सारी पीड़ा पल में हरती थी अम्मा

वो ही तेल-मसाले सब हैं खाने में
स्वाद कहाँ वो जैसा भरती थी अम्मा

अनपढ़ थी पर ज्ञान बहुत व्यवहारिक था
पढ़े-लिखों से सवा ठहरती थी अम्मा

देख मेरे बालों की चाँदी कल 'साहिल'
दूर चाँद पर बैठ सिहरती थी अम्मा

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

ख़ारिज़ कभी भी होती है माँ की दुआ नहीं
ये बात इस जहाँ में है किसको पता नहीं

कश्ती भँवर में मेरी डुबाती हवा नहीं
माँ से बड़ा जहाँ में कोई नाख़ुदा नहीं

क़ाबिल जहाँ में कोई इबादत के है अगर
वो माँ है मेरी और कोई दूसरा नहीं

हँसकर हवादिसों को सदा माँ ने दी है मात
माँ की तरह दिखा किसी में हौसला नहीं

क़दमों के नीचे माँ के है जन्नत मगर कभी
माँ को ग़ुरूर इसका ज़रा भी हुआ नहीं

हासिल जिसे है माँ की दुआ ख़ुशनसीब है
फिर भी तू 'शाद' कह रहा कुछ भी मिला नहीं

इकराम हुसैन 'शाद'

देवी है मंदिरों की सुबह की अज़ाँ है माँ
मेरे लिए तो धरती पे दोनों जहाँ है माँ

मुझ पर पड़ी जो धूप तो आँचल दिया मुझे
दु:ख में तेरी दुआएँ मेरा सायबाँ है माँ

जीवन मेरा सँवारा किसी फूल की तरह
जीवन के इस चमन की मेरी बाग़बाँ है माँ

कुमार पंकजेश

❀

जाकर कहाँ बिसरती माँ
जाया भी कब करती माँ

भाप बने उठ जाये तो
बादल बनकर झरती माँ

सो जाते तो सिरहाने
बैठ निहारा करती माँ

ईश्वर भी हर जगह कहाँ
उसका काम भी करती माँ

सब कुछ सह पाता है कौन
इक माँ और इक धरती माँ

बेटे दूर गये परदेस
भूल न जायें डरती माँ

पिता ही थे सब साज सिंगार
जिनके लिए सँवरती माँ

कहे जहाँ कुछ पढ़ लो ना
आँखें जब-तब भरती माँ

ममता अजर, अमर 'अनिमेष'
किसने कहा है मरती माँ

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

❀

दिलों में प्यार के ग़ुन्चे खिलाये तूने माँ
हमारे हौसले अक्सर बढ़ाये तूने माँ

कभी जो आँख मेरी नम हुई किसी ग़म से
हँसी के फूल हमेशा खिलाये तूने माँ

ज़ीनत एहसान क़ुरैशी

गीली लकड़ी-सी जलती माँ
सूरज-सी चढ़ती-ढलती माँ

तुलसी चौरा की वो तुलसी
तिल-तिलकर हर पल गलती माँ

भगवती प्रसाद द्विवेदी

❀

माँ तो हर वक़्त ही बच्चों को दुआ देती है
अपने आँचल की उन्हें ठंडी हवा देती है

रह के ख़ामोश भी रहती है मुख़ातिब उनसे
ख़्वाब में, नींद में उनको ही सदा देती है

हुस्ने-अख़्लाक़ है माँ का ये मुहब्बत उसकी
आॅफ़तें सह के भी जन्नत की हवा देती है

एक बच्चे के लिए माँ से बड़ा मक्तब क्या
ऊँची क़द्रों का उन्हें दर्स पढ़ा देती है

दायरा उसका है मख़्सूस फ़क़त बच्चों तक
अपना सब कुछ ही वो बच्चों पे लुटा देती है

हर नफ़स रहती है वो मह्वे-दुआ उनके लिए
ख़ार चुनकर उन्हें फूलों की क़बा देती है

है वो शफ़्क़त की, मुहब्बत की ही मूरत यकसर
जो बिना माँगे ही हर चीज़ सवा देती है

नर्म है दिल की मगर बात हो जब बच्चों की
कितना पुख़्ता है तहीया, ये बता देती है

इक नदी ममता भरी, उतरी हुई जन्नत से
'नाज़ली' सिलसिला-ए-उन्स चला देती है

डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

❀

प्यार अपने बच्चों से बेइन्तिहा करती है माँ
जीती है उनके लिए, उनके लिए मरती है माँ

ज़िन्दगी की धूप बच्चों को न कुम्हला दे कहीं
माँगती है ख़ैर वो, बदवक़्त से डरती है माँ

वो न चाहे उनसे कुछ भी, प्यार के दो बोल बस
इक यही उम्मीद अपने बच्चों से करती है माँ

चौंक जाती है हर इक आहट पे उनकी बार-बार
देर आने में जो कुछ हो जाए तो डरती है माँ

ऐ मिरे लख़्ते-जिगर ! तू 'नाज़ली' की जान है
ख़ुद से भी बढ़कर मुहब्बत तुझसे ही करती है माँ

डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

जैसे ग़ुंचों के लिए बाद-ए-सबा होती है
माँ की शफ़क़त भरी आँचल की हवा होती है

लायक़-ए-सजदा-ए-ताज़ीम है दामन उसका
बाद अल्लाह के माँ मिस्ल-ए-ख़ुदा होती है

-प्रो. (डॉ.) एहसान शाम

उम्र अधिक है, तन जर्जर है
माँ फिर भी सबसे सुंदर है

माँ से ही घर होता घर है
वरना तो केवल खँडहर है

ममता, प्रेम, दया, वत्सलता
माँ इन सबकी रत्नाकर है

माँ की गोदी में सब खेले
क्या रघुवर क्या नटनागर है

स्वर्ग-नरक या जन्नत-दोज़ख़
माँ सब पायों से ऊपर है

क्या काबा, क्या काशी, मथुरा
माँ सब तीर्थों से बढ़कर है

माँ का आशीर्वाद मिले तो
जीवन का हर पल सुखकर है

एक मुसलसल ग़ज़ल-सरीखी
माँ अमृत-रस की गागर है

सब कुछ नश्वर है दुनिया में
केवल माँ का प्यार अमर है

जिसकी माँ है वृद्धाश्रम में
वो सबसे हतभागी नर है

'जीत' मिली है ममता जिसको
वो निश्चित ही क़िस्मतवर है

ब्रह्मजीत गौतम

❀ पिता के लिए ❀

❀

पुण्य कर्मों के फल थे बाबूजी
सोच ऊँची, सरल थे बाबूजी

मुश्किलों में भी मुस्कुराते थे
मन से कितने प्रबल थे बाबूजी

उनके जीवन के लक्ष्य थे हम सब
झोपड़ी में महल थे बाबूजी

ज़िन्दगी थी अभाव में शामिल
थे जटिल प्रश्न, हल थे बाबूजी

कोई चाहत न कुछ तमन्ना थी
कल्प तरुवर, 'कँवल' थे बाबूजी

रमेश 'कँवल'

बाहर से बेशक पत्थर है
किन्तु पिता मन से निर्झर है

संतति हेतु पिता थककर भी
साँस नहीं लेता पल-भर है

ब्रह्मजीत गौतम

❀

सारे क्रियाकलाप समझ आने लगते हैं
सब रहस्य चुपचाप समझ आने लगते हैं

छत्र, पिता का, जब सर से उठ जाता है न
सारे सुख-सन्ताप समझ आने लगते हैं

नवीन सी. चतुर्वेदी

❀

❀

पिता स्वयं बन पुत्र जनमता जारी ये क्रम रहता है
हर संशय को हर लेता वो दूर सदाभ्रम रहता है

श्रेय सफलता का मिल जाए बेटे को पर सत्य है ये
नींव का हर पत्थर जड़ने में उसका ही श्रम रहता है

अनिल कुमार सिंह

जीवन का दस्तूर बताया
जीने का अंदाज़ सिखाया

डाँट-डपटकर मुझे पिता ने
शीशे से फ़ौलाद बनाया

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'

❀

❀

आप हैं नायक हमारे बाबू जी
पूजने लायक हमारे बाबू जी

दु:ख से टूटे साज़ में भी सुर भरा
धैर्य के गायक हमारे बाबू जी

ध्येय को पाया मनोबल से सतत
कर्म निर्णायक हमारे बाबू जी

बच्चों की इच्छाओं पर वो मर मिटे
ऐसे सुखदायक हमारे बाबू जी

धर्म, अनुशासन, चरित्र की सीख दी
आप परिचायक हमारे बाबू जी

कुमार पंकजेश

❀

हैं बरगद की छाँव पिताजी
पीपल वाले गाँव पिताजी

लख सीता संतति पर आफ़त
रखते अंगद-पाँव पिताजी

भगवती प्रसाद द्विवेदी

कितने गुणों की खान थे तुम ओ पिता
इस सारे घर की जान थे तुम ओ पिता

हर रोज़ मुश्किल और होते दौर में
कितने सहज आसान थे तुम ओ पिता

अरजा न कुछ बस बाँटी सबमें हर ख़ुशी
सबसे बड़े धनवान थे तुम ओ पिता

ईमान से जीना है क्यों इतना कठिन
आख़िर में कुछ हैरान थे तुम ओ पिता

अब ज़िंदगी की धूप तीखी लग रही
हम सबके सायबान थे तुम ओ पिता

सच सपनों की वो शाइरी जो अनसुनी
इक अनपढ़ा दीवान थे तुम ओ पिता

इस भीड़ के और होड़ के जग से परे
अपनी अलग पहचान थे तुम ओ पिता

जीवन तुम्हारे बिन है कितना अनमना
मन थे हमारा मान थे तुम ओ पिता

'अनिमेष' जो आदर्श आगे रख गये
उसका स्वयं प्रतिमान थे तुम ओ पिता

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

❀

❀ गुरू/उस्ताद के लिए ❀

❀

सद्गुरू! तुम्हें शत-शत नमन
तुम ही धरा, तुम ही गगन

हो गुरू-कृपा तो शिष्य के
तम का त्वरित होता शमन

ब्रह्मजीत गौतम

❀

विनय का पन्थ वरना है गुरूजी
हमें ये काम करना है गुरूजी

हृदय-बगिया में अपनी, ठौर दीजै
महक बनकर बिखरना है गुरूजी

नवीन सी. चतुर्वेदी

❀

गुरू को शत्-शत् बार नमन
गुरू से रौशन जीवन धन

उनसे कहना, लिखना सब
जगमग उनसे अंतर्मन

डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'

❀

शिव से औघड़दानी गुरूवर
चेलों का पत-पानी गुरूवर

मंथन कर विषपान करें ख़ुद
बाँटें अमरित ज्ञानी गुरूवर

भगवती प्रसाद द्विवेदी

ज़मीं पर ईश के एहसास का कारण तुम्हीं गुरूवर
मेरे इल्म-ओ-हुनर इख़लास का कारण तुम्हीं गुरूवर

तुम्हारी ख़ाक-ए-पा मेरे लिये चंदन सरीखा है
मेरी श्रद्धा मेरे विश्वास का कारण तुम्हीं गुरूवर

अनिल कुमार सिंह

❀

गुरू की महिमा जानिए गुरू सा मीत न कोए
कृपा से गुरूदेव की जन्म ये स्वारथ होए

गुरू के पावन ज्ञान से मानव संत हो जाए !
जैसे माटी कुम्हार से रूप कलश का पाए !!

अरुण कुमार आर्य

❀

आपको प्रणाम है गुरूदेव मेरे
आपका ही नाम है गुरूदेव मेरे

आप देवों मानवों में सबसे ऊँचे
आप से ही काम है गुरूदेव मेरे

साधना है ज्ञान को पर मार्गदर्शन
आपके ही धाम है गुरूदेव मेरे

सबसे आदरणीय है पद आपका ही
दान ये निष्काम है गुरूदेव मेरे

अपने आशीर्वाद से जीवन बना दें
तृष्णा तो अविराम है गुरूदेव मेरे

कुमार पंकजेश

❀

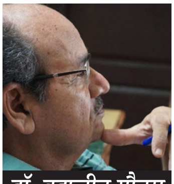

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

आमुख

आरम्भ में ग़ज़ल 'तश्बीब' के नाम से जानी जाती थी, लेकिन बाद में इस विधा में 'मुल्क़ा आमीन कमाल' ने गेयता एवं संगीत का पुट देकर इसे ग़ज़ल नाम दिया। पहले ये विधा हुस्नो-इश्क़ के समन्वय के धरातल पर प्रसिद्ध हुई, जो साँसारिक रही, फिर हुस्नो-इश्क़ की सौन्दर्य-गाथाएँ लौकिकता से अलौकिकता की तरफ़ मुड़ गयीं। फ़ारसी की ग़ज़ल-गायकी नग़मे के रूप में ईरान में परवान चढ़ी, बाद में ख़य्याम, शेख़ सादी, हाफ़िज़ शीराज़ी जैसे ग़ज़लकारों की गायकी-शैली अस्तित्व में आयी। संगीत के कलाकारों ने भी ग़ज़ल को गेयता की लहरियों में शराबोर कर दिया। उर्दू एवं हिन्दी की गंगा-जमुनी सभ्यता की अद्यतन उपलब्धि ख़ूबसूरत ग़ज़ल बन गयी। जिसने भी उसे पढ़ा-लिखा, उसका दीवाना हो गया और ग़ज़ल गौरवान्वित हुई। आज काव्य की समस्त विधाओं में ग़ज़ल सर्वाधिक लोकप्रिय विधा का स्थान प्राप्त कर चुकी है। यही कारण है कि आजकल छंद-धर्मी अधिकांश पत्रिकाएँ अपनी काव्य सामग्री में लगभग आधे पृष्ठ ग़ज़ल को देती हैं। इतना ही नहीं, छंद से दूरी बनाकर चलने वाली पत्रिकाएँ भी ग़ज़ल को प्रकाशित करने से परहेज़ नहीं करतीं। लगभग सभी पत्रिकाएँ एक-दो साल के अंतराल से ग़ज़ल-विशेषांक भी अवश्य प्रकाशित करती हैं। इतना ही नहीं, प्रतिवर्ष व्यक्तिगत और सहयोगात्मक स्तर पर अनेक ग़ज़ल-संकलन भी प्रकाशित हो रहे हैं। ये ग़ज़ल की लोकप्रियता के प्रमाण हैं। ये ग़ज़लें कैसी होती हैं, ये अलग बात है !

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के तहत श्री रमेश 'कँवल' के संपादकत्व में प्रकाशित ग़ज़ल-संकलन '2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' इसी श्रंखला की अगली कड़ी है। जैसा कि शीर्षक से ध्वनित है, इस संकलन में वे ही गज़लें सम्मिलित है, जो इसी वर्ष लिखी गयी हैं तथा जो अब तक कहीं अन्यत्र प्रकाशित नहीं हुई हैं। ऐसे लगभग एक सौ बीस ग़ज़लकारों को इस संकलन में शामिल किया गया है। ये संकलन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि आज हिन्दी में लिखी जा रही ग़ज़लें न केवल कथ्य के स्तर पर, अपितु शिल्प की दृष्टि से भी पर्याप्त समृद्ध हैं। फ़िक्र और फ़न दोनों की चिंता इन ग़ज़लों में दृष्टिगोचर होती है। श्री अक़ील नोमानी की ग़ज़ल का एक मत्ला देखिये जिसमें इस दुनिया के चिरंतन सत्य को बहुत ही आलंकारिक ढंग से, फिर भी बड़ी नफ़ासत और सादगी के साथ अभिव्यक्त किया गया है –

बाक़ी है बू गुलों के बिखरने के बाद भी
ज़िंदा बहुत से लोग हैं मरने के बाद भी

ऐसा ही एक शे'र श्री अनिरुद्ध सिन्हा का द्रष्टव्य है, जो चापलूसी और ठकुरसुहाती के इस दौर में सत्य और झूठ के अंतर को समझने की प्रेरणा देता है, ये बात अलग है कि मनुष्य में अगर इतना साहस आ जाये तो दुनिया की सूरत ही बदल जायेगी –

झूठ और सच में फ़र्क़ कर पायें
कम से कम इतना हौसला तो रहे

सब जानते हैं कि ग़ज़ल का हर शे'र पूर्वापर संबंध से रहित होता है। हर शे'र में एक स्वतंत्र ख़याल होता है। अत: कथ्य की दृष्टि से ग़ज़ल का क्षेत्र इतना व्यापक है कि दुनिया-जहान का कोई विषय ऐसा नहीं, जो उसके दायरे से बाहर हो। इस संग्रह की गज़लों में भी ये विविधता देखी जा सकती है। जितने अश्आर, उतने ख़याल। ज़िदगी और उसके बाहर के सारे मुद्दे आज की ग़ज़ल में शामिल हैं। ऐसे में हर शे'र उद्धरणीय प्रतीत होता है। श्री रमेश 'कँवल' का संवेदना के घनत्व से पूरित एक मत्ला देखिए, जिसमें बेटी और बेटे के बीच आज के समाज के नज़रिए को रेखांकित किया गया है -

बेटी पर सख़्ती, बेटे को मस्ती के अधिकार मिले
नगर-नगर, कस्बों, गाँवों को सीख में ये उपहार मिले

चर्चित ग़ज़लकार अशोक रावत का कहना है कि 'ग़ज़ल' कभी भी 'कंटेंट' के लिए याद नहीं की गयी। ग़ज़ल की ताक़त उसके कहन का अंदाज़ है। वरना नई कविता के कथ्य में क्या नहीं, मगर कोई उसे फूटी आँख से भी नहीं देखता' (नई ग़ज़ल- अक्टू.-दिस. 07, पृ. 59)। श्री रावत के कथन से असहमत होने का कोई कारण नहीं है। ये कहने का सलीक़ा ही है, जो एक मामूली सी बात को भी असरदार बना देता है। इस दृष्टि से इस संकलन में कितने ही अश्आर ऐसे हैं, जो अपने प्रतीकात्मक और सांकेतिक अंदाज़े-बयाँ के लिए उद्धृत किये जा सकते हैं। समाज से लेकर अध्यात्म तक के अनेक बिम्ब इनमें उभरकर आते हैं। कुछ अश्आर देखिये –

सज़ा मुझको ही मिलनी थी हमेशा
मेरे चेहरे पे जो चेहरा नहीं था
- हस्तीमल 'हस्ती'

दफ़्तर से तो छुट्टी मिल ही जाती है
महिलाओं के चौके में इतवार नहीं
- अशोक मिज़ाज 'बद्र'

कभी बिगड़ता कभी सँवरता रहता हूँ
कभी नहीं पूरा बन पाया कौन हूँ मैं
- लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

सय्याद कर रहे हैं चमनवालों से सवाल
शाख़ों से उड़ के सारे कबूतर कहाँ गये
- नवीन सी. चतुर्वेदी

घबरा के उसने कर लिया अपना भी मोल-तोल
जब भूखे बच्चे उससे रुलाए नहीं गए
- ज़मीर दरवेश

बदन चीरता आदमी तो ज़मीं का
वो तब भी बताती कि हीरा यहाँ है
- जया गोस्वामी

वजूद ग़म ने मेरा ऐसा बचाकर रक्खा
कि जैसे अम्न को हथियार सलामत रक्खे

- के.पी. अनमोल

ग़ज़लों के इन इंद्रधनुषी रंगों के अतिरिक्त इस संकलन की कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं। एक तो ये कि संपादक जी द्वारा शाइरों से माँ, पिता और गुरू पर एक-एक मत्ला और एक-एक शे'र देने की माँग की गयी थी। ये हर्ष की बात है कि अधिकांश शाइरों ने इस फ़र्ज़ को बहुत उत्साह से निभाया। 'माँ' के प्रति तो उनके प्रेम और श्रद्धा की अभिव्यक्ति देखते ही बनती है। कुछ ने तो पूरी ग़ज़लें ही भेज दी हैं। माँ का व्यक्तित्व ही ऐसा है। उसमें माँ तो है ही, पिता और गुरू का किरदार भी समाया हुआ है। प्रारंभ से ही वो अपने बच्चों के लिए इन तीनों की भूमिका निभाती रही है। किन्तु वे ही बच्चे बड़े होकर क्या करते हैं, चाहकर भी अपने ये दोहे उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं पा रहा हूँ –

चिड़िया रचती घोंसला, चुनकर तिनके-घास
पंख उगे, बच्चे उड़े, चिड़िया हुई उदास

बूढ़ी माँ से भी अधिक, है डॉलर से प्यार
पुत्र तभी तो उड़ चला, सात समुन्दर पार

माँ, पिता और गुरू के अतिरिक्त एक-एक नुमाइन्दा शे'र अपना स्वयं का, एक अपने पसंदीदा किसी अन्य शाइर का तथा एक शे'र किसी शाइरा का भी माँगा गया था। ऐसे शे'र भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुए, जो इस संकलन में समाविष्ट हैं।

2020 का ये वर्ष इतिहास के पन्नों में कोरोना महामारी के नाम अंकित होगा, जिसने समाज को झकझोर कर रख दिया है। उम्मीद थी कि हर शाइर 2020 की पाँच नुमाइन्दा ग़ज़लों में कम से कम एक ग़ज़ल नहीं तो एक शे'र में तो इस पीड़ा का इज़हार करेगा ही। कुछ ने किया भी है। इस संवेदनशीलता के लिए वे सभी धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। अस्तु, ये कहना कोई रस्म-अदायगी नहीं है कि ये संकलन अपने आप में एक उल्लेखनीय दस्तावेज़ है, जो आगे चलकर एक परंपरा का रूप ले सकता है। इस उत्तम साहित्यिक आयोजन के लिए बज़्मे-हफ़ीज़, पटना, चेयर पर्सन और संपादक श्री रमेश 'कँवल' तथा उनकी पूरी टीम, एवं सभी रचनाकारों को उनके अमूल्य रचनात्मक सहयोग के लिए आत्मिक धन्यवाद और आभार !

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
युक्का-206, पैरामाउण्ट सिंफनी
क्रॉसिंग रिपब्लिक, ग़ाज़ियाबाद – 201016
चलभाष : 9760007838, 9425102154

नीरज गोस्वामी

“2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें”

यानी हमने तो दिल जला के सरे-आम रख दिया : नीरज गोस्वामी

जनाब रमेश कँवल साहब, जो अदब की दुनिया में एक जाना-पहचाना नाम है, जो शोहरतों का मोहताज नहीं बल्कि अपने काम से रंगे-सुख़न है, जो पिछले एक तवील अरसे से बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना, मरकज़े-रंगे-हुनर के सद्र हैं, जो बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद मुकम्मल तौर से अदबसाज़ी में मसरूफ़ हैं, ने “2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें” की शक्ल में एक लाजवाब दस्तावेज़ तैयार किया है।

“2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें” रमेश ‘कँवल’ जी की ही अद्भुत सोच का परिणाम है। रमेश जी जिस काम को करने की ठान लेते हैं उसे पूरा किए बिना चैन नहीं लेते। मेरी ख़ुश-क़िस्मती है उन्होंने मुझे इस काम में अपने साथ जोड़ा। ये काम जितना लगता है उतना आसान नहीं था। सारे हिंदुस्तान से शाइरों और शाइरात से उनका कलाम और परिचय मँगवाना उन्हें एक जगह इकट्ठा करना और फिर तरतीब से प्रकाशित करवाना बहुत मेहनत माँगता है। रमेश जी ने जिस तरह से इस काम को अंजाम दिया है उसके लिए मैं उन्हें और उनकी पूरी टीम को दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ।

इस साझा संकलन में लगभग 119 शाइर और शाइरात (मोहतरमा) समाहित किये गये हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को इस मिशन से जोड़ना अपने आप में किसी अजूबे से कम नहीं। ख़ुशी की बात है कि सभी ने रमेश जी को अपना पूरा सहयोग दिया।

मैं चाहता था कि मैं इस किताब में संकलित कुछ अपनी पसंद के शे’र यहाँ कोट करूँ और जब मैं शे’र पसंद करने बैठा तो उनकी तादाद इतनी ज़ियादा हो गई कि उन सबको न तो यहाँ देना मुमकिन था न उनमें से एक भी शे’र कम करना। लिहाज़ा मुझे इस विचार को ख़ारिज कर देना पड़ा। मैं ये काम अब पाठकों को सौंप देता हूँ।

शाइरी चार प्रकार की तस्लीम की गई है दाख़िली, ख़ारिजी, इश्क़-ए-मजाज़ी और इश्क़-ए-हक़ीक़ी। जब मैं इन ग़ज़लों को पढ़ रहा था तो मुझे शाइरी के ये तमाम रंग दिखाई दिए। ग़ज़लों में फ़साहत, लताफ़त और हुस्न के बहुत रंग मिले। तमाम असनाफ़ में शाइरी एक ऐसी सिन्फ़ है जिसमें ज़िंदगी की वुसअतों को पिरोया और संजोया जा सकता है।

जितने भी शाइरों और शाइरात ने इस मुश्तरक़ा ग़ज़ल संग्रह में अपना-अपना कलाम दर्ज़ करवाया है वो एक से बढ़कर एक हैं। मैं यहाँ पर किसी भी शाइर या शाइरा को किसी ख़ास मुक़ाम से नहीं नवाज़ सकता क्योंकि हर शख़्स अपने आप में बेमिसाल है अलग और कमाल है। कोई भी शख़्स छोटा या बड़ा नहीं होता उसका शाहकार बड़ा होता है।

तमाम सीनियर शौरा हज़रात की ग़ज़लों के बहुत से मुख़्तलिफ़ रंग हैं लेकिन जो नए कहने वाले हैं उनमें भी बहुत से लोगों ने बहुत अच्छा कलाम पेश किया है। आख़िर में मैं यही कहूँगा कि

बड़े से बड़ा शाइर भी फ़िक्री तौर पर कुछ नया नहीं कह सकता क्योंकि ख़ुदा की इस कायनात में तमाम ख़यालात पहले से ही मौजूद हैं। शाइर सिर्फ़ और सिर्फ़ उन्हीं ख़यालात को अपने अलग ढंग से पेश करता है और इसी में उसका हुनर होता है।

ये ख़ूबसूरत किताब अब आपके सामने हैं। बकौल क़तील शिफ़ाई

'हमने तो दिल जला के सरे-आम रख दिया'

मैं अपनी बात 'टोनी मॉरीसन' के इन शब्दों से समाप्त करना चाहूँगा : वो कहती हैं 'जीविका के लिए लिखना और जीवन के लिए लिखना इन दोनों बातों में अंतर है। यदि आप जीविका के लिए लिखते हैं तो आपको समझौते करने पड़ते हैं यदि आप जीवन के लिए लिखते हैं तो आपको कठोर परिश्रम करना पड़ता है।'

मैं एक बार फिर इस किताब में आए तमाम शौरा को सलाम करते हुए, रमेश जी को ढेरों मुबारकबाद देते हुए इस किताब की कामयाबी की दुआ करता हूँ।

श्री बलभद्र जयंती नीरज गोस्वामी

24 अगस्त 2020

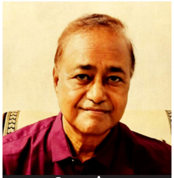
रमेश कँवल

"2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें" : प्यार की ख़ुशबू वाली ग़ज़लें

सम्पादक की कलम से

मार्च 2020 से हमने सामाजिक रहना छोड़ दिया। मिलना-जुलना, साथ उठना-बैठना, चाय-नाश्ता, गप-शप वगैरह सब छूट गया। बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के लिए 2 तिथियाँ महत्वपूर्ण हैं ; -20 मई (1933) – हफ़ीज़ बनारसी का जन्मदिन और 16 जून (2008) उनकी पुण्यतिथि। सूर्य के उत्तरायण प्रयाण (14-15 जनवरी) के साथ ही हमने जश्ने-हफ़ीज़ बनारसी की तैयारियाँ शुरू कर दी। पटना अवस्थित पटना और मगध यूनिवर्सिटी के सभी प्रमुख कॉलेजों के प्राचार्यों और उर्दू-हिंदी के विभागाध्यक्षों को हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों के अन्तर महाविद्यालय प्रतियोगिता में शामिल होने का अनुरोध और छात्र-छात्राओं को निबंधित करने का कार्य शुरू हो गया। सुविधा हेतु सभी कॉलेजों को हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों के रिफ़रेन्स और 30 ग़ज़लें भी भेज दी गयीं। 30 से ज़्यादा छात्र-छात्राओं ने इसकी तैयारी और रिहर्सल भी की। बिहार उर्दू अकादमी का सभागार भी आरक्षित करा लिया गया लेकिन होनी को कुछ और ही मंज़ूर था। इधर कोरोना का ख़ौफ़ और उधर शाहीन बाग़ का राष्ट्र-विरोधी आन्दोलन। कुछ नहीं हो सका। 16 जून को ज़ूम पर मुझे एक ऑनलाइन मुशाइरा आयोजित करना पड़ा। YouTube पर शाइरों के कलाम अपलोड करने पड़े। छात्र-छात्राओं द्वारा पेश की गयी ग़ज़लें भी YouTube पर अपलोड और फ़ेसबुक पर लाइव करनी पड़ीं।

इसी दौरान ख़याल आया कि क्यों नहीं इस लॉक डाउन पीरियड की ग़ज़लों का संकलन कर बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना, के ज़ेरे-एहतमाम शाया किया जाय।

ये किताब जिसमें 14 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों के क़रीब 120 शाइरों की लगभग 600 ग़ज़लों को शामिल किया गया है अपने आप में बेमिसाल है। इसकी चर्चा हम विस्तार से करेंगे। पहले इन ग़ज़लों के तेवर देखिये :

इक नई पहचान लेकर शह्र से लौटा है वो
अजनबी बनकर खड़ा है अपने घर के सामने

धूप की ललकार सुनकर जंग के मैदान में
शाम फिर तनकर खड़ी है दोपहर के सामने

बादलों की ओट से बाहर निकलता क्यों नहीं
वो अगर सूरज है तो करवट बदलता क्यों नहीं

- देवेन्द्र गौतम

जिनसे हाथ मिलाने निकले
लोग वही बेगाने निकले

थक कर घर जाते सूरज को
जुगनू आँख दिखाने निकले

पहले फेंकी शहर में माचिस की तीली,
आँधी के पँखों पर फिर रफ़्तार रख दी

- राजेश कुमारी 'राज'

दौलत भी आप ही की है मेहनत भी आपकी
लेकिन ग़रीब लोगों का हिस्सा निकालिए

इश्क़ तो अपने आप होता है
इश्क़ होता नहीं है करने से

तुम उजड़ना किसी का क्या समझो
तुमको फ़ुरसत नहीं सँवरने से

- शाहजहाँ शाद

बात करता है उसूलों की बहुत
शहर में वो तो नया लगता है

इन खिलौनों से बहुत ही दूर हैं
हम फ़क़त बच्चे नहीं मज़दूर हैं

दर्द दुनिया के लिए 'भवि' जो बने
आज उन्हीं के पास सुख भरपूर हैं

- शुचि 'भवि'

वो नवाज़ेगा अपनी रहमत से
नेकियाँ बेहिसाब ले जाओ

नफ़रतों के सवाल हो लाखों
बस मुहब्बत जवाब ले जाओ

बहके से हैं क़दम मेरे छू कर तेरा बदन
बदनाम व्यर्थ में हुआ प्याला शराब का

- संदेश जैन 'संदेश'

फ़िक्र की धूप आँच देती है
दर्द की झील में उतरता हूँ

उड़ानों की तहरीक देता है पहले
वो करता है महरूम फिर बालो-पर से

मैं जब भी देखता हूँ अपने बच्चों के खिलौने को
कभी खँज़र निकलता है, कभी चाक़ू निकलता है - सईद रहमानी

अल्फ़ाज़, ख़यालात, ग़ज़ल, सब ही ख़फ़ा हैं
सबकी है यही ज़िद कि उसे ढूँढ के लाओ

अब दिल मैं तुम्हारी न कोई बात सुनूँगा
हर वक़्त निगाहों से सिफ़ारिश न कराओ - सत्य चंदन

जिसे भी देखिए गूगल पे सर्च करता है
किसे है याद यहाँ अब किताब की बातें - सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'

क़ीमतें बस आप देंगे
तय तो व्यापारी करेगा

ग़ज़लों की थाली में, ताली से बढ़कर
शाइर को भाती कोई सौग़ात नहीं -सुधीर कुमार प्रोग्रामर

तुम बिन जीना भी मुश्किल है, मरना भी मुश्किल
हर मुश्किल का है ये इक हल मेरे पास रहो -सुभाष पाठक 'ज़िया'

जिसमें रखते थे संजोकर हम खुली आँखों के ख़्वाब
बाद तेरे बंद ही वो दिल की अलमारी रही - सुमीत सिंह 'मीत'

विलायत से मुस्कानें आयात करके
तुम्हारी उदासी का उपचार होगा - हरेराम समीप

इक वबा ने हाल ऐसा कर दिया
क़ैद होकर रह गया संसार है

उससे कुछ भी छुपा नहीं रहता
बात दिल की भी जान लेता है

जिसके चर्चे हैं बेवफ़ाई के
वो मेरा इम्तिहान लेता है - हिमकर श्याम

देखकर चाँद सा खिला चेहरा
सहमी-सहमी सी चाँदनी निकली

माँ सा चेहरा कोई नहीं होता
जब भी देखा तो हौसला पाया

- हृदयेश 'मयंक'

आइये अब इस किताब की ग़ज़लों की ख़ुशबू का आनंद लें। जैसा कि आप जानते हैं साल 2020 कोरोना महामारी की त्रासदी के लिए जाना जाएगा। अभी तक लगभग साढे आठ लाख लोग जिनमें अपने देश के ही लगभग 65 हज़ार होंगे मौत के मुँह में समा चुके हैं। इसलिए कोरोना पर सभी शाइरों ने अपने ख़यालात पेश किये हैं :

कोरोना ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। स्कूल, कॉलेज, दुकान, कल-कारख़ाने सब बंद कर दिए गए। मंदिर-मस्जिद पर ताले लग गए; शादी-विवाह पर ग्रहण लग गया। दाह संस्कार ने रिश्तों को तार-तार कर दिया। कोरोना के मृतकों को तो पॉलिथीन में लपेट कर जलाया-दफनाया जाने लगा। अन्य मृत्यु के दाह संस्कारों में भी मात्र 20 लोगों तक के शामिल होने की पाबंदी लगा दी गयी :

हर सम्त क़ब्रगाह-सा मंज़र बना दिया
इक वायरस ने हाल यूँ बदतर बना दिया

- कविता विकास

हर तरफ़ है वबा का असर
लग गयी है जहाँ को नज़र

हैं परीशाँ अमीरो-गदा
ख़ौफ़ में है हमारा नगर

- कुमार पंकजेश

क़ुदरत का है नहीं वायरस
मानव द्वारा, लैब जनित है

देख महामारी का आलम
सारी दुनिया हुई चकित है

अर्थव्यवस्था का मत पूछो
वो भी चारों ख़ाने चित है

- रवि खण्डेलवाल

तज़किरे सारे हो गए ख़ामोश
इन दिनों बस वबा की बातें हैं

- डॉ. मुजाहिद फ़राज़

जिसकी गलियों में हवा बनके उड़ा करते थे
अब उसी शहर का खिड़की से नज़ारा करिये

बेसबब सड़को पे फिरने से 'नज़र' क्या हासिल
अपने घर के दरो-दीवार सँवारा करिये - ए. एफ़. 'नज़र'

जब देश में लॉक डाउन (घूमने-फिरने, रोज़ी-रोटी कमाने, कहीं आने-जाने, व्यवसाय करने, ऑफ़िस आने-जाने, मॉल, सिनेमाघर जाने एवं घर से निकलने तक पर पाबंदी (अति आवश्यक कार्यों को छोड़कर) लगा दी गयी तो कमाई बंद हो गयी। खाने-पीने की दिक्कत, घर-किराया नहीं देने पर घर से जबरन निकाले जाने की परिस्थिति इत्यादि में ट्रेन, बस, रोड बंद होने एवं पुलिस की सख़्ती पर प्रवासी मज़दूरों की कष्टकर यात्रा का दृश्य देखिये :

लॉक डाउन में बहुत लंबा था पैदल का सफ़र
और उस पर ये सितम चलना था कुछ खाए बगैर ! - ज़मीर दरवेश

जा रहा था जाने किस धुन में मगन
अपने कंधों पर वो अपना घर लिए - अजय नमन

पिटते मज़दूरों के जत्थे नहीं देखे जाते
भूखे जिस्मों पे ये लाठी नहीं देखी जाती - ज़मीर दरवेश

चलते-चलते चप्पल टूटी, सर पर धूप पड़े भारी
कई दिनों से पेट है ख़ाली किसे दिखाएँ हे ईश्वर

ठौर-ठिकाना कहाँ हमारा मारे-मारे फिरते हैं
अंतहीन रस्ता है घर का कैसे जाएँ हे ईश्वर

काँधे पे छुटकू बैठा है, कमर पे लटकी है बड़की
ख़ुद का बोझ नहीं सम्भले अब, किसे उठाएँ हे ईश्वर - डॉ. सीमा विजयवर्गीय

कमाई बंद की मालिक ने घर से हो गए बेघर
चले जब लॉक डाउन में पुलिस ने डंडे बरसाए - रमेश 'कँवल'

मज़दूरों को घर जाने का कोई शौक़ तो था नहीं वे तो मजबूरी में जा रहे थे ; देखिये

कोरोना की मार इक तरफ़ भूख दूसरी ओर खड़ी
दो रोटी के लिए ताकती बनी भिखारिन दिल्ली में - महेश कटारे 'सुगम'

है कहाँ जो आबो-दाना चाहते हैं
हम तो अपने गाँव जाना चाहते हैं
- प्रेम रंजन 'अनिमेष'

मज़दूरों की रोटी-रोज़ी छिन गयी, भात मुहाल हुआ
पैदल, ट्रक या रेल के पहियों पर बेबस घर-बार मिले
-रमेश 'कँवल'

यादों की गठरी को लेकर लौट रही है घर वापस
आई थी कुछ सपने लेकर बनी सुहागिन दिल्ली में

निकल पड़ी रख सर पर गठरी अपने बच्चों को लेकर
कैसे लड़ती जंग ग्रहस्थी एक अभागिन दिल्ली में
- महेश कटारे 'सुगम'

चूँकि रोड से जाने पर पाबन्दी थी और पुलिस का पहरा भी था। ट्रेनें नहीं चल रही थीं इसलिए मज़दूरों को लगा कि रेल की पटरियाँ अभी बिलकुल ख़ाली होंगी इसलिए घर की इस यात्रा में ट्रेन की पटरियों का भी सहारा लिया गया लेकिन हतभाग्य मज़दूर मालगाड़ियों से कट मरे :-

मिटे जज़्बात पटरी पर
कटे जब गात पटरी पर

कहीं रोटी, कहीं चप्पल
पड़ी औक़ात पटरी पर
-पवन शर्मा

इन हृदय विदारक दृश्यों के बीच शाइर अपने साथियों को आह्वान करता है :

ख़ाली पेट, होंठ पपराये बदन थकन से चूर हुए
पीठ पे बच्चा, सर पर गठरी, नींदों की क़ुर्बानी लिख

ना निकलें तो भूख-प्यास से बिलख रहे नन्हे बच्चे
बाहर निकलें पुलिस के डंडों से होती मेहमानी लिख
-महेश कटारे 'सुगम'

उनके दर्द बयाँ करने में शाइर भी बेबस दिखने लगता है

रिक्शा, ठेला, साइकिल, पैदल, गिरते-पड़ते निकल पड़े
अकथ दर्द की कविता कैसे लिख दूँ इन बंजारों पर
-वशिष्ठ अनूप

कोरोना काल में शहर के मंज़र देखिये :

ख़ामशी शहर में है मरघट-सी
ख़ौफ़ का अब्र जैसे छाया है
- डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

है शोर इतना ख़मोशियों का है बोझ इतना अकेलेपन का
हर एक घर का यही है मंज़र जो कुछ इधर है वही उधर है
- अनिरुद्ध सिन्हा

गदा बना गया इक पल में शह्र यारों को
अजीब चीज़ है ये क़ह्रे-आसमानी भी
- ख़ुर्शीद तलब

जाँ बचाने के लिए मास्क लगाए हुए हैं
लेकिन आँखो की ख़मोशी नहीं देखी जाती

देखा जाता नहीं मय्यत की ये तदफ़ीन का ढंग
बिना काँधे कोई अर्थी नहीं देखी जाती
- ज़मीर दरवेश

प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश में व्यापक परिवर्तन हुआ :

मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
ये कला भी देश ने पहचान ली

मास्क, सैनीटाइज़र बनने लगे
देश ने किट की चुनौती मान ली
- रमेश 'कँवल'

कोरोना काल में हमारी आवश्यकताएँ अत्यंत ही सीमित हो गयी हैं :

बस दाल रोटी और दवा की है अब तलब
इसके अलावे और तो ख़र्चे ही बंद हैं
- अनिल कुमार सिंह

दाल रोटी और दवाई के सिवा क्या चाहिए
लॉक डाउन में मेरे भाई भला क्या चाहिए

शर्ट, टाई, पैंट पहने कोई अब फ़ुर्सत कहाँ
अब नहाना, खाना, सोना है सखा क्या चाहिए
- रमेश 'कँवल'

कोरोना से बचने के लिए घर में रहने का मशविरा देखिये :

ज़िंदगी के सफ़र में रहो !
इसलिए आप घर में रहो !
-अशोक अंजुम

लॉक-डाउन की उपलब्धियाँ पर भी इक निगाह करिए :

मुफ़्लिसों के वास्ते है लॉकडाउन त्रासदी
और अमीरों के लिए तो ख़ुशनुमा इतवार है
-नज़्म सुभाष

'कँवल' मेरी अहलिया की ख़िदमत रखे है घर में मुझे सलामत
मैं लॉक डाउन की मस्तियों में लतीफ़ ग़ज़लें सुना रहा हूँ
- रमेश 'कँवल'

लॉक-डाउन में घर में रहने और मास्क लगाने की नसीहत दी जाने लगी; बार-बार हाथ धोते रहने या सैनीटाइज़र के लाभ बताये जाने लगे। मेरा मक़्ता देखिये :

लगे हैं मास्क चेहरों पर धुले हैं हाथ साबुन से
'कँवल' ने आज सैनीटाईजिंग के लाभ बतलाए
- रमेश 'कँवल'

इस बीच तब्लीग़ी जमात के लोगों ने धर्म के नाम पर अफ़वाह फैलाने का काम शुरू किया। वे मुसलमानों को मस्जिद में एकत्रित होने पर एवं एक दूसरे को गले लगाने पर कोई नुक़सान न होने का दावा करने लगे। इलाज न कराने और इलाज करने वाले डॉक्टरों पर थूकने-पीटने का आह्वान करने लगे। डॉक्टरों के आने पर घरों में छुप जाने लगे :

थूकें, पीटें, पत्थर फेंकें
फिर भी मुल्क़ परस्त हो गये

छिप जाते हैं तहख़ानों में
ये चूहे मदमस्त हो गये

'जीत' सभी क़ानून वतन के
क्यों इतने हैं पस्त हो गये
- डॉ. ब्रम्ह्जीत गौतम

कुछ मसीहा जब गले मिलने लगे
मौत ने दहशत की चादर तान ली
- रमेश 'कँवल'

स्कूल कॉलेज सब बंद कर दिए गए

हर रोज़ लौट जाती हैं रो-रो के तितलियाँ
फुलवारियाँ खुलीं तो हैं बच्चे ही बंद हैं - अनिल कुमार सिंह

लोगों को जब कोई रास्ता नहीं सूझा तो वे भगवान् से प्रार्थना करने लगे :

मेरी विनती है गिरधर यही आपसे
इस वबा को जहाँ से भगा दीजिए

जाने कितने भटकते हैं परदेश में
इनको अपनों से दाता मिला दीजिए - राज बाला 'राज'

कोरोना त्रासदी को देखते हुए नसीहतें दी जाने लगीं :

आज सबकी नज़र से बचो
कल जो सबकी नज़र में रहो ! - अशोक अंजुम

रोटियों के लाले पड़ने लगे। इंसान की बेबसी तो देखिये ,

डस्टबिन में से जो चुपके से उठा लेता है
बूढ़े हाथों में वो रोटी नहीं देखी जाती - ज़मीर दरवेश

किसी के वास्ते कुछ भी नहीं रोटी,
किसी के वास्ते हैं रोटियाँ सब कुछ ! - कमलेश भट्ट कमल

शह्र में ज़िंदगी बचे कैसे
गाँव में भी कहाँ कमाई है - गोविन्द राकेश

ख़ुद के हाथों ख़ुद का चेहरा
छूने से हम तो घबराएँ

भूले इश्क़-मुहब्बत भैया
ख़्वाब वबा के आएँ-जाएँ -पवन शर्मा

एक इक करके गुज़रते जा रहे हैं
लोग जो गुज़रा ज़माना चाहते हैं - प्रेम रंजन 'अनिमेष'

इस अवधि में कुछ लोग भूखे-प्यासे ग़रीबों की ख़िदमत के लिए भी आगे आये। उनमें

गुरूद्वारों ने अनवरत लंगर चलाकर इंसानी क़द्रों की भरपूर हिफ़ाज़त की :

गुरूद्वारों की है कल्याणकारी रूप की शोहरत
ग़रीबों, बेसहारों को गुरू लंगर बहुत भाए
- रमेश 'कँवल'

लेकिन '2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' सिर्फ़ कोरोना और नये तेवरों के लिए ही नहीं जाना जायेगा। इसमें दिल की बातें हैं ; दिल से निकलने वाली दुआ और आँखों में पलने वाले ख़्वाब का तज़किरा है। महबूब के आने की ख़ुशी की अक्कासी है, महबूब के हुस्न की तारीफ़ है। विसाल की लज़्ज़त ; प्यार की कामयाबी और प्यार की बेबसी से शराबोर अशआर हैं। सावन की फुहारें और रूमानी मंज़र हैं। आइनों में आँखें हैं। अना और ग़ुरूर के नुक़सान का तज़्किरा है। औरत की मजबूरी है ; वहशत की बात है किसान की फटेहाली के दृश्य हैं। माँ और पिता की महानता का ज़िक्र है तो फ़लसफ़ा भी है। महबूब से गुज़ारिश है तो इत्मिनान रखने के मशविरे भी हैं। शिकवा-शिकायत है, शाइर की बेबसी है। क़िस्मत पर तंज है। सैलाब और सियासत के साथ-साथ सोशल मीडिया के चर्चे भी हैं। जुदाई का दर्द है तो यादों के अल्बम हैं। रात-दिन की परिभाषा है तो बेटी की हैसियत, सामजिक आर्थिक विषमता और भ्रष्टाचार के ज़िक्र से भी परहेज़ नहीं किया गया है। लेकिन हम इब्तिदा करेंगे ख़ुदा से :

ज़र्रे-ज़र्रे में तेरी रहमत है
नूर ही नूर है जहाँ तू है
- डॉ. आरती कुमारी

और ज़िक्र करेंगे ग़ज़ल का :

रखिएगा अश्क आँखों में अपनी संभाल के
रखते हैं हम ग़ज़ल में दिलो-जाँ निकाल के
- डॉ. प्रेम भंडारी

चाहता था गुफ़्तगू तुझसे करूँ
सो ग़ज़ल कहना, बहाना हो गया
- प्रेम किरण

वो ग़ज़ल की किताब जैसी है
लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ मैं कहूँ कैसे
- रणविजय कुमार श्रीवास्तव

अपनी ग़ज़लों में समेटूँ तो समेटूँ कैसे
प्यार तेरा तो मिरी रूह का सरमाया है
- डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

दिल का जो दुश्मन है वो दिल में ही रहता है। आइये इस दिल की चर्चा करें :

दिल चुराना हमें आता है बहुत ख़ूब मगर
आये जब उनके मुक़ाबिल ये हुनर भूल गए - पंकज गर्ग

बिन दिए दस्तक चले आये हो दिल में
कुछ तो शिष्टाचार होना चाहिए था -अजय अज्ञात

ज़हन में लाख ताले लगवा लो
दिल तो है बेईमान, खुलता है - ज़ाहिद अबरोल

आप यूँ कीजिए सब भुला दीजिए
अपने दिल से हमें अब रिहा कीजिए - कुमार पंकजेश

शब्दों ने जब भावों से गठजोड़ किया
कितनी है इस दिल में हलचल क्या बोलूँ - डॉ. भावना

दिल के दरवाज़े पर हुई दस्तक
अलसुबह किसने ये सदा दी है - धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

हमारा दिल भी है स्टोर-रूम के जैसा
यहाँ पे टूटी हुई हसरतें मिलेंगी तुम्हें - मोहसिन आफ़ताब केलापुरी

डिलीट कर दूँगा उसके ग़म को मैं दिल के अब लैपटॉप से ही
ख़ुशी के जितने मिले हैं DATA उन्हें मैं दिलबर के नाम लिख दूँ - रमेश 'कँवल'

अब दिल से निकलने वाली दुआ और आँखों में पलने वाले ख़्वाब का तज़्किरा करते हैं :

दुआ

मेरे वजूद का आधार सलामत रक्खे
ख़ुदा हमेशा तेरा प्यार सलामत रक्खे - के.पी.अनमोल

आँखें

उसकी आँखों में एक हलचल है
उसके दिल में बसी है चाहत क्या - कुँवर कुसुमेश

एक सागर छुपा है आँखो में
सिर्फ़ आँसू छुपा नहीं होता - जगजीत क़ाफ़िर

ख़्वाब

नींद ख़्वाबों के डर से रूठ गई
ख़्वाब पलकों पे आ के टूट गया
- मंसूर उस्मानी

हर शख़्स परीशाँ है पथराई सी हैं आँखें
ख़्वाबों की हथेली पर तूफ़ान की चिट्ठी है
- राजेश कुमारी राज

ख़्वाब पूरे हों और महबूब के जल्वानुमा होने की ख़बर आ जाये तो देखिये :

उनके आने की हमको ख़बर क्या हुई
बाद मुद्दत के हम तो सँवरने लगे
- अजय नमन

हर तरफ़ नूर जैसे बिखरा है
आपका आना बेमिसाल हुआ
- आराधना प्रसाद

महबूब का हुस्न काबिले-तारीफ़ होता ही है :

बारिशों में जब वो गीले हो गये
जिस्म के मंज़र नशीले हो गये
- ज़फ़र सिद्दिक़ी

जिस समुन्दर में उतरा वो शोला बदन
उस समुन्दर की सब मछलियाँ जल गयीं

बर्फ़ मैंने समझ के छुआ था उसे
देखिये हाथ की उँगलियाँ जल गयीं
- डॉ. एहसान शाम

चन्दन का बदन अपना बारिश में भिगोते हो
बरसात के मौसम में क्या आग लगानी है

शहकार है क़ुदरत का वो शोख़ हसीना भी
तरशा हुआ पैकर है भरपूर जवानी है
- डॉ. मुजाहिद फ़राज़

फूल, ख़ुशबू, हवा की बातें हैं
उसकी बातें बला की बातें हैं

उससे मिलकर हम ताज़ा हो जातें हैं
उसमें मौसम एक सुहाना रहता है
- प्रताप सोमवंशी

विसाल की लज़्ज़त ऐसी होती है कि आशिक़ को जन्नत का गुमाँ होने लगता है, ज़िन्दगी में मसर्रत के रंग भरने के सिवा उसे कुछ नहीं सूझता :

आज वो हैं हमारे पहलू में
लोग कहते इसी को जन्नत क्या - कुँवर कुसुमेश

रंग कुछ ज़िंदगी में भरने दो
मैं हूँ ख़ुशबू, मुझे बिखरने दो

कौन ज़िंदा है कौन मुर्दा है
फ़ैसला दूसरों को करने दो - देववंश दुबे

उसकी नज़रों में सावन की फुहारें और रूमानी मंज़र तैरने लगते हैं :

फुहारें बारिश की

ज़ुल्फ़ों से किया करती हैं अटखेलियाँ मेरी
रुख़सार मेरा छू के सताती हैं फुहारें

सावन में नहीं जब भी पिया साथ हो 'नूतन'
तन-मन में बहुत आग लगाती हैं फुहारें - डा. नूतन सिंह

रूमानी मंज़र

तुम्हारी पलकें झुकी हुई हैं तुम्हारे लब थरथरा रहे हैं
तुम्हारी ठोड़ी को उँगलियों से मैं धीरे-धीरे उठा रहा हूँ - रमेश 'कँवल'

महबूब को मुख़ातिब करते हुए इल्तिजा की रानाई तो देखिये ; गुज़ारिश के अल्फ़ाज़ पर तो एक नज़र डालिए :

मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंटों के नाम लिख दूँ
हिना से रौशन हथेलियों पर नज़र के दिलकश पयाम लिख दूँ

अगर इजाज़त हो जानेमन तो किताबे-दिल के हर इक वरक़ पर
मैं सुबहे-काशी की रौशनी में अवध की मस्तानी शाम लिख दूँ

बदन पे सावन की है इबारत, नज़र में दोनों की एक चाहत
मिरे लबों को जो हो इजाज़त, वफ़ा का पहला सलाम लिख दूँ - रमेश 'कँवल'

विज्ञान व्रत की गुज़ारिश की कशिश और लज़्ज़त का लुत्फ़ उठाइये :

मुझ पर कर दो जादू-टोना
एक नज़र ऐसे देखो ना

इतने दिन में घर आये हो
घर जैसे कुछ देर रहो ना

तुमसे ख़ुद को वापस क्या लूँ
रक्खो अब तुम ही रक्खो ना
- विज्ञान व्रत

इश्क़ की बेबसी और लोगों की फ़रमाइश का मज़ा लीजिये

जो लिखा था तुमको पाने के लिए
सब वही कहते हैं गाने के लिए
- कुंदन आनंद

एक मुद्दत हो गयी तुमको मिले, बातें किये
चंद पल रुक जाओ जी लूँ तुमको जी भर देखकर
- कविता विकास

हमसे तो इश्क़ में कुछ भी नहीं करना आता
हद तो ये है कि गुज़ारिश नहीं करनी आती
- ज़मीर दरवेश

बोलते रहिए, बोलते रहिए
आपके लब से फूल झड़ते हैं
- डॉ. प्रेम भंडारी

भूल जाऊँ मैं सारी दुनिया को
इतनी शिद्दत से याद आया कर

क्या ज़रूरी है कुछ बहाना हो
हमसे वैसे भी रूठ जाया कर
- मंसूर उस्मानी

और एक गुज़ारिश ऐसी भी

यूँ न देखो कि हार जाएँ हम
अपना किरदार आज़माने में
- मनोज कुमार मित्तल ‘कैफ़’

इतनी ख़ूबसूरत गुज़ारिशें यक़ीनन प्यार की कामयाबी से रूबरू न कराएँ तो क्या करें :

लगाकर होंठ वो होंठों से मेरे
हदों को पार करना चाहता है - गौरव कुमार नायक

ख़ुशियों का मेरे होंठों से इक जाम लिया है
मुझसे ही मुहब्बत भरा पैग़ाम लिया है - डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

तुम अपने जिस्म के सफ़हात खोल कर देखो
मेरे लबों से लिखी आयतें मिलेंगी तुम्हें - मोहसिन आफ़ताब केलापुरी

यहीं क़िस्मत के लिए कुछ उटपटांग बातें कहने का जी करता है

मेरी क़िस्मत लिखने वाला
ख़ुद हाथ दिखाता फिरता है

क़िस्मत में तो मैं लाया हूँ
तू तो बस दिल में आया था - मंगल सिंह 'नाचीज़'

लेकिन कभी-कभी सब कुछ ठीक नहीं चलता। अना और ज़िद की दीवार से टकराकर प्यार के मनसूबे चकनाचूर हो जाते हैं। अना पर चंद अशआर मुलाहिज़ा फ़रमाएँ।

अना

अना दिल पे तारी हुई जा रही है
मुहब्बत पे भारी हुई जा रही है

थी चाहत दिलों में जो दोनों तरफ़, अब
जुदा बारी-बारी हुई जा रही है - कृष्ण सुकुमार

वो भी मुमकिन है न आने के बहाने ढूँढे
और अब हमसे बुलाया भी नहीं जाएगा - डॉ. अब्दुल क़ादिर

दिल का आईना हक़ीक़त के चट्टानों से टकराकर चकनाचूर हो जाता है :

इतने चहरे थे उसके चेहरे पर
आइना तंग आके टूट गया - मंसूर उस्मानी

तेरा चेहरा दिखाई देता है
सहमा-सहमा है आइना मुझसे - रेखा किंगर 'रौशनी'

जान देते हैं सच पे मरते हैं
आइने भी कमाल करते हैं - डॉ. प्रेम भंडारी

और उस समय जुदाई का मंज़र आँखों के सामने तकलीफ़ देने लगता है :

हम भुला न पायेंगे इस मक़ाम को कभी
बस यहीं से हम इधर और वो उधर गये - धर्मेन्द्र गुप्त साहिल

प्यार की बेबसी मन मसोस कर रह जाती है :

है मालूम अब तू हमारा नहीं है
मगर तेरे बिन भी गुज़ारा नहीं है - अशोक अंजुम

अपनी उल्फ़त के आशियाने में
दिन कटे रूठने मनाने में - गौरव कुमार नायक

ग़म भी, ख़ुशी भी, आह भी, आँसू भी, रंज भी
सबको जगह मिली है मेरी दास्तान में - डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'

हाल अपना जो छुपाऊँ तो छुपाऊँ कैसे
वो तो बाहर ही नहीं दिल के भी अंदर देखें - डॉ. प्रेम भंडारी

कितनी बेरंग फ़िज़ा लगती है
तुमको देखे तो ज़माना गुज़रे

प्यार की राह वफ़ा की बातें
बेख़ुदी के वो ज़माना गुज़रे - डॉ. शँकर प्रसाद

वो महकती कोई हवा-सी थी
वो जिधर गयी मैं उधर गया - देववंश दुबे

किसी को क्या बताऊँ क्या हुआ है
ज़रा सी बात पर रूठा हुआ है

मेरे साँसों की गर्मी कम हो कैसे
वो सर से पाँव तक भीगा हुआ है - पंकज गर्ग

एक उदासी लिपटी छत के पंखे से
और कमरे में घूम रहा है सन्नाटा - रश्मि शर्मा

यहीं रात-दिन नागवार गुज़रने लगते है :

रात बेचैन सी कोई रुत है
और दिन इंतज़ार का मौसम - डॉ. आरती कुमारी

रात और दिन का ये इंतज़ार यादों के एलबम के सुनहले वरक़ बनाने लगते हैं :

ये गठरी तेरी याद की ले रखी है
कभी बोझ दिल से उतारा नहीं है - अशोक अंजुम

जल गई फिर तवे पे ही रोटी
तेरी यादों ने सब भुलाया है - डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'

कितना ख़ाली सा हो गया था मैं
दिल से यादें तेरी जुदा करके - डॉ. मुजाहिद फ़राज़

तेरी यादों के दस्तावेज़ अल्बम से निकल आए
मेरी पलकों पे शबनम के दिये सौ बार मुस्काए - रमेश 'कँवल'

शिकवा-शिकायत, दिलो-दिमाग़ पर हावी हो जाते हैं

दूर हमसे हुए कई अपने
एक अपना तुझे बनाने में - गौरव कुमार नायक

है मुहब्बत क़ुबूल करते हैं
आप तो इतना भी नहीं कहते - रश्मि शर्मा

'2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' में 120 सुख़नवरों के कलाम हैं जिनमें 22 महिलाएँ हैं। इन महिलाओं में 1 एम.फ़िल. पी.एच.डी. हैं। एक इलेक्ट्रॉनिक्स में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। एक एम.ए.पी.एच.डी तो दूसरी एम.एससी.पी.एच.डी हैं। 3 डबल एम.ए. हैं। एक अधिवक़्ता, एक डॉक्टर हैं तो एक संगीत में भी पी.एच.डी हैं, एम.एससी.भी 2 हैं। अन्यत्र आपको इनकी योग्यता का अनुमान लग जाएगा। सुख़नवरों में 20 एम.ए. पी.एच.डी. और 50 से ज़्यादा स्नातकोत्तर हैं। 30 से ज़्यादा स्नातक हैं। स्नातक न हो सकने का आनंद सिर्फ़ 8 शाइर ही ले रहे हैं जिन्हें मैं जीनियस मानता हूँ। बला की ताज़गी है इनकी शाइरी में। जहाँ तक उम्र का सवाल है 5 शुअरा

तो 80 या 80+ के हैं। तो 22 साल से 30 साल की आयु वर्ग में भी 4 शाइर हैं। 50 से 60 और 60 से 70 वर्ष की आयु स्लैब में क्रमश: 24 और 37 शाइर हैं। विभिन्न आयु वर्ग के शाइरों ने एक से बढ़कर एक ग़ज़लें कही हैं।

इन नुमाइन्दा शाइरों ने जहाँ माँ पिता और बेटी पर अशआर कहे हैं तो औरत वहशत, सियासत, सोशल मीडिया और इसके असर के दायरे से भी वाक़िफ़ कराया है। फ़लसफ़ा और ग़ुरूर भी इनकी निगाहों से ओझल नहीं हो सके हैं तो सैलाब और किसान पर भी इनकी नज़र गयी है आइये इस गुफ़्तगू को समेटने की ओर चलें :

माँ

हर मुश्किल में एक ठिकाना रहता है
माँ की चोंच में इक-दो दाना रहता है
- प्रताप सोमवंशी

माँ होती है घर में जब
मैं भी बच्चा लगता हूँ
- पवन शर्मा

पिता

पिता ने किस तरह घर के मसाइल हल किये होंगे
मैं इस पर ग़ौर करता हूँ तो नानी याद आती है
- अशोक मिज़ाज

दरवाज़े के पीपल जैसे सब सहते थे बाबूजी
हमें देखकर पढ़ते-लिखते, ख़ुश दिखते थे बाबूजी
- वशिष्ठ अनूप

बेटी

बेटों को परवाज़ की ख़ातिर छोड़ा ख़ुद
बेटी पर है इतनी सख़्ती, हद है यार
- डॉ. भावना

फ़लसफ़ा

सोचें तो अपनी साँस भी अपनी नहीं, मगर
देखें तो ज़िंदगी में कोई भी कमी नहीं
- डॉ. कृष्ण कुमार नाज़

नीड़ बनी है देह मेरी
जीवन एक परिन्दा है
- देवेन्द्र माँझी

हमें थोड़ी शोहरत क्या मिलती है हमें ग़ुरूर होने लगता है जिससे हम अपने आप में घुटन महसूस करने लगते है :

आप इतने ग़ुरूर में क्यों हैं
मिल गई आपको है शोहरत क्या
- कुँवर कुसुमेश

कस रही है ग़ुरूर की टाई
वरना इतनी घुटन नहीं होती
- अशोक मिज़ाज

औरत और वहशत पर चर्चित ग़ज़लकार और वेब पत्रिका 'आंच' की संपादक डॉ. भावना से आप ज़रूर सहमत होना चाहेंगे :

कभी हँसती, कभी रोती, कभी चुप्पी लगाती है
ये औरत रोज़ छल-बल की लड़ाई हार जाती है - डॉ. भावना

आप निर्भया (बलात्कार–हत्या) काण्ड एवं ऐसे अनेक मामलों में नाबालिग़ों पर छाई वहशत को नहीं भूल सके होंगे :

बालिग़-नाबालिग़ सब वहशत की ज़द में
आज हृदय है कितना घायल क्या बोलूँ - डॉ. भावना

खोजी कुत्ते घर-घर जाकर ढूँढ रहे
और छुपे हैं घर में वहशी, हद है यार - डॉ. भावना

किसान की दयनीय स्थिति किसी से छुपी नहीं है। हर साल सैकड़ों किसानों की आत्महत्या की पड़ताल करते 2 शे'र मुलाहिजा फ़रमाइए :

डभकते भात की ख़ुशबू उड़ा कर ले गया कोई
किसानों की कटोरी में तो पतली दाल आती है - डॉ. भावना

बाज़ार में तो ख़ूब है क़ीमत अनाज की
मत पूछियेगा फिर भी कमाई किसान से - नकुल गौतम

टीवी और सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों की हनक भी आप 2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लों में महसूस करेंगे :

वक़्त से पहले ही बालिग़ हो गये
आज के सब बच्चे टीवी देखकर - ज़फ़र सिद्दिक़ी

रक़्स करती अप्सराएँ पारदर्शी वस्त्र में
संत जन दिखने लगे हैं काम के अवतार में - वशिष्ठ अनूप

एक जुमला वो जो कल तुमने कहा था, उसने
ख़ून से रँग दिए ख़न्जर तुम्हें मालूम है क्या - गोविन्द गुलशन

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और सामजिक आर्थिक विषमता को उजागर करने से भी हमारे

सुख़नवर भयभीत नहीं हुए है :

बिन तोहफ़ा के काम नहीं कर सकता है
दफ़्तर का ये बाबू जो सरकारी है — डॉ. पंकज कर्ण

रोज़ दिखाता ख़्वाब मुनाफ़े का 'पंकज'
ये शासक है या कोई व्यापारी है — महेश कटारे 'सुगम'

आपका काम किया है तो निकालो रिश्वत
आपके शुक्रिया आभार की ऐसी-तैसी — नज़्म सुभाष

जिस 'छोटू' की ख़ातिर थे क़ानून तमाम
उसको बरतन अब भी धोना पड़ता है — पवन शर्मा

शाम ढले का सौदा मैं
कितना सस्ता लगता हूँ

स्लम हैं, फुटपाथ, ठेले शहरों में
गाँवों में कौन सा ठिकाना है ?

ग़ौर से देखो इस मरी माँ को
इसके सपनों में एक बच्चा है — देवेन्द्र आर्य

इसके पहले कि हम सियासत की खुरदरी, नुकीली और अव्यावहारिक ज़मीन पर आपको उतारें हम आपको सैलाब की लहरों में डूबने-उतरने को छोड़ देते हैं। नदियों का अपनी सीमा लांघना तो अलग बात है अब तो मामूली बरसात से भी शहर-दर-शहर बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। रास्ता तक नहीं बचता। हाँ ! चारों तरफ़ पानी के बीच पीने का पानी ढूँढना मुश्किल हो जाता है :

आ गया सैलाब सारे शह्र में
सारे दरिया के किनारे खो गये — गोविन्द राकेश

बारिशें चाहे जितनी हो जाएँ
आने-जाने का रास्ता तो रहे — अनिरुद्ध सिन्हा

नलों की टोटियाँ सूखी हुई हैं
मुह्ल्ले में मगर पानी भरा है — प्रताप सोमवंशी

सियासत की ज़मीन पर उतरने से पहले आपको झूठ बोलना, चेहरा बदलना, आपसी रिश्ते-नाते भुलाना, मतलबी होना, फ्री का अभ्यस्त होना, पड़ोसी का हाल-चाल न लेना जैसे तथाकथित सद्गुणों को सीखना होगा :

झूठ गर अब तक नहीं तू सीख पाया बोलना
इस जनम में सीख पाएगा सियासत भी नहीं — - मधुवेश

सबक़ ज़िंदगी ने मुझे ये सिखाया
सियासत में चेहरा बदल कर उतरना — - कृष्ण सुकुमार

तुम हमें और कितना बाँटोगे
हम तो पहले से ही बँटे हुए हैं — - ख़ुर्शीद तलब

सब मतलब में मस्त हो गये
रिश्ते-नाते ध्वस्त हो गये

हम घेरेंगे सड़क, बग़ीचे
सी.ए.ए. से त्रस्त हो गये

फ़्री बिजली, फ़्री पानी पाकर
हम फ़्री के अभ्यस्त हो गये — - डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

तालियाँ बजने लगीं इस बार जब उसने कहा
हम लिखेंगे शान्ति का अध्याय अब तलवार से

मर गया परसों पड़ोसी भूख से लड़ते हुए
ये ख़बर मुझको मिली है आज के अख़बार से — - नज़्म सुभाष

पाँचवी फ़ेल था जो आज बना है मंत्री
डिग्रियों से लदे हुशियार की ऐसी-तैसी — - महेश कटारे सुगम

सत्य को फाँसी लगानी थी, यही था फ़ैसला
झूठ ने इसके लिये मुझको बुलाया क्या करूँ

मंदिरों की, मस्जिदों की, थी ज़रूरत ही कहाँ
बस इन्हीं के नाम पर सबको लड़ाया क्या करूँ — - प्रमोद रामावत प्रमोद

और आख़िर में 'आँखों का पानी' तो नहीं ही होना चाहिए

सय्याद कर रहे हैं चमन वालों से सवाल
शाख़ों से उड़ के सारे कबूतर कहाँ गये - नवीन सी चतुर्वेदी

लेकिन हमेशा ऐसे ही हालात तो नहीं रहेंगे। सियासत में भी तबदीली आएगी और ज़रूर आएगी। ये दावा देखिये :

जिस जगह से जुदा हुआ पत्ता
एक पत्ता वहीं से निकलेगा - राजेश कुमारी राज

और समाज में वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करना शुरू कीजिए

ये सच है अब ये बूढ़े पेड़ कोई फल नहीं देते
मगर ये छाँव हैं जिनके तले स्कूल चलते हैं - प्रताप सोमवंशी

मोहतरम दोस्तो ! जब मैंने '2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' हेतु ग़ज़लों के संकलन का श्रीगणेश किया तो ये मुश्किल कार्य आसान बनाने वाले दोस्तों की तलाश के क्रम में मुझे जयपुर के श्री नीरज गोस्वामी और मुंगेर के श्री अनिरुद्ध सिन्हा का प्रशंसनीय सहयोग मिला। ये देश के एक से बढ़कर एक ग़ज़लकारों की ग़ज़लें मुझ तक पहुँचाते गए और मैं उन्हें अपने लैपटॉप में महफ़ूज़ करता गया। मुश्किल काम दोस्तों की मेहरबानी से आसान होता गया। इसी बीच मेरी माँ का निधन 22 जुलाई, 2020 को हो गया। माँ जिसे हम सभी भाई-बहन माई कहते थे। माई जिसके सपने हम सभी भाई-बहन अपने पूरे मनोयोग से पूरा करने में जुटे रहे। माई के सपनों ने हमें एक साधारण से परिवार से उठाकर देश के उच्च्य वर्गीय समाज में उठने-बैठने लायक़ बनाया। मुझे याद है जब मैं संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की प्रतिस्पर्धाओं में पीछे रह जाता था तो माँ कैसे मुझे हौसलों के पंख लगाकर पुन: उड़ान भरने के लिए प्रेरित करती थीं। मुझे याद है जब मैं पीली बत्ती वाली सरकारी गाड़ियों में सफ़र करता था तो उसके चेहरे पर कितना संतोष और कितनी प्रसन्नता के भाव और बिम्ब उभरते थे। हालाँकि सभी सुख वैभव भोगकर 92 वर्ष की आयु में मुझे मिलने के लिए बुलाने के 3 घंटे बाद वे स्वर्ग सिधार गयीं (मैं समय पर उनसे मिलने नहीं पहुँच सका) उनके जाने के बाद मैं काफ़ी हताश, निराश और उदास हो गया था। लेकिन दोस्तों ने मिलजुल कर मुझे मातृशोक सहने की शक्ति दी एवं इससे उबरने के योग्य बनाया।

मेरी माँ विदुषी महिला थीं। वाल्मीकि रामायण और राम चरितमानस उन्हें कंठस्थ थे। संगीत में उनकी रूचि थी। वे बैंजो बजाती थीं और ढोलक की थाप पर लोक गीत गाने के लिए बहुत मशहूर थीं। वे प्रोफ़ेशनल नहीं थीं लेकिन गाँव-घर की साँस्कृतिक गोष्ठियों और वैवाहिक अवसरों पर उन्हें सादर आमंत्रित किया जाता था।

मैं कृतज्ञ हूँ श्री अनिल कुमार सिंह, आई.पी.एस(से.नि.) और श्री हबीब मुर्शिद ख़ान की अगुवाई में सभी मित्रों का जिन्होंने तीन दिन तक WhatsApp पेज पर मुझे सांत्वना दिया।

मुझे आत्मिक आभार प्रकट करने दीजिये मित्रवर नीरज गोस्वामी एवं बंधुवर अनिरुद्ध सिन्हा जी का जिनके सहयोग के बिना ये संग्रह आपके हाथों में नहीं आ पाता।

2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें आपको कैसी लगीं ये मुझे ज़रूर बताइए ताकि हम आपके ख़यालों की चाँदनी में इसे निहार सकें।

शुक्रिया ! वंदेमातरम्

श्री गणेश चतुर्थी

22 अगस्त, 2020

रमेश ‘कँवल’

rameshkanwal78@gmail.com

धरोहर

हफ़ीज़ बनारसी : एक परिचय

नाम	: मुहम्मद अब्दुल हफ़ीज़
उपनाम/तख़ल्लुस	: हफ़ीज़
अवतरण (जन्म तिथि)	: 20 मई, 1933
अवतरण स्थल (जन्म स्थान)	: मदनपुरा, बनारस
अवसान (मृत्यु)	: सोमवार, 16 जून, 2008 सुबह 7 बजे
अवसान स्थल	: मुहल्ला बाज़ार सदानंद, मदनपुरा, बनारस
शरीक-ए-हयात	: श्रीमती सालेहा ख़ातून

ख़िदमत : सेवा निवृत होने तक महाराजा कॉलेज एवं वीर कुँवर सिंह, विश्वविद्यालय आरा में अंग्रेज़ी के विभागाध्यक्ष रहे

अदबी ख़िदमात :

किताब का नाम	**प्रकाशन का साल**
गुलदस्ता-ए-दुआ	1968
दरख़्शाँ (ग़ज़लें, नज़्में, क़तआत)	1969
बादा-ए-इरफ़ाँ (हम्द-ओ-नात)	1974
क़ौल-ओ-क़सम (क़ौमी और वतनी नज़्में)	1975
बंदा-ए-मोमिन	1981
ग़ज़ालाँ (ग़ज़लें)	1984
क़सीदा-ए-नबी-ए-रहमत	1993
सफ़ीर-ए-शहर-ए-दिल (ग़ज़लों, नज़्मों का कुल्लियात)	2007
जलवा-ए-इमाँ (हम्द-ओ-नातिया कलाम)	ज़ेरे-तरतीब
फ़रमान-ए-मुस्तफ़ा (अहादीस-ए-नबी का रुबाइयात में तर्जुमा)	ज़ेरे-तरतीब

इनआम और सम्मान

दरख़्शाँ पर बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनआम : 1971

पत्नी और माँ के साथ हज पर : 1974

क़ौलो-क़सम पर उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल : 1975

उर्दू अकादमी का इनआम ऑल इंडिया मीर अकादमी, लखनऊ की तरफ़ से : 1981

इम्तियाज़-ए-मीर 'अवार्ड' ग़ज़ालाँ पर बिहार उर्दू अकादमी, पटना का इनआम : 1986

इंडियन सोशल कल्चरल एँड लिटरेचर आर्गेनाईज़ेशन कोलकाता की तरफ़ से ISCLO अवार्ड : 1986

मिल्लत सोसाइटी बनारस की तरफ़ से 'शाने-मिल्लत अवार्ड' : 1997

बनारस से काशी रत्न अवार्ड : 2000

मदर हलीमा फाउंडेशन बनारस की तरफ़ से 'निगार-ए-बनारस' अवार्ड : 2003

संकलन : रमेश कँवल

❀

लहू की मय बनाई, दिल का पैमाना बना डाला
जिगर दारों ने मक़्तल को भी मयख़ाना बना डाला

हमारे जज़्ब-ए-तामीर की कुछ दाद दो यारो
कि हमने बिजलियों को शम्म-ए काशाना बना डाला

सितम ढाते हो लेकिन लुत्फ़ का एहसास होता है
इसी अंदाज़ ने दुनिया को दीवाना बना डाला

भरी महफ़िल में हमने बात कर ली थी उन आँखों से
बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला

मेरे ज़ौक़े-परस्तिश की करिश्मा-साज़ियाँ देखो
कभी काबा, कभी काबा को बुतख़ाना बना डाला

शिकायत बिजलियों से है न शिकवा बादे –सरसर से
चमन को ख़ुद चमन वालों ने वीराना बना डाला

चलो अच्छा हुआ दुनिया 'हफ़ीज़' अब दूर है हमसे
मुहब्बत ने हमें दुनिया से बेगाना बना डाला
(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 17)

अपनी पलकों पे किसी शाम सजा लो मुझको
मैं अगर रूठ गया हूँ तो मना लो मुझको

सोच के गहरे समंदर से निकालो मुझको
दम घुटा जाए है अब कोई बचा लो मुझको

मैं अगर फूल नहीं हूँ तो शरारा भी नहीं
अपने दामन में बिला ख़ौफ़ छुपा लो मुझको

अब तो ले दे के तुम्हीं एक सहारा हो मेरा
छोड़ के जाओ न यादों के उजालो मुझको

लब पे आया जो कोई हर्फ़े-गिला तो कहना
शमअ की तरह सरे-बज़्म जला लो मुझको

कल यही वक़्त कहीं मेरा तलबगार न हो
अहदे-हाज़िर की अमानत हूँ संभालो मुझको

आऊँ नीचे तो सलामत न रहे मेरा वजूद
इतना ऊँचा न मेरे यारो उछालो मुझको

'शिकवा-ए-दर्द ही करते रहे हम लोग 'हफ़ीज़
दर्द कहता रहा संगीत में ढालो मुझको
(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 297)

❀

❀

दिल परीशाँ नज़र है आवारा
किसलिए हर बशर है आवारा

फूँक कर अपना घर मुहब्बत में
ज़िन्दगी दर-ब-दर है आवारा

किसकी ज़ुल्फ़ों को छू के आई है
क्यों नसीम-ए-सहर है आवारा

कुछ तुम्हारा शबाब है चंचल
कुछ हमारी नज़र है आवारा

चाँदनी है ज़मीन पर रक़्साँ
आसमाँ पर क़मर है आवारा

ज़हनो-दिल, आरज़ू, ख़यालो-ख़्वाब
इन दिनों घर का घर है आवारा

क्या उसे रास्ते पे लाये कोई
फ़ितरतन हर बशर है आवारा

है तेरे इंतज़ार में मंज़िल
तू सरे-रहगुज़र है आवारा

क्या दिखायेगा राह-ए-रास्त 'हफ़ीज़'
ख़ुद अगर राहबर है आवारा

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 326)

इक शगुफ़्ता गुलाब जैसा था
वो बहारों के ख़्वाब जैसा था

पढ़ लिया हमने हर्फ़-हर्फ़ उसे
उसका चेहरा किताब जैसा था

दूर से कुछ था और क़रीब से कुछ
हर सहारा सराब जैसा था

किस क़दर जल्द उड़ गया यारो
वक़्त रंगे-शबाब जैसा था

कैसे गुज़री है उम्र क्या कहिये
लम्हा-लम्हा अज़ाब जैसा था

क्या ज़माना था वो ज़माना भी
हर गुनाह जब सवाब जैसा था

कौन गर्दानता उसे क़ातिल
वो तो 'इज़्ज़त-मआब' जैसा था

जब भी छेड़ा तो इक फ़ुग़ाँ निकली
दिल शिकस्ता रुबाब जैसा था

उसके रुख़ पर नज़र ठहर न सकी
वो 'हफ़ीज़' आफ़ताब जैसा था

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 348)

❀

❀

आस्तीनों में ख़ँजर मिले
दोस्त दुश्मन से बढ़कर मिले

हमने जिनको गुल-अफ़्शाँ किया
उनके हाथों से पत्थर मिले

क़ातिलों को जो ढूँढा गया
सब मसीहाओं के घर मिले

उफ़ रे ये दौरे-तिश्ना-लबी
सूखे-सूखे समंदर मिले

तेरा दामन न हमको मिला
ख़ाक में कितने गौहर मिले

मन में झाँका तो गँगा मिली
मन में डूबे तो शँकर मिले

याद आई ख़िज़ाँ की बहुत
फ़स्ले-गुल में वो मंज़र मिले

अब वो कुर्सी नशीं हैं 'हफ़ीज़'
अब मिज़ाज उनका क्यूँ कर मिले

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 339)

दूर अँधेरा हुआ रौशनी आ गयी
आप आये नई ज़िन्दगी आ गयी

कोई इक दूसरे का शनाशा नहीं
हाय किस मोड़ पर ज़िन्दगी आ गयी

क्या निज़ामे-चमन है ज़रा देखिये
कोई रोया, किसी को हँसी आ गयी

इस क़दर बढ़ गईं उनकी ख़ुदबीनियाँ
इश्क़ वालों में भी ख़ुदसरी आ गयी

या नज़ारों में वो जाज़बीयत नहीं
या हमारी नज़र में कमी आ गयी

ग़ैर का ज़िक्र था ग़ैर की बात थी
आपकी आँख में क्यूँ नमी आ गयी

चाँद-तारे भी हैं महवे-हैरत 'हफ़ीज़
बढ़ते-बढ़ते कहाँ बँदगी आ गयी

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 57)

क्या जुर्म हमारा है बता क्यों नहीं देते
मुजरिम हैं अगर हम तो सज़ा क्यों नहीं देते

तुमको तो बड़ा नाज़-ए-मसीहाई था यारो
बीमार है हर शख़्स, दवा क्यों नहीं देते

किस दश्त में गुम हो गए अहबाब हमारे
हम कान लगाये हैं सदा क्यों नहीं देते

कमज़र्फ़ हैं जो पी के बहकते हैं सरे-बज़्म
महफ़िल से उन्हें आप उठा क्यों नहीं देते

क्यों हाथ में लरज़ाँ है तुम्हें ख़ौफ़ है किसका
हम हर्फ़े-ग़लत हैं तो मिटा क्यों नहीं देते

कुछ लोग अभी इश्क़ में गुस्ताख़ बहुत हैं
आदाब-ए-वफ़ा उनको सिखा क्यों नहीं देते

नग़मा वही नग़मा है उतर जाए जो दिल में
दुनिया को 'हफ़ीज़' आप बता क्यों नहीं देते

(सफ़ीरे-शहरे-दिल : पृष्ठ 308)

श्रद्धांजलि

कोरोना दंश

नाम : कैलाश झा किंकर

जन्मतिथि : 22-01-1962 **निधन** : 13 जुलाई, 2020

शिक्षा : एम. ए. (इतिहास), एल. एल. बी.

प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल की पुस्तकें*-(1) हम नदी की धार में (2) देखकर हैरान हैं सब (3) ज़िन्दगी के रंग हैं कई (4) मुझको अपना बना के लूटेगा (5) दूरी न रहेगी (6) ग़ज़ल तो गाँव घर तलक पसर गयी (7) छूट जाए वो दामन नहीं हूँ। *यंत्रस्थ*-(8) बड़ी उदास है ये रात। *कविता की पुस्तकें*- (1) संदेश (2) दरकती ज़मीन (3) कोई-कोई औरत (लघु खण्ड काव्य) (4) ईमान बचाए रखते हैं

गीत की पुस्तकें- (1) तीनों भुवन की स्वामिनी (2) चलो पाठशाला।

अँगिका की प्रकाशित पुस्तकें-(1) जत्ते चलै चलैने जा (2)ओकरा कोय सनकैने छै (3) जानै जौ कि जानै जाता (4) जे होय छै से बढ़ियें होय छै (5) ऋतु सुरभि संदेश, **दरकती ज़मीन,** कोई-कोई औरत,

सम्मान / पुरस्कार : उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, झाड़खंड और नेपाल की साहित्यिक संस्थाओं से शताधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त

समझना है नहीं समझा हुआ है
हमारे साथ फिर धोखा हुआ है

ज़रूरी बात करनी थी चमन से
मगर ये बाग़ तो उजड़ा हुआ है

खड़े थे लोग जो कैसे न मरते
सुना विस्फोट इक तगड़ा हुआ है

हमें वो लूटता मासूम बनकर
सयाना आज का बच्चा हुआ है

अकेला आदमी क्या-क्या करेगा
तरद्दुद में बहुत दुबला हुआ है

जिधर देखें उधर ख़ामोशियाँ हैं
नज़ारा हर तरफ़ बदला हुआ है

❀

सुबह से नाम तेरा जप रहा हूँ
विरह की आग में मैं तप रहा हूँ

नहीं सुनता है कोई बात मेरी
यहाँ बेकार ही मैं खप रहा हूँ

ख़ुशी है, हर जगह है नाम मेरा
सभी अख़बार में मैं छप रहा हूँ

नहीं मल्लाह कोई है यहाँ पर
बिना नौका, नदी में टप रहा हूँ

ग़लत सारे यहाँ के बटखरे हैं
इन्हीं से आज मैं भी नप रहा हूँ

❀

मुझे भी आपने समझा नहीं है
मेरे अन्दर कभी झाँका नहीं है

बुराई क्यों किसी की मैं करूँगा
बुराई में ये दिल रमता नहीं है

न मज़हब-जाति से होते पराये
जो अपना है वो भी अपना नहीं है

सभी जीवों में उनका वास केवल
ख़ुदा-ईश्वर कभी लड़ता नहीं है

सदा जो काम को सज्दा करेगा
ज़माने में कभी मरता नहीं है

नहीं के सौ बहाने मिल ही जाते
मगर हाँ पर क़दम रुकता नहीं है

जबसे आई है बीमारी गाँवों में
पसरी है हरसू दुश्वारी गाँवों में

कोरोना लेकर आए वो बाहर से
घर में रहने की लाचारी गाँवों में

पनघट सूना, ताल-तलैया एकाकी
बच्चों की खोई किलकारी गाँवों में

अमराई की याद मुझे आती लेकिन
घूम रही गाड़ी सरकारी गाँवों में

खेतों की मेड़ों पर भीड़ नहीं लगती
ठहर गयी है खेती-बारी गाँवों में

बेच रहे घर-घर जाकर सामानों को
ख़ुद्दारी से सब पनसारी गाँवों में

❀

तुम अगर साथ निभाओ किंकर
आ के ये बोझ उठाओ किंकर

बाद मुद्दत के नज़र आए हो
आज कुछ और सुनाओ किंकर

अब तो दूरी ही भली लगती है
पास मुझको न बुलाओ किंकर

मैं तुम्हारी ही ख़ुशी से ख़ुश हूँ
मुझको नज़रों में बसाओ किंकर

इन ग़रीबों की मदद आवश्यक
ख़्वाब मेरे भी सजाओ किंकर

❀

सरोकार

रमेश 'कँवल' के शुरुआती दौर के (पहले) उस्ताद

नाम	: वफ़ा सिकंदरपुरी
जन्म	: 3 मार्च 1943
शिक्षा	: एम. ए. उर्दू कोलकाता विश्वविद्यालय सेवा निवृत
संपर्क	: 12 एन.सी.रोड काकीनाडा, 24 परगना (उत्तर) पश्चिम बंगाल-743126
मोबाइल	: 801 353 0181

वफ़ा सिकंदरपुरी की ग़ज़लें

❀

कोई दीवार न दर बाक़ी है
चलते रहिये कि सफ़र बाक़ी है

धूप हर राह में इस्तादा है
कोई साया न शजर बाक़ी है

अपनी बैसाखियाँ खोने वालो !
दूर तक राहगुज़र बाक़ी है

उड़ते रहना है परिंदों को अभी
आशियानों में शरर बाक़ी है

कोई ख़तरा न सही, अम्न सही
दिल के हर गोशे में डर बाक़ी है

कैसे मौसम ने छुआ पेड़ों को
गुल न पत्ता न समर बाक़ी है

सबकी पहचान कोई बात नहीं
अपनी पहचान अगर बाक़ी है

शिकस्ता बेहिसाब हूँ
वरक़-वरक़ किताब हूँ

मुझी में आ के डूब जा
बज़ाते-ख़ुद चिनाब हूँ

नफ़स-नफ़स बरत मुझे
ख़याल हूँ, न ख़्वाब हूँ

न छू मुझे, न पास आ
हुबाब हूँ, सराब हूँ

बहार से ग़रज़ ही क्या
ख़िज़ाँ का मैं गुलाब हूँ

चढ़ूँ भी क्या, ढलूँ भी क्या
क़मर न आफ़ताब हूँ

न तोड़ रिश्ता–ए-'वफ़ा'
तेरा ही इन्तख़ाब हूँ

❀

सयाने कैसी हरकत कर रहे हैं
कि दीवाने भी हैरत कर रहे हैं

किसी के हाथ आलूदा नहीं हैं
तो क्या पत्थर शरारत कर रहे हैं

बुरा बहुरूपियों को कहने वाले
मुखौटों की तिजारत कर रहे हैं

जहाँ वो हैं वहाँ के बाम-ओ-दर की
तसव्वुर में ज़ियारत कर रहे हैं

उन्हें ज़ख़्मों की रिश्वत लाज़मी है
जो तीरों की वकालत कर रहे हैं

किराये के हैं तख़्त-ओ-ताज जिनके
वही हम पर हुकूमत कर रहे हैं

आख़िरिश हम किस तरफ़ जाने लगे
हमसफ़र चलने से कतराने लगे

ख़ामशी किस शक्ल में आई नज़र
बेतहाशा लोग चिल्लाने लगे

कौन सा है रास्ता ज़ेरे-क़दम
ठोकरों के नाम याद आने लगे

बात कैसी छेड़ दी तनहाई ने
ज़हनो-दिल आपस में टकराने लगे

क्या ख़ता बढ़ते हुए क़दमों ने की
फ़ासले ज़ंजीर पहनाने लगे

आइनाख़ानों के हामी भी 'वफ़ा'
आइने पत्थर के बनवाने लगे

जिद्दते-इज़्हार का जब दर खुला
शे'रो-नग़्मा का नया पैकर खुला

किस क़दर ख़्वाबे-सहर था दिल-फ़रेब
आँख खुलते ही ये क्या मंज़र खुला

क्यों बरहना सर खड़ी हैं बस्तियाँ
क्यों नज़र आता है घर का घर खुला

सर छुपाने पर भी पत्थर आयेंगे
जब तेरे घर ही का है छप्पर खुला

किस क़दर चादर हवस की तंग थी
ख़ैर से पावों छुपा तो सर खुला

किसकी दस्तक, किसकी आहट पर 'वफ़ा'
हर तरफ़ है बाबे-शोरो-सर खुला

आँधियाँ तेज़तर हो गईं
बस्तियाँ नंगे सर हो गईं

हैं हमारी किताबें वही
दास्तानें दिगर हो गईं

बर्फ़ शोले उगलने लगी
वादियाँ पुरख़तर हो गईं

देखकर जज़्बा-ए-रहरवी
मंज़िलें हमसफ़र हो गईं

लब-कुशाई पे थीं बंदिशें
सारी बातें मगर हो गईं

उनका मसकन जिधर है 'वफ़ा'
सारी सम्तें उधर हो गईं

❀

इंतज़ार का अपने अश्क नाम रख देना
इक चिराग़ चौखट पर वक़्ते-शाम रख देना

जब कभी रक़म करना दास्ताने-तनहाई
लफ़्ज़-लफ़्ज़ के अन्दर अज़्दहाम रख देना

दिल ने आरज़ूओं को बार-बार छेड़ा है
दिल में आरज़ूओं के इन्तक़ाम रख देना

मंज़िले-अताकरदा मोहतरम सही लेकिन
रहरवी के हिस्से में एहतराम रख देना

नज़्रे-बेकसी करना ज़हनो-दिल के हंगामे
इक जहाने-बरगश्ता ज़ेरे-दाम रख देना

रह्‌गुज़र ही क़दमों से बार-बार लिपटी है
रह्‌गुज़र में ही अपनी सुबहो-शाम रख देना

मक़्तूल का है ख़ूँ जहाँ ख़ँजर के आस-पास
क़ातिल का भी सुराग़ है उस दर के आस-पास

कुछ लोग हैं सराब से मुहतात इस क़दर
प्यासे भटक रहे हैं समंदर के आस-पास

बेजान सी हवाएँ भी लगती हैं झूमने
जब शोले नाचते हैं किसी घर के आस-पास

मैं टूटकर बिखरने लगा हूँ ख़लाओं में
मुझको तलाश कर महो-अख़्तर के आस-पास

मेरा वजूद मेरे मुक़ाबिल में कुछ नहीं
मिट्टी का इक हिसार है पत्थर के आस-पास

बुझते ही लौ चिराग़ की जाने किधर गया
इक साया था खड़ा मेरे पैकर के आस-पास

❀

❀

इस हक़ीक़त के अलावा और क्या हम लोग हैं
इंतिहा जिसकी नहीं वो इब्तिदा हम लोग हैं

हमसे मिलिए तो सही फिर कीजियेगा फ़ैसला
बेवफ़ा हम लोग हैं या बावफ़ा हम लोग हैं

क्या करेंगे चूमकर ख़ँजर-ब-कफ़ हाथों को हम
ख़ून के धब्बे नहीं, रंगे-हिना हम लोग हैं

मिल गई हो ज़िन्दगी तो इतनी ज़हमत कीजिये
ढूँढ लें हमको भी जीने की अदा हम लोग हैं

हम फ़क़ीरों की गली में कुछ नहीं, कुछ भी नहीं
ख़ाक ही ले जाइए दस्ते-शिफ़ा हम लोग हैं

हम जहाँ भी हैं वहीं महफ़ूज़ रहने दीजिये
वरना चेहरों में चुभेंगे आइना हम लोग है

मौत से पहले मर गया होगा
अपनी नज़रों से जो गिरा होगा

गिर के बिखरा है जो सलीक़े से
अहदे-माज़ी का आइना होगा

जिस तरफ़ जाइए गुमाँ गुज़रे
हादसा हो चुका है या होगा

मेरे होंटों पे क्यों हँसी आई
पूछते हो तो सोचना होगा

था मुसाफ़िर शिकारे-बेसम्ती
कौन जाने किधर गया होगा

नींद में भी थका हुआ मज़दूर
ख़्वाब मेहनत का बुन रहा होगा

❀

❀

शोलों का रक़्स जाने कहाँ इक सवाल था
ता-देर जंगलों में धुआँ इक सवाल था

राहे-सफ़र में गाँव का मंज़र फिसल गया
आँखों के दायरे में मकाँ इक सवाल था

तन्हाइयाँ समेट के जाता कहाँ-कहाँ
क़दमों के साथ-साथ निशाँ इक सवाल था

तर्के-तअल्लुक़ात निभाने के बावजूद
सतहे-यक़ीं के गिर्द गुमाँ इक सवाल था

देती रहीं सदायें मुझे शोरिशें मगर
ख़ामोशियों का हुस्ने-बयाँ इक सवाल था

अच्छा हुआ जुनूँ की पनाहों में आ गया
फ़रज़ानगी में रिश्ता-ए-जाँ इक सवाल था

❀

सूरज की तमाज़त से जो अश्जार जले हैं
आग़ोश में उनकी ही घने साए पले हैं

हैरत न करो हम पे ऐ आसूदा-ए-मंज़िल !
कुछ सोच समझकर ही तो मंज़िल से चले हैं

छेड़ो न इन्हें वरना बिखर जायेंगे हर-सू
थोड़े से अँधेरे जो चिराग़ों के तले हैं

हो जाएँ न मैले ये चमकते हुए क़तरे
दामन में छुपा लो कि ये पलकों में पले हैं

तुम सम्त भी मालूम न कर पाए अभी तक
हम कब से दिया बन के सरे-राह जले हैं

गुलशन की रगो-पै ही में महदूद नहीं हम
सहरा की सदाओं में भी हम लोग ढले हैं

शेवा-ए-नाज़ तो ख़ारों की चुभन रखता है
हाय एहसास कि फूलों सा बदन रखता है

कितना दिल का है तरफ़दार ग़मे-जानाँ भी
मेरे होंटों पे तबस्सुम की किरन रखता है

काश ये बात तख़य्युल की समझ में आये
दर-ब-दर घूमने वाला भी वतन रखता है

कितना मुहतात है वो रस्मे-शनासाई से
अपनी पहचान के माथे पे शिकन रखता है

जाने क्या सोच के साहिल ने कहा मौजों से
डूबने वाला उभरने का भी फ़न रखता है

लोग ही परदा-दरी के हैं तमन्नाई 'वफ़ा'
ग़म तो हर हाल में परदे का चलन रखता है

❀

हम धूप हैं जो सूरते-अशजार खड़े हैं
कुछ लोग समझते हैं कि बेकार खड़े हैं

दीवानों की सफ़ में कई हुशियार खड़े हैं
मालूम नहीं इनको सरे-दार खड़े हैं

आवाज़ किसे दें भी हक़ीक़त की फ़सीलें
ता हद्दे-नज़र ख़्वाब के मे'मार खड़े हैं

कूचे में ही क़ीमत की हदें टूट रही हैं
कुछ मोल नहीं जो सरे-बाज़ार खड़े हैं

क्या हुस्ने-असर कहिये दवा और दुआ का
बालीं पे मसीहाओं के बीमार खड़े हैं

फूलों की तमन्ना में कहाँ आ गए हम भी
हर मोड़ पे काँटों के तरफ़दार खड़े हैं

❀

2020 के नुमाइंदा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शाइरों के)

अनिल कुमार सिंह

एक दो ज़ख़्म नहीं जिस्म है सारा छलनी
दर्द बे-चारा परेशाँ है कहाँ से निकले

-सय्यद हामिद

आराधना प्रसाद

इतनी काई है इन मकानों पर
धूप के पाँव भी फिसलते हैं

-सूर्यभानु गुप्त

कुँवर कुसुमेश

जो डलहौजी न कर पाया वो ये हुक्काम कर देंगे
कमीशन दो तो हिंदुस्तान को नीलाम कर देंगे

- अदम गोंडवी

केशव शरण

सब्ज़ा-ओ-गुल कहाँ से आये हैं
अब्र क्या चीज़ है, हवा क्या है

- ग़ालिब

गोविन्द गुलशन

लाख ग़म सीने से लिपटे रहे नागन की तरह
प्यार सच्चा था महकता रहा चंदन की तरह

- कृष्ण बिहारी नूर

गोविन्द राकेश

सो जाते हैं फुटपाथ पर अख़बार बिछाकर
मज़दूर कभी नींद की गोली नहीं लेते

- मुनव्वर राना

ज़ाहिद अबरोल

ज़रा उभर पस्ती-ए-ख़ुदी से, नज़ारा कर अपनी बेख़ुदी का
ख़ुदी अगर एक आबजू है, तो बेख़ुदी बहर-ए-बेकराना

-भगवान दास शो'ला

डॉ. आरती कुमारी

हमने ही चाहा कि पानी पर चलें हम
अब किसे इल्ज़ाम दें बर्बादियों का

- सुभाष पाठक 'ज़िया'

डॉ. नूतन सिंह

तलाक़ दे तो रहे हो इताब-ओ-क़हर के साथ
मिरा शबाब भी लौटा दो मेरी महर के साथ

- साजिद सजनी लखनवी

डॉ. फ़रहत हुसैन 'ख़ुशदिल'

गला तो घोंट दिया अहले-मदरसा ने तेरा
कहाँ से आये सदा ला इलाह इल लिल्लाह

- अल्लामा इक़बाल

डॉ. राकेश जोशी

ग़रीबों का लहू तो आपकी कारों का डीज़ल है
ग़रीबी मिट गई तो आप क्या रिक्शा चलाएँगे

- हिलाल स्योहारवी

देववंश दूबे

सोचो तो सिलवटों से भरी है तमाम रूह
देखो तो इक शिकन भी नहीं है लिबास में

- शकेब जलाली

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति

किसको बावफ़ा समझें, किसको बेवफ़ा जानें
आप भी हमारे हैं, आप भी हमारे हैं .

- ज़फ़र सिद्दीक़ी, (उस्ताद)

डॉ. प्रेम भंडारी

दुनिया ने तजरिबातो-हवादिस की शक्ल में
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं

- साहिर लुधियानवी

डॉ. ब्रम्ह्जीत गौतम

चढ़ते सूरज से दोस्ती क्या की
अपने साये से हाथ धो बैठे

-दरवेश भारती

डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

ज़िन्दगी हमने यार जी ऐसे
मुँह बनाकर शराब पी जैसे

- देवेन्द्र माँझी

नवीन सी. चतुर्वेदी

तुमने कहा था आओगे जब आयेगी बहार
देखो तो कितने फूल चमेली में आ गये

- तुफ़ैल चतुर्वेदी, (उस्ताद)

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

क़ैदे-हयातो-बन्दे-ग़म अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी ग़म से नजात पाये क्यूँ

- ग़ालिब

प्रेम किरण

ये सरकशी कहाँ है हमारे ख़मीर में
लगता है अस्पताल में बच्चे बदल गये

- शकील जमाली

मंगल सिंह 'नाचीज़'

ये कहाँ की रीत है जागे कोई सोए कोई
रात सबकी है तो सबको नींद आनी चाहिए

- मदन मोहन 'दानिश'

रमेश 'कँवल'

तुम बिन सारी उम्र गुज़ारी
लोग कहेंगे तू मेरा था

- नासिर काज़मीं

प्रेम किरण

ये सरकशी कहाँ है हमारे ख़मीर में
लगता है अस्पताल में बच्चे बदल गये

- शकील जमाली

नवीन सी. चतुर्वेदी

तुमने कहा था आओगे जब आयेगी बहार
देखो तो कितने फूल चमेली में आ गये

- तुफ़ैल चतुर्वेदी, (उस्ताद)

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

हमन हैं इश्क़ मस्ताना हमन को होशियारी क्या?
रहें आज़ाद या जग में हमन दुनिया से यारी क्या?

- कबीर

मधुवेश

दुकानदार तो मेले में लुट गए यारो
तमाशबीन दुकानें लगा के बैठ गए

-दुष्यंत कुमार

रवि खंडेलवाल

ख़ातिर से या लिहाज़ से मैं मान तो गया
झूठी क़सम से आपका ईमान तो गया

- दाग़ देहलवी

राजेश कुमारी 'राज'

हज़ारों शेर मेरे सो गए काग़ज़ की क़ब्रों में
अजब माँ हूँ कोई बच्चा मिरा ज़िंदा नहीं रहता

- बशीर बद्र

शकील हाशमी, सहसराम

फ़रिश्ते मुब्तला-ए-आज़्माइश हों तो चीख़ उठें
ये इंसाँ है जो देता जा रहा है इम्तहाँ अपना

-अल्लामा इक़बाल

शाहजहाँ शाद

रंजिश ही सही दिल ही दु:खाने के लिए आ
आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ

- अहमद फ़राज़

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

क़ैदे-हयातो-बन्दे-ग़म अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी ग़म से नजात पाये क्यूँ

- ग़ालिब

सत्य चंदन

आग ही चाहिए चराग़ों को
चाँदनी से दिये नहीं जलते

- मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

इतने हिस्सों में बँट गया हूँ मैं
मेरे हिस्से में कुछ बचा ही नहीं

- कृष्ण बिहारी 'नूर'

शरद रंजन 'शरद'

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसाँ होना

-मिर्ज़ा ग़ालिब

शुचि 'भवि'

अभी न छेड़ मुहब्बत के गीत ऐ मुतरिब
अभी हयात का माहौल ख़ुशगवार नहीं

- साहिर लुधियानवी

हिमकर श्याम

एक मुद्दत से तिरी याद भी आई न हमें
और हम भूल गए हों तुझे ऐसा भी नहीं

- फ़िराक़ गोरखपुरी

संकलन एवं प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

2020 के नुमाइंदा सुख़नवरों के पसंदीदा अशआर (दीगर शाइरात के)

अनिल कुमार सिंह

वो अक्स बन के मिरी चश्मे-तर में रहता है
अजीब शख़्स है पानी के घर में रहता है

- बिस्मिल साबरी

आराधना

वो तो ख़ुशबू है हवाओं में बिखर जाएगा
मसअला फूल का है फूल किधर जाएगा

- परवीन शाकिर

कुँवर कुसुमेश

उतरन से आ रही है महक लम्स-ए-यार की
धोबन न धो इसे ये मेरा इस़्तदान है

- रिफ़अत शाहीन

डॉ. आरती कुमारी

ख़्वाहिशें आ के लिपट जाती हैं साँपों की तरह
जब महकता है तेरी याद का संदल मुझमें

- नुसरत मेहदी

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति

वफ़ा-परस्त जहाने-वफ़ा को ले डूबे
अजीब बात है बंदे ख़ुदा को ले डूबे

ये काली-काली घटा जो बरसने वाली है
मज़ा तो जब है, किसी पारसा को ले डूबे

- शाहजहाँ बानो 'याद'

केशव शरण

यूँ बिछड़ना भी बहुत आसाँ न था उससे मगर
जाते-जाते उसका वो मुड़कर दुबारा देखना

- परवीन शाकिर

गोविन्द गुलशन

यूँ मुहब्बत निभाई जाती है
फूल मुरझाया मर गई ख़ुशबू
- ख़ुशबू सक्सैना

गोविन्द राकेश

किस शख़्स का दिल मैंने दु:खाया था कि अब तक
वो मेरी दुआओं का असर काट रहा है
- परवीन शाकिर

ज़ाहिद अबरोल

दरून-ए-ख़ैमा ही मेरा क़याम रहना था
तो मीर-ए-फ़ौज ने लश्कर में क्यों लिया था मुझे
- परवीन शाकिर

डॉ. ब्रम्ह्जीत गौतम

पत्थर तो पूजने से ख़ुदा हो गया मगर
एक आदमी है आदमी जैसा नहीं हुआ
- 'हिना' हफ़ीज़

डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

ये जी में था कि निकल जाऊँ तुझसे दूर कहीं
कि तेरे ध्यान की बाँहों ने मुझको घेर लिया
- बिस्मिल साबरी

मंगल सिंह 'नाचीज़'

अभी तो चाक पे जारी है रक़्स मिट्टी का,
अभी कुम्हार की नीयत बदल भी सकती है
- अलीना इतरत

डॉ. नूतन कुमारी सिंह

मेरी साँसों से आ जाए भीनी-भीनी आग की ख़ुशबू
जैसे जोगी की धूनी से उड़ती है बैराग की ख़ुशबू
- डॉ. मधुरिमा सिंह

डॉ. प्रेम भंडारी

कैसे कह दूँ कि मेरा साथ उसने छोड़ दिया
बात तो सच है मगर बात है रुसवाई की
- परवीन शाकिर

डॉ. फ़रहत हुसैन 'ख़ुशदिल'

मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी
वो झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा
- परवीन शाकिर

डॉ. राकेश जोशी

मजबूरियों के नाम पे सब छोड़ना पड़ा
दिल तोड़ना कठिन था मगर तोड़ना पड़ा
- अंजुम रहबर

देववंश दूबे

हवा तो हम-सफ़र ठहरी समझ में किस तरह आए
हवाओं का हमारी राह में दीवार हो जाना
- अदा जाफ़री

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

मैं सूरज की तरह हूँ धूप ओढ़े
और अपने आप पर ख़ुद सायबाँ हूँ
-परवीन शाकिर

प्रेम रंजन 'अनिमेष'

मैं सच कहूँगी मगर फिर भी हार जाऊँगी
वो झूठ बोलेगा और लाजवाब कर देगा

- परवीन शाकिर

मधुवेश

एक आकाश, एक सूर्य, एक ही मौसम
फिर क्यूँ मेरे शहर में दो तरह सुबह होती है

- परवीन शाकिर

रमेश कँवल

कहने वाला ख़ुद तो सर तकिए पे रख कर सो गया
मेरी बेचारी कहानी रात भर रोती रही

- अज़ीज़ बानो दाराब 'वफ़ा' लखनवी

राजेश कुमारी राज

इक बार जिसे चाट गई धूप की ख़्वाहिश
फिर शाख़ पे उस फूल को खिलते नहीं देखा

- परवीन शाकिर

शरद रंजन 'शरद'

नुक़ूश पाँव के लिखते हैं मंज़िल-ए-ना-याफ़्त
मेरा सफ़र तो है तहरीर मेरी राहों में

- फ़हमीदा रियाज़

हिमकर श्याम

जाने किस वक़्त कूच करना हो
अपना सामान मुख़्तसर रखिए

-निकहत इफ़्तिख़ार

प्रेम किरण

आख़िरश वो भी कहीं रेत पे बैठी होगी
तेरा ये प्यार भी दरिया है उतर जायेगा

- परवीन शाकिर

रवि खंडेलवाल

तक़दीर सूखे पत्तों की भी क्या है दोस्तो
थोड़े से चरमराए औ' मुट्ठी में आ गये

- डॉ. भावना

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

अभी तो चाक पे जारी है रक़्स मिट्टी का
अभी कुम्हार की नीयत बदल भी सकती है

- अलीना इतरत

शाहजहाँ शाद

कमाल-ए-ज़ब्त को ख़ुद भी तो आज़माऊँगी
मैं अपने हाथ से उसकी दुल्हन सजाऊँगी

- परवीन शाकिर

शुचि 'भवि'

दो क़दम क्या चले इक सफ़र के लिए
रास्ते रूक गये उम्र भर के लिए

- अदीबा रहमान

संकलन एवं प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

सुख़नवर

नाम : अकमल नईम सिद्दीक़ी
जन्म तिथि : 13 अप्रेल 1974
शिक्षा : B.Sc., B.Ed., B.A. (Add.Urdu Lit.), M.A. (Urdu), M.A. (Hindi), M.A. (English), M.A. (Islamic Studies), R.K.C.L., D.N.Y.S.
प्रकाशित पुस्तकें : अकमल उर्दू रहनुमा, फ़न्ने-तालीम और नफ़्सियात, अदबी ख़ुलासे, खज़ीना-ए-उर्दू, हिन्दुस्तान में उर्दू, तदरीस-ए-ज़बान-ए-उर्दू, रहनुमा-ए-मुअल्लिम, रीट क्वेश्चन बैंक, तैयारी जीत की

सम्मान/पुरस्कार : समाज रत्न सम्मान (अल्पसंख्यक अधिकारी कर्मचारी महासंघ, राजस्थान), ज़िला कलेक्टर (जोधपुर) द्वारा प्रशंसनीय सेवाओं हेतु 3 बार पुरस्कृत, सिपासनामा (**शहर ख़तीब**, जोधपुर), सम्मान पत्र (जोधपुर निर्वाचन कार्यालय, जोधपुर)

व्यवसाय : अध्यापन कार्य, वरिष्ठ उर्दू अध्यापक, राजकीय महात्मा गाँधी उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर

संपर्क का पता : गली नंबर 5, निकट फ़ैज़े-आम मस्जिद, जी सैक्टर, प्रताप नगर, जोधपुर (राजस्थान)-342001

मोबाइल/व्हाट्स एप : 9413844624 **ई मेल** : vedandquraan@gmail.com

ब्लॉग : akmal-articles.blogspot.com / www.completeurduguide.blogspot.com

यूट्यूब चैनल : akmal urdu rehnuma channel

तुम्हारी यादों के कितने मंज़र
हैं चाँद, सेहरा, धनक, समुन्दर

न कोई बाक़ी रहा जहाँ में
दिलेर, सरकश, क़वी, धुरंधर

है दिल कि बहरूपिया कोई है
कभी है मजनूँ कभी क़लंदर

ख़लिश, उदासी, मलाल और ग़म
हैं दामने-इश्क़ तेरे अन्दर

मता-ए-दुनिया तो बेवफ़ा है
कि हाथ मलते गया सिकंदर

तेरे ख़यालों की ख़ुशबूएँ हैं
गुलाब, ख़स, मुश्क और अम्बर

❀

हमने किसी भी ज़ख़्म का चर्चा नहीं किया
हमने किसी अज़ीज़ को रुसवा नहीं किया

ताउम्र झूठ हमने भी बोला नहीं कभी
पर अपनी पारसाई का शोहरा नहीं किया

इब्लीस की निगाह भी हर बार झुक गई
हमने ख़ुदा के नाम पे क्या-क्या नहीं किया

हमने किसी के काम को इन्कार कब किया
लेकिन किसी ने काम हमारा नहीं किया

करना था जो भी काम वो करके गुज़र गए
यूँ बार-बार हमने इरादा नहीं किया

हर दम रहा चिराग़ अँधेरे में दोस्तों
अपने लिए कभी भी उजाला नहीं किया

❀

ख़याल-ए-महबूब ही शिफ़ा है
फ़िराक़ की बस यही दवा है

तुम्हारे आरिज़ का चूमना क्या
तुम्हारी काकुल का मशग़ला है

ख़िरद सलामत न होश बाक़ी
तुम्हारी सोहबत में वो नशा है

सुकून-ए-दिल हम जिसे थे समझे
वो दर्द का एक सिलसिला है

किसी भी मंज़िल पे जब मैं पहुँचा
पता चला ये तो इब्तिदा है

ये सुर्ख़ आँखें बता रहीं हैं
कि अब्रे फ़ुरक़त बरस चुका है

लब के खुलते ही जो दन्दान नज़र आते हैं
जितने गौहर हैं पशेमान नज़र आते हैं

क्या क़यामत का समाँ है ये तही-दस्ती भी
सब शनासा मुझे अन्जान नज़र आते हैं

जब तेरा हाथ मेरे हाथ को छू लेता है
मुझको खंडहर भी परिस्तान नज़र आते हैं

देखकर आपके चहरे की बशाशत हमदम
जितने गुल हैं सभी हैरान नज़र आते हैं

थक गए हैं वो गुनाहों को रक़म कर-कर के
अब फ़रिश्ते भी परेशान नज़र आते हैं

जितने क़ुदरत के मनाज़िर हैं हमें तो अकमल
सब तेरे हुस्न के दीवान नज़र आते हैं

❀

मैं इतना भी बे-वक़अत-ओ-बेकार नहीं हूँ
सरकार जो बाँटे वो पुरस्कार नहीं हूँ

रोग़न है, न बाती है, न फ़ानूस कोई है
लड़ने को हवाओं से मैं तैयार नहीं हूँ

नज़रों को झुकाने पे जो मजबूर बना दे
मैं ऐसी किसी शै का तलबगार नहीं हूँ

हर बार फ़क़त झूठ का परचार करे जो
मैं दौरे-तरक्क़ी का वो अख़बार नहीं हूँ

माँ-बाप की शफ़क़त का है सर पर मेरे साया
कैसे कोई कह दे कि मैं ज़रदार नहीं हूँ

परवाज़ में डाले जो ख़लल आपकी अकमल
मैं ऐसी रिवायत का तरफ़दार नहीं हूँ

❀

नाम : अक़ील नोमानी
जन्म तिथि : 19 मई, 1958
शिक्षा : बी. ए.
प्रकाशित कृतियाँ : 1. परवाज़ का मौसम 1991 (ग़ज़लें , नज़्में), 2. सरमाया 2001 (ग़ज़लें), 3. रहगुज़र 2010 (देवनागरी में ग़ज़लें), 4 रक़्स-ए-तनहाई 2017 (ग़ज़लें)
सम्मान : 1. ख़ानक़ाही अवार्ड, 2. दुर्गा सहाय सुरूर अवार्ड, 3. साहित्य विभूति सम्मान, 4. मो. अली जौहर अवार्ड
सेवा निवृत्त : सिंचाई विभाग उ.प्र. से सेवा निवृत
पता : नोमानी स्ट्रीट, मीरगंज, ज़िला बरेली - 243504
मोबाईल / व्हाट्सएप : 94121 43718, 94119 73800
ई मेल : nomaniaqeel@gmail.com

बाक़ी है बू गुलों के बिखरने के बाद भी
ज़िन्दा बहुत से लोग हैं मरने के बाद भी

थकते नहीं हमारे ख़यालात के क़दम
सौ बार उस गली से गुज़रने के बाद भी

शिददत वही रहेगी मेरे एहतिजाज में
उसके सितम का सामना करने के बाद भी

तूफ़ाने-कशमकश में भी मायूस हम नहीं
तुम रो रहे हो पार उतरने के बाद भी

ख़ूब उनकी नफ़सियात से वाक़िफ़ हूँ मैं 'अक़ील'
ख़ुद को निडर जो कहते हैं डरने के बाद भी

चाँद, तारे, आस्माँ, सूरज, ज़मीं कुछ भी नहीं
वहम है सब कुछ हक़ीक़त में कहीं कुछ भी नहीं

जो दिखाई दे रहा है वो नज़र का है फ़रेब
हाँ मगर इससे जुदा इससे हसीं कुछ भी नहीं

अपने होने या न होने की दलीलों के लिए
मुस्तनद उम्मीदो-इम्कानो-यक़ीं कुछ भी नहीं

उम्र भर भटके ख़यालो-फ़िक्र के सहरा में हम
और हासिल क्या हुआ, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं

कैफ़ियत दिल की कुछ ऐसी है कि मेरे वास्ते
आजकल दिल से ज़ियादा दिलनशीं कुछ भी नहीं

वो अंधेरे जो ख़फ़ा रहते हैं दिन-भर मुझसे
रात को जश्न मनाते हैं लिपटकर मुझसे

लाख आईना-मिज़ाजी को छुपाया मैंने
दुश्मनी फिर भी निभाते रहे पत्थर मुझसे

पाल रक्खे हैं कई ख़ौफ़ बदन में उसने
अब वो मिलता है बहुत सोच-समझकर मुझसे

मेरी नज़रों के तसव्वुर से चमक जाते हैं
इतने मानूस हैं इक शहर के मंज़र मुझसे

साथ देती है मेरा, सुस्तजवाबी अक्सर
हार जाते हैं सवालात के लश्कर मुझसे

मैं झिझकते हुए पढ़ता हूँ जिसे महफ़िल में
लोग सुनते हैं वही शेर मुक़र्रर मुझसे

है कोई मौजे-बलाखेज़ जो कहती है 'अक़ील'
मैं समन्दर से परेशाँ हूँ समन्दर मुझसे

ये चमत्कार तो होने से रहा
तू वफ़ादार तो होने से रहा

यूँ ही समझो तो समझ लो हमको
हमसे इज़हार तो होने से रहा

इक ख़रीदार के मर जाने से
बन्द बाज़ार तो होने से रहा

उसके ग़म पर ही गुज़ारा कीजे
उसका दीदार तो होने से रहा

कोई खो जाये तो मिल जाये कोई
ऐसा हर बार तो होने से रहा

जो समझदार समझता है मुझे
वो समझदार तो होने से रहा

अभी तक हूँ उन्हीं दीवारो-दर में कुछ नहीं बदला
अलावा उम्र के मुद्दत से घर में कुछ नहीं बदला

शगुफ़्ता है तेरा ग़म आख़िरी मंज़िल पे आकर भी
मुझे हैरत है सदियों के सफ़र में कुछ नहीं बदला

महकते, मुस्कुराते खेत हँसती खेलती झीलें
वो सब मंज़र हैं वैसे ही, नज़र में कुछ नहीं बदला

बस इक तेरे अलावा और सब वैसा का वैसा है
वही हम हैं, वही सौदा है सर में, कुछ नहीं बदला

मुझे तस्लीम कुछ तब्दीलियों का मुरतकिब मैं हूँ
मगर मैंने ज़माने के असर में कुछ नहीं बदला

नाम : अखिलेश तिवारी

जन्मतिथि : 27-05-1966

शिक्षा : एम. एस. सी.

लेखन/प्रकाशन : ग़ज़लों के विभन्न प्रतिनिधि समवेत संकलनों (यथा आरंभ-सं.-श्री प्रदीप चौबे, रसरंग-सं.-श्री तुफ़ैल चतुर्वेदी, ग़ज़ल दुष्यंत के बाद-श्री दीक्षित दनकौरी, हिन्दुस्तानी ग़ज़लें-सं.-स्वर्गीय श्री कमलेश्वर, आज के लोकप्रिय कवि-सं.-श्री गोपालदास नीरज आदि) में शामिल। ग़ज़लों का स्वतंत्र संकलन आसमाँ होने को था लोकायत प्रकाशन, जयपुर से 2012 में प्रकाशित।

सम्मान : लखनऊ महोत्सव अन्तर्गत आयोजित युवा महोत्सव 2005 के युवा रत्न सम्मान से सम्मानित।
आकाशवाणी भुवनेश्वर में आयोजित सर्वभाषा कविसम्मेलन-2009 में शामिल।
राजस्थान पत्रिका द्वारा प्रकाशित ग़ज़ल के लिये 2009 में कविता का प्रथम पुरस्कार।
जय साहित्य संसद, जयपुर द्वारा 'गुरू कमलाकर कमल सम्मान'-2009
भगवत शरण चतुर्वेदी सम्मान 2015
कवि सम्मेलनों/मुशाइरों में भागीदारी।

संप्रति : भारतीय रिज़र्व बैंक जयपुर में अधिकारी

पता : फ्लैट नं L-211, ब्लॉक बी-3, वृन्दा गार्डेन्स, जगतपुरा, जयपुर- 302017
Mobile no. : 8090044415 Mail : tiwariakhiles1@gmail.com

❀

बर्क़, बादल, कोह, दरिया, प्यास लिक्खें तब तो है
जब सुलगती रेत का इतिहास लिक्खें तब तो है

हो भी जाऊँ मैं क़लम, पिंदार अपना छोड़कर
धड़कनें ही रूह का एहसास लिक्खें तब तो है

वो जो पहलू आसमाँ में है ज़मीं का देख लें
दूरियों को भी नज़र के पास लिक्खें तब तो है

उम्र भर सैराब करने को रही जो दर-ब-दर
लिख सकें तो उस नदी की प्यास लिक्खें तब तो है

एक मौसम बस ख़िज़ाँ का दर्ज करते रात-दिन
मुझसे ही उभरेगा फिर मधुमास लिक्खें तब तो है

देख पाएँ भीड़ की तनहाई भी 'अखिलेश' जी
या दरो-दीवार में बनवास लिक्खें तब तो है

❀

आती है रात कोई सदा आसमान से
अपनी ही आँख खुल नहीं पाती थकान

देखा था उस पहाड़ से पहले भी एक रूप
अबके मगर अलग ही थी दुनिया ढलान से

हमवार लग रही है मगर सच की है ज़मीन
ख़्वाबों से जब उतरना क़दम रखना ध्यान से

अंधी सुरंग से तो चलो मिल गया फ़रार
लेकिन सवाल ये है अब अपनी अमान से

औरों के तजरिबों से ही बस लौ लगाए हम
अफ़सोस गुज़रे ही नहीं कुल इम्तिहान से

अपने शिकार की ही कमीं-गाह ख़ुद थे हम
हमको मगर ये इल्म कहाँ था मचान से

❀

जिस तरह है चाँद अपनी चाँदनी में तरबतर
दरबदर कब से हूँ यूँ आवारगी में तरबतर

एक बेआवाज़ सहरा का वही मानूस शोर
इक नदी का बहना मुझमें ख़ामशी में तरबतर

खींच तो लाई हमें बाहर उजालों की कशिश
धूप चुभती है मगर अब रौशनी में तरबतर

आईने से माँगता है उसके होने का सबूत
रात का बेचेहरा चेहरा तीरगी में तरबतर

जिसका पसमंज़र लिए था रेगज़ारों का तिलिस्म
फिर वो मंज़र है नज़र में तश्नगी में तरबतर

रात बैठी थी सिरहाने झपकियाँ लेती हुई
ख़्वाब पलकों पर थे रौशन शाइरी में तरबतर

फिर ग़ुबारो-गर्द वो ही क़ाफ़िलों का इंतज़ार
मंज़िलों के बाद भी है मंज़िलों का इंतज़ार

मुन्तज़िर बस मेरी ही रहती नहीं तनहाइयाँ
मुझको भी रहता है उनकी महफ़िलों का इंतज़ार

ख़ैर! अब तो डस रही हैं क़ुर्बतों की दूरियाँ
जानलेवा कम नहीं था फ़ासलों का इंतज़ार

बज़्म, आसाइश, लतीफ़े, ख़ुशलिबासी, सब तो है
क्यों है फिर आसानियों को मुश्किलों का इंतज़ार

वो तो बेपरवाह नद्दी थी सो उसने राह ली
रह गया बस रेत होकर साहिलों का इंतज़ार

उम्र-कश्ती, साँस-दरिया, मुझसे मुझ तक का सफ़र
सिलसिला-दर-सिलसिला है सिलसिलों का इंतज़ार

❀

फ़ेहरिस्त तक़ाज़ों की कोई जारी नहीं की
बस इश्क़ किया इश्क़ की तैयारी नहीं की

एहसास के दोज़ख़ में किया मुझसे किनारा
लफ़्ज़ों कोई तुमने भी वफ़ादारी नहीं की

फिर हो ही गए ख़्वाब फ़रार और तरह से
अब यूँ नहीं पलकों ने गिरफ़्तारी नहीं की

वीरानी पलट आई है वहशत को लिए साथ
घर आ के कोई मैंने समझदारी नहीं की

इस बार अलग रोल था हिस्से में हमारे
किरदार थे पर कोई अदाकारी नहीं की

ख़ुद ले के निकल आया सफ़र मुझको मेरी ओर
सहराओं की मैंने तो तरफ़दारी नहीं की

❀

नाम	: अजय अज्ञात
जन्म तिथि	: 24 मार्च 1961
शिक्षा	: मेकेनिकल इंजिनयरिंग
प्रकाशित कृतियाँ	: जुस्तजू, तश्नगी
सेवा निवृत्त	: एन. टी. पी. सी. से
पता	: म. न. 37, सेक्टर 31, फ़रीदाबाद -121003
मोबाईल, व्हाट्सएप	: 9650994445
ई मेल	: ajayagyat@gmail.com

❀

वक़्त के चाबुक का कुछ ऐसा असर दिखने लगा
ज़िंदगी की आँखों में थोड़ा सा डर दिखने लगा

एक सा मंज़र यहाँ शाम-ओ-सहर दिखने लगा
हर बशर लाचार, ख़ुद से बेख़बर दिखने लगा

चल दिये हैं लौटकर, जो भी जहाँ से आये थे
हर किसी के सर पे अब रख़्ते-सफ़र दिखने लगा

ख़्वाब सारे टूटकर जब किरचे-किरचे हो गये
छान छप्पर ही में सबसे अच्छा घर दिखने लगा

जो खुली आँखों से हमको दिख न पाया दोस्तो
बंद आँखों से हमें वो मोतबर दिखने लगा

क्या हिमालय, क्या परिंदे और क्या पर्यावरण
वक़्त के बदलाव का, सब पर असर दिखने लगा

ज़ीस्त के सहरा में कब 'अज्ञात' हम तन्हा हुए
धूप में अपना ही साया हमसफ़र दिखने लगा

❀

हर घड़ी ही घूमती है, हर किसी के आसपास
मौत मंडराती है हरदम, ज़िंदगी के आसपास

मेरी क़िस्मत का सितारा, डूब भी पाया न था
झट से आ बैठे कई ग़म इक ख़ुशी के आसपास

बाग़ की सब तितलियाँ इस बात पर हैरान हैं
'भौंरे क्यों मंडरा रहे हैं, इक कली के आसपास'

ज़िंदगी जीने का जिसको कुछ सलीक़ा ही नहीं
हम नहीं जाते कभी उस आदमी के आसपास

शाइरी से बुझ न पाई, पेट की ये आग जब
मैंने रख छोड़ा क़लम को, डायरी के आसपास

जाने क्यों सब माफ़िके-नादान लेते हैं उसे
आओ थोड़ा चल के हम भी जान लेते हैं उसे

दो घड़ी भी मुस्कुराकर बात कर लेता है जो
आदतन हम, दिल से अपना मान लेते हैं उसे

ख़ुशनुमा रहने का नुस्ख़ा हाथ अपने लग गया
ज़िन्दगी मुश्किल मगर आसान लेते हैं उसे

अपनी तो फ़ितरत ही कुछ ऐसी है के हम क्या कहें
जो भी जिसने कह दिया सच मान लेते हैं उसे

अच्छे से इक बार जिसको देख लेते हम अजय
फिर ढके चेहरे में भी पहचान लेते हैं उसे

❀

❀

कम से कम इक बार होना चाहिए था
तुमको मुझसे प्यार होना चाहिए था

जागते-सोते जिसे देखा था मैंने
ख़्वाब वो साकार होना चाहिये था

बिन दिए दस्तक चले आये हो दिल में
कुछ तो शिष्टाचार होना चाहिए था

मसअलों ही से उलझते रह गए तुम
ख़ुद से भी दो-चार होना चाहिए था

नाम और इज़्ज़त कमाने के लिए तो
साहिबे-किरदार होना चाहिये था

कुछ तो हम भी लुत्फ़ ले पाते सफ़र का
रास्ता पुरख़ार होना चाहिए था

मैं सोचता हूँ बनूँ साहिबे-हुनर कैसे
मेरे कलाम का क़ायल हो हर बशर कैसे

ये पूछता है मेरा पोता बारहा मुझसे
ज़रा-सा बीज था जो, बन गया शजर कैसे

कटी पतंग के जैसी है ज़िन्दगी अपनी
भटकते फिरते हैं बेजा इधर-उधर कैसे

वो साथ चलते रहे और दूरियाँ रक्खीं
बताएँ क्या कि मिले हमको हमसफ़र कैसे

अजय ने थाम लिया है ग़ज़ल के दामन को
भला ये फैल गयी शह्र में ख़बर कैसे

❀

नाम : अजय नमन
जन्मतिथि : 8 जून 1990
शिक्षा : बी. एस. सी., एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ: अप्रकाशित
सम्मान/पुरस्कार : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रोत्साहन प्रमाण पत्र, क़लमकार साहित्य सम्मान अलीगढ़, परिवर्तन फ़ाउंडेशन संस्थान द्वारा परिवर्तन सम्मान पत्र, पुष्पांजलि प्रकाशन लखीमपुर द्वारा काव्य श्री सम्मान,
व्यवसाय/सम्प्रति : निजी व्यवसाय
सम्पर्क का पता : ग्राम व पोस्ट जहाँगीराबाद ज़िला-सीतापुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 9452973583 (Whatsapp)
ई-मेल : ajay890jswl@gmail.com

❀

अजनबी इक हाथ में पत्थर लिए
है खड़ा ख़ामोश वो उत्तर लिए

जा रहा था जाने किस धुन में मगन
अपने कंधों पर वो अपना घर लिए

मयकदे जो भी मिले बेख़ुद मिले
जाम, मीना तो कोई साग़र लिए

देखकर हालत ज़मीं की हर बशर
आसमाँ पे चढ़ रहा बिस्तर लिए

ले गया कल मीर का दीवान, जो
फिर रहा है हाथ में गौहर लिए

अब बता दे ज़िन्दगी कितने यहाँ
घूमता है आदमी पैकर लिए

दर-ब-दर मैं ढूँढता हूँ छाँव को
अपने सर पर धूप की चादर लिए

क्या कहूँ अब याद में उसकी अजय
जी लिए हैं तो कभी हम मर लिए

देखकर हैरान हूँ अपने निशाँ
ज़िन्दगी ले आई है जाने कहाँ

हँस रहा था कल मुझे जो देखकर
रो पड़ा सुन के वो मेरी दास्ताँ

हैं बहुत सी मुश्किलें माना मगर
छोड़ दी है ज़िन्दगी किसने यहाँ

मौत से कल कह रही थी ज़िन्दगी
चल कहीं ढूँढें कोई दूजा मकाँ

लिख दिया है क्या परिंदों ने अजय
हर कोई जो तक रहा है आसमाँ

आदमी को दे रहा कितने सहारे आसमाँ
दौड़कर जाना पड़ेगा गर पुकारे आसमाँ

मुश्किलें हम भी तो समझें आसमानों की कभी
दर्द सारे सुन रहा कब से हमारे आसमाँ

हाथ में रहते हैं उसके फ़न हज़ारों इसलिए
मुद्दतों से गढ़ रहा है रूप सारे आसमाँ

रौशनी बढ़ती रहे बस इस ज़मीं की इसलिए
हाँ हज़ारों बार अपनी नींद वारे आसमाँ

थम गयी सारी हवाएँ रौशनी भी गुम हुई
कर रहा है जाने क्या-क्या अब इशारे आसमाँ

आदमी के हाथ में कुछ भी नहीं है ऐ अजय
इस ज़मीं के फ़ैसले लेता है सारे आसमाँ

यही बस सोचकर तुम फूल राहों के उठा लेना
बहुत मुश्किल है अपने को यहाँ अपना बना लेना

मुहब्बत है अगर दिल में तो फिर सब कुछ गवारा है
कोई मुश्किल नहीं दुश्मन को सीने से लगा लेना

ख़ताएँ देखकर यारो सज़ाएँ हमने माँगी थी
बहुत मुश्किल से सीखा है सफ़र का यूँ मज़ा लेना

यहाँ कल ईद है तेरी, मेरी होली भी आएगी
ये सब त्यौहार ख़ुशियों के ज़रा मिलकर मना लेना

यही बस सोचकर रिश्ते सभी मैं तोड़ आया हूँ
मुझे दुनिया से क्या मतलब, मुझे दुनिया से क्या लेना

मुहब्बत का सफ़र है ये 'अजय' चलना संभलकर अब
ज़रा बहकी हवाओं से यहाँ ख़ुद को बचा लेना

क्या बताऊँ कि क्या आज करने लगे
लोग अपनी ही सूरत से डरने लगे

उनके आने की हमको ख़बर क्या हुई
बाद मुद्दत के हम तो सँवरने लगे

अब कटेगा सफ़र कैसे ये रात का
जब अंधरों से जुगनू भी डरने लगे

देर तक खिड़कियों ने भी आवाज़ दी
उनकी गलियों से हम जो गुज़रने लगे

जिनकी चाहत ने हमको संवारा कभी
उनकी चाहत में अब हम बिखरने लगे

जब भी बिखराये दाने ज़मीं पर अजय
शाख़ से फिर परिंदे उतरने लगे

नाम	: अनिरुद्ध सिन्हा
जन्म	: 2 मई 1957
शिक्षा	: स्नातकोत्तर
प्रकाशित कृतियाँ	:17 मौलिक पुस्तकें और 7 संपादित
सम्मान	: बिहार उर्दू अकादमी, राजभाषा सहित दर्जनों सम्मान / पुरस्कार
सम्प्रति	: स्वतंत्र लेखन
पता	: गुलज़ार पोखर, मुंगेर-811201
मोबाइल	: 7488542351
व्हाट्सएप्प	: 9430450098
Email	: anirudhsinhamunger @gmail.com

❀

तहों में दलदल सतह पे साज़िश धुआँ-धुआँ-सा हर एक घर है
झुकी हुई है हमारी गर्दन घरों में रह के भी दिल में डर है

हताहतों से लिपट गए हैं अलग-अलग ये तमाम चेहरे
उदास मौसम, उदास दुनिया, उदासियों में डगर-डगर है

कहाँ है बादल, कहाँ समंदर, कहाँ घटाओं का शोर-ग़ुल भी
सभी परिंदे थके-थके हैं थकन का मौसम शजर-शजर है

है शोर इतना ख़मोशियों का, है बोझ इतना अकेलेपन का
हर एक घर का यही है मंज़र, जो कुछ इधर है वही उधर है

हथेलियों पर पड़े हैं आँसू किसे है फ़ुर्सत जो बढ़ के देखे
जिधर भी देखो बिछी हैं लाशें, ये एक मंज़र नगर-नगर है

❀

किसी की आँख में इक घर तलाशते रहिए
बहुत हसीन-सा मंज़र तलाशते रहिए

जहाँ तलक भी ये सहरा दिखाई देता है
वहीं तक अपना समुंदर तलाशते रहिए

मिलेगी आपको मंज़िल तो अपनी कोशिश से
ये और बात कि रहबर तलाशते रहिए

हमें शिकस्त न देगी समय की ये उलझन
नज़र से मील का पत्थर तलाशते रहिए

बचा हुआ है हमारे लिए यही अब तो
हथेलियों पे मुक़द्दर तलाशते रहिए

अजब अंदाज़ उसकी बात का है
कि कुछ कहकर किसी को तौलता है

किसे मालूम था आँधी से पहले
ये बरगद ख़ुद में कितना खोखला है

न पूछो धूप की शिद्दत का जादू
ये बालू बन के दरिया बह रहा है

तुम्हारे प्यार की ख़ुशबू से भरकर
तुम्हें हमने नया इक ख़त लिखा है

जो बात अपनी किसी से कहलवाए
वो कब अपनी ज़ुबाँ से बोलता है

❀

❀

अजब कश्मकश में पड़ी ज़िंदगी है
विवश घर में रहने को हर आदमी है

मना जश्न जीवन का इस शाम ऐसा
थिरकती अजल है जहाँ रौशनी है

इक-इक लफ़्ज़ में ज़िंदगी की है आहट
नए शे'र हैं ये नई शाइरी है

पुरानी सियासत की कारीगरी से
सवालों में आई नई रहबरी है

वो अंजान-सा है मुझे जानकर भी
वो तब अजनबी था वो अब अजनबी है

आइना है जो आइना तो रहे
कौन क्या है उसे पता तो रहे

खोल दो खिड़कियाँ हवेली की
और कुछ हो न हो हवा तो रहे

झूठ और सच में फ़र्क कर पाएँ
कम से कम इतना हौसला तो रहे

बारिशें चाहे जितनी हो जाएँ
आने-जाने का रास्ता तो रहे

नेकियाँ करके छोड़ जाएँ यहाँ
अपने हिस्से में कुछ बचा तो रहे

❀

नाम	: अनिल कुमार सिंह
जन्म	: 2 जनवरी 1959
शिक्षा	: एम. ए. समाज शास्त्र
प्रकाशित कृतियाँ	: दो गीत ग़ज़ल संग्रह. 'आधी रोटी पूरा चाँद' और 'सन्नाटे की चीख़' समीक्षा प्रकाशन
सम्मान	: बिहार राष्ट्रभाषा साहित्य सेवी सम्मान झारखंड मुख्यमंत्री वीरता पदक
सम्प्रति	: अवकाश प्राप्त भारतीय पुलिस सेवा पदाधिकारी
पता	: प्रशाम्बी सरयुग विहार अपार्टमेंट, पाटलीपुत्र पटना
मोबाइल	: 9431150967
व्हाट्सएप्प	: 9431150967
Email	: anil24garhbaruari@gmail.com

ज़रूरत लाख रक्खूँ बंद मुट्ठी खोल लेती है
कि जैसे बीज की परतों को मिट्टी खोल लेती है

कभी बेरोज़गारी को छुपाना भी जो चाहूँ मैं
तो मेरे राज़ सारे लंबी छुट्टी खोल लेती है

बुरी ख़बरों को मेरे पास आने तक नहीं देती
वो बच्ची डाकख़ाने में ही चिट्ठी खोल लेती है

लड़ाई अपनों के हो बीच और बेटों की बारी हो
तो हर माँ बंद आँखों की भी पट्टी खोल लेती है

कभी जादू की पुड़िया ला के जो देता हूँ नतिनी को
वो छूती तक नहीं खट्टी को, मिट्ठी खोल लेती है

मुनाफ़े की लगी है इसको वो लत के अरे तौबा
सियासत मुर्दघट्टी में भी भट्ठी खोल लेती है

लगाओ कुछ भी पहरे बंद दरवाज़े रखो फिर भी
'अनिल' ये मौत जाने कैसे ढढ्ढी खोल लेती है

अब मौत से ही मौत की भरपाई करें क्या
हम ख़ँजरों से ज़ख़्म की तुरपाई करें क्या

इंसान को तो मुँह भी दिखाने से रहे हम
ख़ुद की ख़ुदा के सामने रुसवाई करें क्या

पाबंदियों को तोड़ के इस दौर-ए-वबा में
ऐ मौत तेरी हौसला-अफ़ज़ाई करें क्या

वो हमसे ही कहते हैं उसे ढूँढ़ के लाओ
अब अपने ही क़ातिल से शनासाई करें क्या

छोटी सी किसी भूल को है भूलना लाज़िम
पर्वत से गुनाहों को तेरे राई करें क्या

इक बार 'अनिल' लगता है ये दिल किसी दिल से
हर दिल से लगाकर इसे हरजाई करें क्या

हम तो समझ रहे थे कि आधे ही बंद हैं
दुनिया के कारोबार तो पूरे ही बंद हैं

दिन-रात, मालो-ज़र की जिन्हें फ़िक्र थी बहुत
उनके मुबाहिसों में ये चर्चे ही बंद हैं

बस दाल-रोटी और दवा की है अब तलब
इसके अलावा और तो ख़र्चे ही बंद हैं

हर रोज़ लौट जाती हैं रो-रो के तितलियाँ
फुलवारियाँ खुलीं तो हैं, बच्चे ही बंद हैं

झूठी इबादतों से ख़ुदा को भी है गिला
काबा-ओ-काशी जाने के रस्ते ही बंद हैं

ये है वबा का दौर ग़ज़ल क्या कहें 'अनिल'
मक़्ते की कुछ न पूछिए मतले ही बंद हैं

दुनिया को इससे बढ़ के तमाशा नहीं मिला
अपनों को अपने से ही सहारा नहीं मिला

मंज़िल पुकारती रही फ़ुर्सत न मिल सकी
फ़ुर्सत मिली तो कोई भी रस्ता नहीं मिला

दरिया जो पास था तो नहीं उसकी क़द्र थी
प्यासा हूँ अब तो एक भी क़तरा नहीं मिला

मैंने बुरे सलूक़ किये थे तुम्हारे साथ
मुझको भी बदले में सिला अच्छा नहीं मिला

मुझ जैसे कितने लोग ज़माने में मिल गये
ता-दम तलाशता रहा तुमसा नहीं मिला

मंज़िल को ढूँढ पाने में सब हो गये हताश
मेले में जैसे खो गया बच्चा नहीं मिला

नदी आई रवानी में मिला रसधार का मौसम
हवाओ ताज़ा दम हो लो ये है श्रृंगार का मौसम

गौरैया फिर चहकने लग गई बाँसों के झुरमुट में
परिंदे झूम कर गायें ये है झंकार का मौसम

ज़रा एहसास घर के मौसमों का भी तो होने दो
हमेशा है नहीं अच्छा, खुले बाज़ार का मौसम

खुले में साँस लेने की नहीं कोई ज़रूरत है
शिफ़ा को है मुआफ़िक़ अब दरो-दीवार का मौसम

महामारी की सूरत में ये है पैग़ाम क़ुदरत का
बदलना है ज़रूरी अब बहुत संसार का मौसम

विषाणु इक हमारी हो गया औक़ात पर भारी
है अपनी ग़लतियों के अब 'अनिल' स्वीकार का मौसम

नाम	: अशोक 'अंजुम'
जन्मदिन	: 25 सितम्बर, 1966
शिक्षा	: बी.एस.सी, एम.ए. (डबल), बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ	: 61 (23 मौलिक, 38 संपादित)
सम्मान/पुरस्कार	: कई दर्जन, विशेष रूप से नीरज पुरस्कार (एक लाख एक हज़ार रुपए), धर्मयुग पुरस्कार (40 हज़ार रु.), काव्य वीणा सम्मान घोषित (51 हज़ार रु.) आदि
व्यवसाय/सम्प्रति	: अध्यापन
पता	: अभिनव प्रयास, स्ट्रीट- 2, चंद्र विहार कॉलोनी (नगला डालचंद) क्वारसी बायपास, अलीगढ़ 202002 (उ.प्र.)
मोबाइल	: 08630744976, 09258779744 (WhatsApp)
ई.मेल	: ashokanjumaligarh@gmail.com

आदमी यूँ आदमी के काम आए
इक दिया ज्यूँ रौशनी के काम आए

आँख में आँसू का बादल रख सलामत
ख़ुश्क हो मौसम नमी के काम आए

कुल जहाँ अपना जिसे माने बने अब
ऐसा मज़हब जो सभी के काम आए

मेरे मौला तेरी क़ुदरत को नमन है
खोदे जो खाई उसी के काम आए

वाक़या ऐसा कोई लाना न ख़बरी
देश में जो सनसनी के काम आए

मत ज़हर घर में कभी रखना मियाँ जो
बेख़ुदी में ख़ुदकुशी के काम आए

ज़िन्दगी सच में फ़क़त वो ज़िन्दगी है
ज़िन्दगी जो ज़िन्दगी के काम आए

है मालूम अब तू हमारा नहीं है
मगर तेरे बिन भी गुज़ारा नहीं है

भँवर है, लहर हैं, घटाएँ हैं, तूफ़ाँ
नज़र में अभी तक किनारा नहीं है

मेरी ज़िन्दगी के सितारे थे तुम ही
जो रस्ता दिखाए सितारा नहीं है

ये गठरी तेरी याद की ले रखी है
कभी बोझ दिल से उतारा नहीं है

बिना तेरे दुनिया अगर मिल भी जाए
बिना तेरे दुनिया गवारा नहीं है

सोचिए, सोचिए, सोचिए
बोलिए, बोलिए, बोलिए

आज दफ़्तर की छुट्टी है क्या
जागिए, जागिए, जागिए

सिर्फ़ तुम, सिर्फ़ तुम, सिर्फ़ तुम
चाहिए, चाहिए, चाहिए

अब ये जाँ आपके नाम है
लीजिए, लीजिए, लीजिए

लोग बातें बनाते ही हैं
छोड़िए, छोड़िए, छोड़िए

बंदिशें, बंदिशें, बंदिशें
तोड़िए, तोड़िए, तोड़िए

ऐसा न हुआ तो कहीं वैसा न हुआ तो !
सोचा किए हैं हम वही सोचा न हुआ तो !

कश्ती को सर पर लेकर चला जा तो रहा हूँ
रस्ते में तेरे घर के जो दरिया न हुआ तो !

खाकर क़सम तुम्हारी मैं मर जाऊँ क़सम से
मर कर भी मेरे प्यार का चर्चा न हुआ तो !

हाँ उससे दोस्ती का मेरा मन तो बहुत है
लेकिन बना के दोस्त जो धोखा न हुआ तो !

हाथों में हाथ लेकर तेरा जाऊँ फ़लक तक
सपना जो मैंने देखा है सपना न हुआ तो!

हम फिर से उसी मोड़ पर मिल जाएँगे 'अंजुम'
पूरा कहीं तेरा जो ये वादा न हुआ तो !

ज़िंदगी के सफ़र में रहो !
इसलिए आप घर में रहो !

आज सबकी नज़र से बचो
कल जो सबकी नज़र में रहो !

ख़्वाहिशें ज़ोर मारें अगर
अब न इनके असर में रहो !

जाने बैरी छुपा है कहाँ
हो सके जितना डर में रहो !

भूल ऐसी न हो आपसे
आप केवल ख़बर में रहो !

नाम : अशोक मिज़ाज

जन्मतिथि : 23 जनवरी 1957

शिक्षा : एम.एससी, रसायन शास्त्र

प्रकाशित कृतियाँ : समन्दरों का मिज़ाज, ग़ज़लनामा, सिग्नेचर, आवाज़, किसी-किसी पे ग़ज़ल मेहरबान होती है, अशोक मिज़ाज की चुनिंदा ग़ज़लें, समंदर आज भी चुप है, मैं अशोक हूँ मैं मिज़ाज भी, सिसकियों की सदा

सम्मान / पुरस्कार : म.प्र. उर्दू अकादमी द्वारा शिफ़ा ग्वालियरी पुरुष्कार, भोपाल से आज का शाइर सम्मान, बिजनौर उत्तर प्रदेश से निश्तर खानकाही ग़ज़ल अवार्ड, शिवपुरी से नई ग़ज़ल अवार्ड, बिहार से स्वर्ण पत्रक सम्मान, नागपुर महाराष्ट्र से साहित्य सृजन सम्मान, उड़ीसा से संकल्प शिरोमणि सम्मान, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की सागर, पन्ना, दमोह और उमरिया शाख़ा द्वारा सम्मान, जबलपुर से शहज़ादा-ए-ग़ज़ल सम्मान, आदि

व्यवसाय /सम्प्रति : रिटायर्ड स्टेट बैंक मैंनेजर

संपर्क का पता : एच-40, शाँति विहार कॉलोनी, मकरोनिया, सागर, मध्य प्रदेश-470004

मोबाइल : 9131077456, 9926346785 (WhatsApp)

ई-मेल : mizajashok@gmail.com

दिल में जब तक चुभन नहीं होती
ज़िंदगानी चमन नहीं होती

कस रही है ग़ुरूर की टाई
वरना इतनी घुटन नहीं होती

जाने किस-किसका क़र्ज़ है इस पर
ज़िन्दगी मूलधन नहीं होती

लोग खेतों में हल चलाते हैं
तुमसे गर्मी सहन नहीं होती

जब तलक घर की चाय मिलती नहीं
दूर अपनी थकन नहीं होती

❀

मैं ग़ज़ल हूँ, मैं कोई आज का अख़बार नहीं
इश्तहारों से मेरा कोई सरोकार नहीं

सब यहाँ आगे निकल जाने पे आमादा हैं
साथ चलने के लिए एक भी तैयार नहीं

टुकड़ों-टुकड़ों में बटी है ये हमारी धरती
आसमानों पे मगर एक भी दीवार नहीं

सब यही सोच के हर काम किया करते हैं
मैं अकेला ही तो दुनिया में गुनहगार नहीं

मैंने माना कि मेरी माँ की ज़ुबाँ हिंदी है
कौन कहता है कि उर्दू से मुझे प्यार नहीं

❀

वो आँगन याद आता है वो तुलसी याद आती है
जहाँ खेले थे बचपन में वो मिट्टी याद आती है

कभी शहनाई बजती थी तो उसकी याद आती थी
और अब शहनाई बजती है तो बेटी याद आती है

वो अपना घर हो या होटल हो या ढाबा हो रस्ते का
कहीं रोटी महकती है तो माँ की याद आती है

बहुत हस्सास होकर जिसने मेरी परवरिश की थी
वो चश्मा याद आता है, वो लाठी याद आती है

पिता ने किस तरह घर के मसाइल हल किये होंगे
मैं इस पर ग़ौर करता हूँ तो नानी याद आती है

कोई भी दिन नहीं ऐसा कि जिस दिन ये नहीं होता
घड़ी जब बाँधता हूँ मैं तो राखी याद आती है

सिखाया था धड़कना जिसने मेरे दिल को दिल देकर
मुझे तन्हाई में अब भी वो लड़की याद आती है

उड़ानें क़ैद हैं अपने परों में
सिमट कर रह गयी दुनिया घरों में

खड़े हैं हर तरफ़ सच्चे सिपाही
कफ़न बाँधे हुए, हमलावरों में

किसे घायल किया है कौन है वो?
समझ इतनी कहाँ है पत्थरों में

मसीहा बन के उभरे हैं वो ऐसे
खिले हों फूल जैसे पतझरों में

उतर आए हैं सब साधू सड़क पर
अजब सी खलबली है रहबरों में

जड़े हैं सबकी तक़दीरों पे ताले
दबी हैं फ़ाइलें सब दफ़्तरों में

❀

अब वो गुड्डे-गुड़ियों के बाज़ार नहीं
बच्चों जैसा बच्चों का व्यवहार नहीं

होली, क्रिसमस, ईद, दशहरा, दीवाली
पहले जैसा अब कोई त्यौहार नहीं

ख़ुशहाली का श्रेय सभी ले लेते हैं
बदहाली का कोई ज़िम्मेदार नहीं

दफ़्तर से तो छुट्टी मिल ही जाती है
महिलाओं के चौके में इतवार नहीं

तू मेरा है, मैं तेरा हूँ पर कब तक
ऐसी बातों का कोई आधार नहीं

अपनी-अपनी दुनिया में है अपनापन
फैला-फैला अपनों का संसार नहीं

❀

नाम : आराधना प्रसाद

जन्मदिन : 23 मई 1974

शिक्षा : शिक्षा स्नातकोत्तर (वनस्पति विज्ञान)

प्रकाशित कृतियाँ : 'आराधना' प्रकाशाधीन

सम्मान/पुरस्कार : पश्चिम बंगाल उर्दू अकादमी द्वारा कई बार सम्मानित, बिहार उर्दू अकादमी द्वारा सम्मानित, बिहार हिंदी साहित्य सम्मलेन द्वारा सम्मानित

व्यवसाय/सम्प्रति : कवयित्री, समाज-सेविका

पता : के-58, पी.सी. कॉलोनी, हनुमान नगर, कंकड़बाग़, पटना

मोबाइल : 7250606100, 7250606100 (WhatsApp)

ई-मेल : aradhanaapra@gmail.com

कैसा है आशिक़ी का मज़ा हमसे पूछिये
उल्फ़त की ज़िन्दगी का मज़ा हमसे पूछिये

आँखों में उसकी डूब के कहते हैं जो ग़ज़ल
पाकीज़ा शाइरी का मज़ा हमसे पूछिये

कहता रहा है प्यासा समुंदर ये बारहा
ताउम्र तिश्नगी का मज़ा हमसे पूछिये

उतरा था अपना चाँद दबे पाँव सहन में
उस रात चाँदनी का मज़ा हमसे पूछिये

होकर अमीर तमग़े मिले होंगे आपको
अपनों में मुफ़्लिसी का मज़ा हमसे पूछिये

बोले बिना ही कहते रहे आप सारी बात
तौबा ये सादगी का मज़ा हमसे पूछिये

ठहरा था पल वो लहरों का छू जाना बार-बार
वल्लाह उस घड़ी का मज़ा हमसे पूछिये

सहें कैसे तुम्हारा फ़ासलों से यूँ गुज़र जाना
कहीं इससे तो वो बेहतर था वादों से मुकर जाना

अगर क़िस्मत से हो जाए तेरी मुझ पर नज़र यारब
ये मेरे दिल की ख़्वाहिश है मेरा भी जाम भर जाना

अगर पूछो के पल-पल मर के जीने से है क्या बेहतर
तुम्हारे प्रश्न का बस एक ही उत्तर है, मर जाना

बड़ी ही साफ़गोई से वो हरदम काम लेता है
जो उल्फ़त हो इधर आना, बग़ावत हो उधर जाना

किया हो इश्क़ तो फिर दिल में कोई दर्द भी उट्ठे
ये मुमकिन ही नहीं पत्थर का पानी से उभर जाना

बहुत बिगड़े हुए हैं हम ज़माने में ज़माने से
बड़ी मुश्किल है आसानी से यारों अब सुधर जाना

अब भी रह पर जो सितमगर नहीं आने वाला
वो मेरे क़द के बराबर नहीं आने वाला

पेड़ जो था यहाँ फलदार उसे काट चुके
अब मेरे घर कोई पत्थर नहीं आने वाला

अपनी मौजों पे न इतराए ये कह दो उससे
मिलने दरिया से समंदर नहीं आने वाला

तुमको चाहत की ज़रूरत है तो बाहर निकलो
उलफ़तें बाँटने वो घर नहीं आने वाला

हौंसलों को मेरे मंज़िल का पता है शायद
अब मेरी राह में कंकर नहीं आने वाला

जिसकी हर बात पे सब लोग हँसा करते हैं
आज सर्कस में वो जोकर नहीं आने वाला

आपका आना बेमिसाल हुआ
यूँ हक़ीक़त कोई ख़याल हुआ

एक ही पल में कुछ धमाल हुआ
इश्क़ अपना भी बा-कमाल हुआ

दर्दे-दिल, ग़म, फ़रेब, रुसवाई
प्यार में ऐसा मेरा हाल हुआ

हर तरफ़ नूर जैसे बिखरा है
आपका आना बेमिसाल हुआ

क्यूँ तसव्वुर से वो नहीं जाता
उसको बिछड़े हुए तो साल हुआ

अजनबी थे तो चैन था न क़रार
सामना जब हुआ कमाल हुआ

चराग़े-इश्क़ जो दिल में जला नहीं सकता
ग़मों की दोस्तों लज़्ज़त वो पा नहीं सकता

वो नक़्श-ए-दिल है, मिरी ज़िंदगी उसी से है
अब और कोई तख़य्युल पे छा नहीं सकता

मिरी वफ़ाओं पे इतना उसे भरोसा है
किसी की बात में हरगिज़ वो आ नहीं सकता

किसी के ग़म से उसे इस क़दर मुहब्बत है
वो चाहकर भी कभी मुस्कुरा नहीं सकता

मिरी हयात को उसने सुकून बख़्शा है
उसे मैं खोने का ख़तरा उठा नहीं सकता

अदबी नाम	: ए.एफ. 'नज़र'
मूल नाम	: अशोक कुमार फुलवारिया
जन्म	: 30 जून 1979
शिक्षा	: एम.ए. (हिंदी साहित्य), नेट, सेट, बी.एड., बी.एस.टी.सी.
प्रकाशन	: 'पहल' ग़ज़ल संग्रह (2012), 'सहरा के फूल' ग़ज़ल संग्रह (2016), 'लोबान' ग़ज़ल संग्रह (2018)
सम्मान/पुरस्कार	: शब्द प्रवाह साहित्य सम्मान-2013, उज्जैन अदबी उड़ान नवोदित साहित्यकार पुरस्कार 2016, उदयपुर, सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत व सम्मानित
सम्प्रति	: व्याख्याता(माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान)
सम्पर्क	: ग्राम व डाक पिपलाई, तहसील बामनवास, ज़िला सवाई माधोपुर, (राजस्थान)-322214
मोबाइल	: 09649718589
email	: af.nazar@rediffmail.com

धरती से अम्बर की हद तक, फैला है दुनिया का सच
अपनी-अपनी आँखें सबकी, सबका अपना-अपना सच

हर आँगन में पहरेदारी, हर दरवाज़े पर चिलमन
आता-जाता हर इक रस्ता, ढूँढ़ रहा खिड़की का सच

सात रंग मुट्ठी में छुपाए, हर आँगन में उतरी धूप
मैंने देखा सुर्ख़ सजीला, तुमने देखा पीला सच

अपना रिश्ता क्यूँकर तोड़ें, झूठी ज़िद की ख़ातिर हम
तुझको प्यारा तेरा सच है, मुझको प्यारा मेरा सच

जिनकी राहों में काँटे हैं, फूलों का सच क्यों मानें
तेरे दिल में तेरा सच है, उनके दिल में उनका सच

मैं भी सच्चा तुम भी सच्चे, ये भी सच है वो भी सच
जिन आँखों ने जैसा देखा, उन आँखों का वैसा सच

❀

गरदनें भी कमाल करती हैं
चाकुओं से सवाल करती हैं

एक वहशत है जिसकी सदियों से
बस्तियाँ देखभाल करती हैं

दुनिया कपड़े बदलती है अपने
सम्तें जब ख़ुद को लाल करती हैं

तेरे आँगन की फ़ाख़्ताएँ अब
मेरे घर में धमाल करती हैं

उसकी आँखों की ख़ैर हो मौला
उसकी आँखें सवाल करती हैं

लम्हा-लम्हा तो अदाकार नहीं हो सकता
कोई हर वक़्त वफ़ादार नहीं हो सकता

किसने बरबाद किया तुमको ज़रा फिर सोचो
और ही होगा वो कुछ प्यार नहीं हो सकता

कितनी ही कोशिशें कर ले ये ज़माना चाहे
इश्क़ फिर इश्क़ है बाज़ार नहीं हो सकता

हर क़दम देखिये फूलों से है रौशन सहरा
आप कहते थे ये गुलज़ार नहीं हो सकता

अपने किरदार को पहचानो मियाँ क्या हो तुम
कोई ज़र्रा यहाँ बेकार नहीं हो सकता

मैं उजालों की हिफ़ाज़त नहीं कर पाया तो क्या
इन अँधेरों का तरफ़दार नहीं हो सकता

❀

❀

मीर मसीहा सब बीमार
जान बचेगी कैसे यार

झूठ का रस्ता अपना ले
सच्चाई को गोली मार

जिसने साहिल छोड़ दिया
उसका होगा बेड़ा पार

हमसाये से मतलब क्या
आँगन से बोली दीवार

ज़हनो-दिल सब चाट गया
भाड़ में जाए ऐसा प्यार

वक़्त मुश्किल है मगर इसको गवारा करिये
और कुछ रोज़ इसी तरह गुज़ारा करिये

जिसकी गलियों में हवा बनके उड़ा करते थे
अब उसी शहर का खिड़की से नज़ारा करिये

आसमाँ अपना सजाने को मिली है फ़ुर्सत
लम्हे-लम्हे को मुहब्बत का सितारा करिये

दर्द बन जाएँगी यूँ तो ये अँधेरी रातें
चाँद को अपने दरीचे में उतारा करिये

बेसबब सड़को पे फिरने से 'नज़र' क्या हासिल
अपने घर के दरो-दीवार सँवारा करिये

❀

नाम : इकराम हुसैन 'शाद'

जन्मतिथि : 05 जनवरी, 1975

शिक्षा : मैट्रिक

प्रकाशित कृतियाँ : कोई नहीं

सम्मान / पुरस्कार : कई साहित्यिक सम्मान,

व्यवसाय /सम्प्रति : कपड़े का डायरेक्ट सेल

संपर्क का पता : चम्बेली चक, थाना + पोस्ट हबीबपुर उर्दू
इस्लामिया स्कूल के नज़दीक, ज़िला
भागलपुर - 813113 बिहार

मोबाइल : 84097 27507 (WhatsApp)

ई-मेल : ekramhusseinshadshad@gmail.com

❀

दर्दे-मुफ़लिस के लिए काम ये करते रहिये
आप कपड़े नये हर रोज़ बदलते रहिये

हम ग़रीबों को ज़रूरत नहीं है मरहम की
पर नमक ज़ख़्मों पे बस आप तो मलते रहिये

वैसे जीने के भी अधिकार कहाँ हैं हमको
हम तो मौक़ा हैं हमें आप निगलते रहिये

हम तो हर वादे पे ख़ुश होगें न बोलेगें कभी
आप वादे से भले रोज़ मुकरते रहिये

हम मरें या कि जियें फ़र्क़ किन्हें पड़ता है
'शाद' मौसम हो कोई आप सँवरते रहिये

यारो क़दम-क़दम पे खड़ा अब ज़वाल है
फिर भी जहान पूछता क्या हाल-चाल है

आसाँ नहीं किसी के लिये अब जहान में
कुछ इस तरह का वक़्त ने पूछा सवाल है

इस दौर की हवा भी है बातिल के साथ अब
चारों तरफ़ अँधेर कहाँ कुछ मलाल है

रंगो में उसके रंग गई ये हवा-ए-बाग़
जादूगरी का उसके अजब ही कमाल है

कॉलेज, अस्पताल है बदहाल देखिये
दैरो-हरम में सिर्फ़ उजाला बहाल है

हालात बद से हो गये बदतर जहान के
आया न 'शाद' फिर भी लहू में उबाल है

लोगों के ज़माने में घटते हुए साए हैं
एहसास इन्हें भी है पर सबसे छुपाए हैं

रफ़्तार ने लूटे हैं सुख चैन मुसाफ़िर के
इस दौरे सितम के तो सब लोग सताए हैं

चेहरे पे कई चेहरे हम बात करें किनकी
जिनसे भी लगाए दिल धोखे ही तो खाए हैं

ये दौरे-सितम कब तक भटकाए अँधेरे में
हम दिल में मुहब्बत के दीपक जो जलाए हैं

मालूम नहीं हमको किस पल में यहाँ हो क्या
तूफ़ान कई मौसम इक साथ उठाए हैं

दिन-रात परीशाँ हैं मर-मर के यहाँ जीते
इक 'शाद' नहीं तन्हा सब लोग सताए हैं

हैवान गर नहीं है तो इंसान भी नहीं
जिसमें वफ़ा-ओ-प्यार का अरमान भी नहीं

इतना यक़ीं तो आपकी बातों से हो गया
हिन्दू नहीं हैं आप मुसलमान भी नहीं

कैसे यक़ीन इनकी किसी बात पर करूँ
जब मीडिया के पास है ईमान भी नहीं

जो न्यूज़ फ़िक्रमंद है लेकिन जला के घर
करते जो रौशनी का समाधान भी नहीं

मजबूरियाँ हैं इनकी या लालच दिलों में है
जो ज़हर घोलकर हैं पशेमान भी नहीं

ये कौन लोग आग में घी 'शाद' डालते
जब हिन्द की ये शान-औ-पहचान भी नहीं

आँधियों में हवेली ये टिकती नहीं
प्यार के रंग में रंगती जो मिट्टी नहीं

ख़ौफ़ उसको सताए भला किसलिए
जिसकी डूबी कभी कोई कश्ती नहीं

ग़मज़दा है जहाँ ज़िन्दगी से मेरी
उसके साँचे में ये जो उतरती नहीं

वो बताएगा मुझको अदब प्यार का
जिसके घर प्यार की खुलती खिड़की नहीं

एक सैलाब आकर बदल जाएगा
सूखती प्यार की ये नदी ही नहीं

'शाद' पर टूटे कितने सितम आज तक
शहर की ये हवा पर बदलती नहीं

नाम : कमलेश भट्ट 'कमल'

जन्म : 13 फ़रवरी 1959

शिक्षा : एम.एस-सी. सांख्यिकी, वर्ष 1979 में

प्रकाशन : विभिन्न विधाओं की कुल 20 पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें 4 कहानी संग्रह-त्रिवेणी एक्सप्रेस, चिट्ठी आयी है, नख़्लिस्तान, आदि काल व अन्य कहानियाँ; 4 ग़ज़ल संग्रह-शंख सीपी रेत पानी, मैं नदी की सोचता हूँ, पहाड़ों से समन्दर तक, शिखरों के सोपान;
3 यात्रा वृत्तांत- सह्याद्रि का संगीत, देवदार के साये में, संस्कृति के पड़ाव ;
2 साक्षात्कार संग्रह-साक्षात्कार, शपथनामा ;
1 आलोचना-हिन्दी ग़ज़ल: सरोकार, चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ ;
1 हाइकु संग्रह-अमलतास ; 2 बाल उपन्यास-तुर्रम, जंगल का लोकतन्त्र,
2 बाल कहानी संग्रह-मंगल टीका, दो सौ साल का आदमी व
1 बाल-कविता संग्रह-अजब गजब शामिल हैं।

संपादन : 3 हाइकु संकलन-हाइकु-1989, हाइकु-1999, हाइकु-2009 तथा 1 लघुकथा संकलन-शब्द साक्षी का संपादन

सम्मान/पुरस्कार : 1- उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'मंगलटीका' (सूर नामित पुरस्कार-1995), 'शंख सीपी रेत पानी' (निराला नामित पुरस्कार-2001), 'नख़्लिस्तान' (सर्जना पुरस्कार-2002), 'देवदार के साये में' (अज्ञेय नामित पुरस्कार-2012) तथा 'पहाड़ों से समन्दर तक' (बलबीर सिंह रंग सर्जना पुरस्कार-2015) सहित अनेक सम्मान और पुरस्कार से पुरस्कृत।

विशेष : * त्रैमासिक पत्रिका 'शीतल वाणी' द्वारा जनवरी-मार्च 2019 अंक के रूप में व्यक्तित्व व कृतित्व पर केन्द्रित 180 पृष्ठों का विशेषांक प्रकाशित।

सम्प्रति : उत्तर प्रदेश वाणिज्य कर विभाग(एडिशनल कमिश्नर) से सेवा निवृत के बाद स्वतन्त्र लेखन

पता : ' गोविन्दम' 1512, कारनेशन-2, गौड़ सौन्दर्यम् अपार्टमेंट, ग्रेटर नोएडा वेस्ट, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)-201318.

सम्पर्क : 9968296694.

ईमेल : kamlesh59@ gmail.com

ब्लॉग : gazalkamal.blogspot.com

पेड़ इससे कहाँ हैं घबराते
सारे फूलों में फल नहीं आते

उनकी चिन्ता का हाँ सबब है ये
मेघ आते हैं जल नहीं लाते

फ़ैसला कर लिया कि टकरायें
मुश्किलो तुमसे कितना कतराते

अपने बल पर हमें तो उठना था
हाथ देते अगर तो गिर जाते

लोग तो मुँह बना के बैठे थे
हमने सोचा हमीं हैं मुस्काते

हम जो कन्धे तलाश कर लेते
हम भी एक आसमान छू आते

जहाँ संग छोड़कर तुम चल दिये थे
वहाँ बस हाशिये ही हाशिये थे

न कोई बात ना कोई कहन थी
ग़ज़ल में क़ाफ़िये ही क़ाफ़िये थे

अँधेरों से भरी थी राह उनकी
तुम्हारी राह में सौ-सौ दिये थे

मैं रस्ते और चुनना चाहता था
नियति ने और ही तय कर दिये थे

तुम्हें तो भीड़ से हटकर था चलना
मगर तुम भीड़ के सँग हो लिये थे

उलझ कर रह गये जीवन के धागे
न जाने किस तरह के क्रोशिये थे

बहा ले जायं ना ये तल्ख़ियाँ सब कुछ
नहीं है ठीक अपने दरमियाँ सब कुछ

ज़रूरत ही नहीं उनको ज़बानों की
बता देती हैं ख़ुद ख़ामोशियाँ सब कुछ

पहुँच जायें न वो बारूद के घर तक
जला देंगी नहीं तो तीलियाँ सब कुछ

कहीं ये नफ़रतें आँधी न बन जायें
उड़ा ले जायँगी ये आँधियाँ सब कुछ

उसे कहने की भी कोई ज़रूरत क्या
जता देंगी ही उसकी त्यौरियाँ सब कुछ

है तबसे आबरू कविता की ख़तरे में
हुईं मंचों पे जबसे तालियाँ सब कुछ

देखा है यही रोज़ ही एहसास के स्तर पर
इन्सान सभी एक यहाँ प्यास के स्तर पर

मन्दिर में कोई जाये मस्जिद में कोई जाये
दोनों ही जगह इक हैं अरदास के स्तर पर

जीते हैं गृहस्थी की तरह के ही सुखों में वे
कहने को कई जीते हैं संन्यास के स्तर पर

वो कल का कोई स्वप्न बुनेंगे भी भला कैसे
जो आज को जीते हैं इतिहास के स्तर पर

गंगा न रही वैसी, वैसा न रहा मन भी
हम जी ही नहीं पाये रैदास के स्तर पर

कैसे तो यहाँ उभरे फिर राम कोई बनकर
पहुँचा ही नहीं कोई वनवास के स्तर पर

नाम : कमल कटारिया 'करन'
जन्मतिथि : 28/09/1984
शिक्षा : 12वीं तक
व्यवसाय /सम्प्रति : flex designing
संपर्क का पता : मकान नंबर 2858/17, गली नंबर 19, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर, बठिण्डा-151001 (पंजाब)
मोबाइल : 9041315277 (WhatsApp)
ई-मेल : kamalkataria277@gmail. Com

❀

इश्क़ का इज़्हार कर, इन्कार कर
कुछ तो कर अब, आर कर या पार कर

दिल में हैं जज़्बात तो फिर कर अयाँ
क्या मिलेगा ख़्वाहिशों को मार कर ?

चश्म ये पुर-आब है, दिल में ख़लिश
आ ज़रा दीदार दे, दीदार कर

दोस्त है तो मुझको सीने से लगा
है अगर दुश्मन तो खुल के वार कर

रतजगे, तन्हाइयाँ, हासिल मेरा
ख़ूब पछताया मैं दिल को हार कर

सहने-दिल में है ख़िज़ाएँ जा-ब-जा
आ कभी आकर इसे, गुलज़ार कर

बेकली पहलू में सिमटी है करन
कुछ तो चारा ऐ मेरे दिलदार कर

❀

रिज़्क़ो-रोज़ी में फँसे, नामे-ख़ुदा भूल गए
रोटियाँ याद रहीं, हर्फ़े-दुआ भूल गए

यूँ तो कहने को जिये जाते हैं लेकिन साहिब
ज़िन्दगी याद है, जीने की अदा भूल गए

हाल शहरों का भी, जो देखा तो जंगल जैसा
लोग जीने के लिए, शर्मो-हया भूल गए

नींद जो आई तो इक, ख़्वाब सुहाना देखा
आँख खुलते ही, था अच्छा या बुरा भूल गए

आप के एहद पे ऐ दोस्त हँसी आती है
चाँद मिलते ही, ये मिट्टी का दिया भूल गए

शहर का शहर चला आया, मेरे मातम पर
आप उजलत में मेरे घर का पता भूल गए

❀

हर एक सम्त सितारों की अंजुमन पे लहू
हवा की शोख़ियाँ का रंग है या तन पे लहू ?

हमीं को कुछ नहीं हासिल गुलों की बस्ती से
हमीं ने सिर्फ़ किया था, यहाँ चमन पे लहू

ये गाम-गाम पे लाशों के ढेर बिखरे हैं
दिलों में नफ़रतें तौबा, बदन-बदन पे लहू

अगर रखोगे न ग़ैरत की रौशनी दिल में
ख़ुशी की आँख से टपकेगा पैरहन पे लहू

है मेरे मुल्क़ पे फ़िरक़ा-परस्तियों का असर
जो देखते हो ये तुम शैख़ो-बिरहमन पे लहू

गली-गली में लहू, सुर्ख़ बामो-दर अपने
किसी ने छिड़का हो गोया मेरे वतन पे लहू

दश्त में रौनक़े-तहवार उठा लाएँगे
आज सहराओं में गुलज़ार उठा लाएँगे

लौट आएगी सरे-शाम चराग़ों में चमक
रौशनी ढूँढ के इस बार उठा लाएँगे

चुन के राहों से सभी ख़ार हटा देंगे हम
शबनमी ज़ीस्त का मेयार उठा लाएँगे

शोर कानों में पड़ेगा न कोई माज़ी का
तेरी पाज़ेब की झनकार उठा लाएँगे

आप ले आइये नफ़रत के मसीहा कितने
हम मुहब्बत के, तलबगार उठा लाएँगे

ज़ीस्त की डूबती, कश्ती को सहारा देने
हम मुहब्बत की वो पतवार उठा लाएँगे

❀

मुहब्बत में अरमाँ मचलते रहे
सितम उनके, अश्कों में ढलते रहे

चिराग़ों सी अपनी रही ज़िन्दगी
सरे-शाम चौखट पे जलते रहे

नज़र में सितारे रहे, हमनशीं
भले धूप में पाँव जलते रहे

सफ़र बन गई थी, ग़मे-ज़िन्दगी
मुक़द्दर था चलना, तो चलते रहे

मुहब्बत की राहें न छोड़ीं कभी
अदावत से बच के निकलते रहे

किसी के लिए हम रहे ज़िन्दगी
किसी की निगाहों को खलते रहे

❀

नाम : कविता विकास

जन्म तिथि : 28 फ़रवरी

शिक्षा : एम. ए. (अंग्रेज़ी, अर्थशास्त्र) पी. जी. डिप. इन जर्नलिस्म, बी. एड.

साहित्य कृतियाँ : दो कविता संग्रह (लक्ष्य और कहीं कुछ रिक्त है) प्रकाशित। साझा कविता संग्रह (हृदय तारों का स्पंदन), (ख़ामोश, ख़ामोशी और हम), (शब्दों की चहलक़दमी) और (सृजक)प्रकाशित, साझा ग़ज़ल संग्रह (परवाज़-ए-ग़ज़ल) प्रकाशित।

दैनिक समाचार पत्र : पत्रिकाओं, प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं और लघु पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेख और विचार निरंतर प्रकाशित।

सम्मान : विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान 2006, भारत गौरव सम्मान, रंजन कलश शिव सम्मान, नारायणी साहित्य अकादमी अवार्ड- 2012, राजीव गाँधी एक्सीलेंसी एवार्ड 2013, प्रभात ख़बर प्रतिभा सम्मान 2014, दैनिक जागरण साहित्य सम्मान, राज भाषा सम्मान, तथागत साहित्य सम्मान, विद्या वाचस्पति, विद्या सागर, साहित्य संस्कृति शताब्दी सम्मान, राष्ट्रीय साहित्य अकादमी सम्मान, आगमन साहित्य सम्मान।

संप्रति : डी. ए. वी. कोयलानगर, धनबाद

पता : डी.-15, सेक्टर-9, पी ओ-कोयलानगर, ज़िला-धनबाद, झारखण्ड

संपर्क : 09431320288

ईमेल : kavitavikas28@gmail.com

रहा न हाथ ख़ाली अब कि जो ख़ुदा के दर गया
हुई मुराद पूरी एक ख़्वाब फिर सँवर गया

यूँ थी मेरी भी ज़िंदगी समय के साथ चल रही
मगर ये वक़्त बिन तेरे लगा कहीं ठहर गया

बुझी–बुझी ये शाम है ये रात भी सिसकती सी
कि हश्र प्यार का मुझे न जाने क्या ये कर गया

यक़ीं रखो तो ज़िंदगी की जंग जीत लोगे तुम
ये बात गाँठ बाँध लो जो डर गया वो मर गया

धरी रहीं लड़ाइयाँ जुड़ी थीं ज़िंदगी से जो
निवाले की लड़ाई में ही साल फिर गुज़र गया

❀

करो कोशिश तो लाज़िम है सभी ज़ख़्मों का भर जाना
कभी अच्छा नहीं होता किसी रिश्ते का मर जाना

बचा ले अपनी उम्मीदों के सूरज को तू ढलने से
बुरा है ग़म के कोहरे का किसी दिल में पसर जाना

तेरे पहलू में आकर ऐ मुहब्बत मैंने देखा है
मुक़द्दर का सँवर जाना मुक़द्दर का बिखर जाना

छुपाए भी कहाँ छुपती किसी से दिल की बेचैनी
निगाहें भाँप जातीं हैं इधर आना उधर जाना

किसी दिल में नहीं आसाँ बना लेना जगह अपनी
बहुत आसान है लेकिन किसी दिल से उतर जाना

हर सम्त क़ब्रगाह सा मंज़र बना दिया
इक वायरस ने हाल यूँ बदतर बना दिया

उनके ही दम पे जीना मुनासिब था शह्र में
उनको ही आज शह्र ने बेघर बना दिया

साहस से भर तिजोरी चले अपने गाँव को
रोटी की चाह ने इन्हें मुज़्तर बना दिया

जी लेंगे फ़ासलों में भी इक दूजे के लिए
गर मौत ने क़रीबी में इक डर बना दिया

मज़हब की हर किताब मुहब्बत है बाँटती
हमने ही इसके हर्फ़ों को ख़ंजर बना दिया

❀

❀

खेत, पर्वत, पेड़, झरने और समंदर देखकर
रश्क़ होता है मुझे धरती के ज़ेवर देखकर

नीर, नभ, सूरज, शशि, कचनार, केसर देखकर
सर झुका जाता है मौला तेरे जौहर देखकर

आँख नम हो जाती है उजड़े घरों की बस्ती पे
बीता बचपन था जहाँ वो प्यारा नैहर देखकर

जो उगाती नफ़रतों की फ़स्ल हैं इस मुल्क़ में
रंज होता है नयी नस्लों के तेवर देखकर

था नया ही उड़ना सीखा इक गौरैया ने अभी
आज है सहमी हुई बिखरे हुए पर देखकर

उसकी ख़ामोशी पे मत जा, आग भी वो आब भी
दंग रह जाएगा एक तूफ़ान भीतर देखकर

खेत, मेघ, दरिया की बात अब पुरानी है
खोई गाँवों ने अस्मत, थम गई रवानी है

अब न सजतीं चौपालें, पेड़ कट गए सारे
आम, नीम, पीपल की रह गई निशानी है

हावी हो गया फ़ैशन इल्म और हुनर पर अब
सर से पल्लू उतरा है, आँखों में न पानी है

स्क्रीन और गूगल ने, खेल छीने बच्चों के
बिन जिये ही बचपन को, आ गयी जवानी है

वो लुका-छिपी, गिल्ली-डंडा वाले दिन बीते
विडियो गेम का कोई अब हुआ न सानी है

बीच अलगू-जुम्मन के, दौर नफ़रतों का है
यार दोस्तों में अब, ख़ूब खींचातानी है

❀

नाम : कुँवर कुसुमेश
जन्मतिथि : 03.02.1950
शिक्षा : एम. एस सी.(गणित)
प्रकाशित कृतियाँ : दो ग़ज़ल संग्रह, एक पर्यावरण पर दोहा संग्रह, एक मुक्तक संग्रह और एक पुस्तक 'सरल अरूज़'
सम्मान / पुरस्कार : अनेकानेक
व्यवसाय /सम्प्रति : भारतीय जीवन बीमा निगम से सेवानिवृत मंडल प्रबंधक
संपर्क का पता : 4/738 विकास नगर, लखनऊ-226022
मोबाइल : 9415518546 (WhatsApp)
ई-मेल : kunwar.kusumesh@gmail.com

❀

प्यार यूँ तो बड़ा मसअला ही नहीं
दर्दे-दिल की मगर है दवा ही नहीं

मैं दिलो-जान तुम पर लुटाता रहा
और तुमको चला कुछ पता ही नहीं

बावफ़ा मैं उसी को समझता रहा
जो हक़ीक़त में था बावफ़ा ही नहीं

किस तरह से यक़ीं उसकी बातों पे हो
हमक़दम जो अभी तक हुआ ही नहीं

वो मेरे सामने से गुज़र भी गया
दिल को महसूस ये हो सका ही नहीं

मेरी क़िस्मत में शायद जुदाई ही थी
दूसरा कोई था रास्ता ही नहीं

मुत्मइन हूँ मैं इस बात से भी 'कुँवर'
इसमें मा'बूद की थी रज़ा ही नहीं

रश्क़ करने लगी है क़ुदरत क्या
रंग लायेगी उसकी सोहबत क्या

आज वो हैं हमारे पहलू में
लोग कहते इसी को जन्नत क्या

उसकी आँखों में एक हलचल है
उसके दिल में बसी है चाहत क्या

आप इतने ग़ुरूर में क्यों हैं
मिल गई आपको है शोहरत क्या

सबका इतना ख़याल रखते हो
एहले-दुनिया से है मुहब्बत क्या

चंद साँसें उधार की हैं सब
ज़िंदगी की यही हक़ीक़त क्या

आँखों से पिलाते रहते हो
यूँ रिन्द बनाते रहते हो

ख़्वाबों में सताते रहते हो
धड़कन को बढ़ाते रहते हो

जो ज़ख़्म दिये हैं उनको तुम
नासूर बनाते रहते हो

क्या हक़ है मुझे बताओ तो
क्यों हुक्म जताते रहते हो

अंदाज़ तुम्हारा क्या कहने
क्या बात लजाते रहते हो

हर वक़्त 'कुँवर' को उल्फ़त का
तुम पाठ पढ़ाते रहते हो

फिर नई आबो-हवा लाई किरन उम्मीद की
आपको शायद दिखे भाई किरन उम्मीद की

नाउमीदी ज़िंदगी की राह में अच्छी नहीं
सोचकर ये बात गहराई किरन उम्मीद की

दूर से छुप-छुप के बर्बादी का मंज़र देखती
बारहा बनकर तमाशाई किरन उम्मीद की

कौन देखो दिल के दरवाज़े पे दस्तक दे गया
किसकी आहट पे सिमट आई किरन उम्मीद की

बिन कहे ही कह रही हैं आजकल ख़ामोशियाँ
दो क़दम आगे न बढ़ पाई किरन उम्मीद की

कुछ न कुछ बेहतर की भी उम्मीद कर सकते हैं हम
लग रही थोड़ी तमन्नाई किरन उम्मीद की

सफ़र के साथ सफ़र की थकान भी रक्खो
अभी है साल नया इत्मिनान भी रक्खो

जहाँ पे थक के मुसाफ़िर ज़रा-सा बैठ सके
तख़य्युलात में वो सायबान भी रक्खो

किसी भी क़ौम का हो आदमी है वो पहले
घरों में ठीक है गीता-क़ुरान भी रक्खो

ख़मोशियों की हिमायत नहीं ग़लत लेकिन
कभी हिला सको इतनी ज़ुबान भी रक्खो

सभी को दुनिया-ए-फ़ानी से कूच करना है
कुछ आख़िरत का तो साजो-सामान भी रक्खो

नये बरस की बधाई के साथ-साथ 'कुँवर'
दिलों में जज़्बा-ए-अम्नो-अमान भी रक्खो

नाम	: कुंदन आनंद
जन्मतिथि	: 22.02.1994
शिक्षा	: स्नातक(अध्ययनरत, हिंदी ऑनर्स)
सम्मान / पुरस्कार	: काव्य साधना सम्मान, शताब्दी सम्मान, अटल सम्मान, काव्य संस्कार सम्मान, काव्य शिरोमणि सम्मान, कवि रत्न सम्मान, नवांकुर सम्मान, नवसृजन सम्मान
व्यवसाय / सम्प्रति	: तालिबे-इल्म
संपर्क का पता	: खेमनीचक, कंकड़बाग़ पटना-20
मोबाइल	: 9117361775
ई मैल	: anand22021994@gmail.com

❀

तेरे सीने में धड़कता दिल नहीं है
सो ग़ज़ल सुनने के तू क़ाबिल नहीं है

मान लो तो हर जगह है सिर्फ़ मुश्किल
मान लो तो फिर कहीं मुश्किल नहीं है

अब वही बस हाथ को ऊपर करेगा
जो हमारे ख़्वाब का क़ातिल नहीं है

जानते हो क्यों लगी वो चीज़ अच्छी
इसलिए के वो मुझे हासिल नहीं है

तू समझती क्यों नहीं है दिल की बातें
क्या तेरे अंदर कोई दिल-विल नहीं है

आख़िरी मंज़िल पे जाकर ये लगा कि
ये हमारी आख़िरी मंज़िल नहीं है

❀

हम उजालों में जो आने लग गए
हमको अँधेरे दबाने लग गए

घर की हालत जब नहीं देखी गई
शहर जाकर हम कमाने लग गए

आँख खुलते ही ये बच्चे देखिए
बाप को आँखें दिखाने लग गए

गिनतियाँ जब दुश्मनों की, की शुरूअ
दोस्त तब कुछ याद आने लग गए

हम तो आये थे सुनाने आपको
आप तो अपनी सुनाने लग गए

रो पड़ेगा तू समंदर गर कभी
प्यास हम अपनी बुझाने लग गए

❀

पड़ा जो बीज इसमें, खा गयी है
ये मिट्टी इसलिए बाँझन हुई है

बहन भी माँ के ऊपर ही गई है
हमेशा ख़ैरियत बस पूछती है

मुझे जो कहते हो मैं सरफिरा हूँ
तुम्हारी बात ये बिल्कुल सही है

हर इक मुफ़लिस के चूल्हे रो रहे हैं
बहुत मनहूस लगती ये सदी है

ग़रीबों की ये बस्ती हाकिमों की
नज़र में इक पसरती गंदगी है

हवा तो उस तरफ़ से बह रही थी
हवा फिर इस तरफ़ से क्यों बही है

जो लिखा था तुमको पाने के लिए
सब वही कहते हैं गाने के लिए

रात आती है संवर कर रोज़ ही
हमको सीने से लगाने के लिए

पास आते हैं हमारे दौड़कर
दर्द सारे मुस्कुराने के लिए

हम न जाने क्या से क्या खोते गए
इक ज़रा सी चीज़ पाने के लिए

तू नये लोगों में रह मसरूफ़ पर
वक़्त रख कुछ तो पुराने के लिए

धूप कैसी भी हो पर काफ़ी नहीं
इक समंदर को सुखाने के लिए

❀

जिसे समझा वफ़ा था
महज़ इक हादसा था

मुझे चलना था लेकिन
न कोई रास्ता था

वो तेरा ही था ख़ंजर
कहाँ हमको पता था

मुझे कहता है दुश्मन
जो कल तक हमनवा था

कि ग़ैरों से मैं बचके
अब अपनों से घिरा था

बिना छूए ही उसने
मेरे दिल को छुआ था

❀

नाम : कुमार नयन
शिक्षा : एम.ए. एल-एल.बी.
जन्म : 5 जनवरी, 1955

प्रकाशित पुस्तकें : 'पाँच कटे बिम्ब', 'सोचती हैं औरत' (कविता संग्रह), 'आग बरसाते हैं शजर', 'एहसास', 'ख़याल-दर-ख़याल, दयारे-हयात में' (ग़ज़ल संग्रह), दूरदर्शन, आकाशवाणी से बहुत बार ग़ज़लें, कविताएँ, आलेख, प्रसारित, भोपाल, रायपुर, अम्बिकारपुर, दिल्ली, जयपुर, हैदराबाद, चेन्नई, पटना, मुज़फ़्फ़रपुर, राँची, जमशेदपुर, देवघर, आसनसोल सहित देश के अनेक शहरों में ग़ज़ल-पाठ और उस पर बातचीत आयोजित।

पुरस्कार/सम्मान :

1. बिहार भोजपुरी अकादमी सम्मान, बिहार राजभाषा द्वारा दिनकर पुरस्कार, कथा हँस पुरस्कार, निराला सम्मान, ग़ालिब सम्मान, अ.वि.तो.को. पुरस्कार आदि
2. कई भोजपुरी फ़िल्मों में गीत, पटकथा लेखन
3. जन आन्दोलनों में भागीदारी, बिहार जे पी. आंदोलन में कई बार जेल यात्राएँ, बक्सर केन्द्रीय कारा में बाबा नागार्जुन से सह क़ैदी के रूप में मुलाक़ात
4. मज़दूरों-किसानों के आंदोलन में सक्रिय भूमिका, दलित अधिकार मंच के सक्रिय सदस्य
5. 'भोज-थियटेर' की स्थापना (1988) कर शाहाबाद के ज़िलों में साहित्यिक-साँस्कृतिक अभियान एवं आंदोलन
6. 'द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, नव भारत टाइम्स', 'ब्लिटस', 'रविवार', आदि पत्र-पत्रिकाओं में विशेष रपट, जंगल विभाग (झारखण्ड) में नौकरी (1979)
7. सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के तहत बक्सर ज़िला साक्षरता समिति के ज़िला सचिव के पद पर (1996-98) ज़िला न्यायालय में वक़ालत
8. प्रभात ख़बर (दैनिक पत्र) में उप संपादक की नौकरी (2004)

संप्रति : स्वतंत्र लेखन, भोज-थियेटर (लोक साँस्कृतिक मंच) से सम्बद्ध रक्तदान, अंग-देहदान एवं बाल उत्पीड़न उन्मूलन हेतु सघन अभियान कर्मी

मोबाइल : 9430271604 / 8271174800

पता : ख़लासी मुहल्ला, पानी टंकी के पास, ज़िला :- बक्सर-802101 (बिहार)

❀

भरी उम्मीद है हर पाँव में थक कर नहीं गिरता
चला परदेश से घर को जो वो लश्कर नहीं गिरता

नहीं मजबूरियाँ उसकी कहो साज़िश ये नाज़िम की
कि बीमारी में भी मज़दूर बिस्तर पर नहीं गिरता

जो कुछ देता है दुनिया को वही तो चोट सहता है
कभी सूखे शजर पर तो कोई पत्थर नहीं गिरता

किसी की हैसियत से कुछ नहीं लेना किसी को है
यहाँ जम्हूरियत है कोई पैरों पर नहीं गिरता

ढला होता है जो मासूमियत से सच के साँचे में
हवाओं में भी वो पैकर हो तो पैकर नहीं गिरता

लिपटकर अपने महबूबों से दे देते हैं जाँ अब भी
मुहब्बत का किसी भी दौर में तेवर नहीं गिरता

यारब मैं अपने ग़म को सरापा डुबो सकूँ
इतना दे अश्क मुझको कि जी भर के रो सकूँ

होता कहाँ है ऐसा मगर क्या पता कि हो
दुनिया के दर्द अपने जिगर में समो सकूँ

वो एक रात हो कि क़यामत तलक मगर
मुमकिन नहीं की चैन की अब नींद सो सकूँ

बन्दिश लगी है मेरे अता करने पर लहू
साज़िश है अपने दाग़ न दामन के धो सकूँ

होता है आख़िरत का यहाँ कौन हमसफ़र
कुछ दूर तक तो साथ तिरे मैं भी हो सकूँ

बाक़ी रहे न अब कोई महसूल मौत का
अपनी चिता की काश मैं लकड़ी भी ढो सकूँ

❀

❀

शायद लिक्खा जाये इक अफ़साना तेरे शहर में फिर
घूम रहा है आज कोई दीवाना तेरे शहर में फिर

ख़ाक ज़रा अपनी गलियों की साथ हमें ले जाने दो
क्या जाने कब होगा हमारा आना तेरे शहर में फिर

जुर्म समझकर ही हमको हसरत पूरी कर लेने दो
देने को तैयार हैं हम जुरमाना तेरे शहर में फिर

रिंद हैं हम हमसे मत कहना अपने शहर में बसने को
खुल जाये जब तक न कोई मयख़ाना तेरे शहर में फिर

बेपहचानी सड़कों-गलियों में आवारा बन फिरना
काश वही बन जाता मैं अनजाना तेरे शहर में फिर

कितना तअल्लुक़ है अब भी तुझसे क्या पूछ रहा है तू
अपनी तो बस ख़्वाहिश है खो जाना तेरे शहर में फिर

हमें इसमें न ढलना चाहिए था
ये साँचा ही बदलना चाहिए था

इबादत में कहाँ कोई कमी थी
ये पत्थर तो पिघलना चाहिए था

बहुत पछता रहा हूँ ऐ ज़माने
तुम्हारे साथ चलना चाहिए था

ज़मीर अपना यक़ीनन मर चुका है
लहू वरना उबलना चाहिए था

मुहब्बत चैन से क्यों चुप पड़ी है
समन्दर को मचलना चाहिए था

न ढल पाई अन्धेरी रात तो क्या
हमारा दिल तो जलना चाहिए था

❀

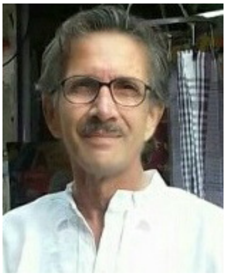

नाम : कृष्ण सुकुमार
शिक्षा : स्नातक
जन्म : 15 अक्टूबर, 1954
प्रकाशित पुस्तकें : 1. इतिसिद्धम् (पुरस्कृत उपन्यास) 1988 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2. पानी की पगडण्डी (ग़ज़ल-संग्रह) 1997 अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 3. हम दोपाये हैं (उपन्यास) 1998 दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली 4. सूखे तालाब की मछलियाँ (कहानी-संग्रह) 1998 पी. 15.10.1954 एन. प्रकाशन, नई दिल्ली 5. आकाश मेरा भी (उपन्यास) 2002 मनु प्रकाशन, नई दिल्ली 6. उजले रंग मैले रंग (कहानी-संग्रह) 2005 साक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली 7. सराबों में सफ़र करते हुए (ग़ज़ल-संग्रह) 2015 अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 8. तुम्हारा होना सच नहीं है (कविता संग्रह) 2018 बोधि प्रकाशन, जयपुर

संकलन : देश के विभिन्न प्रदेशों से प्रकाशित तीन दर्जन से अधिक संकलनों में कहानियाँ, कविताएँ, ग़ज़लें एवं अन्य संकलित।

प्रकाशन : हिन्दी की शताधिक पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ, व्यंग्य, ग़ज़लें और कविताएँ प्रकाशित। दो दर्जन से अधिक नेट पत्रिकाओं में कवितायें और ग़ज़लें प्रकाशित।

पुरस्कार/सम्मान :
1. उपन्यास 'इतिसिद्धम्' की पांडुलिपि पर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा 'प्रेम चन्द महेश' सम्मान-1987 तथा वाणी प्रकाशन द्वारा 1988 में प्रकाशित
2. उत्तर प्रदेश अमन कमेटी, हरिद्वार द्वारा 'सृजन सम्मान'- 1994
3. साहित्यिक संस्था 'समन्वय, ' सहारनपुर द्वारा 'सृजन सम्मान'-1994
4. मध्य प्रदेश पत्र लेखक मंच, 'बैतूल द्वारा काव्य कर्ण सम्मान'-2000
5. साहित्यिक संस्था 'समन्वय, ' सहारनपुर द्वारा 'सृजन सम्मान'-2006
6. संस्कार भारती, रुड़की द्वारा साहित्यिक उपलब्धियों हेतु सम्मान -2017
7. सहारनपुर की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'विभावरी' द्वारा साहित्य गौरव सम्मान (2020)

संप्रति : स्वतंत्र लेखन (आई. आई. टी. रुड़की से अक्टूबर 2014 को अवकाश-ग्रहण)

ई मेल : kktyagi.1954@gmail.com

मोबाइल : 9917888819 (Whatsapp.) / 9897336369

पता : द्वारा श्रीमती अनीता त्यागी, 22, गली नं-7, राजेंद्र नगर, रुड़की (उत्तराखंड) 247667

❀
मैं दरिया हूँ मुझमें सम्भलकर उतरना
कि पानी में पानी पे चलकर उतरना

चुकाना उजालों की थोड़ी सी क़ीमत
चराग़ों में इक रोज़ जलकर उतरना

कभी देख जाना तबस्सुम के पीछे
मेरी रूह में दुःख का ढलकर उतरना

सबक़ ज़िंदगी ने मुझे ये सिखाया
सियासत में चेहरा बदलकर उतरना

मेरा बादलों सा उमड़ना-घुमड़ना
तेरा बारिशों में मचलकर उतरना

❀
गिरे ही नहीं तो सम्भल क्यों रहे हो
अधिक सावधानी से चल क्यों रहे हो

ख़ुशी को जताना भी सीखो ख़ुशी से
बुझे जा रहे हो तो जल क्यों रहे हो

अगर क़द तुम्हारा है सच के बराबर
तो फिर पैरहन ये बदल क्यों रहे हो

अगर ख़ाक होने से डरते हो भाई
किसी की मुहब्बत में ढल क्यों रहे हो

ये लहजा तुम्हारा बदल क्यों रहा है
मेरे हो तो मुझको ही खल क्यों रहे हो

तलफ़्फ़ुज़ बिखरता चला जा रहा है
हवाओं में इतना उछल क्यों रहे हो

रुई की तरह ख़ुद को धुन तो रहा हूँ
तुझे अपने ख़्वाबों में बुन तो रहा हूँ

उजाले तेरा नाम ले तो रहे हैं
अँधेरों से जुगनू मैं चुन तो रहा हूँ

बहुत ख़ूबसूरत इन आँखों में तेरी
मुहब्बत की आहट मैं सुन तो रहा हूँ

मेरी ख़ासियत अब यही रह गयी है
तुम्हारे गुणों को मैं गुन तो रहा हूँ

तेरे सर पे ताने हुए ख़ुद को मैं भी
कड़ी धूप में कब से भुन तो रहा हूँ
❀

अना दिल पे तारी हुई जा रही है
मुहब्बत पे भारी हुई जा रही है

तुझे उससे मिल के क़रार आ गया है
मुझे बेक़रारी हुई जा रही है

थी चाहत दिलों में जो दोनों तरफ़, अब
जुदा बारी-बारी हुई जा रही है

तुझे ख़्वाब से माँग लूँ अपनी ख़ातिर
तबीयत भिखारी हुई जा रही है

मुसाफ़िर हूँ इक बार लग जा गले से
कि रुख़सत सवारी हुई जा रही है
❀

नाम : कुमार पंकजेश
जन्म तिथि : 16 जून, 1963
शिक्षा : वैमानिकी अभियंत्रण में स्टूडेंटशिप और वर्कशॉप टेक्नोलॉजी विषय(सेक्शन-ए) में उत्तीर्ण।
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़लों के साझा संकलन 'गुलदस्ता-ए-ग़ज़ल' में ग़ज़लें। बिहार सरकार द्वारा आयोजित 'बिहार दिवस' पर प्रकाशित पुस्तक 'शतक के साक्ष' में तीन कहानियाँ।
सम्मान/पुरस्कार : वर्ष 1995 में हिन्दी दिवस पर राजभाषा विभाग, बिहार सरकार, द्वारा आयोजित 'नवहस्ताक्षर प्रतियोगिता' में ग़ज़ल पुरस्कृत।
व्यवसाय/सम्प्रति : पत्रकारिता, निजी व्यापार और सी.आर.डी पटना पुस्तक मेला के मीडिया प्रवक़्ता।
संपर्क का पता : फ़्लैट सं.-1, एल.आई.जी.एच, कंकड़बाग़ कॉलोनी, पटना, बिहार, पिन-800020
मोबाइल : 08789387721 (Whatsapp)
ई-मेल : kumarpankajesh19@gmail.com

❀

हर तरफ़ है वबा का असर
लग गयी है जहाँ को नज़र

हैं परीशाँ अमीरो-गदा
ख़ौफ़ में है हमारा नगर

खेलना-कूदना भूलकर
बच्चे बैठे हैं सब अपने घर

बंद हैं कॉपियों में क़लम
ऑन लाइन पढ़ें रात भर

रोटियों के भी लाले पड़े
नौकरी पर पड़ा है असर

सब मरासिम लगे टूटने
टूटने भी लगे अब तो घर

तू अगर बेवफ़ा नहीं होता
दर्द मुझको मिला नहीं होता

काश रहबर मिरा नहीं होता
कारवाँ ये लुटा नहीं होता

हिज्र क्या है ग़मे-अलम क्या है
हैं बलाएँ पता नहीं होता

लम्स उनका अगर नहीं मिलता
पेड़ दिल का हरा नहीं होता

गर सियासत नहीं हुई होती
ख़ून अपना बहा नहीं होता

नशा ये तिरा जब करेगा असर
ग़ज़ल में मिरे तब दिखेगा असर

सरापा सुख़न है जवानी तिरी
सभी हर्फ़ में फिर रहेगा असर

घटाएँ कहूँ या कि गेसू तिरे
खुलें तो चमन पे दिखेगा असर

नज़ाकत तिरी है क़यामत मिरी
अदाओं का जादू करेगा असर

तुम्हारी मुहब्बत की ख़ुशबू लिये
मरूँगा मैं जब तो खुलेगा असर

आप यूँ कीजिए सब भुला दीजिए
अपने दिल से हमें अब रिहा कीजिए

क्यूँ मुहब्बत को दिल में हैं पाले हुए
आप चैनो-सुकूँ से रहा कीजिए

रोते रहने से क्या है भला फ़ायदा
ख़ामख़ा हिज्र में ना जला कीजिए

ज़िंदगी तो तजुरबे का ही नाम है
अब तजुरबा किया तो नया कीजिए

छोड़िए जो हुआ सो वो अच्छा हुआ
लज़्ज़ते-इश्क़ का अब मज़ा लीजिए

तेरे जहान में मेरा गुज़र नहीं होता
ख़ुदा न कुछ तेरा जाता मैं गर नहीं होता

जहाँ बड़ों की दुआओं का सायबाँ भी हो
बड़े सहन से दरीचों से घर नहीं होता

मेरी अना ने बचाकर रखी मेरी पगड़ी
अना नहीं जो ये होती तो सर नहीं होता

लगे किसी को भी ठोकर तो थाम ले कोई
जो हौसला न दे वो हमसफ़र नहीं होता

हर एक आदमी ख़ुद में ही ख़ास होता है
जहाँ में कोई बशर बेहुनर नहीं होता

बचा के रख तू ख़ुदी को सभी बुराई से
कँवल पे पानी का जैसे असर नहीं होता

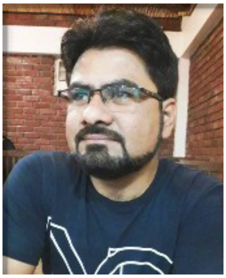

नाम : के. पी. अनमोल

जन्म तिथि : 19 सितम्बर, 1989

शिक्षा : एम. ए (हिन्दी), डिप्लोमा इन वेब डिजाइनिंग

प्रकाशित कृतियाँ : 1. इक उम्र मुकम्मल (ग़ज़ल संग्रह, 2013)
2. कुछ निशान काग़ज़ पर (ग़ज़ल संग्रह, 2019)
3. विभिन्न संकलनों में आलोचनात्मक लेख
4 चाँद अब हरा हो गया है (प्रेम कविता संग्रह) तथा इक उम्र मुकम्मल (ग़ज़ल संग्रह) एँड्राइड एप के रूप में गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध।

संपादन : 'हस्ताक्षर' वेब पत्रिका का मार्च 2015 से अब तक (जून 2020) 61 अंकों का संपादन। 'साहित्य रागिनी' वेब पत्रिका, 'शब्द-सरिता' (अलीगढ, उ.प्र.) का संपादन 2 '101 महिला ग़ज़लकार', 'समकालीन ग़ज़लकारों की बेह्तरीन ग़ज़लें', 'मीठी-सी तल्ख़ियाँ' (भाग-2 व 3), 'ख़्वाबों के रंग' आदि पुस्तकों का संपादन। 'समकालीन हिंदुस्तानी ग़ज़ल' एँड्राइड एप का संपादन।

स्थायी पता : बेहलिमों का वास, साँचोर, ज़िला- जालोर (राजस्थान)-343041

संप्रति : संपादक, हस्ताक्षर वेब पत्रिका (www.hastaksher.com)

वर्तमान पता : 321/4, सोलानीपुरम, रुड़की, ज़िला- हरिद्वार (उत्तराखण्ड)- 247667

ई-मेल : kpanmol.rke15@gmail.com

मोबाइल : 8006623499 (Whatsapp)

अगर माँझी-से तेवर मन के भीतर बैठ जाते हैं
तो मुश्किल के कई परबत पिघलकर बैठ जाते हैं

निकलकर वक़्त के हाथों से फ़ुरसत के कई क़िस्से
सुनहरी याद की पुस्तक के अन्दर बैठ जाते हैं

बग़ावत के ज़रूरी चार अक्षर याद कर लेते
वे जो हालात के आगे सहमकर बैठ जाते हैं

तुम्हारी चाह क्या जागी, हज़ारों चाहतें हैं चुप
कोई बेह्तर निकल आए तो कमतर बैठ जाते हैं

हमारे बीच अब भी हैं भरत जैसे नगीने जो
बड़े भाई की ख़ातिर राज तजकर बैठ जाते हैं

कभी भी मौत केवल आँकड़ा हो ही नहीं सकती
किसी के मरते ही परिवार और घर बैठ जाते हैं

मेरे वजूद का आधार सलामत रक्खे
ख़ुदा हमेशा तेरा प्यार सलामत रक्खे

बस इक उमीद कि सब चैन से मिल-जुल के रहें
बस इक उमीद तो सरकार सलामत रक्खे

खड़ी हो बीच में तो कोई बुराई भी नहीं
जुड़ाव मन के जो दीवार सलामत रक्खे

वजूद ग़म ने मेरा ऐसे बचाकर रक्खा
कि जैसे अम्न को हथियार सलामत रक्खे

बलाएँ हक़ से जो लेते हैं हमारे सर की
रब ऐसे सारे ही हक़दार सलामत रक्खे

तू दे रहा हो मुसीबत तो वही देना मुझे
जो तोड़कर भी कई बार, सलामत रक्खे

नफ़रत जो घोलते हैं उन्हें प्यार देंगे हम
हर एक बार ऐसा ही उपहार देंगे हम

हम दुश्मनों को जीतते हैं सिर्फ़ प्यार से
बच्चों के हाथ में यही हथियार देंगे हम

हम लोग हैं मुरीद मुहब्बत के दोस्तो !
यानी मुहब्बतों को ही विस्तार देंगे हम

इतने तो बेवकूफ़ नहीं हैं बताइए
क्यूँ आने वाली नस्ल को तक़रार देंगे हम

पसरी हैं आसपास में जितनी बुराइयाँ
मिलकर अगर लड़े तो उन्हें मार देंगे हम

इंसानियत का ख़ून बहाएँ जो बेसबब
हरगिज़ न ऐसे ख़ँजरों को धार देंगे हम

उसकी हज़ार यादें हैं और इक मेरा बदन
जैसे गिलास हो कोई छलका हुआ बदन

रह-रह के उठ रही है तेरे प्यार की महक
यानी नमाज़े-इश्क़ में है अब मेरा बदन

उसके हवाले कर सुकूँ से जी रहा हूँ मैं
इक नूर की पनाह में है रख दिया बदन

इक बार फिर रँगूँगा तेरे रंग में उसे
इक बार फिर मिलेगा मुझे जब नया बदन

कम मुश्किलें सफ़र में थीं जो दे दिया ख़ुदा
इतनी ज़रा-सी रूह को इतना बड़ा बदन

अल्लाह! क्या मैं तुझसे कभी मिल न पाऊँगा
फिर तो किसी भी काम का भी क्या रहा बदन

सूनी उदास आँखें हैं, पानी नहीं कहीं
बेचैन ग़म है, रातें हैं, पानी नहीं कहीं

क्या हो गया, वो मन की उमंगें किधर गयीं
फीकी, हताश शक्लें हैं, पानी नहीं कहीं

नारे हैं, इश्तेहार हैं और सेमीनार हैं
पानी पे सिर्फ़ बातें हैं, पानी नहीं कहीं

सर पर है तेज़ धूप बदन तोड़ती हुई
उखड़ी ज़मीं की साँसें हैं, पानी नहीं कहीं

मॉडर्न हो चुके हैं जड़ें भूलकर सभी
बेशर्म वारदातें हैं, पानी नहीं कहीं

दो-चार हो तो शोक मनाया भी जा सके
इसकी हज़ार वजहें हैं, पानी नहीं कहीं

नाम : केशव शरण
जन्म तिथि : 23-08-1960
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह :* 1. दर्द के खेत में 2. गगन नीला धरा धानी नहीं है 3. कहाँ अच्छे हमारे दिन
कविता संग्रह : 1. तालाब के पानी में लड़की 2. जिधर खुला व्योम होता है 3. एक उत्तर-आधुनिक ऋचा 4. दूरी मिट गयी 5. न संगीत न फूल
हाइकु संग्रह : कड़ी धूप में और संकलित कवितायें क़दम-क़दम
पता : एस 2/564 सिकरौल, वाराणसी 221002
सम्पर्क : 94152 95137 (Whatsapp)
ई-मेल : keshavsharan564@gmail.com

मैं शीशे के अंदर भी हूँ
मैं शीशे के बाहर भी हूँ

गुल सुंदर भावों में डूबा
तो सदमे में पत्थर भी हूँ

मैं इक सैदाई दुनिया का
मैं इक मस्त क़लन्दर भी हूँ

घास हरी है बिस्तर मेरा
ओढ़े नीला अंबर भी हूँ

एक सुसभ्य मनुष्य मुझी में
एक पुरातन बंदर भी हूँ

निर्जन वन में नंगा घूमा
लौट नगर में नागर भी हूँ

रिश्तों के सैलानी आ जा
मैं एक अजायबघर भी हूँ

❀

नयन मूंदे नज़ारा दिख रहा है
मुझे गुलशन तुम्हारा दिख रहा है

ज़रा आगे दिखेगा दूसरा भी
नदी का इक किनारा दिख रहा है

दरो-दीवार में बीमार को अब
दिशाओं का सहारा दिख रहा है

धरा पर मैं अँधेरे में खड़ा हूँ
धवल कितना सितारा दिख रहा है

क्षितिज की लालिमा में दिन सुनहरा
प्रकट से ही इशारा दिख रहा है

दुःखों के पार जाती हैं निगाहें
सुखी जीवन हमारा दिख रहा है

❀

बीच दो शरीफ़ों के फ़ासला कहाँ जाये
अब फ़ज़ूल है तो है रास्ता कहाँ जाये

उस जगह नहीं अच्छा इस जगह नहीं अच्छा
जब कहीं नहीं अच्छा मयक़दा कहाँ जाये

है कहाँ वफ़ादारी क्या पता नहीं उसको
छोड़कर वफ़ा पैकर बेवफ़ा कहाँ जाये

आसरा बँधा जाते जो लबार उनका क्या
एतबार वाले का आसरा कहाँ जाये

इक निगाह से उट्ठा दिल उसे दबा ले अब
तूल फिर पकड़ने पर मामला कहाँ जाये

क्या अजीब चेहरे हैं और हरकतें उनकी
देख-देख शर्मिंदा आइना कहाँ जाये

ख़िदमतें जो न करा बस कि सहारा बन जा
ऐ जवाँ हुस्न ! किसी तौर हमारा बन जा

कब तलक और बियाबान हमारी दुनिया
आँख के ख़्वाब ! किसी रोज़ नज़ारा बन जा

तोड़कर फूल यहाँ लोग मसल देते हैं
इसलिए यार यही ठीक सितारा बन जा

लोक के बीच समुंदर न थपेड़े खाएँ
सुन हमारी कि अभी आज किनारा बन जा

आज भी ख़ूब तुझे याद किया करते हैं
बेदिली छोड़ कभी दोस्त दुबारा बन जा

❀

अब राह न देखूँ रस्ता लूँ
कैसे भी दिल को समझा लूँ

साथ दिया है कौन बताओ
क्यों साथी का झंझट पालूँ

इतने झटके खाये सबके
इक चोट तुम्हारी भी खा लूँ

सबसे भारी सबसे मुश्किल
उल्फ़त की उलझन सुलझा लूँ

ये-वो मन को कच्चा करता
मैं कोई निर्णय पक्का लूँ

सर कहता है पगड़ी बाँधो
गरदन कहती है फँदा लूँ

❀

नाम	: ख़ुर्शीद आलम ख़ाँ
क़लमी नाम	: ख़ुर्शीद तलब
जन्म तिथि	: 25 अगस्त 1967
शिक्षा	: बी.कॉम
प्रकाशित कृतियाँ	: दुआएँ जल रही हैं ; जहाँ गर्द (उर्दू ग़ज़ल संग्रह)
व्यवसाय/सम्प्रति	: सरकारी सेवा।
पता	: जी. एम ऑफ़िस कार्गली, पोस्ट बेरमो, ज़िला बोकारो, झारखण्ड-829104
मोबाइल	: 87097 86440
Whatsapp	: 89866 13942
ई-मेल	: Khurshidtalab98@gmail.com

❀

इक चिंगारी मंज़र-मंज़र रक्खी है
किसने इतनी आग हवा पर रक्खी है

कितने सागर इसमें आकर डूब गये
फिर भी ख़ाली मेरी गागर रक्खी है

कैसे तेरे पाँव खुले रहने देगा
जिसने तेरे सर पर चादर रक्खी है

हम भी तो उस वीरानी का हिस्सा हैं
जो वीरानी अंदर-बाहर रक्खी है

जिसको देखो पोंछ रहा है अपने हाथ
घर में इक मैली सी चादर रक्खी है

इसके आगे कोई दरिया आया तो
मैंने थोड़ी प्यास बचाकर रक्खी है

इक बुढ़िया की गोद में छोटा सा बटुआ
दुनिया उस बटुए के अंदर रक्खी है

❀

नज़र आते थे रस्सी नाग निकले
मियाँ तुम तो बड़े ही घाग निकले

सपेरों को बुलाया जा रहा है
हमें जब साँप डसकर भाग निकले

समझ रक्खा है क्या साबुन क़लम को
घिसे कम और ज़ियादा झाग निकले

मेरे ऐबो-हुनर रौशन हों मुझ पर
किसी की राय तो बे-लाग निकले

तपा हूँ इस क़दर सोज़े-दरूँ में
मैं कुछ बोलूँ तो मुँह से आग निकले

हर इक तारे-नफ़स को फूँक डाला
तुम्हारे दु:ख भी दीपक राग निकले

❀

हाँ दमे-रक़्स मेरे पाँव में ज़ंजीर भी हो
और गरदन पे लटकी हुई शमशीर भी हो

वो परिंदा कभी परवाज़ से थकता ही नहीं
क्या पता उसके तआक़ुब में कोई तीर भी हो

ख़्वाब से आँखें सजाने में बुराई क्या है
क्या ज़रूरी है हर इक ख़्वाब की ताबीर भी हो

यूँ तेरे लम्स की ख़ुशबू से मुअत्तर हो जाऊँ
जिस्म धुल जाये मिरी रूह की ततहीर भी हो

बात से बात बनाना ही ग़ज़ल थोड़ी है
बात तो जब है तेरी बात में तासीर भी हो

धुंद छट जाये तअल्लुक़ के उफ़क़ रौशन हों
दोनों जानिब से अब ऐसी कोई तदबीर भी हो

उदास रहते हैं बच्चे भी और नानी भी
कि लोग सुनते-सुनाते नहीं कहानी भी

लगा है शोर मचाने अब इसका पानी भी
सिमट रही है समुंदर की बे-करानी भी

मैं जिसकी लर्ज़िशे-अल्फ़ाज़ से परीशाँ था
मुझे कचोट गयी उसकी बे-ज़ुबानी भी

गदा बना गया इक पल में शह्र यारों को
अजीब चीज़ है ये क़हरे-आसमानी भी

हज़ार दु:ख लिए आती है इक ख़ुशी की नवेद
सभी को रास नहीं आती शादमानी भी

कि अब ये सिलसिल:-ए-रेगज़ार ख़त्म भी हो
कि अब तो सूख चुका आबलों का पानी भी

❀

चंद जुमले हैं जो रटे हुए हैं
अपने मौकिफ़ पे वो डटे हुए हैं

छींकिये भी तो जाग जाएँ सब
इस तरह घर से घर सटे हुए हैं

भूख से मर रहे हैं फिर भी परिंद
पेड़ फल-फूल से अटे हुए हैं

उनसे पूछो उड़ान का मतलब
जिन परिंदों के पर कटे हुए हैं

इनकी बख़ियागरी नहीं मुमकिन
लोग अन्दर से ही फटे हुए हैं

तुम हमें और कितना बाँटोगे
हम तो पहले से ही बँटे हुए हैं

❀

नाम : गोविन्द गुलशन

जन्म तिथि : 07 फ़रवरी, 1957

शिक्षा : कला स्नातक

प्रकाशित कृतियाँ : 'जलता रहा चराग़' और 'हवा के टुकड़े'

सम्मान / पुरस्कार : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली (राजभाषा विभाग. गृह मंत्रालय) द्वारा सर्वश्रेष्ठ काव्य रचना के लिये पुरस्कृत (2005), अंजुमन फ़रोग़-ए-उर्दू दिल्ली की जानिब से-आबरू-ए-ग़ज़ल कायस्थ कुल भूषण सम्मान (अखिल भारतीय कायस्थ महा सभा), इशरत किरतपुरी एवार्ड एवं अन्य अनेक

व्यवसाय/सम्प्रति : सेवा निवृत्त विकास अधिकारी ' 'नेशनल इंश्योरेंस'

पता : 'ग़ज़ल' 224, सैक्टर-1, चिरंजीव बिहार
ग़ाज़ियाबाद 201002 उ.प्र.

मोबाइल : 9810261241 (Whatsapp)

ई-मेल : govindgulshan@gmail.com

❀

हमीं थे जोड़ने वाले, हमीं हटाए गए
मलाल ये है गुनहगार हम बताए गए

हमारी आँखें तो सच के क़रीब बैठी रहीं
जो सच नहीं थे मनाज़िर, नज़र में लाए गए

सुरों का ताल का मिलना बहुत ज़रूरी था
मगर न ताल मिलाई, न सुर मिलाए गए

न जाने कौन सी रंजिश हवा की है मुझसे
दिये जो मैंने जलाए वही बुझाए गए

वही थे वो हाँ वही दिल को चोट देते रहे
हमीं वो हाँ हमीं दिल पे चोट खाए गए

दिलों में नफ़रतें फैलीं तो फैलती ही गईं
अगरचे गीत मुहब्बत के गुनगुनाए गए

❀

क्यूँ है ख़ामोश समंदर तुम्हें मालूम है क्या
कितने तूफ़ान हैं भीतर तुम्हें मालूम है क्या

उससे मिलने की तमन्ना है अगर मिल जाए
कौन लिखता है मुक़द्दर तुम्हें मालूम है क्या

दर्द कितना भी दो, आँसू नहीं आने वाले
दिल मेरा हो गया पत्थर तुम्हें मालूम है क्या

एक जुमला वो जो कल तुमने कहा था, उसने
ख़ून से रँग दिए ख़ँजर तुम्हें मालूम है क्या

डूब जाता है उन आँखों में उतरने वाला
उसकी आँखें हैं समंदर तुम्हें मालूम है क्या

जब आई याद तो फिर बज़्मे-ख़्वाब तक पहुँची
सितारे गिनते हुए माहताब तक पहुँची

तलब हुई थी अँधेरों में रौशनी की मुझे
दिया जला तो तलब आफ़ताब तक पहुँची

बहुत से फूल थे हर सम्त पर ये मेरी नज़र
चमन में ताज़ा खिले इक गुलाब तक पहुँची

नदी के साथ किनारों की तरह: मैं भी रहा
बदल के राह जो अपनी सराब तक पहुँची

दबी हुई थी इक आवाज़ दिल में कब से मगर
लबों तक आई तो फिर इंक़्लाब तक पहुँची

फिर उसके बाद हुआ ये कि मिट गए दोनों
वो दास्ताने-मुहब्बत किताब तक पहुँची

❀

❀

सम्हल के रहिएगा ग़ुस्से में चल रही है हवा
मिज़ाज गर्म है मौसम बदल रही है हवा

वो जाम बर्फ़ से लबरेज़ है मगर उससे
लिपट-लिपट के मुसलसल पिघल रही है हवा

उधर तो धूप है बंदिश में और छतों पे इधर
लिबास बर्फ़ का पहने टहल रही है हवा

बुझा रही है चराग़ों को वक़्त से पहले
न जाने किसके इशारे पे चल रही है हवा

जो दिल पे हाथ रखोगे तो जान जाओगे
मचल रही है बराबर मचल रही है हवा

मैं कह रहा हूँ हवा है तो जल रहे हैं चराग़
वो कह रहे हैं चराग़ों से जल रही है हवा

बाद मुद्दत के जो हम लौट के घर आए हैं
ऐसा लगता है कि जन्नत में उतर आए हैं

आज यादों की मुँडेरों पे दिए हैं रौशन
ख़ुशनुमा शाम है माज़ी से गुज़र आए हैं

मैंने तो सिर्फ़ लकीरों में इज़ाफ़त की थी
उसकी तस्वीर में अब रंग उभर आए हैं

उसकी आँखों में थी जो प्यास बुझा दी हमने
दिल जो ख़ाली था उसे आग से भर आए हैं

आज ये क्या हुआ हम भूल गए अपना पता
रास्ता पूछ लिया हमने तो घर आए हैं

जिस्म बेदम हुआ आँखें भी हुईं पथरीली
ऐसे हालात मुहब्बत में नज़र आए हैं

❀

नाम : गोविन्द कान्त झा

अदबी नाम : गोविन्द राकेश

जन्म तिथि : 15.01.1955

शिक्षा : बी.एससी., एलएल.बी.

प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह* : 1. देखता हूँ ख़्वाब 2 क़ायल आपके होते 3 फूलों का शहर होता

डिज़िटल प्रकाशन : साहित्यपीडिया.कॉम, अमरउजाला.कॉम, हिन्दीभाषा.कॉम तथा स्टोरीमिरर.कॉम पर 45 ग़जलें प्रकाशित

सम्मान / पुरस्कार : 1. ग़ज़ल प्रवीण सम्मान, मुंबई 2. ग़ज़ल कुंभ सम्मान 2020, दिल्ली 3. स्वयंप्रभा साहित्य सम्मान, देहरादून 4. फ़िराक़ गोरखपुरी सम्मान, बेगूसराय 5. कविकोकिल विद्यापति स्मृति समम्मान 6. राष्ट्र कवि दिनकर साहित्य सम्मान, दिल्ली 7. निराला शिखर सम्मान, समस्तीपुर, सहित अनेकों सम्मान /पुरस्कार

व्यवसाय/सम्प्रति : झारखंड स्टेट एग्रिकल्चरल मारकेटिंग बोर्ड, राँची से सेवा निवृत

पता : चीफ़ एक्ज़ीक्यूटिव मैंनेजर, कल्पना टाइल्स एण्ड सैनिटरी, दलसिंह सराय, बिहार-848114

मोबाइल : 9955331360 (Whatsapp)

ई-मेल : govind.rakesh.dss@gmail.com

यूँ ही बातें बनाना नहीं ठीक है
बे-सबब मुस्कुराना नहीं ठीक है

वक़्त पर तो सभी को है मरना यहाँ
मौत से पर डराना नहीं ठीक है

ख़ार भी है चमन का ही हिस्सा मगर
रास्ते में बिछाना नहीं ठीक है

शौक़ से आप महफ़िल में जायें कभी
बस ये पीना-पिलाना नहीं ठीक है

सोचकर हम बढ़ाएँगे अपने क़दम
बीच में लड़खड़ाना नहीं ठीक है

❀

तू अभी से लड़खड़ाना छोड़ दे
या तो फिर महफ़िल सजाना छोड़ दे

है अगर मेरी वफ़ा की आरज़ू
ग़ैर की बाँहों में जाना छोड़ दे

तू न मुझको फूल देना अब मगर
राह में काँटे बिछाना छोड़ दे

तू करे मुझ पर भरोसा या नहीं
हर घड़ी तो आज़माना छोड़ दे

है नहीं सबसे हसीं दुनिया में तू
मुझसे तो नज़रें मिलाना छोड़ दे

बात अब ये समझ में आई है
हर तरफ़ क्यों अभी लड़ाई है

हक़ किसी और का रहे फिर भी
हाथ उनके ही अब मलाई है

चीख़ भी तो रहा नहीं कोई
ख़ामशी में ही अब भलाई है

फ़िक्र जिनको नहीं ग़रीबों की
उनके हाथों में रहनुमाई है

शह्र में ज़िंदगी बचे कैसे
गाँव में भी कहाँ कमाई है

❀

❀

ख़ूबसूरत से नज़ारे खो गये
आसमाँ के जब सितारे खो गये

आ गया सैलाब सारे शह्र में
सारे दरिया के किनारे खो गये

उनकी बातें तो नहीं पहुँची कभी
रास्ते में सब इशारे खो गये

जो सड़क पर चल पड़े घर के लिए
उनमें से कुछ बेसहारे खो गये

नफ़रतों की जब चली आँधी कहीं
कुछ हमारे, कुछ तुम्हारे खो गये

आवाम की सलामती जिनके भी नाम है
लड़ते रहे वबा से जो उनको सलाम है

औरों के वास्ते ही जो जी जान से जुटे
सबके दिलों में उनके लिए एहतराम है

हर सम्त शोर है कि बचे जान किस तरह
जैसी रही है सुब्ह को वैसी ही शाम है

मज़दूर हैं सड़क पे लिए पेट साथ में
उनका ही इम्तिहान है जिनका निज़ाम है

इंसानियत बची है अभी भी जहान में
आवाम के लिए भी खड़ी अब अवाम है

❀

मार्गदर्शक	: डॉ.कृष्ण कुमार 'नाज़'
नाम	: गौरव कुमार नायक
जन्मतिथि	: 02/11/1997
शिक्षा	: स्नातक(B. A.)
व्यवसाय /सम्प्रति	: विद्यार्थी (M.A. previous)
संपर्क का पता	: नादर बाग़ कॉलोनी डायमंड टॉकीज रोड, रामपुर उत्तर प्रदेश-244901
मोबाइल	: 8445847176 (WhatsApp)
ई -मेल	: kumargaurav.kg.gk@gmail.com

समंदर ग़म का भी कितना बड़ा है
जिसे देखो वही डूबा हुआ है

हमारी ख़ाक को तुम दफ़्न कर दो
पता इसका हवा को मिल गया है

कभी सोचो कि क्यों हर एक पागल
दरो-दीवार को ही चूमता है

रखी है इश्क़ ने जाँ क़ैद करके
बदन तन्हा सफ़र पर चल रहा है

नशा कोई नहीं चढ़ता है उस पर
वो शायद इश्क़ का मारा हुआ है

अजब सा शोर है इक मेरे भीतर
मेरी दुनिया से कोई जा रहा है

कभी झाँका न तूने दिल में अपने
ख़ुदा को मस्जिदों में ढूँढता है

❀
किया वो ही कि जो करना नहीं था
हुआ भी वो कि जो सोचा नहीं था

किसी का रास्ता देखा था लेकिन
किसी का रास्ता रोका नहीं था

कई चट्टानें हमने काट डालीं
हमारे पास जब रस्ता नहीं था

उसे जादू समझती थी ये दुनिया
वही जो सामने होता नहीं था

उसी के ख़्वाब सब पूरे हुए हैं
वही जो रात भर सोता नहीं था

अपनी उल्फ़त के आशियाने में
दिन कटे रूठने मनाने में

इसने कितने दिलों को तोड़ा है
आग लग जाए इस ज़माने में

उम्र लाए जो इश्क़ की ख़ातिर
सारी गुज़री है ग़म उठाने में

लग गए हैं मुझे कई अर्से
तेरे ग़म से निजात पाने में

दूर हमसे हुए कई अपने
एक अपना तुझे बनाने में
❀

पहले हम सारी फ़नकारी समझेंगे
उसके बाद ही दुनियादारी समझेंगे

सीधापन इक हद तक समझा जाएगा
उससे आगे सब मक्कारी समझेंगे

दब जाएँगे ख़ुद ही उसके बोझ तले
जो दौलत को सबसे भारी समझेंगे

आग, हवा, अम्बर, पानी, मिट्टी से वो
करता है क्या मीनाकारी समझेंगे

रस्सी पर जब भूख हमें चलवायेगी
हमको सारे लोग मदारी समझेंगे
❀

पलक से मेरी झरना चाहता है
ये आँसू क्यों बिखरना चाहता है

जिसे उड़ना सिखाया है हमीं ने
हमारे पर कतरना चाहता है

मैं तुझमें घुल के जीना चाहता हूँ
मगर दिल तुझपे मरना चाहता है

लहू से सींचकर गुलशन वो पागल
गुलों में रंग भरना चाहता है

बड़ी शिद्दत से ग़म इक बेवफ़ा का
मेरे दिल में उतरना चाहता है

लगाकर होंठ वो होंठों से मेरे
हदों को पार करना चाहता है
❀

नाम	: चाँद शुक्ल हदियाबादी
जन्म तिथि	: 21 Mar 1946
शिक्षा	: प्रारम्भिक शिक्षा डलहौज़ी और शिमला में प्राप्त की
प्रकाशित कृतियाँ	: पंजाब केसरी, शमा (दिल्ली) और देश-विदेश में रचनायें प्रकाशित। ग़ज़ल संग्रह प्रकाशनाधीन।
सम्मान / पुरस्कार	: सन् 1995 में डेनमार्क शांति संस्थान द्वारा सम्मानित किये गये । सन् 2000 में जर्मनी के रेडियो प्रसारक संस्था ने 'हेंस ग्रेट बेंच' नाम पुरस्कार से सम्मानित किया
व्यवसाय/सम्प्रति	: आयात-निर्यात
पता	: Voelundsgade 11, 1 TV. 2200 Copenhagen N, Denmark
मोबाइल	: +45 22 46 08 83 (Whatsapp)
ई-मेल	: chaandshukla@gmail.com

❀

नाच उट्ठेगी ख़ुशी से झूमकर वो महजबीं
उसके आँगन में कोई जुगनू सजाकर जाएगा

रात भर सरगोशियाँ होतीं रहेंगी देर तक
उसके कानों में कोई मिसरी का रस भर जाएगा

आज तनहाई का आलम है तो कल होगा मिलन
सुरमई आँखों में वो ख़ुशियों के जल भर जाएगा

भूल जाएगी वो अपना ग़म मिलन की रात में
उसके ज़ख़्मों पर वो मरहम का असर कर जाएगा

प्यार से अपने भरेगा उसकी नस-नस में ख़ुमार
देखना तन-मन को वो चंदन बना कर जाएगा

बंद पलकों में तलाशेगा ख़ुद अपने अक्स को
'चाँद' जाने कितने वो सपने सजा कर जाएगा

ग़ैरतमंद परिंदों यूँ ही हवा में उड़ते जाते हो
जब हो दाना दुनका चुगना तब धरती पे आते हो

मनमानी और तल्ख़-बयानी से क्यों सच झुठलाते हो
ख़ुद की झूठी क़समें खाकर जीते जी मर जाते हो

तेरा-मेरा तर्के-तअल्लुक़ बेशक एक हक़ीक़त है
तुम फिर भी जाने-अनजाने ख़्वाबों में आ जाते हो

जानते हो तुम इश्क़-मुहब्बत तपता आग का सेहरा है
इसीलिए तुम पाँव बरहना चलने से कतराते हो

चलो क़दम दो आगे रक्खो मैं भी थोड़ा बढ़ता हूँ
प्यार है तो इज़हार करो क्यों बे वजह: शरमाते हो

हमने तो तन्हाई में तारों से बाते करनी है
'चाँद' हमारे राज़ की बातें सुनने क्यों आ जाते हो

मेरे गीतों मेरी ग़ज़लों को रवानी दे दे
तू मेरी सोच को एहसास का पानी दे दे

मुद्दतों तरसा हूँ मैं तुझसे मुहब्बत के लिए
ख़्वाब में आके मुझे यादें पुरानी दे दे

थक गया गर्दिशे-दौराँ से ये जीवन मेरा
मेरे रहबर मुझे मंज़िल की निशानी दे दे

तेरी राहों में बिछा रक्खी हैं पलकें मैंने
मेरी आँखों को मसर्रत का तू पानी दे दे

'चाँद' निकला तो चकोरी ने कहा रो-रो कर
ओ मेरे चाँद कोई अपनी निशानी दे दे

कौन कहता है लबो रुख़सार की बातें न हों
सुर्ख़ियों की बात हो अख़बार की बातें न हों

दुश्मनों का जो रवैया है ये उनपे छोड़ दो
दोस्तों में तो कभी इनकार की बातें न हों

एक हो तुम पाँव हैं दो कश्तियों में किसलिए
इक तरफ़ हो जाओ तो बेकार की बातें न हों

सब ज़माने से न कह दें कान की कच्ची हैं ये
घर की दीवारों में अब अग़यार की बातें न हों

क्यों ज़माने को ख़बर हो जानेमन ! ये जान लो
प्यार की बातों में अब तकरार की बातें न हों

'चाँद' हरदम गर्दिशे-अय्याम में चलता रहा
आज इसके सामने रफ़्तार की बातें न हों

जब पुराने रास्तों पर से कभी गुज़रे हैं हम
क़तरा-क़तरा अश्क बनकर आँख से टपके हैं हम

वक़्त के हाथों रहे हम उम्र भर यूँ मुंतशर
दर-ब-दर रोज़ी की ख़ातिर चारसू भटके हैं हम

हमको शिकवा है ज़माने से मगर अब क्या कहें
ज़िन्दगी के आख़िरी ही मोड़ पर ठहरे हैं हम

याद में जिसकी हमेशा जाम छलकाते रहे
आज जो देखा उसे ख़ुद जाम बन छलके हैं हम

इक ज़माना था हमारा नाम था, पहचान थी
आज इस परदेस में गुमनाम से बैठें हैं हम

'चाँद' तारे थे, गगन था, पंख थे, परवाज़ थी
आज सूखे पेड़ की इक डाल पे लटके हैं हम

नाम	: जगजीत क़ाफ़िर
जन्म तिथि	: 30/07/1979
शिक्षा	: शिक्षा मैट्रिक
प्रकाशित कृतियाँ	: किताब की तैयारी चल रही है
व्यवसाय/सम्प्रति	: प्राइवेट नौकरी
पता	: C/o Dieu Sales, 40B, Industrial Area A, Textile Colony, Ludhiana, Punjab.
मोबाइल	: 9877590282 (Whatsapp)
ई-मेल	: jagatairtel@gmail.com

❀

कुछ दिल की बयानी है इसमें, कुछ बात मेरे अरमानों की
ये बात हक़ीक़त है जानाँ, ये बात नहीं अफ़सानों की

उस शोख़ नज़र ने आँखों से इक चीज़ पिलाई है ऐसी
मख़मूर हुआ है मयख़ाना तक़दीर जगी पैमानों की

वो दर्द-ए-मुहब्बत यूँ जागा, हर साँस बग़ावत कर बैठी
इक आह उठी और काँप उठीं दीवारें सभी ज़िंदानों की

इस दौर-ए-सुख़न में ग़ज़लें भी, महरूम हुई हैं नकहत से
जिनका था मुक़द्दर गुलशन वो, ताबीर हुईं गुलदानों की

अंजाम है लाज़िम हर शय का, ऐ हाकिम-ए-दौराँ याद रहे
जिनकी थी हुकूमत दुनिया पर, अब ख़ाक हैं कब्रिस्तानों की

इक रोज़ ख़ुदा हाफ़िज़ कहकर, हम दूर सफ़र पर चल देंगे
उस राह पे तन्हा चलना है, हाजत भी नहीं सामानों की

तुम बताओ कि माजरा क्या है
इश्क़ है तो ये फ़ासला क्या है

सब अयाँ हो रहा है अश्कों में
मेरी आँखों में ढूँढता क्या है

क्या वजह थी किसी के मरने की
और जीने का फ़लसफ़ा क्या है

बात करता है ग़ैर से मेरी
मेरे बारे में जानता क्या है

माँगता हूँ तुझे दुआओं में
बिन तेरे और सूझता क्या है

तेरी यादों में जो लिखी मैंने
उस ग़ज़ल बिन मुशाइरा क्या है

जो कह रहे हैं इश्क़ तो करना फ़िज़ूल है
उन काफ़िरों की बात का शिकवा फ़िज़ूल है

दौलत मिली है आपको, इसको संभालिए
दर्द-ए-जिगर का आँख से बहना फ़िज़ूल है

जज़्बे-ख़याल सोच का मालिक है गर ख़ुदा
ग़ुस्सा बुतों की ज़ात पे करना फ़िज़ूल है

दुनिया की लोक-लाज है दुनिया के वास्ते
आशिक़ को और फ़कीर को कहना फ़िज़ूल है

मुर्शिद पिला दे गर मुझे नज़रों से एक बार
दुनिया की हर शराब का पीना फ़िज़ूल है

हाकिम बने अवाम का दुश्मन अगर कहीं
उसको बिठा के तख़्त पे रखना फ़िज़ूल है

अगरचे मरहम-ए-दर्द-ओ-ज़मन कुछ और भी हैं
मुझे सुकून है ज़ख़्म-ए-कुहन कुछ और भी हैं

ख़ुदा ने हुस्न दिया है तो ये ख़याल रहे
इस अंजुमन में अभी गुलबदन कुछ और भी हैं

हमारी ख़ाल फ़क़त आख़िरी लिबास नहीं
नज़र की हद से परे, पैरहन कुछ और भी हैं

ज़मीं की गोद में हमको पनाह मिल जाए
इस इंतज़ार में अहले कफ़न कुछ और भी हैं

रहे-हयात में लूटा है बुग़्ज़ ने जिनको
उन्हें ख़बर ही नहीं, राहज़न कुछ और भी हैं

ख़ुद अपने आपको शाइर न तुम कहो 'काफ़िर'
कि इस जहान में अहले-सुख़न कुछ और भी हैं

मैं अगर दिलजला नहीं होता
शे'र कोई कहा नहीं होता

अज़मत-ए-इश्क़ है कि झुकता हूँ
कोई पैकर ख़ुदा नहीं होता

बाँस के शहर में बसे लोगो
हर शजर खोखला नहीं होता

बस वही रात-दिन की गर्दिश है
और कुछ भी नया नहीं होता

अपनी वहशत से ख़ौफ़ खाता हूँ
ज़ब्त हर मर्तबा नहीं होता

मसअला ज़िन्दगी का है काफ़िर
मौत में कुछ बुरा नहीं होता

नाम : मुहम्मद ज़फ़र सिद्दीक़ी
जन्मतिथि : 11 नवम्बर, 1954
शिक्षा : इंटरमीडिएट
व्यवसाय : निजी सेवा से रिटायर्ड
प्रकाशित कृतियाँ : बाद अज़ ख़ुदा और रिसालत मआब (ना'त संग्रह उर्दू में) लहजा हमारा, चेहरा बोलता है (ग़ज़ल-संग्रह उर्दू में), ज़फ़र सिद्दीक़ी की चुनिन्दा ग़ज़लें, प्यास का लश्कर, और चेहरा बोलता है (ग़ज़ल-संग्रह हिंदी में)
सम्मान / पुरस्कार : बिहार उर्दू अकादमी-पटना, इल्मी मजलिस-पटना, बिहार हिंदी साहित्य सम्मलेन-पटना, अदबी संगम-राउरकेला से सम्मानित, अकबर रज़ा जमशेद अवार्ड-पटना, संकल्प संस्थान राउरकेला से उर्दू-हिंदी सेवा अवार्ड, अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू-पटना से उर्दू अवार्ड, जमील मजहरी अवार्ड-पटना, शाद अज़ीमाबादी अवार्ड-पटना, गुलशने-सईद अख़्तर अवार्ड-जमशेदपुर, नव शक्ति निकेतन-पटना सिटी से साहित्य साधना अवार्ड, कटक से नज़्मी अवार्ड, बिहार वर्ल्ड मिशन जर्नलिस्ट अवार्ड से सम्मानित
संपर्क का पता : ख़लीलपूरा, प्राइमरी स्कूल के सामने, फुलवारी शरीफ़-पटना-801505
मोबाइल : 93342 98652 / 82601 89890

बारिशों में जब वो गीले हो गये
जिस्म के मंज़र नशीले हो गये

दिल में चुभ जायें तो कुछ हैरत नहीं
नैन उसके अब कँटीले हो गये

छोड़कर जिनको गये परदेस हम
अब वो सारे फल रसीले हो गये

अपना साथी अपनी मर्ज़ी से चुना
जान के दुश्मन क़बीले हो गये

बाँदियों की माँग सूनी रह गयी
हाथ शहज़ादी के पीले हो गये

ज़िन्दगी का ज़हर पीने में 'ज़फ़र'
दूध जैसे लोग नीले हो गये

ख़ुश हुआ घड़ियाल मछली देखकर
भूख बढ़ जाती है बर्फ़ी देखकर

बर्गे-गुल पर बैठती है आज भी
फूल को रसदार तितली देखकर

वक़्त से पहले ही बालिग़ हो गये
आज के सब बच्चे टीवी देखकर

बे-ख़ता दिल मान लेता है ख़ता
नर्गिसी आँखे बरसती देखकर

मैंने जाना शह्र में है शांति
झूठे अख़बारों की सुर्ख़ी देखकर

अब कहाँ इन्साफ़ को जाऊँ 'ज़फ़र'
चुप हैं मुंसिफ़ मेरी अर्ज़ी देखकर

मुझे दुश्मन वो ठहराये हुआ है
कोई तो है जो बहकाये हुआ है

मेरे सर को क़लम करने की ख़ातिर
मेरे सर की क़सम खाये हुआ है

समझने को नहीं है कोई राज़ी
वो ज़ालिम सबको समझाये हुआ है

अभी हलचल बहुत है मछलियों में
अभी घड़ियाल मुँह बाये हुआ है

चमन में ख़ुश नहीं है कोई बुलबुल
इक उल्लू क़ह्र बरपाये हुआ है

दुआएँ दे कि तेरी अंजुमन को
'ज़फ़र' ग़ज़लों से गरमाये हुआ है

आँधियों से ख़ौफ़ खाना छोड़ दे
रेत में गर्दन छुपाना छोड़ दे

उठ खड़ा हो मोर्चा फिर से संभाल
हारने का ग़म मनाना छोड़ दे

जी रहे हैं तो मरेंगे एक दिन
मौत से हमको डराना छोड़ दे

साँप से कह दो बचाए अपनी जान
मोर क्यूँ अपना ठिकाना छोड़ दे

हम ख़िलाफे-ज़ुल्म लब खोलें अगर
वो सितमगर ज़ुल्म ढाना छोड़ दे

सर झुकाना मेरी फ़ितरत में नहीं
उसकी ज़िद है सर उठाना छोड़ दे

हम लोगों को दुःख पहुँचाया जायेगा
सच बोलेंगे तो झुठलाया जायेगा

दरिया पर पहरे बैठाये जायेंगे
क़तरे-क़तरे को तरसाया जायेगा

भूखे नंगे हो सकते हैं बेक़ाबू
सख़्ती से जब हुक्म चलाया जायेगा

हम भी काम मसीहाई का करते हैं
हमको भी इक दिन लटकाया जायेगा

किसको था मालूम, इशारे पर उसके
नाहक़ सबका ख़ून बहाया जायेगा

कब होती है जीते जी तारीफ़ 'ज़फ़र'
मर जाओगे तब गुण गाया जायेगा

नाम : ज़मीर दरवेश
जन्मतिथि : 08/12/1943
शिक्षा : एम. ए.
प्रकाशित कृतियाँ : 23, जिनमें 11 पुस्तकें बाल साहित्य पर हैं
सम्मान / पुरस्कार : उर्दू एकेडमी-बिहार द्वारा दो मर्तबा और इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं द्वारा कितनी ही बार सम्मान प्राप्त हुआ
व्यवसाय /सम्प्रति : रिटायर्ड सुपरिंटेंडेंट रेलवे
संपर्क का पता : 1. ग़ज़ल कदा, ई 13/1 लक्ष्मी विहार, हिमगिरि कालोनी, मुरादाबाद
2. द्वारा ज़िया ज़मीर एडवोकेट, चौकी हसन ख़ान, तहसील-मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)-244001
मोबाइल : 9690826797 (WhatsApp)

तमन्नाओं की बस्ती शहरे-ग़म यादों का बन लिक्खे
लिखें तन्हाई सब जिसको उसे दिल अंजुमन लिक्खे

बहारे-गुलसिताँ भी गर लिखे कुछ तेरे बारे में
तुझे गुलरू लिखे, गुलरंग लिक्खे, गुलबदन लिक्खे

सफ़र वो है अगर लिक्खे कोई अपना सफ़रनामा
जहाँ भी नक़्श हो जाएँ क़दम उसको थकन लिक्खे

न लिख पाऊँगा मैं कुछ आज की शब अपने बारे में
मेरे एहवाल शायद मेरे बिस्तर की शिकन लिक्खे

तेरे जाते ही कैसी हो गई आहट तलक रुख़सत
कोई इस घर को घर लिक्खे कि सन्नाटों का बन लिक्खे

किसी ने सब्ज़ रंगत में किसी ने ज़र्द रंगत में
हर इक मौसम ने हर पत्ती पे असरारे-चमन लिक्खे

पहन लो सुर्ख़ जोड़ा और रचा लो तुम अगर मेहंदी
तुम्हारे जिस्म को शोला तुम्हारा पैरहन लिक्खे

फिर ऐसी जीत पर आँखों में क्यों आँसू न भर आएँ
जो चढ़कर अपने ही नेज़ों पे ख़ुद अपने ही सर आएँ

है घर से रुठकर कैसी ये बच्चों जैसी ज़िद मेरी
मुझे लेने को ख़ुद चलकर मेरे दीवारो-दर आएँ

अगर हम ख़ाक के ज़र्रों से मिलने की तमन्ना है
सितारों से ये कह दो आसमानों से उतर आएँ

शबे-फ़ुरक़त तिरी तस्वीर से छुपकर तड़पता हूँ
तिरी हँसती हुई तस्वीर की आँखें न भर आएँ

हमीं क्या मुंतज़िर हैं, मुंतज़िर तो आइना भी है
तेरी सूरत दिखाई दे तेरे जलवे नज़र आएँ

कैसे रह सकते हैं गुज़रे दिन वो याद आए बग़ैर
जब न होता था कोई त्यौहार हमसाए बग़ैर

वो तो आख़िर माँ है माँ उसके लिए मुमकिन कहाँ
चैन आ जाए उसे बच्चे को बहलाए बग़ैर

आना-जाना मुसतरद है ईद पर अबके मगर
तेरी यादों से रहा जाता नहीं आए बग़ैर

लॉक-डाउन में बहुत लंबा था पैदल का सफ़र
और उस पर ये सितम चलना था कुछ खाए बग़ैर

मेरी साँसों से है ख़ुशबू का तुम्हारी साज़-बाज़
रह न पाओगे मेरी साँसों को महकाए बग़ैर

जलवा-ए-जानाँ है कोई और न कोई इश्क़-विश्क़
कैसे रहते हैं यहाँ के लोग उकताए बग़ैर

कुछ वो भी ज़ख़्म हैं जो दिखाए नहीं गए
कुछ वो भी अश्क हैं जो बहाए नहीं गए

देते भी क्या बयान वो अपनी सफ़ाई में
दामन के दाग़ जिनसे छुटाए नहीं गए

मजबूर हो के उनको ठिकाने लगा दिया
जो बेक़ुसूर और सताए नहीं गए

घबरा के उसने कर लिया अपना भी मोल-तोल
जब भूखे बच्चे उससे रुलाए नहीं गए

पत्थर के क्या निशान मिटाती हवा-ए-तुंद
जब रेत के निशान मिटाए नहीं गए

आएगा मौत का भी बुलावा तो जाएँगे
अब तक कहीं बग़ैर बुलाए नहीं गए

जब भी आ जाए तुम्हारा ही ख़याल अच्छा है
ये कहलवाता है मुझसे मेरा हाल अच्छा है

अच्छा माज़ी था, ये पूछा है, कि हाल अच्छा है
और जवाब अच्छा है यारो, न सवाल अच्छा है

इबतिदा इश्क़ की हरचंद कि अच्छी है मगर
ये कोई कैसे बता दे कि मआल अच्छा है

तजरिबे हिज्र के भी क़ीमती होते हैं बहुत
गरचे कुछ शक नहीं इसमें कि विसाल अच्छा है

कभी पूरा तो करें अपने सवाली का सवाल
आप फ़रमा तो रहे हैं कि सवाल अच्छा है

निसबतन उसके जो दिल में कोई बाल आ जाए
ये जो बाल आया है शीशे में ये बाल अच्छा है

नाम : जया गोस्वामी
जन्मतिथि : 5 फ़रवरी 1939
शिक्षा : एम.ए. (संस्कृत), एम. ए. (समाज शास्त्र)
प्रकाशित कृतियाँ : 'न आईने न रौशनी न खिड़कियाँ' (ग़ज़ल संग्रह), 2017, 'दलदल में जलसा' (ग़ज़ल संग्रह), 2017, 'हम खग टूटी पाँखों के' (गीत संग्रह), 2016, 'ये प्रवासी स्वप्न मेरे' (गीत संग्रह), 2013, 'पास तक फ़ासले' (गीत और ग़ज़ल संग्रह), 2010, 'अभी कुछ दिन लगेंगे' (ग़ज़ल संग्रह), 1995.
सम्मान / पुरस्कार : 'अमृत सम्मान', राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 2018-19.
'प्रतिभा सम्मान', द्वारका सेवा निधि, जयपुर, 2017.
'साहित्यकार सम्मान', अनुराग सेवा संस्थान, दौसा, 2008.
'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान', राजस्थान लेखिका संघ, जयपुर, 2009.
'साहित्य सृजन सम्मान', तैलंग-कुलम्, जयपुर, 2015.
व्यवसाय /सम्प्रति : वरिष्ठ कार्मिक प्रबंधक, राजस्थान आवासन मंडल (सेवा निवृत्त)/साहित्य सृजन
संपर्क का पता : 207, पद्मावती कॉलोनी-I, गली नं. 4, किंग्स रोड, जयपुर-302019
मोबाइल : 98295 39330; 96641 33382 (WhatsApp)
ई -मेल : jayasumedha@gmail.com

❀

गुम हुई इन्सान की वहदत हमारे हाथ से
लो चलो, फिर से बुनें क़ुर्बत हमारे हाथ से

अब गले लग जायें हम हैवानियत को भूलकर
ताज़ियत की फिर बढ़े अज़मत हमारे हाथ से

सरकशी से बाज आ जाएँ, सुधर जाएँ सभी
फिर न हो जाए कोई हरकत हमारे हाथ से

कुछ दुःखी हैं कुछ सुखी, कुछ पा रहे कुछ खो रहे
हर करम की चुक रही क़ीमत हमारे हाथ से

जन्म से ही जो बुलंदी पर रही थी, छीन ली
उम्र ने बिल-जब्र वो ताक़त हमारे हाथ से

काश, कोई सुख हथेली की लकीरों में दिखे
पर मशक़्क़त ने घिसी क़िस्मत हमारे हाथ से

अल्फ़ाज़ कड़े अपने-अपने
बाहम झगड़े अपने-अपने

ख़ुद अंजामों तक लाएँगे
बेजा लफ़ड़े अपने-अपने

पहने बैठे हैं मज़हब के
शरियत कपड़े अपने-अपने

रख देते क़ौमी तखड़ी पर
वज़नी पलड़े अपने-अपने

कुछ इन्बुलवक़्ती बदल रहे
हर बार धड़े अपने-अपने

रखना तक़रार फ़सादों में
सब कान खड़े अपने-अपने

तामीर दिली दर्द का इज़हार नहीं है
शाइर तो किसी ग़म का तलबगार नहीं है

अब दिल बना दिलेर, बग़ावत-नशीन भी
दुनियावी तग़ाफ़ुल से शरमसार नहीं है

बिकते रहे हैं झूठ फ़रेबों के जख़ीरे
कोई भी सदाक़त का ख़रीदार नहीं है

दिल पूछता है पस्त मुरव्वत से बारहा
मेरे ज़मीर तू तो ख़तावार नहीं है?

कमज़र्फ़, हसद, ऐब, तअर्रुज के दौर में
दुनिया रक़ीब तो है, मददगार नहीं है

गर हौसले बुलन्द दिखाते हैं रास्ते
तो मंज़िले-मक़सूद भी दुश्वार नहीं है

पूछो न आजकल हम क्या ख़ास जी रहे हैं
साँसों में ज़िंदगी का एहसास जी रहे हैं

हो जाय अब मयस्सर कोई पनाह शायद
बरबाद आस में भी विश्वास जी रहे हैं

तस्वीर में टँगे हैं, जो अजनबी से साये
रिश्तों के नाम पर वे सन्त्रास जी रहे हैं

हँसकर मिटा रहे हैं, बरबस गहन उदासी
अपनी हँसी में कोई परिहास जी रहे हैं

देखे तलाब, झरने, नदियाँ, कुएँ, समुन्दर
जो तृप्ति तक न पहुँची वो प्यास जी रहे हैं

अब शोर-गुल बना है तनहाइयों का आलम
शहरों के बीच रहकर बनवास जी रहे हैं

वहाँ आसमाँ पर हज़ारों जहाँ हैं
सिवा इस ज़मीं के, सभी बेज़ुबाँ हैं

ज़मीं तो सितारों से रहती मुख़ातिब
सितारे मगर बोलते ही कहाँ हैं?

बुलाया बहुत चाँद को शाइरों ने
प वो मुद्दतों से जहाँ का तहाँ है

ज़मीं पर समंदर, बरफ़, तूर, जंगल
मगर आसमाँ में धुआँ ही धुआँ है

कभी सह न पाया जो फ़ितरत ज़मीं की
बहाता रहा अश्क, ये आसमाँ है

क़हर बन रहा है ज़हर आदमी का
ज़मीं फिर भी हर हाल में ख़ुशनुमाँ है

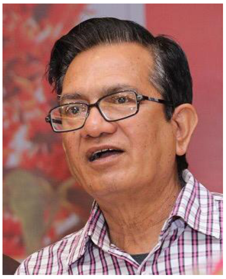

नाम : ज़हीर क़ुरैशी
जन्मतिथि : 5 अगस्त, 1950
शिक्षा :
प्रकाशित कृतियाँ : एक संचयन सहित कुल ग्यारह ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित और चर्चित हो चुके हैं। ज़हीर क़ुरैशी की एक-एक आलोचना-पुस्तक, दोहा-संग्रह, संस्मरण-संग्रह और भी प्रकाश में आई हैं।

सम्मान / पुरस्कार : उन्हें 'एक टुकड़ा धूप' ग़ज़ल-संग्रह पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान और 'बोलता है बीज भी' पर साहित्य अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद् के प्रतिष्ठित कृति पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है। वर्ष 2017 में, ग़ज़ल-अवदान के लिए किताबघर प्रकाशन के आर्य स्मृति साहित्य सम्मान से भी ज़हीर क़ुरैशी अलंकृत हुए हैं।

संक्षिप्त परिचय : वे देश के पहले हिन्दी ग़ज़लकार हैं, जिनकी कुल 25 ग़ज़लें 5 वर्ष तक देश के दो विश्वविद्यालयों में एम.ए. (हिन्दी) पाठ्यक्रम में निर्धारित रहीं। अब तक, ज़हीर क़ुरैशी के ग़ज़ल-रचना अवदान पर मध्य-प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के तीन विश्वविद्यालयों के शोध-छात्रों को पी.एच.डी. 'अवार्ड' की जा चुकी है।

पता : 108, त्रिलोचन टावर, संगम सिनेमा के सामने, गुरूबक्श की तलैया,
पो.ऑ. जीपीओ, भोपाल-462001 (म.प्र.)
मोबाइल : 09425790565 फोनः 0755-2740081
Email : poetzaheerqureshi@gmail.com

❀

पीले पत्ते बदलते रहते हैं
पेड़ कपड़े बदलते रहते हैं

दुःख की पीड़ा कभी नहीं बदली
सिर्फ़ दु:खड़े बदलते रहते हैं

ज़िन्दगी की मरीचिकाओं में
लोग सपने बदलते रहते हैं

अपना चेहरा बदल न पाए जो
वो मुखौटे बदलते रहते हैं

घर के अंदर भी एक-दूजे से
लोग झगड़े बदलते रहते हैं

आज भी, दोस्तों की महफ़िल में
बस, लतीफ़े बदलते रहते हैं

❀

मिली-जुली हुई आबादियों में रहते हैं
मुहल्ले वाली घनी बस्तियों में रहते हैं

ग़रीबी आपको अपराध लग रही हो अगर
तो यूँ समझिए, हम अपराधियों में रहते हैं

दिखाते रहते हैं धागों से उँगलियों का हुनर
जो पेट भरने को, कठपुतलियों में रहते हैं

बिना छिपाए, हज़ारों से प्यार है उनको
हम इसलिए भी खुली तितलियों में रहते हैं

वो जल गई है, मगर, उसका बल नहीं जाता
ज्वलन के बाद भी, बल रस्सियों में रहते हैं

बहू को सौंपी नहीं चाबियाँ अभी माँ ने
ममा के प्राण इन्हीं चाबियों में रहते हैं

इतिहास को बना के जो इतिहास बन गए
जनता की याद में वो बहुत 'ख़ास' बन गए

ऐसे भी दृश्य देखे गए हैं कभी-कभी
उपहास करने वाले भी उपहास बन गए

जीवन की दस या बीस कथाओं को जोड़कर
हर आदमी के अपने उपन्यास बन गए

सायास स्वप्न देखने वालों के वास्ते
अवसर कभी-कभी तो अनायास बन गए

सेवा के क्षेत्र में वो अहंकार त्यागकर
आए तो अपने-आप हरी घास बन गए

आकाश में न उभरी कभी शक्ल झील की
झीलों में आसमान के आभास बन गए

❀

सीमा के पार जाने की हिम्मत नहीं हुई
एहसान को चुकाने की हिम्मत नहीं हुई

सज-धज के मुस्कुराना था उस नौकरी में रोज़
हर वक़्त मुस्कुराने की हिम्मत नहीं हुई

अपनी कसौटियों को बनाने के बाद भी
मित्रों को आज़माने की हिम्मत नहीं हुई

बच्चे का स्वप्न टूट न जाए... ये सोचकर
गुल्लक को खनखनाने की हिम्मत नहीं हुई

ख़ुश और मुस्कुराते हुए परिजनों के बीच
अपनी व्यथा सुनाने की हिम्मत नहीं हुई

धरती के बाद, चाँद या मंगल की भूमि पर
दुनिया नई बसाने की हिम्मत नहीं हुई

❀

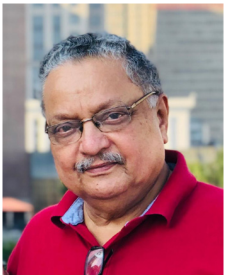

नाम : विजय कुमार अबरोल
साहित्यक नाम : ज़ाहिद अबरोल
जन्म तिथि/स्थान : 20 दिसम्बर, 1950, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)
शिक्षा : एम. एस. सी. (आनर्स), भौतिक विज्ञान
प्रकाशन : 1.अंधा ख़ुदा (नज़्म-संग्रह), उर्दू में, 1978
2. एक सफ़्हा पुरनम (पंजाब के आतंकवाद पर नज़्में), उर्दू तथा हिंदी में, 1986
3. फ़रीदनामा (पंजाबी के सूफ़ी कवि शैख़ फ़रीद के कलाम का उर्दू में काव्यानुवाद), 2003
4. दरिया-दरिया साहिल-साहिल (उर्दू ग़ज़ल-संग्रह), हिंदी में 2014, उर्दू में 2015
5. ख़्वाबों के पेड़ तले (नज़्म-संग्रह), उर्दू में 2016, हिंदी में 2018
6. A Three-Step Journey (English), (ज़ाहिद अबरोल की नज़्मों/ग़ज़लों का अंग्रेज़ी में डॉ. ललित मोहन शर्मा (सेवानिवृत्त प्रिंसिपल) द्वारा किया गया काव्यानुवाद, 2016.

सम्मान/ पुरस्कार :
- फ़र्स्ट फ़्राइडे फ़ोरम, चंडीगढ़ द्वारा ' ऋषि पटियालवी मैमोरियल अवार्ड', 2016
- बाबा शैख़ फ़रीद आगमन पर्व पर फ़रीदकोट डिस्ट्रिक्ट कल्चरल सोसाइटी द्वारा सम्मान, 2016
- हज़रत अमीर ख़ुसरो कल्चरल सोसाइटी (रजिस्टर्ड, कैनेडा) एवं ग्लोबल पंजाब फ़ाऊँडेशन (टोरंटो चैप्टर) द्वारा सम्मान, 2017
- हिमाचल प्रदेश कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी द्वारा पुस्तक 'दरिया-दरिया साहिल-साहिल' को उर्दू साहित्य पुरस्कार, 2016
- हिमाचल प्रदेश कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी की 'सामान्य परिषद्' में (2018 – 2023) के लिये उर्दू भाषा के साहित्यक प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत

व्यवसाय : वरिष्ठ प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, (सेवानिवृत्त)
संपर्क का पता: 'गुलरुख़', निकट डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, नंगल रोड, ऊना (हि.प्र.)-174303
ई-मेल : abrol.zahid@gmail.com
मोबाइल : +91 98166 43939 (Active on Whats App)

ज़हन का जब जहान खुलता है
दिल में इक आस्मान खुलता है

पत्तियाँ यूँ खुलें गुलाबों की
जैसे शाइर का ध्यान खुलता है

उसकी यादों से तरबियत पाकर
ग़म का इक गुलसितान खुलता है

सब झरोखों के बंद होने पर
ख़्वाब का आस्मान खुलता है

दिल में रक्खो जो दर्द की चाबी
ख़ुद-ब-ख़ुद हर मकान खुलता है

बाग़बाँ सोच में है ग़र्क़ कि कब
आस्माँ का गुमान खुलता है

वफ़ा की डोर से बंधकर ही हम बलंद रहे
जिन्होंने चाहा, उन्हीं के नियाज़मंद रहे

नशे में बह न सके और न होशमंद रहे
ज़माना देखने निकले थे होंठ बंद रहे

पलट के शहर में आये तो ढूँढती थी नज़र
उन्हीं को जो हमें बचपन ही से पसंद रहे

करम हो, सहने-मुहब्बत हो या हो ख़ुशबख़्ती
कुछ एक दर तो हमेशा ही हम पे बंद रहे

क़िला है जीतना आसान, मेरे हाथों में
तिरे यक़ीं की, मुहब्बत की गर कमंद रहे

हमारी ख़ामियाँ इज़्ज़त से देखी जायेंगी
महाज़-ए-जंग में गर हौसले बलंद रहे

ये सियासत तो तमद्दुन की सियाहकारी है
नेक तहज़ीब की तहक़ीर की तय्यारी है

अहले-अग़ियार की मजलिस में है रक़्साँ कब से
ज़िन्दगी है कि तवाइफ़ की अदाकारी है

एक दुनिया है कि सब होश में होता है जहाँ
इक जहाँ है जहाँ ख़्वाबों को भी लाचारी है

होश में आने से डरता हूँ कि टूटे न कहीं
वो इनायत का सफ़र ख़्वाब में जो जारी है

यास में गुम हूँ कभी, दर्द से लबरेज़ कभी
मेरी क़िस्मत में फ़क़त ग़म की अलमदारी है

पड़ गई है मिरे पैरों में मुलाक़ात के बा'द
एक ज़ंजीर सी जो कोह से भी भारी है

मिस्ल-ए-नश्शा-ए-शराब आते हैं
दोस्त मानिन्द-ए-गुलाब आते हैं

अच्छे आते हैं ख़राब आते हैं
दिन सभी मिस्ल-ए-हुबाब आते हैं

जाम-दर-जाम ही चढ़ता है नशा
बाब-दर-बाब ही ख़्वाब आते हैं

सुस्त-रौ ख़ुशियाँ झिझकती हैं सदा
हादसे पा-ब-रिकाब आते हैं

बेख़ुदी में भी तिरी याद आई
जैसे बेख़्वाबी में ख़्वाब आते हैं

कितनी मकरूह हुई है ता'लीम
हुक्म-ए-हाकिम से निसाब आते हैं

नाम : ज़िया ज़मीर

जन्मतिथि : 07.07.1977

शिक्षा : एम. एस-सी.(गणित), एल-एल.बी., एम.ए. (उर्दू)

प्रकाशित कृतियाँ : ख़्वाब ख़्वाब लम्हे (2010), दिल मदीने में है (2014), ये सब फूल तुम्हारे नाम (प्रकाशन में)

सम्मान / पुरस्कार : बिहार उर्दू अकादमी सम्मान, उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी सम्मान, हम्दो-नात फाउंडेशन सम्मान।

व्यवसाय / सम्प्रति : कर अधिवक़्ता

संपर्क का पता : ज़ैड बुक डिपो के पास, चौकी हसन ख़ाँ, चौराहा तहसील स्कूल, मुरादाबाद-244001

मोबाइल : 87556 81225 (WhatsApp)

ई -मेल : ziazameer2012@gmail.com

मेरे मौला तिरी मर्ज़ी नहीं देखी जाती
ये जो दुनिया है ये ऐसी नहीं देखी जाती

जाँ बचाने के लिए मास्क लगाए हुए हैं
लेकिन आँखो की ख़मोशी नहीं देखी जाती

हाथ धोने में कहाँ कोई क़बाहत है मगर
हाथ से हाथ की दूरी नहीं देखी जाती

पार्क को तकती इन आँखों पे तरस आता है
नन्हीं आँखों की उदासी नहीं देखी जाती

डस्टबिन में से जो चुपके से उठा लेता है
बूढ़े हाथों में वो रोटी नहीं देखी जाती

पिटते मज़दूरों के जत्थे नहीं देखे जाते
भूखे जिस्मों पे ये लाठी नहीं देखी जाती

देखा जाता नहीं मय्यत की ये तदफ़ीन का ढंग
बिना काँधे कोई अर्थी नहीं देखी जाती

किसी से आशनाई हो रही है
किसी से लबकुशाई हो रही है

बदन भी हो गया है अब तो शामिल
मुहब्बत इंतिहाई हो रही है

किसी बच्चे से पिंजरा खुल गया है
परिंदों की रिहाई हो रही है

हुआ है जबसे तय रिश्ता तुम्हारा
हमारी जगहँसाई हो रही है

अभी मिल जाएँगे दोनों गले हम
अभी तो हाथापाई हो रही है

कफ़न सरकाया है मुँह पर किसी ने
किसी की मुँह दिखाई हो रही है

ग़म का दरिया सूख न जाए इसकी रवानी कम न पड़े
ख़ूने-जिगर भी शामिल कर लूँ आँख में पानी कम न पड़े

उसके बदन की ख़ुशबू का कुछ तोड़ निकालो आज की रात
और कोई ख़ुशबू ले आओ रात की रानी कम न पड़े

साल दो साल की बात नहीं है उम्र बहुत दरकार है, हाँ
सोच रहा हूँ इश्क़ की ख़ातिर एहदे-जवानी कम न पड़े

आईने का दिल नहीं टूटे इसका भरम आबाद रहे
चेहरे पर कुछ और बढ़ाओ ये हैरानी कम न पड़े

कारे-जहाँ में अपनी वुसअत से ये ख़ुद हैरान सा है
आदम-ज़ाद को मेरे मौला ! आलमे-फ़ानी कम न पड़े

दर्द के सारे ही क़िस्सों की याद-दहानी कर लेना
हिज्र की रात बहुत लम्बी है एक कहानी कम न पड़े

दर्द की ग़म की नुमाइश नहीं करनी आती
कैसी आँखें हैं कि बारिश नहीं करनी आती

हमसे तो इश्क़ में कुछ भी नहीं करना आता
हद तो ये है कि गुज़ारिश नहीं करनी आती

जबकि मालूम है मौक़ूफ़ है तुम पर सब कुछ
और तुम हो तुम्हें ख़्वाहिश नहीं करनी आती

यूँ ही हल्क़ा कोई तामीर नहीं कर पाए
हाँ हमें झूठी सताइश नहीं करनी आती

हम कि कोशिश से भुला सकते हैं तुमको लेकिन
बात ये है हमें कोशिश नहीं करनी आती

दोस्तों को भी नहीं दोस्त बनाना आता
और दुश्मन से भी रंजिश नहीं करनी आती

दिल दुःखने से आँखों में जो गहराई बनेगी
यारों के लिए वज्ह-ए-मसीहाई बनेगी

पहले तिरे चेहरे को किया जाएगा रौशन
हैरत के लिए फिर मिरी बीनाई बनेगी

देखेगा तअ’ज्जुब से बहुत देर उसे दिल
जब ज़हन के ख़ुश रखने को दानाई बनेगी

उस मोड़ पे रिश्ता है हमारा कि अगर हम
बैठेंगे कभी साथ तो तन्हाई बनेगी

मैं इश्क़ के हासिल की बनाऊँगा जो तस्वीर
तस्वीर बनेगी नहीं, रुसवाई बनेगी

दुनिया ही लगाएगी तमाशा यहाँ हर रोज़
दुनिया ही तमाशे की तमाशाई बनेगी

नाम : ज़ीनत एहसान क़ुरैशी
जन्म तिथि : 21 जनवरी, 1970
शिक्षा : एम.ए. हिन्दी साहित्य; समाज शास्त्र, बी. लिब. साइंस, बी.एड. एल. एल. बी.
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह : तेरी याद में (हिंदी), तुम्हारे लिए, सुलगती धूप, सुलगती प्यास- तीनों उर्दू में
कहानी संग्रह : 'बवँडर'-देवनागरी में
सम्मान : भारतीय दूतावास कुवैत से परवीन शाकिर सम्मान, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा : वाग्देवी सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान, ठहाका सम्मान, शाने-अदब शिखर सम्मान, जिगर मुरादाबादी सम्मान, सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान, विद्या वाचस्पति सम्मान, श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, बेस्ट पोएट अवार्ड, यादे-नश्तर सम्मान इत्यादि सैकड़ों सम्मान अन्य संस्थाओं द्वारा नारी गौरव सम्मान, गुरू गौरव सम्मान, जनकल्याण सम्मान, अपराजिता सम्मान
व्यवसाय : गृहिणी
स्थाई पता : वैभव प्लेस, A/303, मेगा माल के सामने, न्यू लिंक रोड, अँधेरी वेस्ट, मुंबई
मोबाइल : 92212 22223; **email** : zeenatq21@yaho.com

❀

अदावतों में भी वो मुझसे प्यार करता है
वो एक तीर से दो-दो शिकार करता है

वो जिसने दर्द के तोहफ़े अता किये मुझको
उसी की याद दिले-बेक़रार करता है

वो मुस्कुरा के तेरा देखना मेरी जानिब
ख़िज़ाँ-रसीदा चमन को बहार करता है

बुलंद कर दिया उसको ख़ूलुस ने इतना
सलाम झुक के उसे ताजदार करता है

उसे जो मिल गई शाख़े-गुलाब की सोहबत
वो ख़ार ख़ुद को गुलों में शुमार करता है

मैं जिसकी राह में पलकें बिछाई रहती थी
वो शख़्स राह मेरी ख़ार-ख़ार करता है

बरसों के इंतज़ार का ऐसा सिला दिया
उसने ग़मों की भीड़ से मुझको मिला दिया

वो जिसकी दोस्ती पे हमें नाज़ था बहुत
उसने ही ज़हर जाम में मेरे मिला दिया

उस संग दिल से आज भी करते हैं प्यार हम
जिसने ख़तों को फाड़ के मेरे जला दिया

उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने किया है ख़ुदा का काम
भूखे को जिसने प्यार से खाना खिला दिया

पलकें बिछाये रखते थे हम जिनकी राह में
उसने हमारी राह में काटें बिछा दिया

ऐबों पे मेरे रोज़ वो करता था तब्सरा
मैंने भी आईना उसे इक दिन दिखा दिया

दिलों में प्यार के ग़ुन्चे खिलाये तूने माँ
हमारे हौसले अक्सर बढ़ाये तूने माँ

सफ़र हयात का दुश्वार हो गया जिस दम
हमारी राह से काँटे हटाये तूने माँ

कभी जो आँख मेरी नम हुई किसी ग़म से
हँसी के फूल हमेशा खिलाये तूने माँ

उठाये तूने हमेशा मुसीबतों के पहाड़
कभी न आँख से आँसू बहाए तूने माँ

घिरी है जब भी अँधेरों में ये तेरी 'ज़ीनत'
तो मेरी राह में दीपक जलाये तूने माँ

अपने ऐबों को पहले गिना कीजिये
फिर किसी शख़्स पर तब्सरा कीजिये

मैं भी इक रोज़ देखूँ दयारे-नबी
आप सब मेरे हक़ में दुआ कीजिये

सारी दुनिया तुम्हारे ही गुन गायेगी
अपने किरदार को आइना कीजिये

सब्र कर लीजिये मसलेहत जानकर
तँगी-ए-ज़ीस्त का क्या गिला कीजिये

उनके दिल से भी नफ़रत निकल जायेगी
दुश्मनों का भी 'ज़ीनत' भला कीजिये

ऐसे घिरी हूँ मैं तेरी रानाइयों के बीच
तुलसी का दोहा जैसे हो चौपाइयों के बीच

दिल का क़रार जाने कहाँ खो के रह गया
जबसे सुना कि भाई हैं दंगाइयों के बीच

आँसू जो तुमने पोछे तो भर आया और दिल
सैलाब जैसे आ गया अँगनाइयों के बीच

आपस में कब मिलेंगे गले लोग प्यार से
कब तक रहेगा देश मेरा खाइयों के बीच

मौसम ज़रूर बदलेगा 'ज़ीनत' यक़ीन है
कोयल की कूक गूँजेगी अमराइयों के बीच

नाम	: ज्योति मिश्रा
जन्मतिथि	: 7 जुलाई
शिक्षा	: एम .ए. (राजनीति विज्ञान)
प्रकाशित कृतियाँ	: कई साझा संकलन
सम्मान / पुरस्कार	: साहित्यिक संस्था लेख्य-मंजूषा द्वारा पुरस्कृत
व्यवसाय /सम्प्रति	: स्वतंत्र लेखन
संपर्क का पता	: श्री सी पी मिश्रा, गली न. 3, चिरैंयाटाँड, पटना - 800001
मोबाइल	: 9504557272 (WhatsApp)
ई-मेल	: jyotipatna2012@gmail.com

❀

नहीं था क़ाफ़िला पीछे, सदा तन्हा खड़े थे हम
हमारा ऐब ही समझो, ज़ुबाँ से कुछ खरे थे हम

जिधर चलती थी पुरवाई, उधर ही दौड़ते थे हम
हवा में थी मुहब्बत जो, दिवाने हो चले थे हम

ख़ुदा से मन्नतें माँगी, ज़माने से अदावत की
तुम्हें पाने की हसरत में, मुक़द्दर से लड़े थे हम

खिले हैं फूल गुलशन में, न छूने की इजाज़त है
जनाज़ा इश्क़ का लेकर, बहारों में खड़े थे हम

नहीं कच्चा घड़ा समझो, ज़रा सी चोट में टूटें
नरम मिट्टी नहीं दिल की, कि शोलों पर पके थे हम

मिटाना है बड़ा मुश्किल, जवाँ यादें मुहब्बत की
तुम्हें जो भूलना चाहा, तो ख़ल्वत से मिटे थे हम

❀

वो प्यार का कर देते जो इज़हार किसी दिन
हम तोड़ दें रस्मों की ये दीवार किसी दिन

हम प्यार के ग़ुँचों से सजाएँगें गुलिस्ताँ
महकेगा मुहब्बत से ये संसार किसी दिन

आजा कि ख़यालों में मिले कुछ सुकूँ हमको
कर लेंगें हक़ीक़त में भी दीदार किसी दिन

कहते थे कि जीवन है सफ़र चार दिनों का
अब ख़त्म ही होने को हैं दिन चार किसी दिन

क़ुदरत के क़हर से है हर इक शख़्स परेशाँ
मिट जाए न अपना हसीं संसार किसी दिन

बंदों की सदा सुन ले ख़ुदा करते दुआएँ
वीरान ये गुलशन है, हो गुलज़ार किसी दिन

❀

हौसले अपनी जगह हैं बेबसी अपनी जगह
वीरता भी हारती बदक़िस्मती अपनी जगह

वक़्त की रफ़्तार से निस्बत न करना भूलकर
थम न जाए यक-ब-यक ये ज़िंदगी अपनी जगह

शम्स भी निकला है बाहर धूप है रौशन जहाँ
फिर भी चस्पा है दिलों में तीरगी अपनी जगह

जो परिंदे क़ैद हैं उनको पुकारे आसमाँ
चाहतें अपनी जगह हैं बेकसी अपनी जगह

ग़म चले आए विदेशी जो वबा की शक्ल में
ढूँढती फिरती है नन्हीं सी ख़ुशी अपनी जगह

मौत दस्तक दे रही ले हाथ में फ़रमान ये
है ख़ुदा का हुक्म अब हो वापसी अपनी जगह

हमारी नज़र पे नज़र ही कहाँ है
मुहब्बत का तुम पर असर ही कहाँ है

तुम्हारे ही दिल में धड़कता है छुपकर
मेरे दिल की तुमको ख़बर ही कहाँ है

कहाँ बंद हों वो कोरोना से डरकर
सड़क के सिवा उनका घर ही कहाँ है

गले तो लगा लो बिछड़ने से पहले
बचा अब हमारा सफ़र ही कहाँ है

फ़क़त मौत ही अब टहलती है बाहर
यहाँ ज़िदगी अब बसर ही कहाँ है

❀

फ़िक्रो-ग़म को धुआँ करके उड़ाया जाए
अपनी बेफ़िक्री से दुनिया को जलाया जाए

वस्ल का दीप चलो दिल में जलाया जाए
हिज्र की शब को मुहब्बत से मिटाया जाए

ख़ार ही ख़ार तो होते नहीं हैं गुलशन में
वादी-ए-इश्क़ है फूलों से सजाया जाए

देखता है वो मुझे प्यार भरी नज़रों से
चाँद छज्जे से मेरे दूर हटाया जाए

हमने जिनके लिए दुनिया से बग़ावत की है
वो ही कहते हैं मुहब्बत को भुलाया जाए

पास होने का हुनर फ़ायदा क्या कहने से
तीर तरकश में अगर है तो चलाया जाए

बात फूलों से समझते नहीं गर पत्थर दिल
हाथ में फिर कोई पत्थर ही उठाया जाए

❀

नाम : डॉ. अब्दुल क़ादिर
पिता : स्व. प्रो. एम.ए. हफ़ीज़
माता : सालेहा ख़ातून
पत्नी का नाम : सना अफ़ज़ल
तारीख पैदाइश : 1 सितम्बर, 1978
तालीम : एम. बी. ए., पी. एच. डी., यू. जी. सी. (नेट)
मशगला : सहायक प्रोफ़ेसर, जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैंनेजमेंट, नॉएडा (HR/OB)
पत्राचार का पता : B-28/5A, सनशाइन अपार्टमेंट, प्रथम तल, फ्लैट नं 202, ठोकर नं 7, शाहीन बाग़, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
मोबाइल : 98910 25825

❀

काम बस फ़ातिहा-ख़ानी से नहीं होता है
इश्क़ इज़हारे-ज़ुबानी से नहीं होता है

है ये क़ुरआन अ़मल करने की दौलत यारो
नफ़अ बस लफ़्ज़ो-मआनी से नहीं होता है

कुछ इनायत यहाँ अहबाब भी कर जाते हैं
सब ज़ियाँ दुश्मने-जानी से नहीं होता है

काम हो जाता है बस मिसरा-ए-अव्वल से कभी
काम जो मिसरा-ए-सानी से नहीं होता है

बाज़ औक़ात ठहरने की तलब होती है
काम हर वक़्त रवानी से नहीं होता है

जानलेवा कभी ख़ामोशी भी हो जाती है
ख़ून बस शोला-बयानी से नहीं होता है

❀

कोई दीवार न दर खुलता है
पर मिरा अ़ज़्मे-सफ़र खुलता है

बड़ी मुश्किल से वो दर खुलता है
ये अलग बात, मगर खुलता है

उनकी आँखों का कोई वक़्त नहीं
मैकदा शामो-सहर खुलता है

हम ही दीवाने बने फिरते हैं
कब तिरा ज़ौके-नज़र खुलता है

माँ तो रो लेती है लेकिन यारो
कब यहाँ कोई पिदर खुलता है

शे'र दर शे'र कहे जाते हैं
तब कहीं जा के हुनर खुलता है

❀

अब तो बस एक गुमाँ हूँ मैं भी
'तू नहीं है तो कहाँ हूँ मैं भी'

मुझको फ़ुर्सत ही कहाँ है तुझसे
जिस जगह तू है वहाँ हूँ मैं भी

राख होने को हैं यादें उसकी
और होने को धुआँ हूँ मैं भी

ऐसे अब रहता नहीं मुझमें कोई
वैसे कहने को मकाँ हूँ मैं भी

वो भी लगता है बदलना चाहे
सो मुकरने को बयाँ हूँ मैं भी

आइना देख के 'अब्दुल क़ादिर'
ऐसा लगता है कि हाँ हूँ मैं भी

शहरे-अलम में कोई शनासा नहीं हुआ
ये हादसा भी ख़ूब है ऐसा नहीं हुआ

क्या-क्या तवक़्क़ुआत रहीं दिल में क्या कहें
ऐसा नहीं हुआ कभी वैसा नहीं हुआ

मुझ पर निगाहे-यार ज़रा देर से पड़ी
फिर उसके बाद मैं कभी अच्छा नहीं हुआ

उसने तो यूँ ही पूछ लिया था कि ठीक हो
लेकिन इन आँसुओं से तमाशा नहीं हुआ

वो कर रहा था हद से ज़ियादा इनायतें
बस ये हुआ के आज मैं रुसवा नहीं हुआ

'क़ादिर' फ़िराक़े-यार कोई आ़म बात है
तुम पूछते हो क्या हुआ ? क्या-क्या नहीं हुआ !

❀

आसमाँ सर पे उठाया भी नहीं जाएगा
हाँ मगर उसको भुलाया भी नहीं जाएगा

हौसला अपनी जगह ठीक है लेकिन हमसे
दूसरा इश्क़ निभाया भी नहीं जाएगा

शिकवा-ए-ज़ुल्मते-शब ख़ूब किया जाएगा
इक दिया ख़ुद का जलाया भी नहीं जाएगा

ख़ाक उस शख़्स से ताबीर पे इसरार करें
जिससे कुछ ख़्वाब दिखाया भी नहीं जाएगा

तुमने अच्छा ही किया तर्के-मुहब्बत करके
तुमसे ये मिसरा उठाया भी नहीं जाएगा

वो भी मुमकिन है न आने के बहाने ढूँढे
और अब हमसे बुलाया भी नहीं जाएगा

❀

नाम : डॉ. आरती कुमारी
जन्मतिथि : 25/03/1977
शिक्षा : एम.ए. (अंग्रेज़ी), एम. एड., पी.एच.डी. (अंग्रेज़ी), नेट (शिक्षाशास्त्र)
प्रकाशित कृतियाँ : कैसे कह दूँ सब ठीक है (काव्य संग्रह)
सम्मान / पुरस्कार : चित्रगुप्त सामाजिक संस्था द्वारा गोपी वल्लभ सहाय सम्मान 2013, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'उर्मिला कौल साहित्य साधना सम्मान' 2018 एवं हिंदी-सेवी सम्मान 2018, निराला स्मृति संस्थान, डलमऊ द्वारा 'सरोज स्मृति सम्मान 2018, नवशक्ति निकेतन संस्था द्वारा शाद अज़ीमाबादी सम्मान 2020
व्यवसाय /सम्प्रति : शिक्षक, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ब्रह्मपुरा, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार
संपर्क का पता : शशि भवन, आज़ाद कॉलोनी, रोड 3, माड़ीपुर, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार-842001
मोबाइल : 8084505505 (WhatsApp)
ई -मेंल : artikumari707@gmail.com

❀

जो तू ज़िन्दगी में न मिल सका मुझे इसका कोई गिला नहीं
है गिला नसीब में फिर कभी भी वफ़ा का फूल खिला नहीं

मैं रहूँगी संग सदा तेरे तू जहाँ रहे मेरे हमसफ़र
मेरा आशियाँ तेरे दिल में है मेरी चाह कोई क़िला नहीं

मेरी हसरतें मेरे साथ ही तुझे याद कर के हैं थक गई
तेरी ख़ामुशी है सज़ा मुझे मेरे प्यार का ये सिला नहीं

ये जो ख़्वाब है मेरी आँख में तेरे दम से है ये बुना हुआ
तेरा अक्स आँख की झील में कई मुद्दतों से हिला नहीं

मेरे प्यार तुम तो नसीब हो मेरी ज़िंदगानी का नूर हो
मैं कहाँ-कहाँ न गई मगर मुझे तुम-सा कोई मिला नहीं

जा रहा चुपके से सूरज का बदन पानी में
क्या बुझेगी भला दिन भर की जलन पानी में

शाम आँचल को पसारे हुए बैठी है अभी
वो उतारेगा मसाफ़त की थकन पानी में

रंग लायेगी ये मेहनत मेरी कुछ देर से ही
डूब जाए न मेरी सच्ची लगन पानी में

जाने क्यों रूठ गई प्यास मेरे होंठो से
जबसे महसूस हुई एक चुभन पानी में

रात भर तारे उजाला सभी को बाँटेंगे
सुब्ह होते ही बिखेरेंगे किरन पानी में

दिल की दुनिया का राज़दाँ तू है
तू ज़मीं मेरा आसमाँ तू है

तेरे दम से बहार है क़ायम
गुलशने-दिल का बाग़बाँ तू है

ज़र्रे-ज़र्रे में तेरी रहमत है
नूर ही नूर है जहाँ तू है

बेबसी से जहाँ है बेगाना
हम फ़कीरों का हमज़ुबाँ तू है

अपने दिल में ही झाँक लेती हूँ
मुझको मालूम है कहाँ तू है

और कोई नहीं है तेरे सिवा
'आरती' कह रही है, हाँ तू है

है तुझी से बहार का मौसम
मेरे दिल के क़रार का मौसम

एक मुद्दत से मुन्तज़िर है दिल
जाने कब आये प्यार का मौसम

मेरी ख़ुशियों के बादशाह बता
उम्र भर है ? ख़ुमार का मौसम

रात बेचैन सी कोई रुत है
और दिन इंतिज़ार का मौसम

'आरती' तुमसे ज़िंदगी रौशन
तुझसे ही ऐतबार का मौसम

दिल मिले या न मिले फिर भी ये कोशिश होगी
आपका साथ निभाने की तो ख़्वाहिश होगी

तोहमतें कितनी लगाओगे मुहब्बत पे मेरी
इससे तो शहर में नफ़रत की नुमाइश होगी

इन अँधेरों से कोई ख़ौफ़ नहीं है मुझको
मैं समझती हूँ यहाँ नूर की बारिश होगी

कोई मुंसिफ़ किसी मुजरिम को सज़ा कैसे दे
जब अदालत में वकीलों की सिफ़ारिश होगी

अब तो मज़लूम भी ख़ँजर का सहारा लेगा
कोई विनती न करेगा, न गुज़ारिश होगी

नाम	: डॉ. (प्रो.) एहसान शाम
जन्मतिथि	: 20 जनवरी 1949
शिक्षा	: एम. ए., पी. एच. डी.
प्रकाशित कृतियाँ	: धूप का सफ़र, रेत के रसगीत, रियाज़े-हुनर, मर्सिया, नोहे और सलाम का मजमुआ
सम्मान / पुरस्कार	: आजीवन सदस्य, इकनोमिक एसोसिएशन ऑफ़ बिहार; सदस्य, द इंडियन इकनोमिक एसोसिएशन अनेक अदबी इदारों से सम्मानित
सम्प्रति	: प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत)
संपर्क/आवास	: 102, रहमान एन्क्लेव, जी.डी.मिश्र पथ, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना-800013
मोबाइल	: 93348 75071
Whatsapp	: 85442 49215

माँ
जनाब रमेश कँवल की मरहूमा वालिदा की नज़्र

जैसे ग़ुँचों के लिए बाद-ए-सबा होती है
माँ की शफ़क़त भरी आँचल की हवा होती है

हक़ में औलाद के हर लम्हा लबों पर जिसके
दिल से माँगी हुई पाकीज़ा दुआ होती है

क्यों न औलाद करें सजदा-ए-शुकराना अदा
माँ की ख़िलक़त भी तो ख़ालिक की अता होती है

यूँ तो है बाप की ताज़ीम भी वाजिब हम पर
मंज़िलत माँ की मगर सबसे सिवा होती है

लायक़-ए-सजदा-ए-ताज़ीम है दामन उसका
बाद अल्लाह के माँ मिस्ल-ए-ख़ुदा होती है

राह-ए-तारीक से जब ग़म की गुज़रता हूँ 'शाम'
साथ ऐ माँ तेरी शफ़क़त की ज़िया होती है

रिश्तों का घरौंदा जब बिखरा तो बहुत रोया
टूटे हुए शीशों को देखा तो बहुत रोया

हर ज़ख़्म ज़माने का सहता था जो हँस-हँस कर
सुनते हैं वही इक दिन रोया तो बहुत रोया

रोका गया प्यासों को जब प्यास बुझाने से
गहराई में छुप-छुप के दरिया तो बहुत रोया

आईनों की बस्ती में जब चूर हुआ पत्थर
एहसास-ए-नदामत से शीशा तो बहुत रोया

माँ-बाप की शफ़क़त की थी छाँव मेरे शामिल
जब सर से उठा मेरे साया तो बहुत रोया

इक रोज़ अचानक वो क्यों छोड़ गया मुझको
क्या उसकी थी मजबूरी सोचा तो बहुत रोया

खड़ा था बरसर-ए-बाज़ार, इसलिए चुप था
मैं ख़ुद था अपना ख़रीदार, इसलिए चुप था

मैं उससे शहर के हालात क्या बयाँ करता
सना था ख़ून से अख़बार इसलिए चुप था

वो कैसा शहर था, सब लोग गूँगे-बहरे थे
वहाँ था बोलना दुश्वार, इसलिए चुप था

वो मेरे ज़ख़्मों पे मरहम की बात क्या करता
वो ज़ख़्म देता था हर बार इसलिए चुप था

मैं मुतमइन था, हर इक जंग मैं ही जीतूँगा
क़लम ही मेरा था हथियार इसलिए चुप था

वो जिसके दम से थी रौनक़ हमारे आँगन की
उठा दी उसने ही दीवार इसलिए चुप था

घर के दीवारो-दर खिड़कियाँ जल गयीं
कल जो सरहद पे थीं बस्तियाँ जल गयीं

जिस समुन्दर में उतरा वो शोला बदन
उस समुन्दर की सब मछलियाँ जल गयीं

क़ुर्बतों की हरारत असर कर गयी
गर्म साँसों से सब दूरियाँ जल गयीं

नाज़ से जिनको पाला था माँ-बाप ने
बाद शादी के वो बेटियाँ जल गयीं

धूप गुलशन पे बरसी है कुछ इस तरह
फूल के साथ सब तितलियाँ जल गयीं

बर्फ़ मैंने समझ के छुआ था उसे
देखिये हाथ की उँगलियाँ जल गयीं

उस हुस्न-ए-सरापा की मशहूर कहानी है
परियों का तक़द्दुस है फूलों की जवानी है

वो बोले तो होठों से खिलते हैं कँवल कितने
उस हुस्न के दरिया में क्या ख़ूब रवानी है

मज़दूर की कुटिया भी है ताजमहल जिसमें
इक सुब्ह का राजा है इक रात की रानी है

शहकार है क़ुदरत का वो शोख़ हसीना भी
तरशा हुआ पैकर है भरपूर जवानी है

इक शहर-ए-निगाराँ है ऐवान-ए-ग़ज़ल मेरा
आँखों का क़सीदा है ज़ुल्फ़ों की कहानी है

कहते हो ख़ुदा जिसको वो इश्क़ है लाफ़ानी
इतराते हो तुम जिसपे वो हुस्न तो फ़ानी है

नाम : डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति

उम्र : 18/06/1959

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), एल.एल.बी., पी.एच. डी.

प्रकाशित कृतियाँ : *कविता-संकलन*-1. हरी बाँसुरी के स्वर, 2. आज का एकलव्य

कहानी-संग्रह : 1.देश में निकला होगा चाँद 2. उजाले की तलाश

ग़ज़ल-संग्रह : 1.सोच की तीलियाँ 2.सन्नाटे का शोर 3. बादबान 4.आइना गूंगा नहीं। 5. ख़यालों का सफ़र 6. भावनाओं की बस्तियाँ 7.संवेदनाओं के इन्द्रधनुष 8. धूप ही धूप

शोधग्रंथ : 1. हिन्दी कहानी के विविध आंदोलन

संपादन : 1. शब्द-शिल्प के साधक-डॉ. मधुसूदन साहा (अभिनन्दन ग्रंथ) 2. ज़फ़र सिद्दीक़ी की चुनिंदा ग़ज़लें 3. प्यास का लश्कर ‘ 4. बीस ग़ज़लगो : दो सौ ग़ज़लें

संपादन सहयोग : 1. साधना के सप्तरथी (कविता-संकलन) 2. (शिखर की खोज) (कविता-संकलन) 3. शिखर के सात स्वर (कविता-संकलन)

उर्दू अनुवाद : 1. बादबान 2. सोच की तीलियाँ 3. उजालों के दरीचे; आज का एकलव्य (*उड़िया*)

संपर्क/आवास : (1.) प्रजापति भवन, मेन रोड, राउरकेला - 769001 (ओडिशा)
(2.) होटल शुभम, शुभम लेन, रेलवे स्टेशन के सामने, राउरकेला - 769001 (ओडिशा)

मोबाइल : 94370 44680 Email : krishnaprajapati2007@gmail.com

जैसा होता है, कहाँ वैसा नज़र आता है
जिसको भी चेहरा बदलने का हुनर आता है

सोचता रहता हूँ जिस शख़्स की बाबत कब से
देखना है कि वो किस वक़्त इधर आता है

सूम के सामने दामन को पसारा मत कर
बाँझ हो पेड़ तो कब उसमें समर आता है

जबसे रूठा है, निगाहों से उजाला मेरा
रात ढलती है न पैग़ामे-सहर आता है

जिसके दीदार की ख़्वाहिश लिए जाती है मुझे
चलता जाता हूँ कहाँ उसका नगर आता है

आज भी चाँद पे चलती है हुकूमत मेरी
इक इशारे पे मेरी छत पर उतर आता है

देखो तो इन्सान लगेगा
परखो तो शैतान लगेगा

श्रद्धा की नज़रों से देखो
पत्थर भी भगवान लगेगा

पैदा कर चलने की हिम्मत
हर रस्ता आसान लगेगा

तिरछी नज़र से मत देखो
दिल पर सीधा बान लगेगा

यार बदल ले अपना हुलिया
तू भी इक धनवान लगेगा

ख़ाली जेब जो हो जायेगी
जाना भी अन्जान लगेगा

मेरे दिल में चोट पुरानी ज़िन्दा है
यारों की हर एक निशानी ज़िन्दा है

वक़्त गुलामी का तो कबका बीत गया
लेकिन डर का कालापानी ज़िन्दा है

देखता हूँ जब बच्चों को मेहनत करते
लगता है के मेरी जवानी ज़िन्दा है

हमको उसके नक़्शे-क़दम पर चलना है
मरकर जिसकी आज कहानी ज़िन्दा है

तुम जैसे बेशर्म नहीं हो सकते हम
यारो अपनी आँख का पानी जिन्दा है

भूखे-नंगे चैन से जीवन जी लेंगे
इस दुनिया में जब तक दानी ज़िन्दा है

जो भी कमज़र्फ़ हैं थोड़े में छलक जाते हैं
तेरी आँखों की जो पी लें तो बहक जाते हैं

तुझको क़ुदरत ने बनाया है सरापा ख़ुशबू
तू मेरे पास जो आये तो महक जाते हैं

उनसे मिलकर तो शिकायत नहीं करते लेकिन
अश्क आकर मेरी पलकों से टपक जाते हैं

बुझती आँखों में अजब नूर उतर आता है
तेरे कानों में जहाँ बून्दे चमक जाते हैं

सिर्फ़ नीयत ही नहीं उनकी बदल जाती है
देख लें तुमको तो रस्ते से भटक जाते हैं

तेज़ लहजे में भली बात बुरी लगती है
लौ भड़क उट्ठे तो फ़ानूस चटक जाते हैं

अपनी-अपनी लोग यहाँ फ़रमाने लगते हैं
क्या समझायें उनको, वो समझाने लगते हैं

गिर जाने पर हँस पड़ते हैं अपने लोग
आ जाते हैं दौड़ के जो अन्जाने लगते हैं

मेरा दिल दीवाना चाहे ख़ुशियों के दो बोल
जब मिलते हैं आप तो रोने-गाने लगते हैं

अपनी-अपनी धुन में सारे बच्चे हैं मशग़ूल
अब तो अपने घर में हम बेगाने लगते हैं

सच्चाई ने झूठ का चोला ओढ़ लिया है
क़ौल सियासी लोगों के अफ़साने लगते हैं

मिलना-जुलना बरसों तक जब हो जाता है बन्द
चेहरों के आईने सब धुँधलाने लगते हैं

नाम : डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
जन्मतिथि : 10 जनवरी, 1961
शिक्षा : एम.ए. (समाजशास्त्र, उर्दू व हिंदी), बी.एड., पी.एच. डी. (हिंदी)
संप्रति : शासकीय सेवा
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह*
1. इक्कीसवीं सदी के लिए-1998, 2. गुनगुनी धूप-2002 एवं 2010, 3. उगा है फिर नया सूरज-2013, 4. नई हवाएँ-2018, 5. मन की सतह पर (गीत-संग्रह)-2003, 6. जीवन के परिदृश्य (नाटक-संग्रह)-2010, 7. हिन्दी ग़ज़ल और कृष्णबिहारी 'नूर'-2014, 8. व्याकरण ग़ज़ल का (2016 व 2018)
संपादन : 1. दोहों की चैपाल (2010)-वाणी प्रकाशन, 2. रंग-रंग के फूल (2019)-किताबगंज प्रकाशन, 3. नवगीत-मंथन (2019)-किताबगंज प्रकाशन, 4. बालगीत-मंथन (2019)-किताबगंज प्रकाशन, 5. गीत-मंथन-किताबगंज प्रकाशन, 6. प्रेमगीत-मंथन-किताबगंज प्रकाशन
संपर्क : 9/3, लक्ष्मी विहार, हिमगिरि कालोनी, काँठ रोड, मुरादाबाद-244001(उ.प्र).
मोबा. : 99273-76877, 98083-15744
email : kknaaz1@gmail.com

कलियाँ, फूल, सितारे, शबनम, जाने क्या-क्या चूम लिया
जब मैंने बाँहों में भरकर, उसका माथा चूम लिया

हम दीवानों की दुनिया के अद्भुत तौर-तरीक़े हैं
हम जब भी मस्ती में झूमे, अपना साया चूम लिया

सबकी अपनी-अपनी चाहत, सबकी अपनी-अपनी रीत
एक ने घर की चौखट चूमी, एक ने सहरा चूम लिया

क्या दूरी, कैसी नज़दीकी, इश्क़ में कोई शर्त नहीं
चाँद ने अपना अक्स निहारा और फिर दरिया चूम लिया

दुनिया के रिश्ते-नातों की नज़रें थीं धन-दौलत पर
लेकिन माँ ने बढ़कर अपना राजदुलारा चूम लिया

मनमोहन के जादू ने कुछ ऐसा रंग जमाया 'नाज़'
मीरा ने सब कुछ ठुकराकर विष का प्याला चूम लिया

❀

हिम्मत को हारना कोई ज़िंदादिली नहीं
ऐ दिल कभी नहीं, अरे ऐ दिल कभी नहीं

सोचें तो अपनी साँस भी अपनी नहीं, मगर
देखें तो ज़िंदगी में कोई भी कमी नहीं

सायों से कर रहा है वफ़ाओं की आरज़ू
ऐ दिल तेरे मिज़ाज में संजीदगी नहीं

जैसे कि ज़िंदगी का हो ये आख़िरी पड़ाव
इतनी थकन तो पहले कभी भी हुई नहीं

जाना है 'नाज़' सबको बहरहाल एक दिन
ऐसी जगह जहाँ से कोई वापसी नहीं

पास उसके मेरे हिस्से का कभी कल न हुआ
मसअला जैसा था, वैसा ही रहा, हल न हुआ

जाने क्या अपनी मुहब्बत में कमी थी ऐसी
वो दिवाना न हुआ और मैं पागल न हुआ

दूर है मुझसे, बहुत दूर है वो शख़्स मगर
बावजूद इसके कभी आँख से ओझल न हुआ

मुनहसिर ज़ात पे उसकी था मेरा सारा वजूद
वो समंदर न हुआ और मैं बादल न हुआ

उसकी सोहबत भी बदल पाई न फ़ितरत मेरी
टाट था, टाट रहा, टाट से मख़मल न हुआ

ये इनायत है उचटती हुई नींदों की 'नाज़'
ख़्वाब मेरा कभी कोई भी मुकम्मल न हुआ

❀

❀

एहसास की शिद्दत ही सिमट जाय तो अच्छा
ये रात भी आँखों ही में कट जाय तो अच्छा

कश्ती ने किनारे का पता ढूँढ लिया है
तूफ़ान से कह दो कि पलट जाय तो अच्छा

शाख़ों पे खिले फूल यही सोच रहे हैं
तितली जो कोई आके लिपट जाय तो अच्छा

जिस नींद की बाँहों में न तू हो, न तेरे ख़्वाब
वो नींद ही आँखों से उचट जाय तो अच्छा

अब तक तो मुक़द्दर ने मेरा साथ दिया है
बाक़ी भी अगर चैन से कट जाय तो अच्छा

ख़ुद से भी मुलाक़ात ज़रूरी है बहुत 'नाज़'
यादों की घनी भीड़ जो छट जाय तो अच्छा

मेरी ख़्वाहिश ये नहीं ज़ख़्म पुराने दीजे
नई उम्मीद, नए ख़्वाब सुहाने दीजे

तजरिबा अपना बयाँ करती है एक-एक लकीर
झुर्रियाँ चेहरे पे आती हैं तो आने दीजे

इल्म की कोई भी मंज़िल तो नहीं है, लेकिन
सोच कहती है इसे ठौर-ठिकाने दीजे

आपने हाल जो पूछा तो बहुत अच्छा लगा
लोग इल्ज़ाम लगाएँ तो लगाने दीजे

ज़िंदगी जीने के आदाब हुआकरते हैं
ख़्वाहिशें शोर मचाएँ तो मचाने दीजे

ख़्वाब मेरा जो कभी आपको छू आया था
अब उसी ख़्वाब की तस्वीर बनाने दीजे

❀

नाम : डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'
जन्मतिथि : 05-12-1954
शिक्षा : एम. ए., एम. फ़िल., पीएचडी
संप्रति : रिटायर्ड एसोसिएट प्रोफ़ेसर, गवर्नमेंट कॉलेज हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)
प्रकाशित कृतियाँ : 1 'चिन्तन', 2. 'जब हर इक इन्साँ बदलेगा', (दोनों हिन्दी काव्य संग्रह), 3 'रेज़ा रेज़ा आईना' (उर्दू शे'री मज्मूआ), 4 'ग़ज़ल के पर्दे में' (देवनागरी), 5 'हर्फ़ हर्फ़ आईना' (उर्दू शे'री मज्मूआ), 6 'दस्तख़त रह जाएँगे' (उर्दू शे'री मज्मूआ), 7 'अनमोल सच' (बाल काव्य संग्रह), 8 'निश्छल बचपन' (बाल काव्य संग्रह), 9 'वरक़ दर वरक़' (देवनागरी), 10. 'लोबान' (नज़्में और हम्दो-सना, देवनागरी)
संपर्क : 'देवाशीष ', नारायण नगर, पोस्ट भोटा, ज़िला हमीरपुर-176041
मोबा. : 94183 04634 (Whatsapp)
email : nazli.nalini1954@gmail.com

❀

ये दुनिया अजब शय है कब किसको समझ आई
ये ख़ुद ही तमाशा है और ख़ुद ही तमाशाई

ऐ गोशा-नशीं दुनिया ! तुझ पे तो है अब आई
इक उम्र सुनी हमने मौसीक़ी-ए-तन्हाई

सूखी हुई शाख़ों को सरसब्ज़ किया उसने
बख़्शी है हर इक शय को उसने ही तवानाई

नग़माते-अजल गाकर फ़नकार हुआ रुख़्सत
फ़नकार की दुनिया को दुनिया न समझ पाई

इस दौर का सच ये है मतलब के हैं सब रिश्ते
इतना भी न समझी तू ऐ 'नाज़ली' सौदाई

❀

रास्ता ग़म के सिवा दूजा न था
यूँ कटेगी ज़िन्दगी, सोचा न था

कितनी ही ग़ुर्बत रही, दिक़्क़त रही
हाथ लेकिन हमने फैलाया न था

हमने फिर भी की मुहब्बत उससे ही
जब शजर पर एक भी पत्ता न था

सबकी नज़रें चाक पैराहन पे थीं
हुस्ने-दिल का कुछ कहीं चर्चा न था

कुछ फ़िरिश्ते मुश्किलें हल कर गए
'नाज़ली' जब हाथ में पैसा न था

अगर वो होता मुझे ख़ुशनुमा सफ़र देता
मुझे भी अपनी तरह बावला वो कर देता

सबा ! पता है तुझे क्या से क्या वो कर देता
वो जुगनुओं से मिरी सूनी माँग भर देता

वो आ के एक तरफ़ सब गुलाब धर देता
और अपनी ख़ुश्बुओं से ज़ीस्त मेरी भर देता

ज़रा भी ख़ौफ़ न रुस्वाइयों का था उसको
जुनूँ की धज्जियाँ उड़तीं, वो कुछ भी कर देता

कभी तो तिफ़्ल-सा छुपता वो मेरे आँचल में
कभी सितारे मिरी मुट्ठियों में भर देता

ये दर्द, ज़ख़्म, लहू, सिसकियाँ, फ़ुग़ाँ, आँसू
वो इन सभी से रिहा 'नाज़ली' को कर देता

❀

❀

ज़ीस्त पर दह्शतों का साया है
हमने पल-पल युँही बिताया है

ख़ामशी शहर में है मरघट-सी
ख़ौफ़ का अब्र जैसे छाया है

आग तूने जो कल लगाई थी
उसने तेरा भी घर जलाया है

जल गई फिर तवे पे ही रोटी
तेरी यादों ने सब भुलाया है

'नाज़ली' खेल ख़ालिक़े-कुल का
कब किसी की समझ में आया है

ज़िन्दा रहो अदब में कि जब तक जहाँ रहे
जब तक जहाँ रहे ये तुम्हारा बयाँ रहे

ग़म ही उठाया दिल की सुनी बात जब कभी
हम दिल से दूर हो के बहुत शादमाँ रहे

कुछ इस क़दर रही मिरे किरदार की कशिश
नामेहबाँ भी मुझपे बहुत मेह्रबाँ रहे

मक्रो-फ़रेब, ज़ुल्म, तकब्बुर, अदावतें
क्या-क्या न ऐब दिल में हमारे निहाँ रहे

महफ़ूज़ बुलबुलों के नशेमन हों 'नाज़ली'
आबाद हर किसी का यहाँ आशियाँ रहे

❀

नाम : डॉ. नूतन सिंह

जन्मतिथि :15.11.1969

शिक्षा : एम.ए.(इतिहास), पीएच.डी.

प्रकाशित कृतियाँ : सदा-ए-दिल(ग़ज़ल संग्रह) प्रकाशनाधीन
नूतन दर्पण (कविता संग्रह) शीघ्र प्रकाश्य

सम्मान/पुरस्कार : हामी अज़हरी अवार्ड, आसनसोल, पश्चिम बंगाल अंजुमन फ़रोगे-उर्दू, ज़िला उर्दू फ़ोरम एवं दर्ज़नों ज़िला साहित्यिक संस्थाओं से सम्मानित पशुपतिनाथ मिश्र आवार्ड, कवि अर्जुन पुरस्कार, पगडंडी, जमुई, अल्लामा इक़बाल डे पर आसनसोल में सम्मानित, बज़्मे-सदफ़ इंटरनेशनल से सम्मानित, बड़गाँव महोत्सव द्वारा सम्मानित

व्यवसाय/सम्प्रति : गृहणी, समाज सेवा

संपर्क : द्वारा टी.पी.एस.क्रिकेट एकेडमी, नार्थ ऑफ़ के.के. एम.कालेज, नूतन नगर, जमुई, बिहार - 811307

मोबाइल : 70041 75832, 94300 87284 (Whatsapp)

ई-मेल : nutankumari148@gmail.com

छिपकली की पूँछ सी कट कर निकल आती हूँ मैं
दूर तक चढ़ती हूँ चींटी सी फिसल आती हूँ मैं

तन-बदन तो भीगता रहता है ग़म के दरिया में
फिर भी चेहरे को तब्बसुम में बदल आती हूँ मैं

आज तक समझा नहीं जो इश्क़ की गहराइयाँ
सामने उसके ही अपना ग़म उगल आती हूँ मैं

मूरती पत्थर की बनकर तपती हूँ जब सारा दिन
दिन ढले तो मोम बनकर क्यों पिघल आती हूँ मैं

ऐ हवाओं, आँधियों तुम क्या बिगाड़ोगे मिरा
टिमटिमाते जुगनुओं जैसे मचल आती हूँ मैं

वो शरारे जो मेरे तनमन को सुलगाते फिरें
नंगे पाँवो ही उन्हें पल में मसल आती हूँ मैं

छोड़ दे 'नूतन' तड़पना इस क़मर के वास्ते
चल अंधेरी रात में दीपक सा जल आती हूँ मैं

रब का जब सर पे साया है
फिर भी मन क्यों घबराया है

मैं धरती वो अम्बर जैसा
दिल को मैंने समझाया है

तन का झूला मन की डोरी
मनभावन सावन आया है

होश गँवा बैठी हूँ जबसे
नेह सनम ने बरसाया है

काम हर एक है वक़्त पे होता
बेमौसम कब फल आया है

सपनों में आकर साजन ने
अर्थ मिलन का बतलाया है

रूप सुधा पी का नैनन में
'नूतन' दिल को जो भाया है

भरे जहान में मेरा सगा नहीं कोई
मैं बेनिशान हूँ, मेरा पता नहीं कोई

लिखा नसीब में जो है वही तो होना है
कि उसकी मार से बचकर रहा नहीं कोई

सितमगरों का सितम देखकर भी हैं चुप सब
कि डर के जीते हैं दिल से लड़ा नहीं कोई

बुराइयाँ हैं कमो-बेश कुछ न कुछ सबमें
यहाँ पे दूध का इतना धुला नहीं कोई

किसी सहारे की 'नूतन' उमीद मत करना
कि तेरे वास्ते होगा खड़ा नहीं कोई

खिड़की से मुझे रोज़ जगाती हैं फुहारें
करके ये इशारे भी बुलाती है फुहारें

ज़ुल्फ़ों से किया करती हैं अटखेलियाँ मेरी
रुख़सार मेरा छू के सताती हैं फुहारें

कजरी, कभी ठुमरी, कभी झूमर पे ठुमकती
सखियों की तरह गीत ये गाती हैं फुहारें

हो राम का घर, हो कि हो रहमान का हुजरा
हर एक के घर जा के मिल आती हैं फुहारें

मैना हो, कबूतर हो, गिलहरी हो सभी ने
देखा है खुले छत पे नहाती हैं फुहारें

रखते हैं ज़माने से जो हम बात छुपाकर
वो बात ज़माने को बताती हैं फुहारें

न उतना तेरी बेवफ़ाई में रोये
कि जितना तेरी हम जुदाई में रोये

सभी क़ैद में रह के रोते हैं लेकिन
सजन हम तुम्हारी रिहाई में रोये

मुहब्बत के पर्वत पे करते सफ़र हम
अचानक गिरे बीच खाई में रोये

किसी तरह हमने बचाई मुहब्बत
बहुत अपनी झूठी सफ़ाई में रोये

भलाकर किसी का भला तेरा होगा
बुराई का आदी बुराई में रोये

ख़ुशी दे भी पाये न बच्चों को अपने
बड़ी कम निगोड़ी कमाई में रोये

नाम : डॉ. पंकज कर्ण
जन्मतिथि : 05 अक्टूबर 1976
शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल-संग्रह (प्रकाशनाधीन)
सांझा संकलन : 'इक्कीसवीं सदी की ग़ज़लें' में ग़ज़लें शामिल
सम्मान / पुरस्कार : उद्भव सहयोग सम्मान 2006, नूपुर कलाश्रम सम्मान 2009 एवं 2012, साहित्य गरिमा सम्मान 2013, निर्मल अनुपम फ़ाउंडेशन सम्मान 2013, डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर' सम्मान 2013, वासुदेव प्रसाद अग्रवाल साहित्य सम्मान 2013, शाद अज़ीमाबादी सम्मान 2014, डॉ. हरिवंश राय बच्चन स्मृति सम्मान 2015, हिमाँशु श्रीवास्तव सम्मान 2017
सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष अंग्रेज़ी विभाग, डॉ. जे. एम. कॉलेज, मुज़फ़्फ़रपुर
संपर्क का पता : चित्रगुप्त मंदिर लेन शास्त्री नगर (कन्हौली) निकट खादी भंडार पोस्ट रमना मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार-842002
मोबाइल : 94707 09300, 98350 18472 (WhatsApp)
ई-मेल : pankaj.krn12@gmail.com

उमीदें टूट जाती हैं भरोसा टूट जाता है
सफ़र में जब कभी अपनों का दामन छूट जाता है

ये ऐसी ज़ात है जिनके लिए ना धर्म ना ईमाँ
इन्हीं के चलते काशी हो कि का'बा छूट जाता है

उसे ही आसमाँ से बारिशों की आस रहती है
उसी के हाथ से मिट्टी का बर्तन टूट जाता है

लिये फिरता है अपने हाथों में कशकोल इक बच्चा
मगर आँखों में कोई ख़्वाब बसकर टूट जाता है

मैं अक्सर बीच चौराहे से देखा करता हूँ 'पंकज'
जो बेबस हैं उन्हीं का दम यहाँ पर टूट जाता है

❀

मुश्किल में लग रहा है ये अम्न-ओ-अमान क्या
वहशी के हाथ लग गया गीता-क़ुरान क्या

फ़ुटपाथ हो या रास्ता चादर है तान दी
ख़ानाबदोश के लिए ऊँचा मकान क्या

हम चाह लें तो इक नया संसार बन उठे
आगे हमारे आपका ये हुक्मरान क्या

जो धूप के सफ़र में गुज़ारी है ज़िन्दगी
उसके लिए शजर का भला सायबान क्या

'पंकज' जो हौसलों से उड़ा करते हैं यहाँ
उनके लिए ज़मीन है क्या आसमान क्या

हम जैसे एक दूजे की ख़िदमत में आ गए
सब झूठे और फ़रेबी सियासत में आ गए

कल तक जो तख़्तो-ताज के मालिक थे दोस्तो
अब देखिए वो सारे ही हाजत में आ गए

कुछ लोगों की ये चाल है सच मानिए जनाब
बरसों के दोस्त रंग-ए-अदावत में आ गए

भूखे ग़रीब सब मुझे अपना समझ रहे
उनके जो ख़्वाब थे मेरी आदत में आ गए

कल जानते थे जिसको इबादत के नाम से
'पंकज' वो रिश्ते आज तिजारत मे आ गए

❀

❀

हमारे काम आएँगे, तुम्हारे काम आएँगे
जो धरती में हैं पुरखे दफ़्न सबके काम आएँगे

परिस्थिति कोई हो जी भर करें माँ-बाप की सेवा
कठिन लम्हों में आशीर्वाद इनके, काम आएँगे

मुहब्बत की पढ़ाई ही बस इक सच्ची पढ़ाई है
इसे पढ़िये अदावत के समय ये काम आएँगे

चला घर से तो मिट्टी गाँव की भी साथ ले आया
यही कुछ सोचकर परदेश में ये काम आएँगे

दग़ाबाजी, फ़रेब औ' झूठ भी अब सीखिए 'पंकज'
शहर में जीने की ख़ातिर हुनर ये काम आएँगे

दिन है सहमा रात पे पहरेदारी है
साँस है उखड़ी दिल भी भारी-भारी है

सेंध लगाई इस समतल-से जीवन में
ये कोरोना कितना अत्याचारी है

तन-मन रक्खें साफ़, वफ़ा की बात कहें
हर मानव की अब ये जिम्मेवारी है

बिन तोहफ़ा के काम नहीं कर सकता है
दफ़्तर का ये बाबू जो सरकारी है

रोज़ दिखाता ख़्वाब मुनाफ़े का 'पंकज'
ये शासक है या कोई व्यापारी है

❀

नाम : डॉ. प्रेम भंडारी
जन्मतिथि : 23 सितम्बर 1949
शिक्षा : एम. ए., संगीत और समाज शास्त्र, पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ : 1. झील किनारे तनहा चाँद
2. ख़ुशबू रंग सदा के संग
3. हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी
सम्मान/पुरस्कार : 1. राजस्थान संगीत नाटक अकादमी एवार्ड 2. राजस्थान उर्दू अकादमी एवार्ड, 3. लाईफ़ टाइम अचीवमेंट एवार्ड, 4. ग़ालिब एवार्ड, 5. मीरा सुधाकर सम्मान, 6. पश्चिम क्षेत्र साँस्कृतिक सम्मान, 7. किंग ऑफ़ ग़ज़ल, 8. संगीत राज सम्मान, 9. सुर नंदन अवार्ड, आदि
व्यवसाय/सम्प्रति : रिटायर्ड विभागाध्यक्ष संगीत विभाग एम.एल.एस. यूनिवर्सिटी उदयपुर
संपर्क : À 401 वल्लभ एँपायर, न्यू नवरत्न कांप्लेक्स मेवाड़ हॉस्पिटल रोड, उदयपुर राजस्थान-313001
मोबाइल : 94141 58358, 90791 99169
ई-मेल : premsbhandari@gmail.com

रखिएगा अश्क आँखों में अपनी संभाल के
रखते हैं हम ग़ज़ल में दिलो-जाँ निकाल के

रहना है ख़ाली पेट हमें रोज़ की तरह
बहला रही है माँ युँही पत्थर उबाल के

देता है ज़ख़्म कोई तो फिर सोच के ही दे
हैं घाव सारे अब भी हरे पिछले साल के

है मेलजोल, प्यार, दुआ, सब्र और सुकूँ
इस दौर में भी रक्खी ये दौलत संभाल के

दुश्मन की सोच में भी सलीक़ा ग़ज़ब का था
सर काट के भी रक्खी है पगड़ी संभाल के

सूरज कभी जो पीठ पर आकर खड़ा हुआ
साया ये देख बोल पड़ा मैं बड़ा हुआ

मैं सामने खड़ा हूँ तो मेरा ही अक्स हो
पर आईने में लगता है दूजा जड़ा हुआ

बन के रहा था सर पे कभी साये की तरह
सूखा हुआ जो पत्ता ज़मीं पर पड़ा हुआ

सातों फ़लक़ की तेज़ उड़ानों के बावजूद
अपनी ज़मीं से फिर भी हूँ हरदम जुड़ा हुआ

इस ज़िंदगी को फिर से पढ़े भी तो क्या पढ़े
कोई वरक़ मिला नहीं इसका मुड़ा हुआ

जान देते हैं सच पे मरते हैं
आईने भी कमाल करते हैं

जाने कैसे कोई इन्हें बरतें
लब पे आने से लफ़्ज़ डरते हैं

अपनी नज़रों में उठ नहीं पाते
जब किसी की नज़र से गिरते है

बोलते रहिए, बोलते रहिए
आपके लब से फूल झड़ते हैं

नींद वो है कि कभी फूल न पत्थर देखे
कई रातों का जगेरा कहाँ बिस्तर देखे

क्या कहीं प्यास मुक़द्दर तो नहीं होठों की
क्यूँ मेरे ख़्वाब ने बरसात के मंज़र देखे

काँच का घर जो बनाया है तो हैरत क्यों है
सबके हाथों में अगर आपने पत्थर देखे

हाल अपना जो छुपाऊँ तो छुपाऊँ कैसे
वो तो बाहर ही नहीं दिल के भी अंदर देखें

प्यास उसको न कभी लौट के आने देगी
जिसमें सेहरा में सराबों के समंदर देखें

प्यार कहाँ अब समझौता है
कुछ दिन बाद यही होता है

अब ये दिखावा कम तो नहीं है
हँसता चेहरा दिल रोता है

कुछ रिश्ते हैं जिनकी ख़ातिर
जीते जी मरना होता है

इक लम्हे का ग़लत क़दम ही
सदियों पर भारी होता है

उड़ जाएँगे ख़्वाब के पंछी
खोल के पलकें क्यों सोता है

प्यार मेरा क्यों उसकी अना का
अनचाहा बोझा ढोता है

नाम : मुहम्मद फ़रहत हुसैन (फ़रहत हुसैन 'ख़ुशदिल')
जन्मतिथि : 5 जनवरी 1958
शिक्षा : डबल एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ : 1. ऐवाने-नात (नात कहने वाले विभिन्न कवियों पर संक्षिप्त लेख) उर्दू पुस्तकें 2009, 2.अलहमदोलिल्लाह (हम्द एवं मुनाजात का संग्रह) 2010, 3. समेअना व अताअना(नातों का संग्रह) 2010, 4. विजदान के फूल (काव्य संग्रह) 2015, 5. तन्क़ीदाते-ख़ुशदिल (लेखों का संग्रह) 2016, 6. अतीउल्लाह व अ़ती-उर-रसूल (हम्द एवं नात का संग्रह) 2017,
प्रकाशित : 1. पुष्पांजलि (काव्य संग्रह) 2018 हिन्दी पुस्तक
उर्दू पुस्तकें प्रकाशनाधीन : 1. मक़ालाते-ख़ुशदिल, 2. तन्कीहाते-ख़ुशदिल, 3. तफ़हीमाते-ख़ुशदिल
सम्मान/पुरस्कार : 1. झारखण्ड सरकार की ओर से वर्ष 2011 में Best Teacher Award पन्द्रह हज़ार रूपये, प्रमाण पत्र एव मोमेण्टो सहित 2. आज़र एकैडमी-अलीगढ़ की ओर से 'एक शाम ख़ुशदिल के नाम' के फंक्शन में 'ताजदारे-सुख़न' के एवार्ड से सम्मानित 3. हम्दो-नात एकैडमी-नई दिल्ली के Excecutive member में शामिल 4. जेनरल सेक्रेट्री, हम्दो-नात एकैडमी-हज़ारीबाग़ (झारखण्ड)
व्यवसाय/सम्प्रति : सेवा निवृत उर्दू शिक्षक (उर्दू विभाग, +2 ज़िला स्कूल, हजारीबाग़)
संपर्क : काशाने-हुसैन, बरह्पुरा , भागलपुर - 812001
मोबाइल : 91137 50958
ई-मेल : hussain.mdfarhat@gmail.com

ग़ज़ल में हुस्ने-तग़ज़्ज़ुलाना का पहलू लाओ तो हम भी मानें
फिर इसमें 'मोमिन' का रंग देकर हमें दिखाओ तो हम भी मानें

ग़ज़ल में 'ग़ालिब' हैं अब भी ग़ालिब हैं अब भी ग़ालिब के लोग तालिब
ग़ज़ल में ग़ालिब से बढ़के सन्अत ज़रा दिखाओ तो हम भी मानें

ग़ज़ल में रंगे-कमाल भी है ग़ज़ल में रंगे-जमाल भी है
जमालियाती ग़ज़ल की वुस्अत पे हर्फ़ लाओ तो हम भी मानें

ग़ज़ल तो 'उर्दू की आबरू' है ये 'नीम-वहशी' तो ख़ूबरू है
ग़ज़ल में हुस्ने-ग़ज़ल का जादू जो तुम जगाओ तो हम भी मानें

ग़ज़ल-सराई का ज़ौक 'ख़ुशदिल' बफ़ज़्ले-रब्बी हुआ है हासिल
ग़ज़ल में तुम भी नए मज़ामीं को ढूँढ लाओ तो हम भी मानें

मैंने ग़ज़ल सुनाई तो ढलने लगी है शाम
तुम आ गए तो फिर से मचलने लगी है शाम

बेनूर होके रह में फिसलने लगी है शाम
काली सियाह रात में ढलने लगी है शाम

तुमसे बिछड़ के फ़िक्र की दुनिया हुई उदास
तन्हाई मेरी देख के जलने लगी है शाम

साहिल पे शाम होते ही ख़ुशियाँ हुईं उदास
दिन क्या ढला के रंग बदलने लगी है शाम

दहशतगरी का ज़ोर बदलता है किस तरह
जब बून्द-बून्द ज़हर उगलने लगी है शाम

'ख़ुशदिल' ने गुदगुदा दिया सन्जीदा बज़्म को
छेड़ी ग़ज़ल तो रंग बदलने लगी है शाम

मैं लफ़्ज़ो-फ़िक्र का हर रोज़ इक पैकर बनाता हूँ
ग़ज़ल कहने की ख़ातिर दिलनशीं मन्ज़र बनाता हूँ

मैं शाइर हूँ मुहब्बत की अलामत तुम मुझे समझो
मैं दुश्मन के लिए भी अपने दिल में घर बनाता हूँ

मुझे समझो, मुझे जानो, मुझे पहचानो दीवानो
मैं पत्थर के नगर में काँच का क्यों घर बनाता हूँ

तुझे ढूँढूँ कहाँ, किससे पता पूछूँ भला तेरा
तसव्वुर में तेरा मैं नौ-ब-नौ पैकर बनाता हूँ

मेरे अश्आर से क्योंकर न टपकेगा लहू मेरा
कि ख़ूने-दिल से मैं अलफ़ाज़ को नश्तर बनाता हूँ

मैं जो चाहूँगा नक़्शा खींचकर रख दूँगा लफ़्ज़ों से
मैं 'ख़ुशदिल' हूँ नये ख़ाके, नये पैकर बनाता हूँ

मेरी ग़ज़लों में जब निहाँ होगा
तू फ़क़त मेरा तर्जुमाँ होगा

अश्क आँखों से जब रवाँ होगा
ग़म के एहसास का बयाँ होगा

ज़िन्दगी इक हसीन तोहफ़ा है
जो उसे पाले शादमाँ होगा

राज़ की बात राज़ में रखियो
वर्ना इक शख़्स बदगुमाँ होगा

ज़िन्दगी कितनी ख़ूबसूरत है
मौत आने पे ये अयाँ होगा

तुझको 'ख़ुशदिल' कहेंगे अहले-फ़न
तेरे चेहरे से जब अयाँ होगा

जहाने-ग़म में उलझी ज़िन्दगी है
परीशाँ हाल हर-सू आदमी है

ये कैसी बेबसी छाई हुई है
कि अब तो सब्र की हद हो गई है

किताबे-ज़िन्दगी के हर वरक़ पर
ग़मों की दास्ताँ लिक्खी हुई है

किसी के ग़म में शामिल हो के देखो
यही लुत्फ़े-मता-ए-दोस्ती है

किसी पर मुन्कशिफ़ होना न 'ख़ुशदिल'
यहाँ जो आदमी है मतलबी है

नाम : डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
जन्मतिथि : 28 अक्टूबर, 1940
शिक्षा : एम.ए., पी.एच. डी. (हिन्दी)
प्रकाशित कृतियाँ : गद्य और पद्य में कुल ग्यारह पुस्तकें
गद्य-1. कबीर-काव्य में प्रतीक-विधान (शोध ग्रंथ), 2. कबीर-प्रतीक-कोश (कोश ग्रंथ), 3. जनक छन्द : एक शोधपरक विवेचन (शोध पुस्तक) पुरस्कृत, 4. दृष्टिकोण (समीक्षा-संग्रह)
पद्य-5. अंजुरी (काव्य-संग्रह) पुरस्कृत, 6. वक़्त के मंज़र (ग़ज़ल-संग्रह), 7. दोहा-मुक्तक-माल (मुक्तक-संग्रह), 8. जनक छंद की साधना (जनक छंद संग्रह), 9. एक बह्र पर एक ग़ज़ल (ग़ज़ल-संग्रह) पुरस्कृत, 10. दोहे पानीदार (दोहा-संग्रह), 11. छोटी बह्र की ग़ज़लें
सम्मान / पुरस्कार : 1. 'साहित्य-सेवी (बिजनौर), 2. 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त अ. भा. सम्मान' (मथुरा), 3. 'राष्ट्रभाषा रत्न' (कुशीनगर), 4. 'साहित्यश्री' (जबलपुर), 5. 'शाने-अदब' (झाबुआ), 6.'हिन्दी साहित्य गौरव' (ठाणे, महाराष्ट्र) 7. 'वतन के राही कविरत्न' (दुर्ग). 8. 'कविगुरू रवीन्द्रनाथ ठाकुर सारस्वत साहित्य सम्मान' (भारतीय वाङ्मय पीठ, कोलकाता), 9. 'डॉ. रमेशचन्द्र चौबे सम्मान' (कादम्बरी, जबलपुर), 10. 'साहित्य रत्न' (सत्कर्मी यशाश्रित सेवा भावी हिन्दी संस्थान महाराष्ट्र), 11. 'समीक्षाश्री' (शिव संकल्प साहित्य परिषद्, नर्मदापुरम), 12. 'हिन्दी साहित्य मनीषी' (साहित्य-मंडल, श्रीनाथ-द्वारा, राजस्थान), 13. श्रेष्ठ कला आचार्य (मधुवन, भोपाल), 14. 'श्री हरिशंकर श्रीवास्तव स्मृति सम्मान' (गया प्रसाद खरे स्मृति मंच, भोपाल)
व्यवसाय : म.प्र. शासन के उच्च्य शिक्षा विभाग में हिन्दी-प्रोफ़ेसर के पद से अवकाश-प्राप्त
सम्प्रति : स्वतंत्र साहित्य-लेखन
संपर्क का पता : युक्ता-206, पैरामाउण्ट सिम्फ़नी, क्रॉसिंग रिपब्लिक, ग़ाज़ियाबाद (उ. प्र.)
मोबाइल : 9760007838 (WhatsApp), 9425102154
ई-मेल : bjgautam2007@gmail.com

❀

कोरोना को रोना क्यों
पल-पल आँख भिगोना क्यों

हिम्मत से लो काम ज़रा
बेबस धीरज खोना क्यों

भीड़ बढ़ाकर सड़कों पर
बीज मरण के बोना क्यों

दीप जलाओ आशा के
अँधियारे को ढोना क्यों

घोर वबा है ये, इस पर
होगा जादू-टोना क्यों

❀

सब मतलब में मस्त हो गये
रिश्ते-नाते ध्वस्त हो गये

हम घेरेंगे सड़क-बग़ीचे
सी.ए.ए. से त्रस्त हो गये

फ़्री बिजली, फ़्री पानी पाकर
हम फ़्री के अभ्यस्त हो गये

मर्कज़ में तब्लीग़ी बनकर
मन ही मन आश्वस्त हो गये

ये कैसा कोरोना आया
घर में ही सब व्यस्त हो गये

थूकें, पीटें, पत्थर फेंकें
फिर भी मुल्क़ परस्त हो गये

❀

भला वो डगर क्या डगर है
नहीं जिसमें ख़ौफ़ो-ख़तर है

हुई ज़िंदगी वो अमर है
सहा उज्र जिसने ज़बर है

वतन अपना लँगड़ा हुआ क्यों
यही पूछता हर बशर है

दशा देख अपने चमन की
ख़फ़ा आज हर इक शजर है

ऐ कोरोना तू भी समझ ले
जिगर अपना सच में जिगर है

लड़ेंगे, हरायेंगे तुझको
बजाया समय ने गजर है

ज़ीस्त में कैसे अजब खेल दिखे हैं अब तक
हर क़दम काँटे ही क्यों हमको मिले हैं अब तक

जाने क्या सोच के कोरोना ! यहाँ आया तू
तेरे जैसों से कई बार भिड़े हैं अब तक

आँधी-तूफ़ान कई आये, बलाएँ गुज़रीं
दीप उम्मीदों के अपने न बुझे हैं अब तक

अपनी ख़ुशफ़हमी पे इतना न गुमाँ कर ज़ालिम !
तुझसे लड़ने के इरादे न डिगे हैं अब तक

ओढ़कर धूप, लिये पैरों में छाले जो चले
वे रुके थे, न रुकेंगे, न रुके हैं अब तक

और कुछ तूने दिया हो, न दिया हो ऐ वबा !
हौसलों में तो इज़ाफ़े ही किये हैं अब तक

❀

अजब किरदार है वो
गुलों में ख़ार है वो

नहीं दबता किसी से
कि ख़ुद मुख़्तार है वो

अना से है मुहब्बत
बहुत ख़ुद्दार है वो

सियासतदाँ है लेकिन
नहीं मक्कार है वो

सदा रहता है आगे
अलम-बरदार है वो

दहलते शत्रु जिससे
वही ललकार है वो

❀

नाम : डॉ. भावना
जन्मतिथि : 20 फ़रवरी, 1976
शिक्षा : एम.एस.सी., पी.एच.डी., डी.एन.एच.ई., एल.एल.बी.
प्रकाशित कृतियाँ : अक्स कोई तुम-सा, शब्दों की क़ीमत, चुप्पियों के बीच (ग़ज़ल-संग्रह), सपनों को मरने मत देना, हम्मर लेहु तोहर देह (कविता संग्रह), कविता के दरवेश, इक्कीसवीं सदी की ग़ज़लें, ग़ज़ल @लॉकडाऊन संपादित संग्रह।
सम्मान/पुरस्कार : अंम्बिका प्रसाद दिव्य अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, राजभाषा पाण्डुलिपि पुरस्कार, दुष्यंत कुमार रजत स्मृति सम्मान, अपराजिता सम्मान, लिच्छवी महोत्सव सम्मान इत्यादि।
व्यवसाय/सम्प्रति : व्याख्याता, रसायन शास्त्र विभाग, आर. एस. एस. कॉलेज, बोचहाँ, मुज़फ़्फ़रपुर
संपर्क : आद्या हास्पिटल, जीरोमाइल, सीतामढ़ी रोड, मुज़फ़्फ़रपुर
मोबाइल : 95463 33084 (WhatsApp)
ई-मेल : bhavna.201120@gmail.com

❀

एक बड़ी मुस्कान लबों पर हो, तो हो
टीस बला की दिल के अंदर हो, तो हो

ढाई आखर पढ़ना था तो पढ़ ली मैं
काला अक्षर भैंस बराबर हो, तो हो

मैंने तो बस फूल दिये उसको हरदम
हाथ में उसके कोई ख़ँजर हो, तो हो

बोल के सच ईमान बचाया है मैंने
शोर-शराबा अंदर-बाहर हो, तो हो

मेरे घर में पीड़ा भी पटरानी है
तेरे घर में सुख भी नौकर हो, तो हो

एक इमारत झुग्गी पर इठलायेगी
कोई बंदा घर से बेघर हो, तो हो

छुपा जाती है सारे ग़म, नहीं कुछ भी बताती है
वही औरत जो तन-मन पे पिटाई रोज़ खाती है

कभी पूजा जिसे करती, उसे क़दमों में लाती है
ये दुनिया स्वार्थ में अपने भला किसको लगाती है

कभी कोरोना लाती है, कभी लाती है ईबोला
ये क़ुदरत मौन रहकर भी हमें क्या-क्या सिखाती है

अगर अख़बार लिखना हो, क़लम ये दौड़ने लगती
मगर साहित्य रचने में कई घंटे लगाती है

बुरा है, वक़्त जो अपना, तो घबराना भी क्या साहब
यही विपदा हमारी तो हमें लड़ना सिखाती है

गुज़ारिश है हवा तुमसे, घटाओं को बुला लाओ
मेरी बिटिया इसी उम्मीद पर पौधे लगाती है

अन्न जिसको कि आप खाते हैं
हम उन्हें ख़ून से उगाते हैं

रेशमी ख़्वाहिशों की ख़ातिर ही
ख़्वाब आँखों में हम सजाते हैं

ख़ुशबूएँ चाहतें बनी जबसे
हम हवाओं से दिल लगाते हैं

इक तरफ़ कालिखों को सह करके
आइना ख़ुद को हम बनाते हैं

ख़ुद-ब-ख़ुद आ ही जाती है राधा
हम तो बस बाँसुरी बजाते हैं

ऐसी महकी गुलाब की ख़ुशबू
जैसे ख़त में जवाब की ख़ुशबू

सारी दुनिया में घूमकर देखा
सबसे बेहतर किताब की ख़ुशबू

इस पतीले को कुछ ख़बर होगी
ताप के साथ दाब की ख़ुशबू

इल्म वहशी को किस क़दर होगा
कितनी दिलकश हिजाब की ख़ुशबू

प्रेम कर लो औ देख लो ख़ुद ही
कैसी होती है ख़्वाब की ख़ुशबू

हर महाजन को, खींच लाती है
घर से बाहर हिसाब की ख़ुशबू

नदियाँ सूखी, पर्वत समतल, क्या बोलूँ
मैं हूँ या फिर सब हैं पागल क्या बोलूँ

बालिग़-नाबालिग़ सब वहशत की ज़द में
आज हृदय है कितना घायल क्या बोलूँ

अफ़सरशाही, सत्ताधारी सब डूबे
घूस बनी है ऐसी दलदल क्या बोलूँ

शब्दों ने जब भावों से गठजोड़ किया
कितनी है इस दिल में हलचल क्या बोलूँ

पलकों के आँगन में मोती रखके फिर
कौन लगा आया है साँकल क्या बोलूँ

उसकी बातें, उसका चेहरा, उसकी याद
मेरे दिल में रहती हर पल क्या बोलूँ

नाम : डॉ. मुजाहिद फ़राज़
जन्मतिथि : 01/03/1962
शिक्षा : बी.यू.एम.एस, एम.ए. (उर्दू)
प्रकाशित कृतियाँ : बर्फ़ तपती है (ग़ज़ल संग्रह, उर्दू)
सम्मान/पुरस्कार : उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी लखनऊ द्वारा सम्मान।
व्यवसाय/सम्प्रति : मेडिकल प्रैक्टिस
संपर्क : 54 K, असालतपुरा, मुरादाबाद-244001
मोबाइल : 9997259025 (WhatsApp)/7983235313
ई-मेल : dr.mujahidfaraz@gmail.com

❀

ये मत पूछो कच्चे घड़े पर दरिया कैसे पार किया
दीवाना था जान पे खेला लहरों को पतवार किया

इक हमजोली भीतर-भीतर घात लगाता रहता है
इक दुश्मन था सामने आया कहकर मुझ पर वार किया

बीती यादें, चंद किताबें, कुछ तस्वीरें, गहरी सोच
उम्र ढली तो उसने अपने कमरे को संसार किया

इक लोभी ने चैन गँवाया दो, दो-चार के चक्कर में
इक दानी को दो पैसों ने जन्नत का हक़दार किया

नादानों ने चार दिनों में उसको जंगल कर डाला
जिस धरती को जाँबाज़ों ने ख़ूँ देकर गुलज़ार किया

दुनिया तो धुत्कार चुकी थी नफ़रत और हिक़ारत से
मैं मंज़िल पर कैसे पहुँचा किसने बेड़ा पार किया

ज़िन्दगी तुझसे हमें कोई गिला ही कब है
हमने जीने की तरह तुझको जिया ही कब है

हब्स में रहने का आदी उन्हें होना ही था
बंद कमरों के मुक़द्दर में हवा ही कब है

हिचकियाँ उसको परेशान भी कैसे करतीं
इन दिनों मैंने उसे याद किया ही कब है

एक इक साँस तअल्लुक़ पे गराँ होती है
बदगुमानी हो तो जीने का मज़ा ही कब है

एक तस्वीर फ़क़त, एक ही है नाम फ़क़त
दिल के काग़ज़ पे कोई और सजा ही कब है

देखते-देखते वक़्त आ गया रुख़सत का 'फ़राज़'
और जो कुछ मुझे कहना था कहा ही कब है

ये निदामत जो है ख़ता करके
मुझको छोड़ेगी पारसा करके

रात के हुक्मराँ चिराग़ बुझे
एक सूरज का सामना करके

उसके वादे पे क्या यक़ीन किया
शब गुज़ारी ख़ुदा-ख़ुदा करके

वो सँवरता है किन अदाओं से
मेरे चेहरे को आइना करके

रास्ते बंद करते जाते हैं
लोग तय अपना रास्ता करके

मीर-ओ-ग़ालिब से हो गया रिश्ता
शाइरी तुझसे राब्ता करके

बबूल बोते हैं और हम गुलाब माँगते हैं
गुनाह करते है उस पर सवाब माँगते हैं

ख़ुदा का नाम भी लेते हैं, लोग गिन-गिनकर
ख़ुदा से अज्र मगर बेहिसाब माँगते हैं

तमाम शहर में बे-परदा घूमने वाले
जब अपने गाँव में पहुँचें हिजाब माँगते हैं

गुज़र चुकी है शबे-हिज्र उसकी राह न देख
सहर के बाद कहीं माहताब माँगते हैं

ये लोग करते हैं दिन-रात भूख-प्यास से जंग
ये किनके चेहरों पे हम आबो-ताब माँगते हैं

इसी को कहते है दीवानगी मुहब्बत में
किसीकी आँखों में हम अपने ख़्वाब माँगते हैं

उसे समझने, उसे जानने की कोशिश है
ये शाइरी भी किसी राब्ते की कोशिश है

वो बचपना जो कोई चुलबुला सा लड़का था
जवान हो के उसे ढूँढने की कोशिश है

सदाएँ दे के बुलाना गए ज़माने को
जो सच कहूँ तो किसी बावले की कोशिश है

बुढ़ापा चैन से गुज़रे किसी पे बोझ न हूँ
ये भाग-दौड़ उसी सिलसिले की कोशिश है

बनामे-सुल्ह जगाना पुराने ज़ख़्मों को
ये जोड़ने की नहीं तोड़ने की कोशिश है

गुलों पे लिक्खा है ज़ालिम ने नोके-ख़ंजर से
ये और कुछ नहीं दिल जीतने की कोशिश है

नाम	: डॉ. राकेश जोशी
जन्मतिथि	: 9 सितंबर, 1970
शिक्षा	: एम.ए., एम.फ़िल., डी.फ़िल. (अंग्रेज़ी साहित्य में)
प्रकाशित कृतियाँ	: काव्य-पुस्तिका 'कुछ बातें कविताओं में' 'पत्थरों के शहर में' (ग़ज़ल-संग्रह) 'वो अभी हारा नहीं है' (ग़ज़ल-संग्रह)
अनुदित कृति	: हिंदी से अंग्रेज़ी 'द क्राउड बेअर्स विटनेस' (The Crowd Bears Witness)
सम्मान/पुरस्कार	: उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी लखनऊ द्वारा सम्मान।
व्यवसाय/सम्प्रति	: राजकीय महाविद्यालय, मजरा महादेव, पौड़ी (गढ़वाल), उत्तराखंड में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (अंग्रेज़ी)
संपर्क	: राजकीय महाविद्यालय, मजरा महादेव, पौड़ी (गढ़वाल), उत्तराखंड
मोबाइल	: 9411154939 (WhatsApp)
ई-मेल	: joshirpg@gmail.com

लाचारी के दौर में कोई लाचारों के साथ नहीं था
तूफ़ानों के डर से कोई मछुआरों के साथ नहीं था

जंगल, बस्ती और जहाँ भी आग लगाई थी जिस दिन भी
उस दिन कोई भी अंगारा, अंगारों के साथ नहीं था

हर युग में लड़ने वाला हर सैनिक ख़ूब लड़ा था, पर वो
हथियारों के बीच में रहकर हथियारों के साथ नहीं था

सच्चाई के नाम पे जब-जब झूठ छपा था अख़बारों में
अख़बारों का अक्षर-अक्षर अख़बारों के साथ नहीं था

बिकने वाले की क़ीमत तो तय कर दी बाज़ारों ने, पर
बिकने वाला माल कभी भी बाज़ारों के साथ नहीं था

जंगल-जंगल, पर्वत-पर्वत, भटका लेकिन क्या जानूँ
मैं बंजारा होकर भी क्यों बंजारों के साथ नहीं था

बहुत अफ़सोस है धरती को धानी लिख नहीं पाया
मैं पुरखों की कभी कोई निशानी लिख नहीं पाया

यहाँ मिट्टी को, जंगल को कभी पूजा नहीं मैंने
कभी मैं आसमाँ को आसमानी लिख नहीं पाया

फ़क़त मैंने लिखा कूड़ा, फ़क़त कचरा लिखा मैंने
अगर दुनिया की आँखों का मैं पानी लिख नहीं पाया

वही जिसने लिखे धनवान लोगों के कई क़िस्से
वही लाचार लोगों की कहानी लिख नहीं पाया

नए इस दौर में सब कुछ नया तो लिख दिया मैंने
मगर अपनी उदासी मैं पुरानी लिख नहीं पाया

मैं जब इतिहास पढ़ता हूँ तो डरता हूँ कि उसमें मैं
ज़ुबाँ वालो, तुम्हारी बे-ज़ुबानी लिख नहीं पाया

अंधियारों से तो ये डर बोलेगा जाकर
दरबारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

ये बोलेगा इससे, उससे वो बोलेगा
सरकारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

तू भी है उस पार कहीं, इस पार कहीं मैं
दीवारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

चाँद, समंदर, साज़िश, कश्ती, ख़ामोशी है
मछुआरों से कौन मगर बोलेगा जाकर

जंगल-जंगल आग लगी है, बुझना होगा
अंगारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

मज़दूरों की भी तो हालत तुम जैसी है
बंजारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

अगर जीना नहीं लाज़िम तो मरना लाज़िमी क्यों है
अगर आँखों को चुभती है तो इतनी रौशनी क्यों है

बहुत अच्छा है दुनिया में ग़रीबों की फ़िकर करना
मगर ये तो बताओ ये ग़रीबी आज भी क्यों है

परीशाँ जानवर होता तो फिर भी कुछ समझ आता
मगर आदम की दुनिया में परीशाँ आदमी क्यों है

अगर पहचान है तुझसे तो अच्छी बात है, लेकिन
अगर तू अजनबी है तो, भला तू अजनबी क्यों है

यहाँ पर चंद लोगों को ही बाँटा क्यों गया सूरज
यहाँ पर चंद लोगों की ही केवल चाँदनी क्यों है

अगर तू है यहीं पर और सब कुछ देखता है तो
यहाँ पर ज़ुल्म क्यों है फिर यहाँ पर बेबसी क्यों है

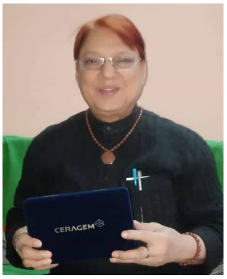

नाम : डॉ. शँकर प्रसाद
जन्मतिथि : 04-07-1946
शिक्षा : एम. ए., पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ : *शोध प्रबंध* : हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान 1950 से 1975 तक; मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्व वादी जीवन दर्शन; *संस्मरण* : तुमसे दूर 40 दिन
जीवनी : समय का सूर्य लालू यादव; लालू यादव का नया बिहार; यादों के दरीचे से 4 भाग में (शीघ्र प्रकाश्य) *काव्य संग्रह* : सारांश का विस्तार
सम्मान/पुरस्कार : कई राष्ट्रीय पुरस्कार और राज्य के पुरस्कार; बिहार राज्य से लाइफ़ टाइम अचीवमेंट अवार्ड 2015 और 2016; प्राचीन कला केंद्र से लाइफ़ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार; कालिदास रंगालय से अनिल मुखर्जी पुरस्कार; चेंबर ऑफ़ कॉमर्स से पुरुष रत्न सम्मान; मोतिहारी से चंपारण रत्न अवॉर्ड; कौमुदी महोत्सव में कला संस्कृति अवार्ड
व्यवसाय/सम्प्रति : अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, पटना
संपर्क : 306, महादेवी अपार्टमेंट, काशी नाथ लेन, पूर्वी लोहानीपुर, पटना - 800003
मोबाइल : 83405 70376, 98350 56266 (WhatsApp)

उनकी नज़रों का मेरे दिल पर असर होता रहा
धीरे-धीरे मैं जहाँ से बेख़बर होता रहा

ख़ाक में मिलती रही हैं ज़ीस्त की रुसवाइयाँ
रंजो-ग़म का कारवाँ भी बेअसर होता रहा

तेरा जलवा तेरी ही रानाइयाँ थीं बज़्म में
और मैं नाज़ो-अदा से बाख़बर होता रहा

होश की बातें नहीं बस जोश की बातें रही
ढूँढता था घर मुझे मैं दर-ब-दर होता रहा

दिन-ब-दिन बढ़ती रही हैं दूरियाँ तनहाइयाँ
वो मुहब्बत का शजर भी बेअसर होता रहा

शौक़ जलने का लगा जब बाँटता है रौशनी
हर क़दम ही अब चिराग़-ए-रहगुज़र होता रहा

❀

उसकी तुरबत पे कोई आया है रोती आँखें
ज़िन्दगी भर जो रहा रोते लहू की आँखें

उसके दामन में रही ज़ीस्त की रुसवाई ही
वो गया बज़्म से तो सबने झुका ली आँखें

देखकर खेल मुक़द्दर का तड़पते अरमाँ
वो जो रूठा तो मनाने को तरसती आँखें

सैकड़ों लोगों ने सजदे में झुकाया सर को
उसके जाने पे ज़माने ने भी खोली आँखें

दर्द सीने में लिए हँसता है यूँ तो 'शँकर'
पास से देखो तो कहती हैं कहानी आँखें

ख़्वाब से दोस्त पुराना गुज़रे
और मौसम भी सुहाना गुज़रे

कितनी बेरंग फ़िज़ा लगती है
तुमको देखे तो ज़माना गुज़रे

प्यार की राह वफ़ा की बातें
बेख़ुदी के वो ज़माना गुज़रे

कल चमन में तेरी ख़ुशबू आई
मेरी साँसो से तराना गुज़रे

लौटकर आते नहीं बीते लम्हे
पास बैठो तो फ़साना गुज़रे

क्या सितम है कि वफ़ा लूट गई
पास से फिर भी दीवाना गुज़रे

हिज्र का ज़हर पिया 'शँकर' ने
कुछ तो जीने का बहाना गुज़रे

❀

❀

कोई ख़ुशबू इधर उठी है अभी
उनकी आवाज़ भी सुनी है अभी

एक उम्मीद फिर जगी दिल में
उनकी ख़ैरो-ख़बर मिली है अभी

हर घड़ी बढ़ रही है बेचैनी
मेरे हिस्से में बेकली है अभी

मौजे-ग़म में क़दम रुके ऐसे
ज़िन्दगी कुछ ठहर गई है अभी

जो ख़ुशी ढूँढते रहे 'शँकर'
जाने किस राह में खड़ी है अभी

ज़ीस्त की दुश्वारियाँ हँसने नहीं देतीं मुझे
इश्क़ की रानाइयाँ सोने नहीं देतीं मुझे

दरमियाँ तनहाइयाँ हैं और हैं बेताबियाँ
रौनक़े-रुसवाइयाँ मरने नहीं देतीं मुझे

ख़ूब है ये हिज्र की रातें ख़ुदाया क्या कहें
करवटें अँगड़ाइयाँ लेने नहीं देतीं मुझे

मंज़िलों की आस में जब भी बढ़ाता हूँ क़दम
पाँव की ये बेड़ियाँ बढ़ने नहीं देतीं मुझे

है जहाँ में इश्क़ भी नायाब 'शँकर' क्या कहूँ
ये मेरी ख़ामोशियाँ कहने नहीं देतीं मुझे

❀

नाम	: डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर
जन्मतिथि	: 18 दिसम्बर 1954
शिक्षा	: एम.ए. (हिन्दी एवं दर्शनशास्त्र), पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ	: देश की नामचीन पत्रिकाओं में प्रकाशित
व्यवसाय/सम्प्रति	: न्यायिक सेवा (से.नि.)
संपर्क	: कैल्टन स्कूल के पास, लाइन पार, मुरादाबाद यू.पी.
मोबाइल	: 79836 39799

यूँ भी मैं पाकीज़ा हूँ
बिन आँसू के रोता हूँ

ख़ुद में एक समुंदर मैं
ख़ुद में ही इक क़तरा हूँ

लगा देख के चादर ये
मैं जन्मों का मैला हूँ

ज़हनो-दिल सब ख़ाली हैं
देखो पँख सा हल्का हूँ

धूप-छाँव सा जीवन है
मैं ख़ुद एक मुअम्मा हूँ

मैं ही जलता एक दिया
मैं ही ख़ाली कमरा हूँ

कितने मौसम आये गए
मैं तनहा था, तनहा हूँ

देख कैलेंडर ये कैसा है
पानी से क्यों लिखा हुआ है

छिले संतरे की ख़ुशबू में
ज़मीं का आँसू चीख़ रहा है

कहीं से कीजे आप तर्जुमा
दर्द का पूरा पेड़ घना है

आज ज़मीं का पाँव है भारी
इसको लड़का ही होना है

मुझको मुझसे ही निकाल दो
ख़ुद से हर पल जी डरता है

जिस्म आईनों से मामूर
हुई रूह समझो बेनूर

सब्ज़ पेड़ पे चील के साथ
होने वाला कुछ है ज़रूर

तेरी आँखें एक अज़ान
कुछ होगी तख़्लीक़ ज़रूर

पेड़ पसीने के हम लोग
फिर जो हो उसको मंज़ूर

ख़ुद को तनहा कहता था
हुआ वो आख़िर ख़ुद से दूर

सहरा जब तक पता रहेगा
पेड़ प्यास का हरा रहेगा

मुझमें रहकर बड़ा है मुझसे
ख़ुदा आख़िरश ख़ुदा रहेगा

कितनी भी ख़ामोशी गूँजे
फिर भी कुछ अनसुना रहेगा

धूप के चढ़ते बढ़ेगी चुप्पी
कल का ये फ़लसफ़ा रहेगा

नए सिरे की है गुमशुदगी
ख़ुद में कुछ लापता रहेगा

लफ़्ज़ तलक में छुपे शिकारी
ये भी इक सानिहा रहेगा

पहले अश्कों से ख़ुद वज़ू कीजे
ख़ुद से फिर ख़ुद को रू-ब-रू कीजे

जब भी पलकों पे सब्त हो आयत
दिल से दिल में ही गुफ़्तगू कीजे

पहले तो थीं लहू में आवाज़ें
अबके आवाज़ को लहू कीजे

अज़्मते-नज़्म की ज़रूरत है
एक-इक लफ़्ज़ सुर्ख़रू कीजे

मुड़ के देखें तेरी उदासी को
ऐसे चेहरे की आरज़ू कीजे

नाम : डॉ. सीमा विजयवर्गीय
जन्मतिथि : 3 नवम्बर
शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), एम.ए. (संगीत), पी.एच.डी. (राजस्थान विश्वविद्यालय), बी.एड. शैक्षणिक
प्रकाशित कृतियाँ : 1. ले चल अब उस पार कबीरा 2. रज़ा भी उसी की
कनाडा से प्रकाशित हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'प्रयास' तथा नेपाल की साहित्यिक पत्रिका 'चारु' में अनेक बार ग़ज़लों का प्रकाशन
व्यवसाय/सम्प्रति : हिंदी व्याख्याता
संपर्क : 2/84, स्कीम दस-बी, अलवर-301001 (राजस्थान)
मोबाइल : 70737-13013
Email : seemavijay000@gmail.com

❀

सुन फूल भी है ज़िन्दगी तो ख़ार भी है ज़िन्दगी
गर चाहतें घुल जाएँ तो उपहार भी है ज़िन्दगी

बस इक चहकता दिल हो और अल्हड़-सी मस्ती साथ हो
सच-सच कहूँ यारा तो फिर त्यौहार भी है ज़िन्दगी

बन्दूक़, गोली, साज़िशें, हत्याओं से लिपटी हुई
गर प्यार से समझें नहीं, तलवार भी है ज़िन्दगी

सच्चाई और ईमानदारी हो हमारे साथ गर
तो रब का इक बख़्शा हुआ भंडार भी है ज़िन्दगी

ये पेड़, पर्वत, घाटियों, झरनों में उठती-डूबती
सच इक नदी-सी दौड़ती रफ़्तार भी है ज़िन्दगी

है बुलबुला पानी का इक, फ़ानी है ये तू जान ले
है ये अमानत मौत की, निस्सार भी है ज़िन्दगी

मेरे ख़ुदा, मेरे-तुम्हारे बीच में ये आ गई
अब क्या कहूँ माया तेरा विस्तार भी है ज़िन्दगी

रिश्तों में महसूस न होती अब कुछ गरमाई बाबा
उथलेपन में कहीं खो गई दिल की गहराई बाबा

आज पुरानी तस्वीरों में जब मैंने ख़ुद को ढूँढा
तो माज़ी को देख तुम्हारी याद बहुत आई बाबा

सादा जीवन, उच्च विचारों के ही साथ चले हरदम
और तुम्हारे शब्दों में थी कितनी सच्चाई बाबा

इक-इक लम्हा मोती जैसा, हर ज़र्रे में कमल खिला
प्यार भरा वो मानसरोवर भूल नहीं पाई बाबा

जाने किसकी नज़र लग गई पलभर में ही आलम को
तान-तम्बूरे चुप बैठे सब, चुप है शहनाई बाबा

होली-दीवाली पर कितना जोश उमड़ता था घर में
मिलना-जुलना ख़्वाब हुआ अब, फैली तनहाई बाबा

सब इनआम तुम्हारे हिस्से
लो ये शाम तुम्हारे हिस्से

मोह लिया जबसे इस मन को
आठों याम तुम्हारे हिस्से

मन-मन्दिर की बात करूँ क्या
चारों धाम तुम्हारे हिस्से

मेरा मुझमें बचा कहाँ कुछ
अब ये नाम तुम्हारे हिस्से

मधुबन-गोकुल की सब गलियाँ
लो घनश्याम तुम्हारे हिस्से

मुझको मुझसे छीन लिया अब
ये इल्ज़ाम तुम्हारे हिस्से

सावन की वो रुत मस्तानी भूल न जाना
बादल, बिजली, घटा सुहानी भूल न जाना

अपनी छत पर भी रख लेना इक-दो बर्तन
तू पंछी का दाना-पानी भूल न जाना

दो रोटी गायों को भी मिल जाएँ घर से
पुरखों की ये बात पुरानी भूल न जाना

चींटी को रख देना आटा चलते-चलते
माँ की आदत वही पुरानी भूल न जाना

अपने गमलों में रख लेना थोड़ी ख़ुशबू
तुलसी, बेला, रात की रानी भूल न जाना

नदियों, सागर, झरनों, तितली, परियों वाली
बचपन की तू वही कहानी भूल न जाना

सारे रस्ते बंद हुए, घर कैसे जाएँ हे ईश्वर
जान पड़ी आफ़त में कैसे जान बचाएँ हे ईश्वर

रोज़ कमाने खाने वाले, बचा कहाँ पाए कुछ हम
बुझे हुए चूल्हे अब कैसे भूख मिटाएँ हे ईश्वर

हम मज़दूरों के हित में ये किसका निर्णय है आख़िर
सम्मुख मौत खड़ी है अपने किसे बुलाएँ हे ईश्वर

चलते-चलते चप्पल टूटी, सर पर धूप पड़े भारी
कई दिनों से पेट है ख़ाली किसे दिखाएँ हे ईश्वर

ठौर-ठिकाना कहाँ हमारा मारे-मारे फिरते हैं
अंतहीन रस्ता है घर का कैसे जाएँ हे ईश्वर

मंज़िल तक पहुचेंगे कैसे, कुछ भी तो मालूम नहीं
इधर कुआँ है उधर है खाई, क्या बतलाएँ हे ईश्वर

नाम	: डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'
जन्मतिथि	: 16 फ़रवरी
शिक्षा	: एम.ए., पी.एच.डी.
प्रकाशित कृतियाँ	: 'जयतीर्थ की न्याय सुधा का दार्शनिक पक्ष', 'गगरिया छलकता जाये' कविता संग्रह
व्यवसाय/सम्प्रति	: आचार्य एवं अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, सेवा निवृत्
संपर्क	: कुमुद एनक्लेव, बी-1 कृष्णा निकेतन स्कूल के पास, बुद्धाकोलोनी, पटना - 800001
मोबाइल	: 94302 84838, 84099 40929

ख़ुशियों का मेरे होंठों से इक जाम लिया है
मुझसे ही मुहब्बत भरा पैग़ाम लिया है

रक्खा है मुझे दुनिया की तोहमत से बचाकर
'दीवानों ने सब अपने सर इल्ज़ाम लिया है'

उनके बिना अब तो मेरा जीना भी है मुश्किल
मैंने भी ये किस तरह का इनआम लिया है

जब भी कोई मुश्किल की घड़ी आई है मुझ पर
दिलबर ने मेरे हाथों को बस थाम लिया है

कैसे मैं बताऊँ कि उन्हें चाहूँ मैं कितना
नाम उनका ही मैंने तो सुब्हो-शाम लिया है

नेकी की घनी धूप किया जग के हवाले
बदले में 'सुधा' ग़म से सजी शाम लिया है

बेगम ने पाई-पाई जुटाई है ज़िन्दगी
मेरी शरीके-जाँ की कमाई है ज़िन्दगी

संघर्ष मुश्किलों में बिताई है ज़िन्दगी
ख़ुश हूँ कि मेरे दिल को ही भाई है ज़िन्दगी

इक दूसरे पे जान दें जब तक बहार है
मुद्दत से तुझको दिल में बसाई है ज़िन्दगी

शादी नहीं हुई है तो अपनी है बेटियाँ
घर से बिदा हुई तो पराई है ज़िन्दगी

तिनकों का आशियाना हो या घर किराये का
सच है 'सुधा' को रास न आई है ज़िन्दगी

आपकी मस्ती भरी महफ़िल नहीं है
अब गली ये प्यार के क़ाबिल नहीं है

दूर तक कुछ भी नहीं दिखता है मुझको
और जो दिखता है वो मंज़िल नहीं है

चाँद-तारे बादलों में छिप गये जब
पास आ जाना तेरा मुश्किल नहीं है

दूर मैं तुमसे रहूँ कैसी ये चाहत
इसमें तो कुछ भी तुम्हें हासिल नहीं है

तुम कभी करते नहीं हो याद मुझको
पर 'सुधा' के पास वैसा दिल नहीं है

सावन की बरसे है ऐसी लड़ी
जाने को बाहर किसे है पड़ी

बदरिया घुमड़ने लगे नभ में जब
सँवरिया की बाँहों में मैं जा पड़ी

झमा-झम ये पानी बरसने लगा
सजन ने बदन पर निगाहें जड़ी

बिजुरिया कड़क के डराए तो क्या
निडर मैं हूँ साजन के संग में खड़ी

हर इक सम्त हरियाली की धूम है
रचाने की मेहँदी 'सुधा' है घड़ी

कुछ इस तरह मेरे सपनों में तुम न आया करो
कि आते-आते ही जाने की ज़िद मचाया करो

ये मेरे शे'रो-सुख़न तो तुम्हारे दम से हैं
अदाएँ प्यारी दिखाओ, ये दिल लुभाया करो

ये दूरियों की तपिश से न होगा कुछ हासिल
मेरी खुली हुई बाँहों में झूल जाया करो

पिलाओ जाम निगाहों से दिलरुबा बनकर
मचलती बाँहों की मस्ती में कसमसाया करो

बहुत है जोश में चाहत तुम्हारी होने की
'सुधा' तुम्हारी है इसको न तुम पराया करो

नाम : डॉ. सुनीता सिंह 'शोहरत'

जन्मतिथि : 12/08/1978

शिक्षा : पी.एच.डी.

प्रकाशित कृतियाँ : 4 काव्य ग्रन्थ प्रकाशित, ग़ज़ल, गीत, कहानी, कविता आदि विधा का लेखन और देश के विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित

सम्मान/पुरस्कार : 3 सम्मान प्राप्त हैं

व्यवसाय/सम्प्रति : विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर और हिंदी विभागाध्यक्ष

संपर्क : बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा

मोबाइल : 96716 19238 (WhatsApp)

ई-मेल : sksinghsingh4146@gmail.com

रोटी से बढ़ के आज ये गूँजा सवाल है
जो बच गया है मौत से वो ही कमाल है

दीवारों में हैं दफ़्न यहाँ आदमी के शौक़
देखो चली समय ने ये कैसी चाल है

है ख़ौफ इस क़दर ही फ़ज़ाओं में आजकल
साँसें खुली बयार में लेना मुहाल है

सब कुछ है मेरे पास मगर एक है कमी
अपना बना सके न उन्हें ये मलाल है

मिलती नहीं है इसकी कोई काट अब कहीं
शतरंज की बिसात पे ये कैसी चाल है

जीना है तो ज़रूरी है ये एहतियात भी
बचने को ऐसे रोग से बस एक ढाल है

आने की उनके आज ये आई है जो ख़बर
'शोहरत' तो इस ख़ुशी से ही बस मालामाल है

बड़े नाज़ नखरे दिखाने लगें हैं
बहाने नये वो बनाने लगे हैं

नहीं बात मानेंगे वो अब हमारी
इशारे से ये वो जताने लगे हैं

असर उनपे होने लगा है हमारा
बहाने से नज़दीक आने लगे हैं

जिन्हें हम समझते हैं हर शै से प्यारा
वही हमसे नज़रें चुराने लगे हैं

यक़ीनन फँसे हैं वो मुश्किलों में
उधारी में सौदा चुकाने लगे हैं

इशारा अजब सुरमयी आँख का है
हमीं होश अपने गँवाने लगे हैं

किस दर्जा कर रहे हैं इनायात देखिए
कुछ देर उनकी सुन के ज़रा बात देखिए

दुनिया की फ़िक्र में ही घुले जा रहें हैं आप
ख़ुद से कभी तो करके मुलाक़ात देखिए

बारिश का आज मिल के मज़ा लूट लें चलो
मौसम की पहली-पहली है बरसात देखिए

करिये न यूँ फ़िज़ूल की बातें मिरे हज़ूर
इस दिल में उठते प्यार के जज़्बात देखिए

रक्खेंगे ता-हयात इसे हम संभालकर
प्यारी ही इस क़दर है ये सौग़ात देखिए

कैसे मैं जी सकूँगी जुदाई में आपकी
आकर कभी तो मेरे भी हालात देखिए

क़रीब आके मेरे मुस्कुरा गया अभी-अभी
उसे मैं दोस्त समझूँ क्या ये दिल बता अभी-अभी

बहार लौट आयी है क्या हमनफ़स दयार में
चमक रही सितारों की ये फिर घटा अभी-अभी

पिये बिना ही डगमगा रहे क़दम यहाँ-वहाँ
पिला गया नज़र से वो मुझे नशा अभी-अभी

उड़ा दिया मज़ाक़ में ही मैंने उसके प्यार को
इसी अदा पे वो मिरी हुआ फ़िदा अभी-अभी

मैं जी सकूँगी चैन से ऐ 'शोहरत' तुझे ख़बर
चराग़े-दिल जला गया वो हमनवा अभी-अभी

मुक़द्दर के भरोसे ज़िन्दगी कटती नहीं देखी
बिना तिकड़म किये रोज़ी कभी चलती नहीं देखी

ख़रीदो आज जो भी चाहो दौलत के सहारे तुम
मुहब्बत आज भी बाज़ार में बिकती नहीं देखी

सताया है जुनूँ वालों को दुनिया ने हमेशा ही
दिलों से पाक उल्फ़त तो कभी मिटती नहीं देखी

मुहब्बत की शुआएँ ख़ुद-ब-ख़ुद ही फैल जाती हैं
छुपाये लाख पर्दों में मगर छुपती नहीं देखी

तलातुम लाख उठ्ठे आयें चाहें आँधियाँ कितनी
जुनूँ की कश्ती तो तूफ़ान से डरती नहीं देखी

बग़ावत की है हर युग में ही शोहरत इस मुहब्बत ने
लगी जो आग हो दिल में कभी बुझती नहीं देखी

नाम : दिनेश 'तपन'
जन्मतिथि : 31-01-1940
शिक्षा : विज्ञान स्नातकोत्तर (गणित)
प्रकाशित कृतियाँ : रेशमा चौहरमल (उपन्यास), दर्जनाधिक सांझा संकलन, 1. आईना-ए-ग़ज़ल, 2. इक्कीसवीं सदी के ग़ज़लकार संपादन : अशोक अंजुम, 3. ग़ज़ल दुष्यंत के बाद, भाग-1 संपादन : दीक्षित दनकौरी 4. दर्पण (काव्य संकलन) सं : सरल जैन, 5. सुरंग में सूरज, (कहानी संकलन), 6. नीली झील की आँखें, (कहानी संकलन), 7. वामन के डेग (लघुकथा), इत्यादि
सम्मान/पुरस्कार : (क) वनफूल सम्मान, (प्रमंडलीय राजभाषा परिषद) (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान समय साहित्य सम्मेलन, पुंसिया 1998 (ग) रेणु कुल कलाधर, कामायनी-भागलपुर, 1998 (घ) फूलवती स्मृति सम्मान, एवं पुरस्कार राशि (₹1001) (च) अंगभूषण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2001 (छ) अंगभूषण, 2004, खगड़िया, मुंगेर (ज) जानकी देवी झा स्मृति सम्मान एवं पुरस्कार(₹1001) (झ) जानकीवल्लभ शास्त्री स्मृति पर्व, 2019 (हिन्दी भाषा साहित्य परिषद, खगड़िया) आदि अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त.......
व्यवसाय/सम्प्रति : सेवा निवृत्त प्राचार्य, डी.पी. यादव इन्टरस्तरीय विद्यालय, घटवारी, मुंगेर
संपर्क : बोरिंग गली, भट्ठा रोड, (बिषहरी स्थान के निकट) गुमटी नं. 2, भीखनपुर, भागलपुर - 812001
मोबाइल : 94310 90390 (WhatsApp)
ई-मेल : dineshtapan31baba@gmail.com

प्यार की हर कशिश तर्जुमानी करो
ख़ुशनुमा-ख़ुशनुमा ज़िंदगानी करो

तल्ख़ियों से भरी गर हुई ज़िंदगी
तो मुकम्मल इसे शादमानी करो

जश्न की शाम कोई भी ज़ाया न हो
ख़ुशबुओं से मुअत्तर जवानी करो

इश्क़ से हुस्न की रू-कशी तो हुई
ता-सहर अब इसे रातरानी करो

आज का ये भरम, लाज का ये भरम
क्यूँ न मिलकर इसे पानी पानी करो

हर क़दम ये ज़मीं पर रहे ऐ 'तपन'
ख़्वाब अपने मगर आसमानी करो

❀

इक सितारा बहुत झिलमिलाता रहा
रौशनी उम्र भर जो लुटाता रहा

यूँ भरोसा नहीं था ख़ुदी पर जिसे
बस वही बारहा मात खाता रहा

आपको प्यार का इक ख़ुदा मानकर
ग़म सहे तल्ख़ रिश्ते निभाता रहा

रात भर ज़िंदगी, ज़िंदगी की तड़प
कोई रोता रहा कोई गाता रहा

जिसपे तक़दीर की हो इनायत बहुत
वो भी ग़ुरबत के आँसू बहाता रहा

इस जहां का यही कायदा है 'तपन'
लाख भूखे रहे एक खाता रहा

❀

ज़िंदगी कुछ यूँ भी हम आसान करते हैं
रोज़ थोड़ा जोग जप औ ध्यान करते हैं

धन छिपा रखते कहीं जाकर विदेशों में
आप वो करते हैं जो बइमान करते हैं

जिन किसानों की बदौलत मुल्क़ पलता है
ख़ूँ-पसीना से वो हिन्दुस्तान करते हैं

दौर तो बस है यहाँ टुच्ची सियासत का
वीर वो हैं ख़ुद को जो बलिदान करते हैं

जिस ख़ुदा ताला ने हमको ज़िन्दगी बख़्शी
सब वही होता है जो भगवान करते हैं

कौन है मुहसिन, भला किससे वतन का है
अब 'तपन' इस सच की हम पहचान करते हैं

सारी उम्र रही लाचारी अच्छा नहीं हुआ
ग़ुरबत की साज़िश थी सारी अच्छा नहीं हुआ

छाया बनकर मौत फ़िज़ा पर ढाने लगी क़हर
कोरोना का ख़ौफ़ है तारी अच्छा नहीं हुआ

सत्ता के विस्तार में बेशक जिसका हुआ सृजन
वो निकली घातक बीमारी अच्छा नहीं हुआ

रोज़ाना क़ैदी सा घर में कब तक रहें भला
सकते में हैं सब व्यापारी अच्छा नहीं हुआ

इश्क़ में जगकर रातें काटीं ऐसा रहा जुनून
दिल की हाय लगी बीमारी अच्छा नहीं हुआ

कैसे कौन सुलह करवाता बातें उलझ गयीं
लड़ बैठी बबुआ महतारी अच्छा नहीं हुआ

जिसके साथ उठे बैठे हम यारी निभी सदा
ऐन बखत उसकी ग़द्दारी अच्छा नहीं हुआ

कौन 'तपन' किसको समझाते सब थे पिये हुए
आपस में थी मारामारी अच्छा नहीं हुआ

❀

नाम	: दिनेश बंसल
जन्मतिथि	: 25.10.1977
शिक्षा	: कॉमर्स स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ	: 'तुम हो कहाँ' (ग़ज़ल संग्रह)
व्यवसाय/सम्प्रति	: प्राथमिक अध्यापक
संपर्क	: नज़दीक पुराना पोस्ट ऑफ़िस, पुण्डरी ज़िला-कैथल, हरियाणा -136026
मोबाइल	: 98967 55813 (WhatsApp)
ई-मेल	: dinesh.oct77@gmail.com

❀

सदा आई है शब की रूहो-जाँ से
'दिनेश' अब झाँक बामे-आसमाँ से

अँधेरा टिक न पाए एक पल भी
सहर का तीर जब छूटे कमाँ से

मुक़ाबिल मुश्किलें हैं ? सामना कर
निखरती शख़्सियत है इम्तिहाँ से

मुक़र्रर आपका जब फ़ैसला है
तो फिर क्या फ़ायदा मेरे बयाँ से

सर-ए-महफ़िल तुम्हें रुसवा करेगा
नहीं करना अदावत राज़दाँ से

सितारे, चाँद, सूरज और जुगनू
सभी का नूर उस नूरे-जहाँ से

मैं शाइर हूँ हमेशा सच कहूँगा
मेरी पहचान केवल क़द्र-दाँ से

अनजान डगर हो तो मेरे साथ चलो
तन्हाई का डर हो तो मेरे साथ चलो

ख़्वाबों का न घर हो तो मेरे साथ चलो
तुम ख़ाक-बसर हो तो मेरे साथ चलो

दौलत के बिना जीतना है सारा जहाँ
दिल प्यार से तर हो तो मेरे साथ चलो

इस राह-गुज़र से हूँ मैं वाबस्ता बहुत
गुमराह अगर हो तो मेरे साथ चलो

रस्ते के मनाज़िर पे नहीं ठिठकें क़दम
चलने का हुनर हो तो मेरे साथ चलो

दरिया की हर इक मौज पुकारे है यही
सपनों में गुहर हो तो मेरे साथ चलो

फ़ानी दुनिया के तज़्किरे हम लोग
एक दरिया के बुलबुले हम लोग

आजकल अपने फ़ायदे के सिवा
क्यों नहीं कुछ भी सोचते हम लोग

कोई दुःख-दर्द अब न साँझा है
देखिये 'हम' से 'मैं' हुए हम लोग

बन्द मुट्ठी थे इक ज़माने में
दौरे-नौ में बिखर गए हम लोग

एक टूटे हुये सफ़ीने में
मौजे-तूफ़ाँ के सामने हम लोग

सिर्फ़ यादों का ही सबब होंगे
अपने बच्चों के वास्ते हम लोग

इस जहाँ में हर तरफ़ उस ख़ुदा का नूर है
जिसने ये समझ लिया वो ही बा-शऊर है

इश्क़ जाविदाँ भले, हुस्न जाविदाँ नहीं
फिर तुझे ऐ महजबीं, ख़ुद पे क्यों ग़ुरूर है

बद-गुमानी बढ़ रही ये जो अपने दरमियाँ
कुछ तेरा क़ुसूर है कुछ मेरा क़ुसूर है

जिस्म की हवस है बस, ग़ौर से जो देखिये
प्यार जिसका नाम है, ज़ह्न का फ़ितूर है

तेरे हौसले पे हैं मुनहसिर ये मंज़िलें
इस फ़लक के पार भी इक फ़लक ज़रूर है

नफ़रत की गुफ़्तार सँभाले बैठे हैं
हाकिम ही हथियार सँभाले बैठे हैं

फूलों को डर-डर के जीना पड़ता है
अब काँटे गुलज़ार सँभाले बैठे हैं

चोरों की टोली तो कब की हवा हुई
पहरेदार ग़ुबार सँभाले बैठे हैं

मौला मेरी बस्ती के लोगों की ख़ैर
सरदारी ख़ूँ-ख़्वार सँभाले बैठे हैं

कौन ख़बर देगा हमको उजियारे की
अँधियारे अख़बार सँभाले बैठे हैं

रोटी, कपड़ा, घर, बच्चों की फ़ीस, दवा
मुफ़लिस बस अफ़्कार सँभाले बैठे हैं

ग़म के दरिया में हम डूब गये होते
ढाँढस की पतवार सँभाले बैठे हैं

नाम	: देववंश दुबे
जन्मतिथि	: 11 फ़रवरी 1961
शिक्षा	: बी.एस-सी (भौतिकी प्रतिष्ठा), एम. ए. (अंग्रेज़ी साहित्य), एल.एल.बी., बी.एड.
व्यवसाय/सम्प्रति	: उच्च वर्ग शिक्षक, हॉली क्रॉस कान्वेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, अम्बिकापुर
संपर्क	: किसान राइस मिल के पीछे, कृष्ण नगर, नमना कला, अंबिकापुर-497001, छत्तीसगढ़
मोबाइल	: 78790 76271 (WhatsApp)
ई-मेल	: deobanshdubey@gmail. Com

❀

दिल में आईना है कोई
झाँकता रहता है कोई

टूटकर बिखरा है कोई
यूँ भी तो ज़िंदा है कोई

नक़्शे-पा बतला रहा है
हाँ ! अभी गुज़रा है कोई

मुँह चुराता है अँधेरा
दीप गर जलता है कोई

मेल ज़ख़्मों से पुराना
दर्द कब तन्हा है कोई

बे-तुकी ही बोलता है
सिरफिरा लगता है कोई

ख़ून का रिश्ता हो जैसे
दिल में यूँ बसता है कोई

जाने ये कौन-सा फ़ितूर रहा
मैं चमन में गुलों से दूर रहा

इतना उस पर मुझे ग़ुरूर रहा
मैं उसी के नशे में चूर रहा

उसको समझा किए ख़ता अपनी
जो किसी और का क़ुसूर रहा

तरबियत जाने उसकी कैसी थी
बे-अदब और बे-शऊर रहा

क्यूँ तलब हो किसी उजाले की
गोशे-गोशे में उसका नूर रहा

लोगों से कुछ प्यार, मुहब्बत, यारी रख
कम-से-कम इतनी तो दुनियादारी रख

जीवन सारा ग़म का दरिया बन जाए
इतनी भी जज़्बों की मत लाचारी रख

बुनियादी रिश्ते ही ज़िंदा रहते हैं
बाक़ी को बस जैसे-तैसे जारी रख

जितने से कट जाए सफ़र आसानी से
कंधे पर उतनी ही गठरी भारी रख

दूर अगर करना है घर का सूनापन
आँगन में तुलसी रख या फुलवारी रख

आज का दिन गुज़रा हो चाहे जैसे भी
इससे बेहतर कल की अब तैयारी रख

रिश्तों की तहज़ीब से लेना-देना क्या
तंज़ भरी मुस्कान, ज़ुबाँ पर आरी रख

रंग कुछ ज़िंदगी में भरने दो
मैं हूँ ख़ुशबू, मुझे बिखरने दो

कौन ज़िंदा है कौन मुर्दा है
फ़ैसला दूसरों को करने दो

थक गया हूँ, सफ़र ये लम्बा है
अब किसी मोड़ पर ठहरने दो

बंद हैं ज़िन्दगी के दरवाज़े
जान से अब मुझे गुज़रने दो

साया दरकार है अगर मेरा
धूप सर से मिरे उतरने दो

शाख़ों से फूलों ने ख़ुशबू पाई है
रिश्तों में जाने कितनी गहराई है

जाने क्या सौग़ात छुपाकर लाई है
अपने गुल से तितली मिलने आई है

दुनिया से तो हमने प्यार जताया था
जाने क्यों फिर हाथ लगी रुसवाई है

मुस्तक़बिल की धूप से हमको ख़ौफ़ नहीं
गुज़रे लम्हों की सर पर परछाई है

सपनों को साकार करूँ कैसे आख़िर
राहों में ऊँचे पर्वत या खाई है

बढ़ जाती है पीड़ा जिस्म की और ही कुछ
बहकी-बहकी आती जब पुरवाई है

हार गये हैं दिल अपना इस दरिया को
तिश्ना-लबी में जिसने प्यास बुझाई है

नाम : देवेन्द्र आर्य
जन्मतिथि : 18.06.1957
शिक्षा : एम.ए. (इतिहास)
प्रकाशित कृतियाँ : गीत ग़ज़ल के दस और मुक्त छंद के तीन संकलन। तीनों विधाओं के अब तक प्रकाशित, अंतिम संकलन : 'सपने कौन ख़रीदेगा' (गीत) ; 'जो पीवे नीर नैना का' (ग़ज़लें) ; 'मैं लिखता तो ऐसे लिखता' (कविताओं का संग्रह) ; तीन पुस्तकों का सम्पादन और एक आलोचना की पुस्तक, 'शब्द असीमित'
सम्मान/पुरस्कार : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का विजय देव नारायण साही सम्मान एवं केंद्र सरकार का मैथिली शरण गुप्त पुरस्कार
व्यवसाय/सम्प्रति : रेल सेवा से निवृत्त
संपर्क : ए-127, आवास विकास कॉलोनी, शाहपुर, गोरखपुर - 273006
मोबाइल : 7318323162 (WhatsApp) एवं 9450634303
ई-मेल : devendrakumar.arya1@gmail.com

❀

कैसी सूरत बनाए बैठे हैं ?
जैसे मुर्दा रखाए बैठे हैं

लाश में जान फूँकेगा सोखा
टकटकी सब लगाए बैठे हैं

चाइना ने तो कुछ किया ही नहीं
आप झुट्टे उड़ाए बैठे हैं !

यार सूरज उगे भी तो कैसे ?
लोग किरनें दबाए बैठे हैं

इनको दुश्मन की क्या ज़रूरत है
ख़ुद से ही ख़ार खाए बैठे हैं

आप चूल्हे की बात करते हो
हम यहाँ दिल जलाए बैठे हैं

ऐ जी ! खुजलाइए न पीठ मेरी
हम तो मेंहदी लगाए बैठे हैं

क़रीने से बीनी है झीनी हक़ीक़त
पसे पर्दा रहने दो चीनी हक़ीक़त

कहीं दिख न जाए कमीनी हक़ीक़त
छिपाई सभी ने ज़मीनी हक़ीक़त

बहुत ख़्वाब देखे बहुत दिल जलाया
मुहब्बत भी निकली मशीनी हक़ीक़त

हमारे लिए मस्अला पेट का था
तुम्हारे लिए थी जो दीनी हक़ीक़त

वे थोड़ा सा रफ़-टफ़ बना लेते ख़ुद को
हमीं ने तो बच्चों से छीनी हक़ीक़त

दबदबा उसका अच्छा ख़ासा है
शाइरी में मिला नवासा है

आदिवासी नहीं यहाँ कोई
नाम भर इसका चाइबासा है

अपना फल आज भी नहीं खाते
क्या दरख़्तों पे इस्तिग़ासा है ?

आपके पास अधिनियम होंगे
पास मेरे भी इक गंडासा है

साज़िशन थी मगर नहीं साज़िश
मीडिया ने किया ख़ुलासा है

धूप को जो समझ रहा पानी
आप सोचो वो कितना प्यासा है !

यार इस दौर का हर इक शाइर
ऐसा क्या है कि 'आर्या' सा है

कब तलक भूख को उबालोगे
प्यास क्या आँसुओं में ढालोगे ?

दाँव पर क्यों नहीं लगा देते
ज़िंदगी का अचार डालोगे ?

वो तो सिक्के उछालेगा, तय है
आप सोचो कि क्या उछालोगे

उसने तो पेट अपना हल्का किया
तुम सुअर तो नहीं हो, खा लोगे !

बाँस की टिकठी ही बनाते रहे
आज क्या बाँसुरी बना लोगे ?

जा रहे हो तो सोचकर जाना
वापसी का टिकट कटा लोगे

धूप सीधी सरल सी रेखा है
इससे बेहतर भी कोई क़िस्सा है ?

जिसकी माचिस से तेरी बीड़ी जली
एक कश उसका भी तो बनता है !

सबने तो हाथों पर ही ग़ौर किया
पाँवों को लेके किसने सोचा है

स्लम हैं, फुटपाथ, ठेले शहरों में
गाँवों में कौन सा ठिकाना है ?

ग़ौर से देखो इस मरी माँ को
इसके सपनों में एक बच्चा है

अब कोई बात ही नहीं लगती
बस इसी बात का तो रोना है

नाम	: देवेंद्र प्रसाद सिन्हा उर्फ देवेंद्र गौतम
जन्मतिथि	: 8 जनवरी 1955
शिक्षा	: बी.ए.
प्रकाशित कृतियाँ	: आख़िरी मुक़ाम धुआँ (ग़ज़ल संग्रह)
सम्मान/पुरस्कार	: शहपर एवार्ड, 2017
व्यवसाय/सम्प्रति	: पत्रकारिता, संपादक-journalistera.com
संपर्क	: द्वारा अभिजित कुमार, फ्लैट नं. S-4 प्लाट नं.391 सेक्टर - 5 , वैशाली, ग़ाज़ियाबाद - 201010
मोबाइल	: 83403 38337, 99105 49717
WhatsApp	: 85351 49133
ई-मेल	: devendragautam20@gmail.com

बादलों की ओट से बाहर निकलता क्यों नहीं
वो अगर सूरज है तो करवट बदलता क्यों नहीं

रास्ता फिसलन भरा आख़िर बदलता क्यों नहीं
ठोकरें खाता है तो खाकर संभलता क्यों नहीं

क्यों हवा में बेसबब तलवारबाज़ी करता है
युग बदलना चाहता है तो बदलता क्यों नहीं

हर तरफ़ अँधेरगर्दी और हम सब चुप खड़े
ख़ून बाक़ी है रगों में तो उबलता क्यों नहीं

जाने किस-किस दौर की बातें सुनाता है हमें
वो हमारे वक़्त के साँचे में ढलता क्यों नही

घर में बैठा उँगलियों से खेलता बच्चा कोई
अब खिलौनों के लिए आख़िर मचलता क्यों नहीं

एक सपना ज़िंदगी में टूट जाता है अगर
दूसरा सपना कोई आँखों में पलता क्यों नहीं

ये जो उल्टी हवाएँ हैं
किसी की बद्दुआएँ हैं

मेरे जीवन के मरघट में
कई जलती चिताएँ हैं

सज़ा जिनकी मिली मुझको
वो नाकर्दा ख़ताएँ हैं

कभी पीछा न छोड़ेंगी
गए दिन की सदाएँ हैं

उड़ा ले जाएँगी सब कुछ
बड़ी पागल हवाएँ हैं

कभी टाले नहीं टलतीं
कई ऐसी बलाएँ है

धूल की आँधी उठी है रहगुज़र के सामने
क़ाफ़िले भटके हैं गोया राहबर के सामने

इक नई पहचान लेकर शह्र से लौटा है वो
अजनबी बनकर खड़ा है अपने घर के सामने

धूप की ललकार सुनकर जंग के मैदान में
शाम फिर तनकर खड़ी है दोपहर के सामने

सबके सर पे मौत मंडराने लगी है इन दिनों
ज़िंदगी उल्टी खड़ी है हर बशर के सामने

तुमने जंगल की कभी तहज़ीब देखी ही नहीं
आदमी कुछ भी नहीं है जानवर के सामने

दिल की दीवार पे रौशन कोई तसवीर नहीं
अब मुझे बाँधने वाली कोई ज़ंजीर नहीं

तुम मुझे देख तो पाया था मगर छू ना सका
कि तेरा ख़्वाब हूँ मैं, ख़्वाब की ताबीर नहीं

मैं तो पानी की इबारत हूँ मिटा दो चाहे
किसी चट्टान पे लिक्खी हुई तहरीर नहीं

दिलों के बीच ये कैसी अजब ख़मोशी है
कोई राँझा भी नहीं और कोई हीर नहीं

जो बताना है नज़ूमी को बताए लेकिन
मेरे हाथों की लकीरें मेरी तक़दीर नहीं

बारहा रास्ता आसान नज़र आता है
बारहा लगता है मुमकिन कोई तदबीर नहीं

क़र्ज़ रिश्तों का मैं चुका पाता
भूल जाता अगर भुला पाता

मेरे सपनों को तोड़ने वाला
मुझसे आँखें नहीं मिला पाता

मैं नक़ाबों में छुपा चेहरा हूँ
काश, ये सच तुम्हें बता पाता

सैकड़ों बस्तियाँ निकल आतीं
इक हवेली अगर जला पाता

अपने रस्ते निकल गया कबका
जो मुझे रास्ते पे ला पाता

जो किसी को नज़र नहीं आता
उसको पाता भी मैं तो क्या पाता

नाम : देवेन्द्र गोयल 'देवेन्द्र माँझी'
जन्मतिथि : 10-4-1957
शिक्षा : स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह* : (क) समुन्दर के दायरे (ख) मजबूरियाँ मेरी (ग) क्यों सभी ख़ामोश हैं (घ) इशारे हवाओं के (ङ) हादिसा हूँ मैं
दोहा संग्रह : (च) झुकी पीठ पर बोझ (छ) ग़ज़ल के हिन्दी में आसान छन्द (ज) माँझी तुकान्तकोश भाग-1 (एक हज़ार पृष्ठ) (झ) माँझी तुकान्तकोश भाग-दो (बारह सौ पृष्ठ)
सम्मान/पुरस्कार : इण्डिया बुक ऑफ़ रिकार्ड्स- 2020 में 'माँझी तुकान्तकोश' को दर्ज करके सम्मानित किया गया तथा अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान। 'माँझी तुकान्तकोश' के लिये वर्चुअल अकादमी बंगलूरु द्वारा 'डाक्ट्रेट की मानन्द उपाधि' से भी सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति : पत्रकारिता
संपर्क : ए-402, श्री राधाकृष्णन ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी, प्लाट नम्बर-23, सेक्टर-7, द्वारका, नयी दिल्ली
मोबाइल : 98107 93186 (WhatsApp)
ई-मेल : devendermanjhi2015@gmail.com

❀

शरारत आँधियों की वो कभी बिजली की पाती है
जो चिड़िया चोंच में रोज़ाना तिनके लेके आती है

इलाही ख़ैर करना इक क़यामत हो रही बरपा
किसी की रूह मेरी रूह में आकर समाती है

गली के मोड़ पर रहती है वो जो बावली बुढ़िया
मुझे ही देखकर क्यों ज़ोर से ठहाके लगाती है

कँटीली झाड़ियों पर जो पड़ी है, रामनामी है
ये चादर इस नए युग में भला किसको सुहाती है

तू 'माँझी' नाव अपनी लेके चल उस पार दरिया के
ये दुनिया तो नए फ़ितने यहाँ अक्सर उठाती है

वो भी क्या कुछ ज़िन्दा है
ख़ुद से जो शर्मिन्दा है

पीपल नीचे छाँव नहीं
ये कहना पर-निन्दा है

नीड़ बनी है देह मेरी
जीवन एक परिन्दा है

जान सकी कब बस्ती ये
कैसा ये बाशिन्दा है

छेड़े वो लहरों के तार
'माँझी' क्या साज़िन्दा है

आपका इस ओर से जब रास्ता होता गया
साँस लेना जुर्म, जीना हादिसा होता गया

ये नगर बस दाद देता है मेरे अशआर पर
कौन जाने क्या था मैं और क्या से क्या होता गया

चिलचिलाती धूप आकर जब पड़ी सर पर मेरे
एक पैकर छाँव का मुझसे अता होता गया

आग की लपटें लिये दुनिया को झुलसाता रहा
पास आकर मेरे क्यों वो बर्फ़ सा होता गया

नाव 'माँझी' जब बढ़ी दरियाओं की गहराई में
तेज़ तूफ़ानों से मेरा सामना होता गया

देखकर मुझको अगर मातम-सा छाया है यहाँ
किसलिए फिर आपने मुझको बुलाया है यहाँ

मैं मुहब्बत की कसौटी का खरा कुन्दन हुआ
आपने उस आग में मुझको तपाया है यहाँ

रक़्स वाला भी कोई गुज़रे न ऐसे दौर से
ज़िन्दगी ने जिस क़दर मुझको नचाया है यहाँ

मैं अगर सूरज नहीं बनता तो क्या करता भला
धुंध-सा ज़ेहनों पे सबके जब कि छाया है यहाँ

हाथ ख़ाली हैं मगर माथे पे 'माँझी' बल भी हैं
क्या पता क्या सोचकर तूफ़ान आया है यहाँ

होंठों की प्यास का यहाँ चर्चा भी मैं रहूँ
पानी भी भर के लाऊँ मैं, प्यासा भी मैं रहूँ

दुनिया की सारी लानतें मुझ पर ही वारकर
उम्मीद वो करें है कि अच्छा भी मैं रहूँ

कटने की बारी आये तो मेरा ही सर कटे
जब धूप साज़िशें रचे, साया भी मैं रहूँ

अपनी सभी अलामतें फैंके जो मेरे द्वार
उपदेश दे रहे हैं वो अपना भी मैं रहूँ

मुमकिन नहीं है ऐसा भी 'माँझी' जो हो सके
सहरा भी मैं रहूँ यहाँ दरिया भी मैं रहूँ

नाम : धर्मेन्द्र गुप्त / धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'
जन्मतिथि : 07-07-1964 (वाराणसी)
शिक्षा : एम.कॉम., बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ : 2007 में कविता संग्रह 'सन्नाटा जो चीर रहा हूँ' एवं 2016 में ग़ज़ल संग्रह, 'अपना -अपना चाँद' प्रकाशित, एक ग़ज़ल संग्रह एवं एक कविता संग्रह शीघ्र प्रकाश्य
सम्मान/पुरस्कार : अनेक साहित्यिक, सामाजिक एवं साँस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति : अध्यापन एवं गत आठ वर्ष से 'समकालीन स्पंदन' त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन
संपर्क : K 3/10 ए. माँ शीतला भवन, गायघाट, वाराणसी
मोबाइल : 89350 65229, 70847 51594
ई-मेल : dharmendraguptsahil @gmail. Com

मिलायेगा कोई नज़र धीरे-धीरे
क़रीब आयेगा वो मगर धीरे-धीरे

यक़ीं हो तो होगी हर इक चाह पूरी
दुआओं में होगा असर धीरे-धीरे

ख़ुदा ऐसे चारागरों से बचाये
दवा में जो देते ज़हर धीरे-धीरे

किसी को न चिन्ता कि अब गाँव, जंगल
हुए जा रहे हैं शहर धीरे-धीरे

तुझे मैं भुला दूँ मुझे तू भुला दे
ये होगा तो मुमकिन मगर धीरे-धीरे

हुए जा रहे गीत छन्दों से बाहर
ग़ज़ल हो रही बेबहर धीरे-धीरे

समाता ही जाता है हर दिल में अब तो
हक़ीक़त-बयानी का डर धीरे-धीरे

कुछ दर्द पुराने थे
लगते जो सुहाने थे

तनहाई भी हँसती थी
क्या ख़ूब ज़माने थे

कहते थे सभी पागल
हम जबकि सयाने थे

अंजाम न थे जिनके
ऐसे भी फ़साने थे

हर दर्द का मतलब था
हर आह के माने थे

है ये अपना यही पराया है
दोस्तो ये जो मेरा साया है

अब के पतझड़ ने चोट दी तो दी
अब के सावन ने भी रुलाया है

उसने घोंपा है पीठ में ख़ंजर
हमने जिसको गले लगाया है

कितने ही दिल तड़प के रोये हैं
जब कोई फूल मुसकुराया है

मेरे दिल के सुलगते शोलों से
उसने अपना भी दिल जलाया है

हाथ माँझी के कँपकपाये हैं
जब किनारा क़रीब आया है

दरमियाँ दूरियाँ बढ़ा दी है
उसने किस जुर्म की सज़ा दी है

दिल के दरवाज़े पर हुई दस्तक
अलसुबह किसने ये सदा दी है

प्यार ही पास लेके आया था
प्यार ने दूरियाँ बढ़ा दी है

उसने तनहाई कर लिया गुलज़ार
मैंने भी महफ़िलें सजा दी है

दोस्तों का उतर गया चेहरा
जब किसी ने मुझे दुआ दी है

हर क़दम पर बेबसी
है ये कोई ज़िन्दगी

देखकर दूषित नदी
प्यास भी जाती रही

बन सका कब देवता
आदमी है आदमी

इतने प्यासे लोग हैं
साथ क्या लाता नदी

चल उधर ही चलते हैं
हैं वहाँ कुछ रौशनी

नाम	: नकुल गौतम
जन्मतिथि	: 20 जुलाई 1981
शिक्षा	: इंजीनियरिंग में स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ	: कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। कुछ पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़लें / कहानियाँ प्रकाशित
व्यवसाय/सम्प्रति	: सॉफ़्टवेयर इंजीनियर के तौर पर कार्यरत
संपर्क	: 999/5, बलि निवास, नया बाज़ार, नाहन हिमाचल प्रदेश-173001
मोबाइल	: 98190 57645 (WhatsApp)
ई-मेल	: nakulgauatam1@gmail.com

❀

कागज़ों में बस चली है गाँव के इक रुट में
तब कहीं साहिब नज़र आये हैं मँहगे सूट में

सच खड़ा है ढीट बनकर, क्या तमाशा है मियाँ
नोट की ताक़त मिलाकर देखिये कुछ झूट में

शर्म आती है कि जगता ही नहीं उनका ज़मीर
एक हिस्सा जब तलक पाते रहें वो लूट में

देश अपनी चाल से चलता है चलने दीजिये
आप तो बस वोट गिनिये भाइयों की फूट में

योजना कैसे करें लागू किसानों के लिए
एक कौड़ी भी कमीशन तो नहीं है जूट में

कल अचानक ध्यान नेता जी का गड्ढों पर गया
जल्दबाज़ी में भरा पानी जब उनके बूट में

क्या कहा ? फ़ाइल अभी तक मेज़ से सरकी नहीं
नोट तो गिनकर 'नकुल' रक्खे थे हमने फ्रूट में ?

दुनिया की बातों में आकर ग़लती की
हमने सब सच-सच बतलाकर ग़लती की

वो मेरी ख़ामोशी ख़ूब समझता था
मैंने बातों में उलझाकर ग़लती की

एक अरसे के बाद मिली थी कुछ फ़ुर्सत
हमने उनको फ़ोन लगाकर ग़लती की

उनकी फ़ितरत से पहले ही वाक़िफ़ थे
हमने ही तो हाथ बढ़ाकर ग़लती की

धीरे-धीरे ख़ुद जैसा ही कर डाला
हमने बच्चों को समझाकर ग़लती की

उसका राह बदलकर जाना वाजिब था
हमने ही आवाज़ लगाकर ग़लती की

जब तक न लौट आयें परिंदे उड़ान से
लगते हैं घोंसले ये मेरे ही मकान से

अब चाशनी का बोझ उतारें ज़बान से
तलवार जब निकल ही चुकी है मियान से

दफ़्तर से लौटते हैं मुलाज़िम बुझे-बुझे
पत्थर लुढ़क रहे हों कि जैसे ढलान से

बाज़ार में तो ख़ूब है क़ीमत अनाज की
मत पूछियेगा फिर भी कमाई किसान से

बरसों से वज़्न झूठ का तारी है रूह पर
तकलीफ़ हो रही है तभी तो अज़ान से

जंगल, पहाड़, बर्फ़, समंदर, नदी, हवा
क्या ख़ूब मौजिज़े हैं घिरे आसमान से

तक़दीर ने मज़ाक बड़े से बड़ा किया
शिकवा किया न मैंने कभी कुछ गिला किया

जिसने मेरी वफ़ा पर उठाये कई सवाल
मैंने उसी से इश्क़ कई मर्तबा किया

बच्चे गली के लड़ के दोबारा गले मिले
बेकार ही बड़ों ने तमाशा खड़ा किया

मौसम चुनाव का था ग़ज़ल इश्क़ पर हुई
हमको सुकून है कि चलो कुछ नया किया

बेवक़्त चार लोग अयादत को आ गये
बेवज्ह चाय का भी मज़ा किरकिरा किया

आख़िर उसी की रायशुमारी बचा सकी
हमने तमाम उम्र जिसे अनसुना किया

अब है जब सामना पहाड़ों से
माँग कोई दुआ पहाड़ों से

जब किया मश्विरा पहाड़ों से
रास्ता मिल गया पहाड़ों से

साथ ता-उम्र थे समुंदर के
इश्क़ ता-उम्र था पहाड़ों से

चाहकर भी कभी नहीं लौटा
शहर जो भी गया पहाड़ों से

एक मीठी नदी निकलती है
ख़ुश्क पत्थर-नुमा पहाड़ों से

बादलों ने कहा न जाने क्या
चाँद छुपने लगा पहाड़ों से

नाम : नज़्म सुभाष
जन्मतिथि : 01-07-1986
शिक्षा : बी.ए., एल.एल.बी
प्रकाशित कृतियाँ : चीख़ना बेकार है (ग़ज़ल संग्रह); संग-तराश (कहानी संग्रह); मंटो कहाँ है (लघुकथा संग्रह); फ़िरदौस खानम (नवाबी दौर की लखनवी कहानियों का संग्रह)
व्यवसाय/सम्प्रति : प्राइवेट जॉब
संपर्क : 356/केसी-208 कनकसिटी आलम नगर लखनऊ
मोबाइल : 63948 94504 (WhatsApp)
ई-मेल : nazmsubhash97@gmail.com

साज़िशों की नफ़रतों की बाग़बानी कीजिये
आप तो बस काम अपना ख़ानदानी कीजिये

हाथ उसका आप पर है जाइए सौ ख़ून माफ़
रोज़ दंगा, रेप, हत्या, बद्ज़बानी कीजिये

जो थे पिछलग्गू कभी ख़ुद रीढ़-हीनों में रहे
वो सिखाते सोच कैसे स्वाभिमानी कीजिये

दीजिये नारा यही हर एक महिला हो सशक्त
और मौक़ा देखकर ख़ुद छेड़खानी कीजिये

सोचिये बगुलों के हक़ में किन्तु सबके सामने
मुस्कुराकर मछलियों की मेज़बानी कीजिये

लोग उकताये हुए हैं सब्ज़ रंगों से बहुत
इस ज़मीं का कोना-कोना जाफ़रानी कीजिये

'नज़्म' अच्छा है अगर कुछ हो न पाये आपसे
आज पर चुप मारिये बातें पुरानी कीजिये

मुद्दे जो हम ज़मीं के उठाने पे आ गये
फिर ये हुआ कि सबके निशाने पे आ गये

इन आँधियों की ज़द में परों की बिसात क्या
थक हारकर परिन्दे ठिकाने पे आ गये

जब हरकतों पे उठने लगीं उनके उँगलियाँ
तो बात वो बदल के ज़माने पे आ गये

एहसास है उन्हें भी मेरे दर्द का मगर
लोगों की बात पर वो सताने पे आ गये

क़ातिल है कौन जब ये पता चल नहीं सका
इल्ज़ाम वो हमीं पे लगाने पे आ गये

तुमने अगर निकाल दिया दिल का हर मलाल
हम भी तुम्हारे एक बुलाने पे आ गये

चाटुकारों का हमेशा एक ही उद्गार है
आदमी वो है नहीं, भगवान का अवतार है

भावनाएँ मर गयीं रोबोट ज़िन्दा हैं यहाँ
और कहता है ज़माना वाह क्या रफ़्तार है

सेल्फ़ियों में इण्डिया अब आस्माँ छूने लगा
चीथड़ा भारत, हताशा ओढ़कर बीमार है

मुफ़्लिसों के वास्ते है लॉकडाउन त्रासदी
और अमीरों के लिए तो ख़ुशनुमा इतवार है

भूख, ज़िल्लत, बेबसी है आबलों की शक्ल में
बेघरों की दास्ताँ पर कुछ कहूँ, दुश्वार है

हाशिये पर आ चुके हैं ज़िंदगी के क़ाफ़िये
अब रदीफ़ों से मुसलसल ख़ून की बौछार है

अपनी बेचैनी को ढोना पड़ता है
जो ना होना था वो होना पड़ता है

मेहनतकश की उजरत बस इतनी सी है
अक्सर भूखे-प्यासे सोना पड़ता है

ऐसे पल भी आते हैं इस जीवन में
हँसना-गाना, रोना-धोना पड़ता है

किरची-किरची उम्मीदें बिखरीं सारी
धीरे-धीरे सब कुछ खोना पड़ता है

मुट्ठी भर दाने की ख़ातिर दहक़ाँ को
ख़ून-पसीना खेत में बोना पड़ता है

जिस 'छोटू' की ख़ातिर थे क़ानून तमाम
उसको बरतन अब भी धोना पड़ता है

ख़्वाब हैं गिरवी पड़े और जेब है ख़ाली यहाँ
ज़िन्दगी लगने लगी है इन दिनों गाली यहाँ

सूखते पौधे करें क्या खाद-पानी के लिए
जायज़ा लेने कभी आया नहीं माली यहाँ

पेट भरता है कहाँ साहब किसी तक़रीर से
कुछ तो ऐसा कीजिए जो मिल सके थाली यहाँ

मैं किताबों का उठाता बोझ सर पर किसलिए
चाहिए थी एक डिग्री बन गयी जाली यहाँ

जो ज़मीं से हों जुड़े फबता नहीं उन पर ग़ुरूर
झुक के इस्तक़बाल करती फल लदी डाली यहाँ

हाकिमों की बेहयाई भा रही है आपको
गर्व करिये हर अदा पर पीटिये ताली यहाँ

नाम	: नवीन जोशी 'नवा'
जन्मतिथि	: सत्रह जुलाई उन्नीस सौ सदसठ (17.07.1967)
शिक्षा	: मुंबई विश्वविद्यालय से वाणिज्य शाख़ा में स्नातक और कंपनी सचिवों के संस्थान के संधिबद्ध सदस्य भी
प्रकाशित कृतियाँ	: ग़ज़लियात रेख़्ता पर प्रकाशित
व्यवसाय/सम्प्रति	: महिंद्रा एन्ड महिंद्रा फाइनैंशियल सर्विसेज़ लिमिटेड में महाप्रबंधक (सेक्रेटरियल) के तौर पर कार्यरत
संपर्क	: फलश्रुती को-ऑपरेटीव्ह हाऊसिंग सोसाइटी, पाँचवा माला, फ्लैट नं. 11, कृष्ण चंद्र मार्ग, रिक्लेमेशन, लीलावती अस्पताल के सामने, बांद्रा (पश्चिम), मुबई-400 050
मोबाइल	: 98191 41295 (WhatsApp)
ई-मेल	: naprajo@gmail.com

किसी की शरह से निकले बयान से निकले
मेरा वजूद मेरी दास्तान से निकले

निकल चुका हूँ मैं कब का दर-ए-गुज़िश्ता से
मेरा नसीब भी अब कल-कलान से निकले

निशान उसका मिटाना नहीं कोई मुश्किल
उसे कहो कि वो अव्वल निशान से निकले

अगर वो नूर है तो फिर चराग़ मेरा हो
अगर नवा है तो मेरी ज़बान से निकले

अब इक ख़ला के सिवा कुछ नहीं बचा मुझमें
सो कान-कन मेरा मेरी खदान से निकले

तेरे सवाल तो जाएज़ हैं ज़िंदगी लेकिन
अभी-अभी तो हम इक इम्तिहान से निकले

हमारे वस्ल में हाइल न हो उसे कह दो
कहो हया से कि वो दरमियान से निकले

बात निकली तो मेरी ज़ात पर आकर ठहरी
ज़ात से निकली तो औक़ात पर आकर ठहरी

अपने हक़ में कभी इस्बात नहीं दे पाया
बे-गुनाही मेरी इस बात पर आकर ठहरी

जब भी उठ्ठी कभी चेहरों के लिए मेरी नज़र
हर दफ़ा सिर्फ़ हिजाबात पर आकर ठहरी

वो जो इक बात कि जिस पर न कभी मैं ठहरा
सबकी हर बात उसी बात पर आकर ठहरी

मुख़्तसर ही रही चाहत की बग़ावत मुझमें
जब भी सरकश हुई हालात पर आकर ठहरी

इस शनासाई को कैसे मैं शनासाई कहूँ
हर मुलाक़ात, मुलाक़ात पर आकर ठहरी

कभी तो दीन के दु:खड़े कभी दुनिया नहीं मिलती
कभी गायब है खेवय्या कभी नय्या नहीं मिलती

न कोई पेड़ मिलता है न कोई छत ही मिलती है
जहाँ हो धूप विधना की वहाँ छाया नहीं मिलती

बड़ा संघर्ष हो जितना बड़ी उतनी ही होगी सीख
महाभारत न होता तो हमें गीता नहीं मिलती

उसे ही मोक्ष मिलता है रहे जो कर्म के आधीन
भगीरथ यत्न के बिन तो कभी गंगा नहीं मिलती

उसे राधा भी मिलती है उसे मीरा भी मिलती है
मगर कान्हा को राधा में कभी मीरा नहीं मिलती

सियावर को नहीं समझे सिया को कैसे समझोगे
कि जिसने राम को त्यागा उसे सीता नहीं मिलती

चाहने से तेरे आबाद नहीं होंगे हम
इतनी आसानी से बरबाद नहीं होंगे हम

ये मुहब्बत है सलासिल ये मरासिम ज़िन्दान
इनके रहते कभी आज़ाद नहीं होंगे हम

ऐ परिंदे तेरी रानाई तो परवाज़ में है
तेरे कहने से भी सय्याद नहीं होंगे हम

नहीं निकलेंगे ज़बाँ से कभी हम ख़ुद अपनी
और निकले भी तो फ़रियाद नहीं होंगे हम

अनमने से वो पलटते हैं हमारे पन्ने
और कहते हैं उन्हें याद नहीं होंगे हम

सिर्फ़ औज़ार नहीं बात जुनूँ की भी है
सिर्फ़ तेशे से ही फ़रहाद नहीं होंगे हम

वस्ल की शर्त निभाने की इजाज़त न मिली
हमें इक शम्अ बुझाने की इजाज़त न मिली

उनको सोने की इजाज़त नहीं थी और हमको
नींद से उनको जगाने की इजाज़त न मिली

रात को हमसे इजाज़त न मिली जाने की
रात से सुब्ह को आने की इजाज़त न मिली

राएगाँ हो गए कितने ही समुंदर जाने
और हमें प्यास बुझाने की इजाज़त न मिली

आइना देखने की हमको इजाज़त है मगर
कभी औरों को दिखाने की इजाज़त न मिली

किसी को ख़ून बहाने से भी रोका न गया
किसी को अश्क बहाने की इजाज़त न मिली

नाम : नवीन सी. चतुर्वेदी
जन्मतिथि : 27 अक्तूबर 1968
शिक्षा : वाणिज्य स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ : पुखराज हबा में उड़ि रए एँ – 2015 – ब्रज ग़ज़लों की सर्वप्रथम पुस्तक; ब्रज-ग़ज़ल संग्रह - 2018 - स्वयं एवम् अन्य 12 रचनाधर्मियों की ब्रजग़ज़लों का संग्रह ; मोरछल - 2020 - निज नवीनतम ब्रज-ग़ज़लों का संग्रह ; आईने शीशे हो गये – ग़ज़लों का मजमूआ (प्रेस में); मेरा श्याम है मस्ताना –भक्ति काव्य संग्रह (प्रेस में)
सम्मान/पुरस्कार : दुनिया भर में फैले अनेकानेक साहित्यानुरागियों का स्नेह
व्यवसाय/सम्प्रति : मुम्बई में Security-Safety-IT Equipments के व्यवसाय में संलग्न www.vensys.in
संपर्क : 'F' wing, flat no 526, E-2 Highway Park, Thakur Complex, Kandivali East, Mumbai
मोबाइल : 9967024593 (WhatsApp)
ई-मेल : navincchaturvedi@gmail.com

बड़ी सयानी है यार क़िस्मत, सभी की बज़्में सजा रही है
किसी को जलवे दिखा रही है, कहीं जुनूँ आज़मा रही है

चलो कि इतनी तो है ग़नीमत, कि सबने इस बात को तो माना
कोई कला तो है इस ख़ला में, जो हर बला से बचा रही है

अगर तू बस दास्तान में है, अगर नहीं कोई रूप तेरा
तो फिर फ़लक से ज़मीं तलक, ये धनक हमें क्या दिखा रही है

सभी दिलो-जाँ से जिसको चाहें, उसे भला आरज़ू है किसकी
ये किससे मिलने की जुस्तजू में, हवा बगूले बना रही है

तमाम दुनिया तमाम रिश्ते, हमाम की दास्तान जैसे
हयात की तिश्नगी तो देखो, नदी किनारों को खा रही है

अब इससे बढ़ के भला क्या कमाल होना है
हमें ही अगली सदी का सवाल होना है

हम उस पतंगे की मानिन्द ही तो हैं जिसका
विसाल होते ही बस इन्तक़ाल होना है

हम इस जहान के सबसे बड़े नजूमी हैं
हमें पता है कहाँ-कब हलाल होना है

सब अपने-अपने क़बीलों को इत्तला कर दो
सभी को सबके लिये इस्तेमाल होना है

तरक़्क़ियों को तलाशा तो ये समझ आया
किसे ग़रीब किसे मालामाल होना है

ये वो गुलिस्ताँ नहीं है सभी को है मालूम
मगर तमाशा अभी डाल-डाल होना है

दयार हर घड़ी सुनसान भी नहीं रहता
और अब हमेशा तेरा ध्यान भी नहीं रहता

चलो ये माना मुहब्बत फ़ुज़ूल है लेकिन
किसी का होने में नुक़्सान भी नहीं रहता

तुम्हीं ने रोग दिया तुम ही ने दवाएँ दीं
मरज़ न होता तो एहसान भी नहीं रहता

किसी के दिल में ज़माने क़याम करते हैं
किसी के दिल में तो मेहमान भी नहीं रहता

जिन्हों के दिल में जगह धूप को नहीं मिलती
उन्हों के दिल में गुलिस्तान भी नहीं रहता

जो हम न रहते कमानों की बदगुमानी में
तो इस जहान में इमकान भी नहीं रहता

भटक न जाये कहीं और ये दिले-रौशन
ज़रा इधर भी नज़र कर ऐ मंज़िले-रौशन

सियाह-शब में सफ़ीने कहाँ-कहाँ भटके
ये जानता ही नहीं कोई साहिले-रौशन

उजास भरते हैं लम्हों में फ़ैसले इसके
तभी तो वक़्त को कहते हैं आदिले-रौशन

तमाम उम्र सियापों से क्यों उजाली जाय
जहाँ में और भी तो हैं मसाइले-रौशन

हमें नहीं तो किसी और को मिले मौक़ा
किसी के काम तो आवै ये महफ़िले-रौशन

कहिये 'नवीन' आप के तेवर कहाँ गये
क़तरे ही दिख रहे हैं, समुन्दर कहाँ गये

अब तो हर इक निगाह यही पूछती है बस
वे पल जो कल तलक थे मयस्सर, कहाँ गये

साहिल पे सर पटक के कोई चीख़ता है रोज़
मुझको हराने वाले शनावर कहाँ गये

रस्मो-रिवाज, इल्म, शराफ़त, मुहब्बतें
दुनिया सजाने वाले वे आज़र कहाँ गये

सय्याद कर रहे हैं चमन-वालों से सवाल
शाख़ों से उड़ के सारे कबूतर कहाँ गये

मुमकिन है कल ख़याल उठा दें न ये सवाल
सर करते थे जो हमको वे लश्कर कहाँ गये

नाम : मो. ऐन-उल-हक़ ख़ान 'नाशाद' औरंगाबादी
जन्मतिथि : 15 जनवरी, 1935
शिक्षा : बी.कॉम.
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह परवाज़े-सुख़न (उर्दू) 1990, मील का पत्थर (हिन्दी) 1991, लम्हे-लम्हे का सफ़र (उर्दू) 2009, हमसफ़र ग़ज़लें (हिन्दी) 2009, ग़ज़ल कैसे लिखें (हिन्दी) 1997, ज़ख़्मे-सफ़र (उर्दू)
सम्मान/पुरस्कार : बिहार टेक्स्ट बुक कार्पोरेशन ने 1988 में कविता 'जाँ से प्यारा वतन' को छठी कक्षा की उर्दू पुस्तक 'निगार-ए-अदब' में शामिल किया। अंजुमन मुहम्मदिया पटना सिटी द्वारा 1990 में नातिया कलाम के लिए सम्मान पत्र। साहित्यकार संसद (समस्तीपुर, बिहार) द्वारा 1992 में 'मील का पत्थर' को 'शिव सागर मिश्र' अवार्ड से सम्मानित। बिहार उर्दू अकादमी पटना द्वारा 'परवाज़-ए-सुख़न को 1995 में नगद पुरस्कार से सम्मानित किया। उर्दू सर्किल, सिकंदराबाद (हैदराबाद) द्वारा 1997 में ख़ादिम-ए-उर्दू से सम्मानित। 'प्रयास' साहित्यिक संस्था, फ़रीदाबाद द्वारा 1999 में सरस्वती अवार्ड से सम्मानित। सितम्बर 2000 में दिल्ली में आयोजित 'शताब्दी हिन्दी सम्मेलन' में मिलेनियम अवार्ड। सुलभ इंटरनेशनल साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा अक्तूबर 2001 में सम्मानित। जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा 2003 में सम्मानित। समस्तीपुर, बिहार में रेलवे के डी.आर.एम. ने 2005 में आयोजित कुल हिंद मुशाइरे में 'कैफ़ी आज़मी' सम्मान से नवाज़ा।
व्यवसाय/सम्प्रति : रेलवे से सेवानिवृत पदाधिकारी
संपर्क : G-2 ज़हिया कॉम्प्लेक्स क़ाज़ी नगर, फुलवारी शरीफ़, पटना
मोबाइल : 9801004900 (Whatsapp), 6201856284
ई-मेल : nashadaurangabadi@gmail.com

कहा है किसने कि जीने का इह्तमाम न हो
चराग़ लायें कहीं से तो घर में शाम न हो

ये किस समाज की तहज़ीब है कि आपस में
जो राम-राम न हो और दुआ-सलाम न हो

वहाँ बरसती है लानत ख़ुदा की रातो-दिन
बड़े बुज़ुर्ग का जिस घर में एहतराम न हो

तमाम वादिये-गंगो-जमन रहे रौशन
सदा हो अम्नो-अमाँ तीरगी का नाम न हो

बहुत अमीक़ है दुनिया-ए-शाइरी 'नाशाद'
ये और बात कि तुम जैसा ख़ुश-कलाम न हो

❀

आवाज़ तो दी होती, हम तेरी क़सम आते
और साथ मेरे हमदम कुछ अहले-क़लम आते

अब मिलने लगी उनको हर बज़्म में शाबाशी
महफ़िल वो मेरी भी रखने को भरम आते

हालात कहाँ बदले फूलों पे है पाबंदी
ऐ काश कि गुलशन में कुछ अहले-करम आते

कुछ अहले-ख़िरद जाने क्यों हमसे गुरेज़ाँ हैं
मालूम जो हो जाता हम तेज़ क़दम आते

महफ़िल में ग़ज़ालाँ की पढ़ने के लिए ग़ज़लें
'नाशाद' भी आते हैं लेकिन हैं वो कम आते

❀

कहीं पे होते हुए संगसार देखा है
कहीं करिश्मा-ए-परवरदिगार देखा है

किसी को करते हुए जाँ-निसार देखा है
किसी को होते हुए दिलफ़िगार देखा है

कभी फ़सुर्दा कभी अश्क-बार देखा है
उसे किसी के लिए अश्क-बार देखा है

ये लग रहा है उसे बार-बार देखा है
ये और बात फ़क़त एक बार देखा है

जिसे नसीब है क़ुर्बत तेरी उसे मैंने
निगाहे-रश्क़ से बे-इख़्तियार देखा है

था आसमान पे जिसका दिमाग़ इक पल में
ज़मीं पे उसको बहुत शर्मसार देखा है

जरूर बदलेंगे हालात मुल्क़ के 'नाशाद'
ख़िज़ाँ के बाद गुलों पर निखार देखा है

ख़ुद को इतनी न आन बान में रख
सादगी का लिहाज़ शान में रख

जंग लड़नी है ज़िंदगी से अगर
तीर को वक़्त की कमान में रख

ख़ून देने को सब रहें तैयार
इतनी मिल्लत तो ख़ानदान में रख

आज़माइश से मत हो ख़ौफ़-ज़दा
ख़ुद को मसरूफ़ इम्तिहान में रख

दे सफ़ीने को साज़गार हवा
ज़ाविया ऐसा बादबान में रख

मौत इक सच है आएगी 'नाशाद'
चाहे ख़ुद को किसी मकान में रख

❀

जिस शख़्स के माथे पे पसीने नहीं आते
उसको कभी जीने के करीने नहीं आते

रखते हैं निगाहें जो समन्दर में हवा पर
तूफ़ाँ में कभी उनके सफ़ीने नहीं आते

जो लोग लगाते नहीं दरियाओं में ग़ोते
उन लोगों की मुट्ठी में नगीने नहीं आते

हम आपके ममनून हैं ममनून रहेंगे
गो शुक्रिया कहने के करीने नहीं आते

हक़दार का हक़ मार के बनते हैं जो क़ारून
ऐसों के कोई काम ख़ज़ीने नहीं आते

ग़म अपना ग़लत करने चले आते हैं 'नाशाद'
ये सच है ख़ुशी से कभी पीने नहीं आते

❀

नाम : निर्मल आर्या
जन्मतिथि : 10 नवंबर 1966
प्रकाशित कृतियाँ : कौन हो तुम
सम्मान/पुरस्कार : अनेकों मंचों से पुरस्कृत
व्यवसाय/सम्प्रति : गृहिणी
संपर्क : H.no. 2618- F Block, Sushant City Ansal
Panipat, Haryana
मोबाइल : 94169 31642
ई-मेल : nirmal.asiwach@gmail.com

❀

कल कोई कह रहा था कि मैं ख़ुश ख़याल हूँ
फिर तुमने क्यूँ कहा कि फ़क़त इक बवाल हूँ

अपनी गिरह में बाँध के रख लो मेरी छनक
मैं घुँघरुओं के ज़ेह्न से छिटका ख़याल हूँ

सब मिट चुके हैं जिस्म से आग़ोश के निशाँ
कुछ लम्स रह गए हैं उन्हीं पर निहाल हूँ

बोझिल सा हो गया है हवाओं सा ये बदन
मैं बारिशों के बाद उड़ाया गुलाल हूँ

ये अच्छी सादगी है कि कुछ भी न कह सकूँ
ये भी न कह सकूँ कि मैं अपनी मिसाल हूँ

वो चुप हैं जिनके पास हज़ारों जवाब हैं
जो बे-जवाब हैं मैं उन्हीं का सवाल हूँ

तू इस बदन की चाहो-छुअन तक रहा मगर
मैं इस तिलिस्मी ज़ात से आगे का हाल हूँ

❀

अव्वल की आरज़ू है तो अव्वल से प्यार कर
सपनों से कर भले प मुसलसल से प्यार कर

दामन की छाँव छोड़ दे, आँचल से प्यार कर
सागर की आस रहने दे बादल से प्यार कर

जज़्बात पर फ़िदा हो जुनूँ पर निसार हो
कर होश-वालों से वफ़ा पागल से प्यार कर

सावन है माह-ए-हिज्र की क़ुर्बत से क्या गिला
ये शिव का महीना है हलाहल से प्यार कर

दिल बे-ज़ुबाँ से आँखों ने इक रोज़ ये कहा
पलकों पे बैठना है तो काजल से प्यार कर

❀

मुझे गुरेज़ की आदत उदास करती है
कमाल ये है कि शोहरत उदास करती है

वो देख लेना अचानक जो उसको बे-पर्दा
अभी तलक वही हैरत उदास करती है

ये मेरी ज़ीस्त की आदत है और मैं समझी
कि तेरे रब्त की बाबत उदास करती है

यूँ अपने फ़न पे बहुत फख़्र है मुझे लेकिन
तेरे हुनर की महारत उदास करती है

धनक को चूम लो उठ्ठो कि खोल दो जूड़े
मुझे बँधी हुई औरत उदास करती है

तो मैं वजूद के मनके बटोर लेती हूँ
कि जब छुअन की ज़रूरत उदास करती है

तुझे गुमान के पैकर उदास करते हैं
मुझे यक़ीं की हक़ीक़त उदास करती है

बारिश के मौसम की पीली-पीली धूप
मेरी छत पर सूख रही है.. गीली धूप

जबसे बादल आया है दिन दफ़्तर में
छुट्टी लेकर बैठी है.. नख़रीली धूप

दिन से आँख बचाकर फिर चुपके-चुपके
शाम की जेब टटोलेगी.. ख़र्चीली धूप

मटरें छीलेगा सूरज.. तन्हाई में
शॉपिंग को निकलेगी आज छबीली धूप

मैदानों पर ज़ोर नहीं चल पाया जब
पर्वत से जाकर लिपटी बर्फ़ीली धूप

सूख गया जब आँखों का दरिया 'निर्मल'
फिर क्यों दीख रही है नीली-नीली धूप

❀

कुछ रंगों ने अपनी दोस्त बना ली मैं
ख़ाक से बीनी और धनक पे डाली मैं

भीड़ से डरकर घंटों यकजा रहती हूँ
तन्हाई में बिखरी रहने वाली मैं

इक आँगन ने अपनी जेबें ख़ाली कर
दूजे आँगन के कासे में डाली मैं

जिसने मेरी मिट्टी को पामाल किया
कहती रह गई उसको अपना माली मैं

भीड़ तो अपना चश्मा पहने उतरी थी
उसको क्या था पीली थी या काली मैं

❀

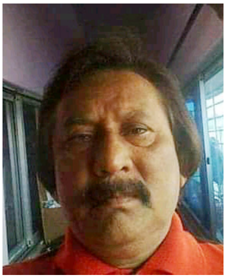

नाम	: नूर मुहम्मद नूर
जन्मतिथि	: 17-08-1952
शिक्षा	: बी.कॉम (कोलकाता विश्वविद्यालय)

प्रकाशित कृतियाँ : लंबी कविताओं का संकलन 'ताकि खिलखिलाती रहे पृथ्वी' 1997 में ; कहानी संकलन 'आवाज़ का चेहरा '2003 में ; ग़ज़ल संकलन 'दूर तक सहराओं में '2006 में ; ग़ज़ल संकलन 'सफ़र कठिन है' 2014 में; और ' सबका शाइर' ग़ज़ल संकलन 2019 में

सम्मान/पुरस्कार	: 2012 में रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्त, स्वतंत्र लेखन
व्यवसाय/सम्प्रति	: रेलवे से सेवानिवृत पदाधिकारी
संपर्क	: जे-18/5, रामनगर लेन, कोलकाता-700024, पश्चिम बंगाल
मोबाइल	: 083348 88146

❀

क़तरा-क़तरा कपास पानी का
बुन रहा हूँ लिबास पानी का

हर तरफ़ पानियों का मंज़र है
आँख में भी निवास पानी का

मेरे अंदर का देखकर सहरा
गुम है होशो-हवास पानी का

उनकी आखों में, क्या बताएँ अब
रुक गया है विकास पानी का

देखकर पानियों को बे-पानी
'नूर' चेहरा उदास पानी का

❀

विष भरे आज के विषय से है
मेरी मुठभेड़ तो समय से है

आज फिर से धुआँ उठूँगा मैं
आज फिर बतकही मलय से है

कौन भयभीत अब नहीं रहता
किसको भय किस तरह के भय से है

वे रगों से निचोड़ पीते हैं
काम उनका लहू की मय से है

'नूर' क्यों लड़खड़ा रही है ग़ज़ल
इसका रिश्ता तो ताल-लय से है

फ़क़त दीवार है, छप्पर कहाँ है
ओ सर वालो ! तुम्हारा सर कहाँ है

ये कुछ भीगे हुये से रंग भर हैं
अरे, उस आग का मंज़र कहाँ है

ग़ज़ब, बैठे हो, रोते हो अजब है
तुम्हारे अज़्म का लश्कर कहाँ है

बहुत तुम बोलते थे 'नूर' भाई
तुम्हारी जीभ वो गज़-भर कहाँ है

❀

❀

बंदा जाली है, बंदगी जाली
जाली नोटों सा आदमी जाली

तुम अँधेरे की बात करते हो
अब तो होती है रौशनी जाली

दुश्मनों की तो है पता सबको
दोस्तों की तो दोस्ती जाली

जाल ही जाल मकड़ियों वाले
कौन रोए भी, ज़िंदगी जाली

जाली अल्फ़ाज़ और फ़िक्रो-फ़न
'नूर' तेरी तो, शाइरी जाली

फिर से जंगल को मुड़ रही दुनिया
अपने हाथों उजड़ रही दुनिया

रोज़ बनती है, रोज़ छनती है
जबकि हर दिन बिगड़ रही दुनिया

फैलती जा रही है हाटों में
दिल के अंदर सिकुड़ रही दुनिया

तेरे अंदर भी कुछ न कुछ होगा
मेरे अंदर घुमड़ रही दुनिया

रोज़ गिरते हैं टूटकर डैने
'नूर' हैरत है उड़ रही दुनिया

❀

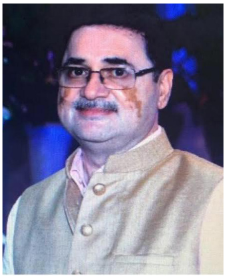

नाम : पंकज गर्ग
जन्मतिथि : 29 जनवरी 1961
शिक्षा : स्नातकोत्तर (एम. ए. अर्थशास्त्र)
प्रकाशित कृतियाँ : पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन
सम्मान/पुरस्कार : मानव कल्याण मंच (रजि.) द्वारा सम्मान - 2004 दिगन्तराज स्मृति सम्मान, देहरादून - 2009 रुड़की साहित्य अंजुमन रुड़की, विशेष सम्मान - 2013, पारिजात हिंदी साहित्य एवं संस्कृति मंच हरिद्वार, उत्तराखंड गौरव सम्मान, 2016, हिंदी फ़ीचर फ़िल्म 'गट्टू' में अभिनय अनेक टी. वी. चैनल्ज़ द्वारा काव्य प्रसारण टेलीफ़िल्मों में अभिनय
व्यवसाय/सम्प्रति : एस. बी. आई. में स्पेशल असोसीयेट के पद पर कार्यरत
संपर्क : 212, पूर्वी अम्बर तालाब, ओल्ड रेलवे रोड, रुड़की
मोबाइल : 9897633850 (Whatsapp)
ई-मेल : gargpankaj.0129@gmail.com

❀

तुम्हारी सादगी अच्छी लगी भाया है भोलापन
शरारत भी करो तुम तो छलक जाता है भोलापन

ये तब्दीली हुई है जबसे, तुमसे मिल के लौटा हूँ
मुझे हर शख़्स में तुम-सा नज़र आता है भोलापन

ये वो जंगल है जिसमें हर तरफ़ दिखती है मक्कारी
त'अज्जुब है मगर तुमने बचा रक्खा है भोलापन

किसी भी तौर से वो काम अपना कर ही लेते हैं
जो हुशियारी नहीं चलती तो काम आता है भोलापन

फ़रेब-ओ-मक्र की माना हुकूमत है मगर 'पंकज'
भले ही देर से हो पर असर करता है भोलापन

❀

किसी को क्या बताऊँ क्या हुआ है
ज़रा सी बात पर रूठा हुआ है

मेरे साँसों की गर्मी कम हो कैसे
वो सर से पाँव तक भीगा हुआ है

चलो सोचें ज़रा संजीदगी से
समंदर क्यूँ यहाँ सूखा हुआ है

ज़रूरत पड़ गयी क्या फिर हमारी
वो लह्जा आज फिर बदला हुआ है

ऐ 'पंकज' तू भी औरों जैसा हो जा
मुहब्बत में कहाँ अटका हुआ है

जो है दिल में दिखायेंगे आँसू
पूछिये सच बताएँगे आँसू

जो हँसोगे किसी के आँसू पर
तुमसे भी रूठ जाएँगे आँसू

संग को मोम करके छोड़ेंगे
अब न बेकार जाएँगे आँसू

इनपे क़ाबू तुम्हारा हो तो हो
हमसे तो रुक न पाएँगे आँसू

अर्श तक ये रसाई रखते हैं
आपको ढूँढ लाएँगे आँसू

आँख से जब गिरेंगे 'पंकज' की
देखना जगमगाएँगे आँसू

❀

❀

हाल दिल का तुम्हें सुनाना है
ये ग़ज़ल तो बस इक बहाना है

अब कोई क़ैस है न है लैला
फ़लसफ़ा ये बड़ा पुराना है

आँधियों की है ज़िद न जल पाए
मेरी ज़िद है दिया जलाना है

वो भी कहते हैं ठीक से देखो
जिनका चश्मा बड़ा पुराना है

वहशियों को तो क़त्ल करने हैं
मज़हबों का तो बस बहाना है

कुछ बही पर निगाह रख 'पंकज'
क़र्ज़ सारा यहीं चुकाना है

भूल जाना तुम्हें मुश्किल था मगर भूल गए
ऐसा लगता है कि हम अपना ही घर भूल गए

दिल चुराना हमें आता है बहुत ख़ूब मगर
आये जब उनके मुक़ाबिल ये हुनर भूल गए

ज़ुल्म का शौक़ बढ़ा इतना कि ज़ालिम सारे
बद्दुआओं में भी होता है असर भूल गए

तीरगी इतनी बढ़ी है कि मुसाफ़िर सारे
राह है कौन सी मंज़िल है किधर भूल गए

उनको 'पंकज' है यही फ़िक्र कि मीनार बचे
हाले-बुनियाद सभी अहले-नज़र भूल गए

❀

नाम	: प्रताप सोमवंशी
जन्मतिथि	: 20-12-1968
शिक्षा	: परास्नातक हिंदी साहित्य
प्रकाशित कृतियाँ	: इतवार छोटा पड़ गया (ग़ज़ल संग्रह), कहन, कविताओं की ऑडियो सीरीज़ लोई (नाटक-प्रकाशनाधीन)
सम्मान/पुरस्कार	: दक्षिण एशियाई मीडिया फेलोशिप, हिंदी अकादमी, दिल्ली, के.सी.के. इंटरनेशनल अवार्ड; अमेरिका, चीन, दक्षिण अफ़्रीका, श्रीलंका में व्याख्यान
व्यवसाय/सम्प्रति	: कार्यकारी संपादक- हिन्दुस्तान, हिन्दी दैनिक
संपर्क	: ब्लाक-1, फ्लैट-607, कीर्ति अपार्टमेंट, मयूर विहार फ़ेज़-1 एक्सटेंशन, दिल्ली - 110091
मोबाइल	: 96509 38886
ई-मेल	: pratapsomvanshi@gmail.com

ये जो कालोनियों के सामने दस-बीस रिक्शे हैं
इन्हें तुम गौर से देखो, तुम्हारे गाँव बैठे हैं

डिप्रेशन की दवाओं का कहीं कोना न था घर में
वहाँ दो-चार रिश्ते हैं, हँसी ठठ्ठा है क़िस्से हैं

बड़प्पन लादकर सर पर सुबह से घूमने वालो
तुम्हें मालूम हैं इससे तुम्हारे पाँव थकते हैं

ये सच है अब ये बूढ़े पेड़ कोई फल नहीं देते
मगर ये छाँव हैं जिनके तले स्कूल चलते हैं

शहर मोबाइलों से रोज़ अपने गाँव जाता है
वो सबको फ़ोन करता है, बताओ लोग कैसे हैं

❀
रिश्तों को मत लंबाई में नापा कर
सागर है ये गहराई में नापा कर

मेरे होते क्यूँ तन्हा हो जाता है
हिम्मत हूँ मैं दो-ढाई में नापा कर

उनको बस फल की नीयत से मत देखो
पेड़ों को तो परछाईं में नापा कर

भीड़ के चेहरे भीड़ में खो भी जाते हैं
रिश्तों को तो तन्हाई में नापा कर

ओहदों के आगे बौना क्यों हो जाना
किरदारों को ऊँचाई में नापा कर

बुरा जब भी हुआ, अच्छा हुआ है
मेरा कुछ हौसला ही बढ़ गया है

मनाने के लिए कोई नहीं है
जिसे देखो वही रूठा हुआ है

अरे, ये नींद के इतने भिखारी
ये सारा शहर ही जागा हुआ है

बुरा लगता है तो फिर पूछ लो ना
ये पानी क्यूँ यहाँ ठहरा हुआ है

नलों की टोटियाँ सूखी हुई हैं
मुहल्ले में मगर पानी भरा है
❀

❀
हर मुश्किल में एक ठिकाना रहता है
माँ की चोंच में इक-दो दाना रहता है

कड़वाहट की गाँठें ढीली रखते हैं
मिलना-जुलना, आना-जाना रहता है

रिश्तों में एहसास अभी तक बाक़ी है
चार शिकायत ग़ुस्सा-ताना रहता है

जब भी यादें भीनी-भीनी महकी हैं
ऐसे में होठों पर गाना रहता है

उससे मिलकर हम ताज़ा हो जाते हैं
उसमें मौसम एक सुहाना रहता है

गाँव में जो घरों पे ताले हैं
कुछ नहीं रोटियों के लाले हैं

एक पावन नदी लड़े कब तक
इस शहर में हज़ार नाले हैं

लोग सड़कों पे बीज छोड़ आए
पेड़ सब रास्तों ने पाले हैं

ये उदासी है ऐसी चिड़िया जो
ख़ुद के ही पंख नोच डाले हैं

सोचता हूँ कि पूछ ही डालूँ
आप कब के उसूल वाले हैं
❀

नाम : प्रमोद रामावत 'प्रमोद'
जन्मतिथि : 05 मई 1949
शिक्षा : विधि स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह :* 1. सोने का पिंजरा, 2. सूखा दरिया बहते लोग; *काव्य संग्रह* : 1. स्वर्ग में मिट्टी नहीं होती, 2. जुगनुओं का कारवाँ (अशआर एवं मुक्तक); *संस्मरण* : 1. मेरी अधूरी अमरनाथ यात्रा, 2. सपने छू मंतर, 3. प्रहुति, (आत्मकथ्य); *अध्ययन* : प्रमोद रामावत प्रमोद की शाइरी
सम्मान/पुरस्कार : याद नहीं रख पाया
व्यवसाय/सम्प्रति : सेवा निवृत्त उप सम्पादक
संपर्क : नारायण निकुञ्ज, श्री नाथ नगर, वार्ड नं.-१, मनासा नाका, नीमच सिटी, ज़िला- नीमच मध्यप्रदेश - 558441
मोबाइल : 94240 97155 (Whatsapp)
ई-मेल : pramodramawatpramod99@gmail.com

यहाँ बचपन नये सपने सजाकर बैठ जाता है
बुढ़ापा याद की धूनी रमाकर बैठ जाता है

ज़माना है बड़ा शातिर, सभी अपराध भी अपने
शराफ़त के मुखौटों में छुपाकर बैठ जाता है

मिला था जन्म हमको, मुक्ति की पगडण्डियाँ खोजें
मगर बस उम्र को मिट्टी बनाकर बैठ जाता है

अगर पूछो किसी से, कौन ये अपराध करता है
सदा ग़लती किसी की भी बताकर बैठ जाता है

बिताकर उम्र सारी पाप में, थकता नहीं मानव
मिलेगी मुक्ति, गंगा में नहाकर बैठ जाता है

दिखाना चाहता है शक्ति अपनी जब ज़माने को
बिना कारण ग़रीबों को सताकर बैठ जाता है

तुम्हारे पुण्य सब पर्यावरण के साथ धोखा हैं
नदी में राख मुर्दे की, बहाकर बैठ जाता है

❀

जिन्हें किसी ने नहीं सुना, उन हरकारों पर क्या बीती
तू क्या जाने, बुझने वाले अंगारों पर क्या बीती

बिके ख़बर के लिये, बाद में पाठक को बेचा जाना
फिर रद्दी में बिके, बता इन अख़बारों पर क्या बीती

घर छूटा, बहनें छूटीं, सब लुटकर भी शरणार्थी थे
बरसों-बरस उपेक्षित हैं, उन बेचारों पर क्या बीती

गाँधी-गौतम थे, सुभाष थे, संसद की दीवारों पर
किस्तों-किस्तों देश मरा, उन दीवारों पर क्या बीती

फूल खिले थे बड़े गर्व से, हार बनाए माली ने
ग़द्दारों ने पहन लिये, तब उन हारों पर क्या बीती

पेट पालने भटकें जग में, कुछ बेचा, कुछ मोल लिया
उनका राशन नेता खाते, बंजारों पर क्या बीती

मौजों को पतवार करें
चल यूँ दरिया पार करें

चल मज़हब-मज़हब खेलें
लाशों का व्यापार करें

सूरज की जय भी बोलें
रातों का सत्कार करें

अगर सनम नाबीना हो
क्यों आँसू बेकार करें

ख़ुशियाँ महँगी हुईं बहुत
ग़म का कारोबार करें

हमको सब से क्या मतलब
अपना बेड़ा पार करें

❀

❀

फूल सब हैरान हैं इस प्यार पर
ख़ुशबुएँ ठहरी हुई हैं ख़ार पर

भाइयों के मन में पत्थर भर गए
आ गया इल्ज़ाम फिर दीवार पर

बेईमानी का सबब हैं कुर्सियाँ
हम शुबह करते रहे सरकार पर

नाख़ुदा तो जा मिला तूफ़ान से
और कश्ती है ख़फ़ा पतवार पर

गर्दनों से आप कुछ मत पूछिये
ख़ून सब लिख जाएगा तलवार पर

धड़कनें हैं बस रदीफ़ो-क़ाफ़िया
साँस चलती है फ़क़त अशआर पर

एक दिन चुपचाप मेरे पास आया क्या करूँ
था फ़रिश्ता मौत का, बस मुस्कुराया क्या करूँ

औरतें-बूढ़े सभी लाचार थे रोते रहे
आदमी ने उम्र भर इनको सताया क्या करूँ

लड़कियों को प्यार में उलझा रहे हैं निर्दयी
अंग उनके बेचना, धंधा बनाया क्या करूँ

सत्य को फाँसी लगानी थी, यही था फ़ैसला
झूठ ने इसके लिये मुझको बुलाया क्या करूँ

मंदिरों की, मस्जिदों की, थी ज़रूरत ही कहाँ
बस इन्हीं के नाम पर सबको लड़ाया क्या करूँ

कौन कहता है कि राजा अब नहीं है देश में
मंत्रियों ने भी प्रजा हमको बनाया क्या करूँ

❀

नाम	: पवन शर्मा
जन्मतिथि	: 25.09.1961
शिक्षा	: बी.एस.सी. एम.ए., (अंग्रेज़ी) बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ	: अपने-अपने चेहरे (गज़ल संकलन) अमृत कलष (निबंध संकलन) बानगी पत्रिका (त्रैमासिक)
व्यवसाय/सम्प्रति	: अध्यापन (शिक्षण कार्य)
संपर्क	: वार्ड नं. 16, संजय चैक, भादरा, ज़िला हनुमानगढ़ (राज.) - 335501
मोबाइल	: 6375790074, 9680541071 (Whatsapp)
ई-मेल	: pawansharmabhadra2@gmail.com

किसका क्या-क्या लगता हूँ
फिर भी तन्हा लगता हूँ

शाम ढले का सौदा मैं
कितना सस्ता लगता हूँ

साहब तो हूँ दफ़्तर में
घर में तनख़ा लगता हूँ

मौन खड़ा है दर्पण तो
जाने कैसा लगता हूँ

रोज़ महीना होवे तो
सबको अच्छा लगता हूँ

दोष भला क्या बच्चों का
उनको बस्ता लगता हूँ

माँ होती है घर में जब
मैं भी बच्चा लगता हूँ

❀

जो मकाँ था, घर हुआ वो
आँसुओं से तर हुआ वो

बेसबब जो फिर रहा है
आदमी क्यूँ कर हुआ वो

भूख ने घायल किया था
इसलिए बेदर हुआ वो

चार पैसे की जुगत में
छोड़ घर, बेघर हुआ वो

लौटता कैसे परिंदा
राह में बेपर हुआ वो

हो गया जब लॉक-डाउन
शख़्स था, लश्कर हुआ वो

❀

अब तो ऐसे प्यार जताएँ
दूर खड़े बस हाथ हिलाएँ

भीड़ बला सी लगती अब तो
घर बैठे ही मन बहलाएँ

खाँसे है मोबाइल हरदम
फिर अपना क्या हाल बताएँ

ख़ुद के हाथों ख़ुद का चेहरा
छूने से हम तो घबराएँ

यार घरों में क़ैद पड़े हैं
किसको अपना हाल सुनाएँ

भूले इश्क़ मुहब्बत भैया
ख़्वाब वबा के आएँ-जाएँ

मिटे जज़्बात पटरी पर
कटे जब गात पटरी पर

कहीं रोटी, कहीं चप्पल
पड़ी औक़ात पटरी पर

कहो क्या भूख मारे है
पड़ी वो रात पटरी पर

हुआ क्या हश्र उनका जो
रहे दिन-रात पटरी पर

कहें मज़दूर चाहें हम
थे आदम-ज़ात पटरी पर

सड़क पर मौत टहले है
पड़े सदमात पटरी पर

कहें कविता-कहानी क्या
अरे ! बदज़ात पटरी पर

❀

आपस में दुश्कर दूरी है
तौबा कैसी मजबूरी है

देख मिरग का पागलपन तो
ढूँढ़े कब से कस्तूरी है

आ बैठ घड़ी भर सुस्ता लें
ये भी तो काम ज़रूरी है

कट जाती उम्र यूँ ही प्यारे
रह जाती बात अधूरी है

चाह भली है जन्नत की तो
पर पहले लोक ज़रूरी है

❀

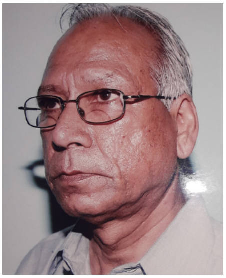

नाम : प्रेम किरण
जन्मतिथि : 15.01.1953
शिक्षा : स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ : आग चखकर लीजिए, पिनकुशन (हिंदी ग़ज़ल संग्रह), ज़हराब (उर्दू ग़ज़ल संग्रह), तिलिस्म टूटेगा...(ग़ज़ल संग्रह) प्रकाशनाधीन; *विशेष*-कुछ ग़ज़लों का बंगला और नेपाली भाषा में अनुवाद
सम्मान/पुरस्कार : बिहार उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित; आग चखकर लीजिए ग़ज़ल संग्रह पर दुष्यंत कुमार सम्मान; शाद अज़ीमाबादी सम्मान; इसके अतिरिक्त अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति : स्वरोज़गार, कांति प्रकाशन
संपर्क : कमला कुंज, पुराने सिटी कोर्ट के सामने,
गुलज़ारबाग़, पटना - 800 007
मोबाइल : 93343 17153 (Whatsapp)
ई-मेल : premkiran2010@gmail.com

तेरा आँचल शामियाना हो गया
धूप में भी दिन सुहाना हो गया

हुस्न के बाज़ार से गुज़रा जो मैं
इक परी से दोस्ताना हो गया

ज़िंदगी में नूर की आमद हुई
और रौशन आशियाना हो गया

तेरी इक मुस्कान पर मोनालिसा
मेरा ये दिल शाइराना हो गया

चाहता था गुफ़्तगू तुझसे करूँ
सो ग़ज़ल कहना, बहाना हो गया

चूड़ियाँ खनकीं तुम्हारे हाथ की
और मौसम आशिक़ाना हो गया

हर तरफ़ तू ही नज़र आता है अब
इश्क़ मेरा सूफ़ियाना हो गया

❀

शान से जीना मेरी पहचान है
ले चलो कश्ती जिधर तूफ़ान है

सरहदों के इस तरफ़ बेचैन मैं
उस तरफ़ बेचैन मेरी जान है

राह मेरी रोकना मुमकिन नहीं
मैं हूँ तेशा वो अगर चट्टान है

जानता हूँ संगदिल है वो मगर
इश्क़ की तासीर से अनजान है

ये वबा तो इक बहाना है 'किरन'
चाँद से मिलना कहाँ आसान है

❀

उसे लगा ख़ुदा है वो
नशे में जी रहा है वो

हर एक रुख़ किताब है
लिखा है जो पढ़ा है वो

अमीर क्या ग़रीब क्या
उठा है जो गिरा है वो

धुआँ सा उठ रहा है अब
सुना है दिलजला है वो

कभी जो दूर-दूर था
बहुत घुला-मिला है वो

बदन में कपकपी हुई
कँवल सा खिल उठा है वो

मिला जो धूप-छाँव से
ग़ज़ल में ढल रहा वो

मिलन की घड़ी वो हसीं शाम आये
कभी चाँद मेरा लबे-बाम आये

कभी तो मुहब्बत का इक़रार कर लो
कभी तो लबों पर मेरा नाम आये

किसी अपशगुन से मैं घबरा रहा हूँ
न क़ासिद ही आया न पैग़ाम आये

न डूबे उमीदों का रौशन ये सूरज
न लथपथ लहू में कोई शाम आये

मुहब्बत में मुझसे धनी कौन होगा
ग़मों के ख़ज़ाने मेरे नाम आये

अगर फूल का टूटना है मुक़द्दर
तो मेरे ही सर क्यों ये इल्ज़ाम आये

❀

असर उसके जादू का ऐसा हुआ
मैं सोया हुआ हूँ न जागा हुआ

अब उसका सितारा बुलंदी पे है
जिसे छू लिया वो सितारा हुआ

वो क़तरे से दरिया बना एक दिन
तभी क़हर सा हम पे बरपा हुआ

परिंदे ठिकाने बदलने लगे
फ़िज़ाओं में है ज़हर फैला हुआ

मैं क़ातिल को क़ातिल कहूँ किस तरह
मेरी तेग़ से क़त्ल मेरा हुआ

सुनो पंछियों की सदा ग़ौर से
है आवाज़ में कुछ चमकता हुआ

❀

नाम	: प्रेम रंजन अनिमेष
जन्मतिथि	: 18 अप्रैल, 1968
शिक्षा	: स्नातकोत्तर (अंग्रेजी भाषा और साहित्य)
प्रकाशित कृतियाँ	: मिट्टी के फल, कोई नया समाचार, संगत, अँधेरे में अंताक्षरी, बिना मुँडेर की छत, माँ का जन्मदिन (इनके अलावा ईबुक 'अच्छे आदमी की कवितायें' और 'अमराई' वेब पर प्रकाशित)
सम्मान / पुरस्कार	: भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार
व्यवसाय/सम्प्रति	: रिज़र्व बैंक में कार्यरत
संपर्क	: एस 3/226, रिज़र्व बैंक अधिकारी आवास, गोकुलधाम, गोरेगाँव (पूर्व), मुंबई - 400063
मोबाइल	: 99304 53711, 99672 85190
ई-मेल	: premranjananimesh@gmail.com

हैं हम तो इश्क़ मस्ताने हमें है होशियारी क्या
मुहब्बत अपनी दुनिया है तो फिर ये दुनियादारी क्या

किसी के दु:ख में रो लेना सभी के साथ हो लेना
यही है ज़िंदगी अपनी, हमारी क्या तुम्हारी क्या

ये पैसे, पदवियाँ, पहचान अपने पास रख नादान
हमारा यार है हममें हमारी इनसे यारी क्या

हम आये देखने बाज़ार पहली और आख़िर बार
नहीं जब लेना-देना कुछ नक़द चाहे उधारी क्या

हुआ जब ज़ुल्म औरों पे तो सब चुपचाप बैठे थे
है तारी कैसा सन्नाटा अब आयी अपनी बारी क्या

यहाँ कट जाता है वो सर जो कुछ भी कहता है उठकर
झुकी इन गरदनों की पर कोई मर्दुम-शुमारी क्या

न कोई साज़ ना सामाँ बुलावा जब भी आयेगा
चले जायेंगे ख़ुद पैदल कोई गाड़ी-सवारी क्या

नहीं हो आग सीने में न पानी आँखों में 'अनिमेष'
न धड़कन हो, न सिहरन हो तो इस मिट्टी से भारी क्या

फिर भी होना बचा रहेगा
हँसना रोना बचा रहेगा

माँ के हाथों के खाने का
स्वाद सलोना बचा रहेगा

चाहे बचपन नेह का माखन
जी भर दो ना बचा रहेगा

भर जायेगा दिल ये फिर भी
कोई कोना बचा रहेगा

हो जाओगे सारे जग के
अपना होना बचा रहेगा

सपना तो है सच आँखों का
हो या हो ना बचा रहेगा

गाँव में ना शहर में है रोटी
अब तो बस चश्मे-तर में है रोटी

चाँद लगता है उसका ही टुकड़ा
पेट ख़ाली है सर में है रोटी

हर दुआ आसमान तक जाती
पर न आती असर में है रोटी

शोर कर सो गये हैं फिर बच्चे
ख़्वाब की किस डगर में है रोटी

कबसे हर इक चुनाव का मुद्दा
फिर भी अब तक ख़बर में है रोटी

सीखे गिनती ग़रीब का बच्चा
देखता बस सिफ़र में है रोटी

है कहाँ जो आबो-दाना चाहते हैं
हम तो अपने गाँव जाना चाहते हैं

छिलते छालों से नये रस्ते बनाते
नक़्शे-पा यूँ छोड़ जाना चाहते हैं

भूख की रोटी पकाकर खा रहे हैं
प्यास को पानी बनाना चाहते हैं

टूटती है आस या फिर साँस पहले
आख़िरी तक आज़माना चाहते हैं

फिर दुआओं से भरे कुछ हाथ उठकर
आसमानों को झुकाना चाहते हैं

लाश काँधों पर उठायी इतने दिन तक
अब सवालों को उठाना चाहते हैं

बहुत हुई अब ये नादानी ऐ इन्साँ
कर मत हर मानी बेमानी ऐ इन्साँ

कैसे-कैसे मुखौटे पहने हैं सबने
हर सूरत लगती अनजानी ऐ इन्साँ

इनके दम से ही धरती की हरियाली
सूखे ना आँखों का पानी ऐ इन्साँ

हो न मुहब्बत तो दौलत क्या शोहरत क्या
सब कुछ लगता है बेमानी ऐ इन्साँ

जीवन को इतना भी मुश्किल मत कर दे
मौत ही हो बस इक आसानी ऐ इन्साँ

क्या कोई होगा कहने को आगे फिर
होगी जब ये ख़त्म कहानी ऐ इन्साँ

नाम : पूजा भाटिया
जन्मतिथि : 11/08/1977
शिक्षा : M.Sc.(biotech), B.Ed.
संपर्क : Progressive Meera aangan,
Flat no. 701 Sector2, plot no 152
Ulwe Navi mumbai
मोबाइल : 8425848550 (Whatsapp)
ई-मेल : pbjsmash@gmail.com

जो याद आयी भूली कहानी अचानक
हुई हर ख़ुशी नौहा-ख़्वानी अचानक

तुम्हें डूबने की सहूलत नहीं है
ये बहते हुए बोला पानी अचानक

बदलते हुए पैरहन ने बताया
बदलते हैं कैसे म'आनी अचानक

मेरे साथ चलने की ख़ातिर हुआ है
जो दरिया ने बदली रवानी अचानक

वो मेरी तरह दिल लिए फिर रहा था
मुझे मिल गया मेरा सानी अचानक

बिछड़ना ज़रूरी था नज़दीक उसके
सो उसने लिखा बदगुमानी अचानक

शजर पर किसी ने उकेरी थी मछली
बचाने जिसे आया पानी अचानक

❀

देख बेचारगी ज़रा मेरी
ख़ुदकुशी भी नहीं मेरे बस की

ख़ुश्बुएँ हों नयी, नये हों रंग
वो जो गुज़रे बने छटा बन की

वो है पाबंद वक़्त का और मैं
बाँधती ही नहीं घड़ी भी कभी

हाथ होंठों पे इक इशारा था
हैफ़ उसने समझ लिया चुप्पी

कैसी वीरानगी का आलम है
ख़ल्वतें तक यहाँ न रहने की

देखी गली न उसकी कभी उसका दर न देखा
सब कुछ अबस है उसको तूने अगर न देखा

वो साथ था तो मेरे क़दमों में मंज़िलें थीं
पर उसके बाद मैंने वैसा सफ़र न देखा

मेमार के ही हाथों टूटा था जो वो घर हूँ
अपनों के हाथ अपना ज़ेरो-ज़बर न देखा

नाराज़गी की शायद थी इन्तेहाँ तभी तो
उसने इधर न देखा मैंने उधर न देखा

जिसको तमाम दुनिया में ढूँढती रही मैं
मुझमें ही रह रहा था मैंने मगर न देखा

❀

❀

जंज़ीरे-ज़िन्दगी से वफ़ा में लगा रहा
ताउम्र जिस्म अपनी सज़ा में लगा रहा

मरते हुए मिले थे उसे चंद लफ़्ज़ फिर
वो उम्र भर उन्हीं की दवा में लगा रहा

उसको थी कब ये फ़िक्र कि दुनिया कहेगी क्या ?
वो मेरे साथ-साथ दुआ में लगा रहा

वो ज़ख़्म जिससे रूह मेरी झाँकती रही
पैबंद सा बदन की क़बा में लगा रहा

क़दमों में बिछ गया था ख़ला भी मेरे लिए
मेरे लिए ही चाँद फ़ज़ा में लगा रहा

भटका किया जो ज़ात में अपनी तमाम उम्र
वो आख़िरत के वक़्त ख़ुदा में लगा रहा

ख़ुशबू, न रंग, कुछ भी नहीं, कुछ नहीं था वो
पर नाम बन के मेरी हिना में लगा रहा

न जाने मैंने कहाँ पे रख दी ?
अभी तो दुनिया यहीं पड़ी थी

जो साथ उसके ही देखनी थी
वो फ़िल्म कब की उतर चुकी थी

वो अपने क़िस्से सुना रहा था
मुझे ये दुनिया भली लगी थी

हर एक पत्ता था इक कहानी
कहानियों से गली भरी थी

वो बूढ़ा बरगद हरा-भरा था
उसी से रौशन मेरी गली थी

❀

नाम	: फ़रीदा अंजुम
जन्मतिथि	: 25-5-1995
शिक्षा	: बी.ए.
प्रकाशित कृतियाँ	: शुआ-ए-अंजुम
सम्मान/पुरस्कार	: अकबर रज़ा जमशेद उर्दू ज़बान-अदब अवार्ड, बिहार, झारखंड - 2019
संपर्क	: तारणी प्रसाद लेन, छोटी मस्जिद के पास, पटना सिटी - 800008
मोबाइल	: 77390 32672 (Whatsapp)
ई-मेल	: faridaanjum00000@gmail.com

मुझको दुनिया बुरी नहीं लगती
कोई उसमें कमी नहीं लगती

सोग मरने का क्या करें अब के
जब ख़ुशी ही ख़ुशी नहीं लगती

कोई मेहमान जबसे ठहरा है
दिल हवेली मिरी नहीं लगती

मुझसे रूठा है जबसे कोई तो
ज़िन्दगी, ज़िन्दगी नहीं लगती

दिल तो बेमोल बिक ही जाता है
उसकी क़ीमत कभी नहीं लगती

कब नज़र में कोई नहीं जँचता
अब परी भी परी नहीं लगती

सारी दुनिया तो है उसी सूरत
एक 'अंजुम' वही नहीं लगती

❀

कितना बेबस जहाँ में ये मज़दूर है
चैन मफ़क़ूद है, ऐश से दूर है

उसके कपड़े पसीने में रहते हैं तर
फिर भी लेकिन है ख़ुश, फिर भी मसरूर है

सारी दुनिया के सहता है ज़ुल्मो-सितम
अपनी हालत में, पर मस्त है, चूर है

लब पे उसके कभी कोई शिकवा नहीं
कुछ भी उसको मिले उसको मंज़ूर है

रात-दिन सिर्फ़ मेहनत से है उसका काम
अपनी मेहनत पे नाज़ाँ है, मज़दूर है

पास कुछ भी न हो, पर लुटाए वफ़ा
दौलत-ए-इश्क़ से क़ल्ब मा'मूर है

ये ज़माने को मालूम 'अंजुम' नहीं
कितना मज़दूर, दुनिया में मजबूर है

❀

उसकी चश्म करम हुई क्या है
सारी दुनिया में शोरो-ग़ोग़ा है

खो गया है मिरा सकूने-दिल
दिन ख़यालों में अब गुज़रता है

तुम बहुत अच्छे लग रहे हो अभी
और आईने में सँवरना है

बात कब से मिरी ज़ुबाँ पर थी
क्या मुहब्बत का साज़ छेड़ा है

दाग़े-फ़ुरक़त जो दे गया तो क्या
ये सितम भी मुझे गवारा है

ये ज़मीं तंग हो गई आख़िर
आसमाँ का भी रंग बदला है

दिल भी तो एक फूल है 'अंजुम'
हर ख़िज़ाँ से उसे बचाना है

❀

फ़िरक़ा-परस्त लोगों को अपना बनाएँगे
हिन्दोस्ताँ में गीत मुहब्बत के गाएँगे

एहसास दिल में अपने नया हम जगाएँगे
रिश्ता वफ़ा का साथ मिरे वो निभाएँगे

वो ख़्वाब जिसको भूल के बैठे थे आज तक
हर तौर, ऐसे ख़्वाब की ताबीर पाएँगे

शायान-शान ज़िंदगी रूख़सत हुई ज़रूर
फिर बा-वक़ार अपना महल इक बनाएँगे

अब इश्क़ो-आशिक़ी के ज़माने गुज़र गए
अब नाम तक भी उनका ज़ुबाँ पर न लाएँगे

नाम : भगवती प्रसाद द्विवेदी
जन्मतिथि : जुलाई 1, 1955
शिक्षा : एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान)

प्रकाशित कृतियाँ : *कहानी-संग्रह :* 1. चीरहरण, 2. अस्तित्व-बोध,3. फ़ीलगुड 4. जिसके आगे राह नहीं; *नवगीत-संग्रह* : नयी कोंपलों की ख़ातिर; *कविता-संग्रह* : एक और दिन का इज़ाफ़ा; *लघुकथा-संग्रह* : भविष्य का वर्तमान, थाती, सदी का सच; *व्यंग्य-संग्रह :* इंटेलेक्चुअल्स पार्लर
आलोचना : भिखारी ठाकुर; भोजपुरी के भारतेन्दु, महेन्द्र मिसिर; भोजपुरी गीतकार; *शोध भारतीय जनजातियाँ* : कल, आज और कल; *लोकसाहित्य* : बिहार के लोकरंग, भोजपुरी कथाएँ, भोजपुरी लोककथा-मंजूषा (चुनिंदा लोककथा-संग्रह); *बाल साहित्य की शताधिक पुस्तकें* : मेरी प्रिय बाल कहानियाँ (52 कहानियाँ), मेरी प्रिय बाल कविताएँ (प्रतिनिधि 251 बालगीत), मेरे प्रिय बाल नाटक 'विशेष रूप से उल्लेखनीय', भारतीय साहित्य के निर्माता 'श्रृंखला अंतर्गत साहित्य अकादमी से प्रकाशित मोनोग्राफ़ 'महेन्द्र मिसिर' व निबंध-संग्रह 'माटी में सोनवा' चर्चा में।

सम्मान/पुरस्कार : उत्तर प्रदेश सरकार से बाल साहित्य का सर्वोच्च 'बाल साहित्य भारती सम्मान' सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर द्वारा 'देवपुत्र गौरव सम्मान'। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से 'विशिष्ट साहित्य सेवा सम्मान'। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से वर्ष 2013 का 'निराला पुरस्कार' एवं 2014 का 'सूर पुरस्कार'। बिहार सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत। पाती प्रकाशन, बलिया की ओर से 'पाती अक्षर सम्मान'। उत्कृष्ट बालसाहित्य सर्जना हेतु चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट, शकुन्तला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार, चमेली देवी महेन्द्र सम्मान, डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति बालसाहित्य सम्मान, मधुर स्मृति बालसाहित्य पुरस्कार समेत कई राष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मान। विद्या वाचस्पति (पी.एच.डी.)की मानद उपाधि।

व्यवसाय/सम्प्रति : भारत संचार निगम से सेवानिवृत्ति के बाद स्वतंत्र लेखन
हिन्दी प्रगति समिति, बिहार सरकार के पूर्व सलाहकार सदस्य

संपर्क : शकुन्तला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर, पटना - 800 001 (बिहार)
मोबाइल : 61222 14967; 94306 00958, 93046 93031(Whatsapp)
ई-मेल : dubeybhagwati123@gmail.com

❀

नानक की जागीर लिखेंगे
साखी-सबद-कबीर लिखेंगे

मर-मर कर जी उठने वाले
जन-गण-मन की पीर लिखेंगे

बूँद लहू की टपके टप-टप
मेहनत की तासीर लिखेंगे

एके सबद अढ़ाई आखर
राँझा के मुख 'हीर' लिखेंगे

दहके-लहके, मह-मह महके
जूझे सकल शरीर लिखेंगे

❀

जबरा जाबे, डर बोए
जबह करे, मुखिया होए

पीर पराई जो बूझे
वो अपना दु:ख क्या रोए

बहुत हँसाता है जोकर
चल, उसकी पीड़ा टोएँ

जो पाए, हरदम पाए
खोनेवाला बस खोए

बाहुबली लाठीवाला
दूध दुहे, गैया नोए

❀

गाल बजाएँ रामभरोसे
पचरा गाएँ रामभरोसे

जल में रह मगरों से कैसे
बैर बढ़ाएँ रामभरोसे

ख़ुद बलिदानी बन राजा का
मुकुट बचाएँ रामभरोसे

भाषण-नारों में ख़ुद को पा
बस अगराएँ रामभरोसे

बलि का बकरा बन 'जाई' पर
ख़ूब लुभाएँ रामभरोसे

जाँगर हर पल तोड़ें तब भी
लोला पाएँ रामभरोसे

धोबीपाट पटक देंगे जब
धूल चटाएँ रामभरोसे

❀

चाह बहुत है, राह नहीं है
तैरें कितना, थाह नहीं है

मरते बूढ़े, बगिया, पोथी
नवयुग को परवाह नहीं है

मुरझाए बिरवा रचना का
जाती उधर निगाह नहीं है

तुरत मिताई तुरत सगाई
होती मगर निबाह नहीं है

पीर हिया की अदहन बनकर
डभके कैसे, धाह नहीं है

❀

ग़ज़ल कहें या गीत लिखें
क़लम सदा निरभीक लिखें

अबरा की हम जीभ बनें
कुटिल ठगी भयभीत लिखें

सिसकी महल-अटारी की
मड़ई का संगीत लिखें

क़ुदरत से गलबात करें
भर अँकवारी प्रीत लिखें

होरी-धनिया चहक उठें
नेह-पगे नवगीत लिखें

नाम	: मंगल सिंह 'नाचीज़'
जन्मतिथि	: 26 अगस्त 1983
शिक्षा	: MA(English), MA(Political Science), B. Ed.
व्यवसाय/सम्प्रति	: वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेज़ी)
संपर्क	: मंगल सिंह पुत्र श्री प्यारा सिंह, वार्ड नं- 7, गाँव-मालारामपुरा, तहसील-संगरिया, ज़िला-हनुमानगढ़, राज्य- राजस्थान
मोबाइल	: 90017 25126 (Whatsapp)
ई-मेल	: mangalpunni@gmail.com

वो ख़्वाब दिखाता फिरता है
इक जाल बिछाता फिरता है

मेरी क़िस्मत लिखने वाला
ख़ुद हाथ दिखाता फिरता है

दरिया भी है पानी-पानी
अब नक़्श मिटाता फिरता है

बिलकुल ख़ाली है अंदर से
जो शोर मचाता फिरता है

ग़म मेरे घर कितना ख़ुश था
अब ख़ाक उड़ाता फिरता है

मशहूरी के चक्कर में वो
औक़ात दिखाता फिरता है

'नाचीज़' हवा के कहने पर
वो आग लगाता फिरता है

हर बार ढूँढता है निशाना नया-नया
सीखा है उसने तीर चलाना नया-नया

होता हूँ मैं भी पेश ज़रा और ढंग से
पूछे कोई तो तुम भी बताना नया-नया

मैं इस क़दर उतर गया तस्वीर में तिरी
सब दिल में हो गया है पुराना नया-नया

समझा रहा है दे के दलीलें नयी-नयी
दिल तू भी तो हुआ है सयाना नया-नया

आ जाऊँ मैं कभी भी तिरे दर पे ज़िंदगी
होता है तेरे लब पे बहाना नया-नया

सच से कहो कि बोरिया-बिस्तर समेट ले
अब लोग चाहते हैं फ़साना नया-नया

अक्सर जिसने चौंकाया था
मेरा अपना ही साया था

अंदर जाके साँस घुटेगी
दीवारों ने समझाया था

क़िस्मत में तो मैं लाया हूँ
तू तो बस दिल में आया था

गुल पे जाने क्या गुज़री थी
छाया में भी कुम्हलाया था

हाथों-हाथ लिया दुनिया ने
फल जब पकने पे आया था

लूट लिया यारों ने मिलकर
वो ग़म मेरा सरमाया था

मेरे उनका कोई जवाब कहाँ
हुस्न मिलता है बे-हिसाब कहाँ

जो उठाया कभी नक़ाब उसने
तो छुपेगा ये माहताब कहाँ

उसके होते ... मुझे ये चढ़ जाये ?
इतनी भी क़ुव्वते-शराब कहाँ

इक दफ़ा देख ले जो जी भर के
फिर गया उसका इज़्तिराब कहाँ

ख़ब्त कितनों का है नसीब हुआ
हुस्न रखता है ये हिसाब कहाँ

वो नहीं तो सुकूँ कहाँ से हो
नींद ही गर न हो तो ख़्वाब कहाँ

तसव्वुर की बुलंदी से उतारा, कौन है भाई !
मुझे किसकी ख़मोशी ने पुकारा, कौन है भाई ?

उदासी और तन्हाई तो कब के घर में बैठे हैं
अरे बाहर से फिर किसने पुकारा ! कौन है भाई ?

ऐ मेरे ग़म ! तू इस दुनिया की बातों में न आ जाना
बता तेरे सिवा मेरा सहारा कौन है भाई ?

ज़रा धीरे ! बड़ी मुश्किल से यादों को सुलाया है
समझता ही नहीं है तू इशारा ! कौन है भाई ?

मैं मयख़ाने की जानिब आज पहली बार निकला हूँ
अरे पीछे से ये किसने पुकारा ! कौन है भाई ?

सुना ये था कि सबको मौत इक ही बार आती है
मुझे ले तो गए थे, अब दुबारा कौन है भाई ?

नाम	: मंसूर उस्मानी
जन्मतिथि	: 01-03-1954
शिक्षा	: एम.ए. उर्दू ; विशेष योग्यता फ़ारसी
प्रकाशित कृतियाँ	: पाँच काव्य संकलन : 1- मैंने कहा, 2- जुस्तजू 3- ग़ज़ल की ख़ुशबू, 4- कशमकश, 5- अमानत
सम्मान/पुरस्कार	: रोटरी सम्मान, संस्कार भारती सम्मान उ.प्र., म.प्र., प. बंगाल, बिहार उर्दू अकादमी सहित देश-विदेश से लगभग दो सौ सम्मान व पुरस्कार
व्यवसाय/सम्प्रति	: नगर निगम मुरादाबाद से 2014 में सेवा निवृत्त
संपर्क	: नजमा हाउस, बारादरी, मुरादाबाद
मोबाइल	: 9897189671 (Whatsapp), 8279479976
ई-मेल	: mansoorusmani@yahoo.co.in

हौसला ग़म का यूँ बढाया कर
आँख भीगे तो मुस्कुराया कर

भूल जाऊँ मैं सारी दुनिया को
इतनी शिद्दत से याद आया कर

क्या ज़रूरी है कुछ बहाना हो
हमसे वैसे भी रूठ जाया कर

वरना तनहाई मार डालेगी
तू मेरे शे'र गुनगुनाया कर

ज़ख़्म दिल के दुहाई देने लगें
बात इतनी भी मत बढ़ाया कर

सब फ़रिश्ता कहें जहाँ तुझको
ऐसी महफ़िल से लौट आया कर

बस गुनाहों को याद रख 'मंसूर'
नेकियाँ करके भूल जाया कर

कोई हँस के हँसा के टूट गया
कोई आँसू बहाके टूट गया

मैं तो टूटा था उसकी चाहत में
वो मुझे आज़मा के टूट गया

दिल की क़िस्मत भी ख़ूब क़िस्मत थी
जो तेरा ग़म उठा के टूट गया

नींद ख़्वाबों के डर से रूठ गई
ख़्वाब पलकों पे आ के टूट गया

इतने चहरे थे उसके चेहरे पर
आइना तंग आके टूट गया

ज़ुल्म बे पनाह हो गये
आइने सियाह हो गये

कारवाँ वफ़ा का जब लुटा
रास्ते गवाह हो गये

हुस्न बे-हिजाब क्या हुआ
लोग कम निगाह हो गये

क़ुरबतें बढीं कुछ इस क़दर
फ़ासले गुनाह हो गये

कल जो थे गदा-ए-मुमलिकत
आज बादशाह हो गये

उस गली को जाते-जाते हम
मयकदे की राह हो गये

क़िस्मतों ने साथ जब दिया
ज़र्रे मेहरो-माह हो गये

जी रहे हैं फ़ज़ूल हों जैसे
हम ज़माने की भूल हों जैसे

ऐसे पलकों पे रुक गये आँसू
ग़म की शाख़ों पे फूल हों जैसे

उसकी नज़रों से हो गया साबित
सब ख़तायें क़ुबूल हों जैसे

बेवफ़ाई के इस ज़माने में
हम वफ़ा के रसूल हों जैसे

महफ़िले-हुस्न में हुआ मालूम
हम तो क़दमों की धूल हों जैसे

ग़म उतरते हैं इस तरह दिल पर
रहमतों का नज़ूल हों जैसे

ऐसा न हो अंजाम पे पछताओ किसी दिन
बेहतर है कि तुम ख़ुद ही संभल जाओ किसी दिन

हर रोज़ ये कहते हो कि हालात बुरे हैं
हालात की गुत्थी भी तो सुलझाओ किसी दिन

महफ़िल में समझ लेते हैं कुछ लोग इशारे
तनहाई में आकर हमें समझाओ किसी दिन

हम भी तो तुम्हें देख के इतराते रहे हैं
तुम भी तो हमें देख के इतराओ किसी दिन

शीशे से अदावत का यही हाल रहा तो
पत्थर पे भी हो जायेगा पथराव किसी दिन

नाम : मधुवेश

जन्मतिथि : 01 जनवरी 1956

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी)

प्रकाशित कृतियाँ : 'क़दम-क़दम पर चौराहे' ग़ज़ल-संग्रह (2014), 'समकालीन हिंदी ग़ज़लकार : एक अध्ययन' (संपादक : हरेराम समीप), '101 प्रतिनिधि ग़ज़लकार' (संपादक : अशोक अंजुम), 'हिंदी ग़ज़ल की परंपरा' (संपादक : हरेराम समीप) में शामिल।

सम्मान/पुरस्कार : देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़लें प्रकाशित

व्यवसाय/सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन

संपर्क : सी-9/104, प्रथम तल, यमुना विहार, दिल्ली - 53

मोबाइल : 87508 83732

इन मकानों में घुटन है और खुली छत भी नहीं
इस नगर में खिड़कियों वाली रवायत भी नहीं

ज़िक्र क्या अपने पसीने का करें उनसे भला
याद है जिनको शहीदों की शहादत भी नहीं

भूल सकता है कोई क्या इस तरह अपनी जड़ें
लौटने की छोड़िए उसने लिखा ख़त भी नहीं

झूठ के ऊँचे मकाँ को एक झोंका है बहुत
झोंपड़ी सच की गिरा सकती क़यामत भी नहीं

वो दुराहे पर खड़े हैं फ़ायदे-नुक़सान के
साथ भी देते नहीं करते बग़ावत भी नहीं

झूठ गर अब तक नहीं तू सीख पाया बोलना
इस जनम में सीख पाएगा सियासत भी नहीं

वो बचा पातीं तुम्हें क्या चोर जिनको ले गए
मूरतें जो कर सकीं अपनी हिफ़ाज़त भी नहीं

एक दिन बाज़ार में उल्लू बना मैं इस क़दर
शर्म के मारे किसी से की शिकायत भी नहीं

❀

कौन जाने हाल क्या हो अब हमारा पढ़
इस ख़बर में जो छिपा है वो इशारा पढ़

ये कहानी कह रही है मुल्क़ के बच्चे
मुफ़लिसी में किस तरह करते गुज़ारा पढ़

माँगने वाले नहीं होते भिखारी सब
चेहरों पर पढ़ सके तो बेसहारा पढ़

चार पन्ने देखकर ही फ़ैसला मत दे
फ़ैसले के वास्ते दीवान सारा पढ़

जिस ग़ज़ल में ज़िंदगी का राग बजता है
छोड़ कोई और, उसको ही दुबारा पढ़

❀

अगर हो पेट ख़ाली चाँद सुंदर क्यों नहीं लगता
तुम्हें ये प्रश्न ख़ुद में एक उत्तर क्यों नहीं लगता

महीनों बाद लौटे आज जब बेटा, बहू, बच्चे
समझ में आ गया मुझको मकाँ घर क्यों नहीं लगता

वहाँ जाकर जिन्हें घर से अधिक आराम मिलता है
बताएँ क्या कि उनको जेल से डर क्यों नहीं लगता

कि पूँजी लौटती है सेठ की जब सौ गुना होकर
ग़लत है पूछना पैसा शजर पर क्यों नहीं लगता

भगोड़ों से ये मत पूछो, भगोड़े क्या बताएँगे
निशाना इक बहादुर की कमर पर क्यों नहीं लगता

कहीं जो दूर बैठा है लगे है पास क्यों अपने
बराबर चल रहा है जो बराबर क्यों नहीं लगता

❀

अपने खेतों अपने बैलों अपने हल में चाँद दिखा
घोर अँधेरा था पर मुझको सब्ज़ फ़स्ल में चाँद दिखा

पहले भी मैं देख चुका था छत से कितनी बार उसे
किंतु लगा पहले से सुंदर जब बादल में चाँद दिखा

कितनी मैली है गंगा ये बात इसी से ज़ाहिर है
याद नहीं वो रात हमें जब गंगाजल में चाँद दिखा

दिन को रात समझ बैठे थे सूरज की अनदेखी कर
दीवाने थे दीवानों को ताजमहल में चाँद दिखा

रात अँधेरी थी ऊपर से घोर घटाएँ छाई थीं
कितना रस्ता भूल चुके हम तब जंगल में चाँद दिखा

बच्चे झूम उठे घर-घर में जैसे ही टी.वी. बोला
दिल्ली, पटना, जम्मू, झाँसी और पलवल में चाँद दिखा

कितने पन्ने पलटे मैंने एक किरन ही दिख जाए
आख़िर फिर दो ही सफ़्हों के बाद ग़ज़ल में चाँद दिखा

तंगदस्ती के सबब भागे हुए बच्चे
कारख़ानों में मिले दाग़े हुए बच्चे

यूँ लगे है आज इनका इम्तहाँ होगा
लग रहे हैं रात भर जागे हुए बच्चे

राग का हर तार था फिर टूटने वाला
बीच फिर माँ-बाप के धागे हुए बच्चे

मिल अगर जाएँ कहीं तो खींच लूँ फ़ोटो
क़ौम की तहज़ीब में पागे हुए बच्चे

वो अभागा किस तरह आगे जिया होगा
क़त्ल जिसकी आँख के आगे हुए बच्चे

❀

नाम	: मनीष 'मोहक'
जन्मतिथि	: 18/11/1998
शिक्षा	: बी. ए. (अंग्रज़ी)
व्यवसाय/सम्प्रति	: विद्यार्थी
संपर्क	: ग्राम-मजनुपूर, अनुमंडल-बखरी, ज़िला - बेगूसराय (बिहार)
मोबाइल	: 74880 98655 (Whatsapp)
ई- मेल	: manishmohak@gmail.com

❀

बहुत कुछ खो दिया हमने तुम्हारे रूठ जाने में
नहीं छोड़ी कमी कोई तुम्हें फिर भी मनाने में

कभी फ़ुरसत मिले तो पूछना क्या हाल है उसका
नहीं तुझको लगा पल भर जिसे हँसकर भुलाने में

निगाहें फेर लीं तुमने सो लगता है यही मुझको
बचा कुछ भी नहीं है ख़ूबसूरत इस ज़माने में

ज़ियादा कुछ नहीं बस इश्क़ में आँसू मिले सबको
ज़रा तू भी बता क्या-क्या मिला है दिल दुखाने में

मुबारक हो नई दुनिया तुम्हें महलों की शहज़ादी
मुहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं मेरे ख़ज़ाने में

यहाँ नफ़रत ही नफ़रत है जिधर देखो उधर 'मोहक'
मगर डरना नहीं तुम प्यार के दीपक जलाने में

❀

चाँद जबसे ज़मीं पे उतरा है
दिल परीशाँ है और बहका है

ज़ख़्म मेरा न क्यों हरा होता
आँख से फिर जो इश्क़ छलका है

खो दिया उसने ख़ुद को तेरे लिए
तू जिसे कह रहा है क़तरा है

कौन बतलाए प्यास को तेरी
मुन्तज़िर आज भी ये सहरा है

बेबसी में ख़ुशी है चेहरे की
सोचकर दिल पे ग़म का पहरा है

चेहरा उतरा है क्यों तेरा 'मोहक'
क्यों तू इतना उदास लगता है ?

❀

ज़ीस्त मेरी न तेरे किसी काम की
ज़िन्दगी दे सका गर न आराम की

मैं कहाँ कह रहा हूँ तेरे हाथ में
जब भी मेहँदी रचे तो मेरे नाम की

आ भी जाओ न अब ऐ मेरे दिलरुबा
देखते-देखते राह फिर शाम की

रह गया हूँ मैं होकर खिलौना कोई
ज़िन्दगी जबसे मैंने तेरे नाम की

प्यार होता नहीं है मुकम्मल यहाँ
कर रही है बयाँ गाथा घनश्याम की

जब दुआओं से माँ की मिली ज़िन्दगी
बेसबब क्यों किसी से डरी ज़िन्दगी

देखकर वो मुझे आज शरमाए क्या
यूँ लगा जैसे खिल सी गई ज़िन्दगी

एक मुद्दत से मेरी ख़ुशी के लिए
जी रहा है कोई ग़म भरी ज़िन्दगी

तू जो बिछड़ा तो कह दूँगा मैं प्यार से
अलविदा अब तुझे ऐ मेरी ज़िन्दगी

मेरे हिस्से में क्यों इतने ग़म आ गए
सोचता हूँ यही हर घड़ी ज़िन्दगी

दर्द सहने की अब मुझमें हिम्मत नहीं
ऐ ख़ुदा कर अता प्यार की ज़िन्दगी

❀

अभी तो नहीं, जब मुलाक़ात होगी
बड़े प्यार से प्यार की बात होगी

तुम्हारे हवाले मेरी ज़िन्दगी है
बड़ी इससे क्या और सौग़ात होगी

नज़र कब तलक आप उस पर रखेगें
मचल जाएगा चाँद जब रात होगी

मिलाओ न नज़रें, बिखेरो न ज़ुल्फ़ें
बहक जाएगा दिल जो बरसात होगी

नहीं हार होगी कभी हारकर भी
तेरे हाथ मेरी अगर मात होगी

ज़मीं जब तलक है, यक़ीं तब तलक है
किसी रोज़ तुमसे मुलाक़ात होगी

❀

नाम	: मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'
जन्मतिथि	: 10 जून 1956
शिक्षा	: लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर
प्रकाशित कृतियाँ	: संकलन अप्रकाशित
सम्मान/पुरस्कार	: राजस्थान उर्दू अकादमी इक़बाल सम्मान व अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति	: सेवानिवृत्त अधिकारी, सहकारी विभाग, राजस्थान
संपर्क	: 22 गंगवाल पार्क जयपुर - 302004
मोबाइल	: 98870 99295 (Whatsapp)
ई-मेल	: manojmiital@gmail.com

कुछ वक़्त लगा सपनों को मेरे, अपने को अदम करने के लिए
कुछ रोज़ सियहपोशी में रहा मैं भी मातम करने के लिए

इस इश्क़ से पहले तो हम भी इक मामूली सा ज़र्रा थे
अब जादू हाथ में आया है इसको आलम करने के लिए

शहरग का लहू जलते आँसू ये सब तो पहले उतार दिए
अब कोई नया मज़मून नहीं काग़ज़ प' रक़म करने के लिए

इक नाम कि दिल के क़िस्से को करता ही रहा दरहम-बरहम
क्या-क्या न जतन थे हमने किए, इस लफ़्ज़ को कम करने के लिए

बस एक झिझक की बाइस ही हम-तुम में हाइल थी वरना
इक लम्स का झोंका था काफ़ी दीवार को ख़म करने के लिए

उसने भी ग़ुरूरे-हुस्न की उस दुनिया से बाहर पाँव धरे
मैंने भी अना को छोड़ दिया तब 'मैं' को 'हम' करने के लिए

ये हुस्न कहाँ आसानी से हर शय का नुमा हो पाता है
इक उम्र लगा दी आज़र ने पत्थर को सनम करने के लिए

तेरा ही रूप हूँ भूला हुआ संभाल मुझे
तहों को खोल के माज़ी से फिर निकाल मुझे

बना के देख मुझे अपनी फ़िक्र का मरकज़
मैं वक़्त सा हूँ किसी तजरिबे में ढाल मुझे

मैं अपने आप में उतरा तो पा लिया ख़ुद को
वगर्ना पा न सके मंतिक़ो-सवाल मुझे

वो दूर जाते हुए भी फ़िराक़ की सूरत
गया है सौंप मुहब्बत की देखभाल मुझे

ग़मे-जहान ग़मे-जाँ का बोझ उठाए हुए
ये रात-दिन का सफ़र कर न दे निढाल मुझे

लहू सिफ़त है मेरी याद उसकी रग-रग में
वो पाएगा मेरे घर से कहाँ निकाल मुझे

छोड़ कर याद के अंबार कहाँ जाता है
ऐ हसीं वक़्त मेरे यार कहाँ जाता है

घूम आता हूँ ज़रा देर चलूँ बाग़-ए-अदम
लौट आऊँगा ये संसार कहाँ जाता है

आ बुलाती है हमें इश्क़ की मेराज चलें
'इस शबे-तार में ऐ यार कहाँ जाता है'

अपना हर रूप कहानी में लिखा है मैंने
मुझसे बाहर कोई किरदार कहाँ जाता है

इम्तियाज़ी है फ़क़ीरों की ये बज़्म-ए-इरफ़ाँ
देखने शाह का दरबार कहाँ जाता है

इक जहाँ एक हयात इसके सिवा और है क्या
'कैफ़' कुछ भी नहीं उस पार कहाँ जाता है

जी रहा है गए ज़माने में
कुछ नयापन नहीं फ़साने में

दख़्ल पुरदर्द राग का भी था
साज़ का तार टूट जाने में

तुमने बस आँसुओं को देखा है
है बहुत कुछ मेरे ख़ज़ाने में

यूँ न देखो कि हार जाएँ हम
अपना किरदार आज़माने में

अश्क तो एक पल में वो निकले
एक मुद्दत लगी सुखाने में

उसकी आँखों ने कर दिया माहिर
ख़ामशी को ज़ुबाँ बनाने में

धुँधली सी क़ुर्बतों की शबीहात दे गया
इक चाँद आ के मुझको सियह रात दे गया

खुलता है हर क़दम प नया दर ख़याल का
एहसासे-इश्क़ कितने तिलिस्मात दे गया

जिनके जवाब भी हैं पहेली की शक्ल में
इक रब्त मुझको ऐसे सवालात दे गया

इस बाज़ी-ए-हयात में ख़ुद दाँव पर था मैं
मैं ही वो शख़्स था जो मुझे मात दे गया

मेरे सफ़र में साथ तो आया नहीं मगर
हर शख़्स मुझको चन्द हिदायात दे गया

ये मोजिज़ा भी वक़्त का देखा है 'कैफ़' ने
इल्हाद को शुऊर-ए-मुनाजात दे गया

नाम : महेश कटारे 'सुगम'
जन्मतिथि : 24 जनवरी 1954
शिक्षा : हाई स्कूल तक
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह* 1. आवाज़ का चेहरा 2. दुआएँ दो दरख़्तों को 3. सारी खींचतान में फ़रेब ही फ़रेब है 4. आशाओं के नए महल 5. शुक्रिया 6. अय हय हय 7. ख़्वाब मेरे भटकते रहे 8. ख़्वाब मेरे भटकते रहे 9. कुछ तो है 10. ऐसी-तैसी 11. महेश कटारे 'सुगम' की श्रृंगारिक ग़ज़लें (सं. प्रवीण जैन) *बुंदेली ग़ज़ल संग्रह* : 1. गाँव के गेंवड़े 2. अब जीवे कौ एकई चारौ 3. बात कैत दो टूक कका जू 4. ऐसौ नईं जानत्ते 5. कछू तौ गड़बड़ है 6. सुन रये हौ *नवगीत संग्रह* : 1. तुम कुछ ऐसा कहो; *कविता संग्रह* : पसीने का दस्तख़त, 2. वैदेही विषाद (लम्बी कविता); *बाल गीत संग्रह* : 1. हरदम हँसता जाता नीम; *कहानी संग्रह* : 1. प्यास 2. फ़सल;
उपन्यास : रोटी पुत्र
सम्मान/पुरस्कार : हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा सहभाषा सम्मान (बुन्देली), जनकवि नागार्जुन आलोक सम्मान गया (बिहार), जनकवि मुकुट बिहारी सरोज स्मृति सम्मान ग्वालियर (म.प्र.), स्व. विश्वम्भर नाथ चतुर्वेदी (शास्त्री) सम्मान मथुरा (उ.प्र.), आर्य स्मृति साहित्य सम्मान (किताब घर) दिल्ली स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान राँची (झारखण्ड), स्वदेश कथा पुरस्कार इंदौर (म.प्र.), स्व. बिजू शिंदे कथा पुरस्कार, कमलेश्वर कथा पुरस्कार (मुंबई), पत्र पखवाड़ा पुरस्कार (दूरदर्शन), लोक साहित्य अलंकरण जबलपुर (म.प्र.)
व्यवसाय/सम्प्रति : स्वास्थ्य विभाग से स्वेच्छिक सेवा निवृति
संपर्क : काव्या, चन्द्रशेखर वार्ड बीना, ज़िला - सागर (म.प्र.) - 470113
मोबाइल : 97130 24380
ई-मेल : prabhatmybrother@gmail.com / mahesh.katare_sugam@yahoo.in

गाथा एक उदास नदी की
तुम क्या जानो प्यास नदी की

तट पर बैठी ऊँघ रही है
कुम्हलाई सी घास नदी की

धारा का दिल टूट चूका है
टूट चुकी है आस नदी की

पिंजर सा पड़ रहा दिखाई
उखड़ चुकी है साँस नदी की

वर्षा आते ही जी उठती
बात यही है ख़ास नदी की

❀

बदलती ज़ीस्त के साये बहुत हैं
हम अपने आप में उलझे बहुत हैं

उठे हैं सर बदलती चाहतों के
हवस की दौड़ में अंधे बहुत हैं

दिखाई देते हैं मंज़र हँसीं जो
उन्हीं के दरमियाँ धोखे बहुत हैं

लिबासों के नए इस दौर में हम
पहनकर वस्त्र भी नंगे बहुत हैं

दिलों में हैं कहाँ गुंजाइशें अब
यूँ कहने को सुगम रिश्ते बहुत हैं

क़ौल, वादा, वफ़ा, इक़रार की ऐसी-तैसी
ज़िंदगी छीन ले उस प्यार की ऐसी-तैसी

जेठ की धूप में छत पर जो सुखाये हमको
ऐसे हालात में दीदार की ऐसी-तैसी

रोज़ दरबार में पढ़ता है क़सीदे जाकर
भूख के सामने फ़नकार की ऐसी-तैसी

देश को लूट के क़ानून सिखाती सबको
दोगली कलमुँही सरकार की ऐसी-तैसी

आपका काम किया है तो निकालो रिश्वत
आपके शुक्रिया-आभार की ऐसी-तैसी

ज़िंदगी नर्क बना दी है धरम ने सबकी
पोथियों में लिखे उद्धार की ऐसी-तैसी

❀

❀

पाँव में छाले आँख में आँसू पीड़ा भरी कहानी लिख
मज़दूरों के साथ हुई जो सत्ता की मनमानी लिख

ख़ाली पेट होंठ पपराये बदन थकन से चूर हुए
पीठ पे बच्चा सर पर गठरी नींदों की क़ुर्बानी लिख

एक तरफ़ थी मौत भूख से एक तरफ़ थी बीमारी
दोनों के दरमियाँ सिसकती खड़ी हुई ज़िंदगानी लिख

ना निकलें तो भूख-प्यास से बिलख रहे नन्हे बच्चे
बाहर निकलें पुलिस के डंडों से होती मेहमानी लिख

इसीलिए तो निकल पड़े हैं भूल सफ़र की दुश्वारी
नहीं ख़बर कब तक चलना है दूरी ये अंजानी लिख

बुलवा लिए विदेशों तक से बड़े जहाज़ों में भरकर
मज़दूरों को छोड़ा सत्ता-धनिकों की दीवानी लिख

भले ही चाहत हरी नहीं है
मगर यक़ीनन मरी नहीं है

मुहब्बतों पे उठी है उँगली
गो साख उसकी गिरी नहीं है

नहीं ये पहली दफ़ा हुआ है
उमीद ये आख़िरी नहीं है

कहा है संजीदगी से मैंने
समझ लो ये मसखरी नहीं है

तुम्हें जो कहना कहो ख़ुलासा
यहाँ कोई बाहरी नहीं है

❀

नाम	: मोहसिन 'आफ़ताब' केलापुरी
जन्मतिथि	: 15/08/1986
शिक्षा	: एम.ए. (इतिहास), 2016 एम.ए. (उर्दू), 2016 बी.एड. 2014 एम.ए. (राजनीति शास्त्र) जारी है... डीज़ल मेकेनिक कोर्स (2009)
प्रकाशित कृतियाँ	: काव्य संग्रह : अल्फ़ाज़ (अमेज़न और किंडल पर)
व्यवसाय/सम्प्रति	: कॉलेज में लेक्चरर
संपर्क	: मस्जिद वार्ड, पांढरकवडा, तालुका : केलापुर, ज़िला : यवतमाळ, महाराष्ट्र - 445302
मोबाइल	: 70837 85795, 76207 85795
ई-मेल	: mohsin.aaftab9@gmail.com

तेरी साँस, साँस में घुल गई तेरा रोम-रोम मचल गया
तू जो आ गई मेरी बाँहों में तेरा मोम जिस्म पिघल गया

तेरा हुस्न तेरा शबाब ये कभी लगता है मुझे ख़्वाब सा
कभी रंग धूप सा हो गया कभी चाँदनी में ही ढल गया

मेरे दोस्तो ! मेरे साथियो ! तुम्हें हो पता तो जवाब दो
वो जो रहनुमा मेरे साथ था वही रास्ता क्यों बदल गया

सरे-शाम याद तू आ गई कई दर्द दिल में जगा गई
कोई ज़ख़्म फिर से हरा हुआ कोई ख़्वाब आँख में जल गया

तेरे नाम कब का मैं कर चुका, मेरा लम्हा-लम्हा बुना हुआ
मेरी आँख में वो जो ख़्वाब था तेरा हिज्र उसको निगल गया

किसी जलती शब से निकालकर जिसे रक्खा मैंने संभाल कर
वही लम्हा तेरे विसाल का मेरी मुट्ठियों से फिसल गया

❀

रोते हुए दिन हैं ये सिसकते हुए दिन हैं
फ़ुरक़त है अभी यादों में उलझे हुए दिन हैं

तख़्ते की हैं दीवारें मेरी टीन का छप्पर
अप्रेल, मई, जून के उबले हुए दिन हैं

अब उम्र की शाख़ों पे नए फूल खिलेंगे
हर सम्त गुलाबी है, महकते हुए दिन हैं

आँखों में अभी भी है कई लम्हों का साया
मुट्ठी से मगर मेरी फिसलते हुए दिन हैं

जंगल के अँधेरों में भटकती हुई रातें
सहरा में मेरे धूल उड़ाते हुए दिन हैं

इक उम्र से रक्खे हुए ख़्वाबों को जलाकर
गाँव की तरफ़ लौट के जाते हुए दिन हैं

देने वाला वो दाता है, बाबाओं का चक्कर छोड़
साधुओं का, माताओं का, मुल्लाओं का चक्कर छोड़

उसको जानना है तो अपने चारों ओर का ज्ञान समझ
भोले, धर्म के दल्लालों का आक़ाओं का चक्कर छोड़

इक लड़की के इश्क़ में तू भी ख़ून के रिश्ते भूल गया
पागल मत बन, घर पर आजा, सहराओं का चक्कर छोड़

जितना भी तू पायेगा सब यहीं धरा रह जाएगा
इच्छाओं का अंत नहीं है, इच्छाओं का चक्कर छोड़

इनके पीछे-पीछे फिरकर कितने ही बर्बाद हुए
मित्र मेरे सुन मेरी वाणी नेताओं का चक्कर छोड़

ये तेरी आवारागर्दी तुझे कलंकित कर देगी
'मोहसिन' बेटा ब्याह रचा ले, कन्याओं का चक्कर छोड़

❀

❀

शहर की सुनसान सड़कें, तीरगी है, और मैं
हाथ में दारू की बोतल, बेख़ुदी है, और मैं

देखना है कौन किसको आज देता है शिकस्त
दर्द है सीने में मेरे, तिश्नगी है, और मैं

तंग गलियों से मोहल्ले की निकल आया मगर
सामने चौड़ी सड़क है, भीड़ भी है, और मैं

अब सुनाई दे रही हैं धड़कनों की आयतें
दूर तक कोई नहीं है, ख़ामशी है, और मैं

नूर में भीगा हुआ है रौशनी का इक बदन
मुश्क़ जैसी हैं फ़िज़ाएँ, चाँदनी है, और मैं

तेरे कुछ तोहफ़े हैं अलमारी में, कुछ तेरे ख़ुतूत
इक तेरी तस्वीर है, इक डायरी है, और मैं

दर्द देगी ख़ून के आँसू रुलाएगी मुझे
ज़िन्दगी तू और किस हद तक सताएगी मुझे

भूख से बेहाल मैं भी एक दिन हो जाऊँगा
एक दिन ये बेबसी दर-दर फिराएगी मुझे

मैं चला जाऊँगा जिस दिन आसमानों की तरफ़
देखना रो-रो के ये दुनिया बुलाएगी मुझे

इक यही तो बात उसकी है मुझे बे-हद पसंद
रूठ जाऊँ मैं तो वो आकर मनाएगी मुझे

कुछ दिनों के बाद मैं भी ख़ाक में मिल जाऊँगा
कुछ दिनों के बाद तू भी भूल जाएगी मुझे

❀

नाम	: रणविजय कुमार श्रीवास्तव
जन्मतिथि	: 05.01.1959
शिक्षा	: बी. एस सी., एम. ए. (हिंदी)
प्रकाशित कृतियाँ	: अँजुरी भर तेल
सम्मान/पुरस्कार	: राजभाषा श्री, साहित्य सरिता सम्मान के साथ सन् 2017 में पाँच देशों की साहित्यिक यूरोप यात्रा (जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया)
व्यवसाय/सम्प्रति	: सरकारी सेवा से सेवामुक्त
संपर्क	: मार्टिन नेस्ट, फ़र्स्ट फ़्लोर, 1A, 152, Basak Bagan, Kolkata-48
मोबाइल	: 70032 80669 (Whatsapp)
ई-मेल	: rks_cal@rediffmail.com

❀

यार तुमसे पार पाना चाहता हूँ
इसलिए मैं हार जाना चाहता हूँ

आदमी अनमोल हों जिन बस्तियों में
मैं वहाँ दुनिया बसाना चाहता हूँ

जंग में अब हार हो या जीत साथी
ख़ुद को अब मैं आज़माना चाहता हूँ

दूर हर दिन हो रहे हैं लोग वे अब
जिनको मैं अपना बनाना चाहता हूँ

शारदा नवकंठ दे नवताल दे तू
'रण' विजय का गीत गाना चाहता हूँ

यूँ साथ मेरा छोड़ के जाने का शुक्रिया
एहसान मुझपे रोज़ जताने का शुक्रिया

कैसे कहूँ कि आप हमारे नहीं रहे
साये की तरह साथ निभाने का शुक्रिया

ता-उम्र मैं गुनाह से तौबा किया मगर
इल्ज़ाम मेरे सर पे लगाने का शुक्रिया

मेरे क़रीब हैं वो मैं उनके क़रीब हूँ
दोनों दिलों में फ़ासला लाने का शुक्रिया

जिनकी हथेलियों पे मेरा नाम था लिखा
उस नाम को वहाँ से मिटाने का शुक्रिया

❀

❀

भरोसा उठ गया है आदमी से
कोई शिकवा नहीं है पर किसी से

चलो कुछ काम ऐसा हम करें अब
शिकायत रह न जाए इस सदी से

हमारी ज़िंदगी दु:ख से भरी है
बहुत हम दूर हैं अब भी ख़ुशी से

तुम्हारे ही भरोसे जी रहा हूँ
समन्दर कह रहा है फिर नदी से

तुम्हें क्या चाहिए मुझसे सनम अब
कहो तो जान भी दे दूँ ख़ुशी से

ख़्वाब प्यारा सँवर गया कोई
मेरे दिल में ठहर गया कोई

आह कहती है दिल की बस्ती से
तेज़ ख़ँजर उतर गया कोई

आज है आख़िरी मिलन अपना
मुझसे कहकर गुज़र गया कोई

हँस के मुद्दत से यार सहता हूँ
दर्द सीने में भर गया कोई

कौन जाने ये लाश किसकी है
भूख से आज मर गया कोई

दिल की दहलीज़ अब भी रौशन है
'रणविजय' दीप धर गया कोई

❀

❀

बात उनकी मैं अब करूँ कैसे
ज़िक्र ग़ैरों का भी कहूँ कैसे

वो ग़ज़ल की किताब जैसी है
लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ मैं कहूँ कैसे

आस्माँ से उतर कर आई है
कुछ कहूँ भी तो मैं ? कहूँ कैसे

दस्ते-नाज़ुक के लम्स मत पूछो
धड़कनें बढ़ रही कहूँ कैसे

बात करती है वो इशारों में
लब-कुशाई मैं अब करूँ कैसे

नाम : रमेश प्रसाद 'कँवल'
जन्मतिथि : 25 अगस्त, 1953
शिक्षा : विज्ञान स्नातक, अदीब, डिप्लोमा इन कंप्यूटर्स इन ऑफिस मैनेजमेंट
प्रकाशित कृतियाँ : लम्स का सूरज (उर्दू); सावन का कँवल (हिंदी) 1997; शोहरत की धूप (हिंदी) 2013; रंग-ए-हुनर (उर्दू) 2016; स्पर्श की चाँदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल/नज़्म) 2019; अक़ीदत के फूल : संकलित काव्य संग्रह (ग़ज़ल/नज़्म) 2020 *अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें* : रंगारंग शाइरी (संपादक- प्रकाश पंडित), ग़ज़ल इंटरनेशनल (संपादक- मंसूर उस्मानी), ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग-2 (संपादक- दीक्षित दनकौरी), बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक- अताउल्लाह ख़ाँ अल्वी), 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक- नीरज गोस्वामी), संदल सुगंध भाग-4 (संपादक- पवन जैन, क्षिप्रा खरे), हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक- अनिरुद्ध सिन्हा), कविताकोश www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत, www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें, www.rekhta.org पर 10 ख़ूबसूरत ग़ज़लें, 2 E-book : 1. लम्स का सूरज (उर्दू), 2. रंग-ए-हुनर (उर्दू)
व्यवसाय/सम्प्रति : बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत (पटना में लगभग 3 साल तक ए.डी.एम. लॉ एंड आर्डर) अब सफ़ीर-ए-शहर-ए-शेर-ओ-अदब
चेयर पर्सन : बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़-ए-रंग-ए-हुनर
संपर्क : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ पटना - 800014
मोबाइल : 70915 96715 / 89897 61287
ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com
वेबसाइट : www.rameshkanwal.com

मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंटों के नाम लिख दूँ
हिना से रौशन हथेलियों पर नज़र के दिलकश पयाम लिख दूँ

अगर इजाज़त हो जानेमन तो किताबे-दिल के हर इक वरक़ पर
मैं सुबहे-काशी की रौशनी में अवध की मस्तानी शाम लिख दूँ

बदन पे सावन की है इबारत, नज़र में दोनों की एक चाहत
मिरे लबों को जो हो इजाज़त, वफ़ा का पहला सलाम लिख दूँ

जो दिलनशीं है सितम पे माइल उसे हर इक पल दुआएँ दूँ मैं
सुलगते सूरज से दूर रखकर अमन-सुकूँ का क़याम लिख दूँ

मसर्रतों पे गहन प्रदूषण अवामी ख़ुशियाँ बिलख रही हैं
तुम्हीं बताओ ऐ मेरे रहबर कहाँ से बेहतर निज़ाम लिख दूँ

डिलीट कर दूँगा उसके ग़म को मैं दिल के अब लैपटॉप से ही
ख़ुशी के जितने मिले हैं DATA उन्हें मैं दिलबर के नाम लिख दूँ

❀

बेटी पर सख़्ती, बेटे को मस्ती के अधिकार मिले
नगर-नगर, क़स्बों, गाँवों को सीख में ये उपहार मिले

बालिग़-नाबालिग़ सब वहशी, तल्बा ज़ुल्म के मकतब के
औरत की अस्मत के लुटेरे बनके सरे-बाज़ार मिले

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, बेटी बसाओ के नारे
झूठ फ़रेब के गाँवों में फुसलाने के किरदार मिले

फ़ुर्सत के लम्हात मिले तो रूठ गया जादू तन का
इक बिस्तर पर दो जिस्मों के बीच में खर-पतवार मिले

पटरानी बन दु:ख पीड़ाएँ महल में क़ाबिज़ हो बैठीं
सुख-आराम के दाई नौकर बाहर के हक़दार मिले

देख नहीं सकते जिसको कोहराम मचाया है उसने
उसके आगे फ़ेल मिसाइल, एटम-बम, हथियार मिले

❀

तुम्हारे लफ़्ज़ों को भावनाओं की पालकी में बिठा रहा हूँ
दिले-हज़ीं में मची है हलचल मैं आँसुओं को छुपा रहा हूँ

तुम्हारी पलकें झुकी हुई हैं तुम्हारे लब थरथरा रहे हैं
तुम्हारी ठोड़ी को उँगलियों से मैं धीरे-धीरे उठा रहा हूँ

तुम्हारी ख़ातिर ही की बग़ावत तुम्हें शिकायत है क्यूँ ज़ियादा
मैं भूल जाऊँ, न याद रक्खूँ, नसीहतें कब से पा रहा हूँ

बहुत दिनों की तलाश है ये जो रू-ब-रू तुम हुए हो मुझसे
न दूसरा है कोई ज़मीं पर फ़लक की धड़कन सुना रहा हूँ

तुम्हें बना लूँ शरीके-जाँ मैं गुज़ारिशें कब से अंजुमन में
मैं कर रहा हूँ मगर इशारा तुम्हारा पुख़्ता न पा रहा हूँ

मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
ये कला भी देश ने पहचान ली

मास्क, सैनीटाइज़र बनने लगे
देश ने किट की चुनौती मान ली

ट्रेन मज़दूरों की ख़ातिर चल पड़ीं
बच्चों ने घर पर सुखद मुस्कान ली

शहर से जब सावधानी हट गयी
दारू ने लोगों की हाय जान ली

कुछ मसीहा जब गले मिलने लगे
मौत ने दहशत की चादर तान ली

❀

मुजरिमों से मिले रह गए
होंठ मेरे सिले रह गए

कह सके बात दिल की न लब
मिल के भी बेमिले रह गए

सच को सूली चढ़ाया गया
झूठ के क़ाफ़िले रह गए

मिट गईं जिस्म की दूरियाँ
रूह के फ़ासिले रह गए

आप अब भी हसीं, मैं जवाँ
ख़्वाहिशों को गिले रह गए

जीतना, हारना, जीतना
क्या ग़ज़ब सिलसिले रह गए

❀

नाम : रवि खण्डेलवाल

जन्मतिथि : 14 सितंबर 1951

शिक्षा : स्नातक

प्रकाशित कृतियाँ : प्रकाशन की ओर... (1) 'मैं गीत लिखूँ तुम गाओ' (सुगम संगीत गायकों हेतु लिखे गीतों का संग्रह) (2) 'ये सच है' (आपातकाल में रचित कविता, नवगीत एवं ग़ज़लों का संग्रह) (3) 'रिमझिम-रिमझिम मेघा बरसे रे' (11 काव्यात्मक संगीत रूपकों का संग्रह) (4) 'नदिया के होठों पर' (नवगीत संग्रह) (5) 'आँख को अपनी पसारे' (नवगीत संग्रह) (6) 'चाँद को देखा किया' (7) 'धूप में साये' (8) 'शीशे दरक गए हैं' (सभी ग़ज़ल संग्रह) (9) 'गतिविधियों की रेल' (दोहा संग्रह)।

व्यवसाय/सम्प्रति : महा-प्रबन्धक, फ़ैरो कांक्रीट कंस्ट्रक्शन (इण्डिया) प्रा.लि. मध्यप्रदेश इन्दौर में सेवारत

संपर्क : 207, व्येंकटेश नगर, एरोड्रोम रोड, इन्दौर (म.प्र.)

मोबाइल : 76979 00225 (Whatsapp)

ई-मेल : ravikhandelwal14sep@gmail.com

❀

सुनकर के लॉकडाउन का, सुनसान हो गईं
सड़कें जो हमसफ़र थीं सब अनजान हो गईं

दहशत ने ज़िंदगी को घर में क़ैद क्या किया
फ़ुरसत के मारे चाहतें हलकान हो गईं

अवसर की ताक में सदा रहती हैं, हाँ वही
इस आपदा में ताक़तें धनवान हो गईं

इक वायरस ही नांय भयौ मज़हबी सखे
फल-सब्ज़ियाँ भी, हिन्दू-मुसलमान हो गईं

नज़दीक रह के रिश्तों में बढ़ती थी गूढ़ता
अब दूरियाँ ही प्रेम की पहचान हो गईं

शैताँ समझ रहे थे जो, हाँ उनके वास्ते
'रवि' वॉरियर्स की टीम ही भगवान हो गईं

साथ सच के जब चले तो रोज़ ही मरते रहे
झूठ का लेकर सहारा ज़िंदगी को जी लिये

दर्द सीने में दबा है और हैं बेचैन, पर
होठ पर है खिलखिलाहट और ज़बाँ पर क़हक़हे

जब पलट कर राह में, देखा तो हैरानी हुई
पास अपने बेईमानी, छल, कपट, इर्ष्या बचे

आदमी को बाँटने के धर्म, जातीवाद में
और जाने कब तलक चलते रहेंगे सिलसिले

क़ौम का करना सफ़ाया क़ौम की ख़ातिर हमें
लोग आतंकी शिविर में पाठ यूँ पढ़ने लगे

बालकों के, ख़ून से लथपथ शवों को देखकर
राह चलते आदमी के आँख से आँसू बहे

केवल भारत नहीं ग्रसित है
कोरोना से विश्व व्यथित है

कैसे कोई बाहर निकले
हर इक रस्ता ही बाधित है

क़ुदरत का है नहीं वायरस
मानव द्वारा, लैब जनित है

देख महामारी का आलम
सारी दुनिया हुई चकित है

अर्थव्यवस्था का मत पूछो
वो भी चारों ख़ाने चित है

बेमतलब के लॉकडाउन से
आप बताएँ किसका हित है

दाता और भिखारी दोनों को ही आप लिखूँ
दोनों ही इक जैसे किसको किसका बाप लिखूँ

तुमको तुम लिखने कहने में लगता अपनापन
तुम्हीं बताओ कैसे कर मैं 'तुम' को आप लिखूँ

छीना हमने ठौर-ठिकाना, बरगद-पीपल से
पंछी का कैसे कर यारो, मैं संताप लिखूँ

मंत्रों का उच्चारण हो तो समझ में आता है
तू-तू, मैं-मैं को मैं यारो कैसे जाप लिखूँ

आत्म-ग्लानि से भरकर, जीना भी कोई जीना
सोचा मैंने ख़ुद ही ख़ुद को पश्चाताप लिखूँ

सारे के सारे ही बंदे हैं 'रवि' इक जैसे
कैसे एक किसी को मैं चौअन्नी छाप लिखूँ

आकर यूँ वक़्त दोनों का ज़ाया न कीजिए
जब तक बुलाया जाये ना आया न कीजिए

अल्लाह का नाम हो या हो परवरदिगार का
नापाक इस ज़ुबान पे लाया न कीजिए

रोते हुए को माना हँसाना है एक फ़न
हँसते हुए को आप रुलाया न कीजिए

करनी हों आँखें चार जो सुख से तो यूँ करें
दु:ख से कभी भी आँख चुराया न कीजिए

लोगों को जीने दीजिये चैन-ओ-सुकून से
यूँ बेवजह की आग लगाया न कीजिए

इतनी सी इल्तिजा मेरी हाथ जोड़कर
अपना बना के आप पराया न कीजिए

नाम : रश्मि शर्मा
जन्मतिथि : 17 दिसम्बर 1964
शिक्षा : B.A. B.Ed
प्रकाशित कृतियाँ : 6 साझा संग्रह, एक ग़ज़ल संग्रह 'काग़ज़ पर'
सम्मान/पुरस्कार : चंडीगढ़ साहित्य अकादमी पुरस्कार मार्च 2020, लोकल संस्थाओं (नारी क़लम, wtv, महिला काव्य मंच, राष्ट्रीय कवि संगम, रीडर्स, राइटर्स सोसायटी ऑफ़ इंडिया) से कई बार सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति : प्राइवेट शिक्षण संस्थान में वाइस प्रिंसिपल के तौर पर कार्यरत
संपर्क : C-185, पंजाब यूनवर्सिटी, चंडीगढ़
मोबाइल : 98156 05163 (Whatsapp)
ई-मेल : rgargassharma@gmail.com

हाल मेरा आपने पूछा, बहुत अच्छा लगा
यूँ शिकस्ता-हाल में होना बहुत अच्छा लगा

ख़्वाब में जो आप मुझको देखते हैं देखिये
आपके ख़्वाबों का ये कमरा बहुत अच्छा लगा

देखिये यूँ कीजिये क़ासिद कोई मत भेजिए
ख़त के बदले आपका आना बहुत अच्छा लगा

लौट आने दीजिये फिर ज़िन्दगी में सुर नये
राग जो भी आपने छेड़ा.. बहुत अच्छा लगा

आपका इक फ़ोन ही लाये तबस्सुम होंठ पर
और उस पर आपका लहजा बहुत अच्छा लगा

आँख से भी देखकर मुझको यक़ीं आया नहीं
ख़ूबसूरत सा मगर धोका बहुत अच्छा लगा

फ़ासले तो थे मगर 'रश्मी' हमारे दरमियाँ
मील का पत्थर लगा देना बहुत अच्छा लगा

मुश्किल है पर वक़्त बिताया जा सकता है
जैसे-तैसे तुम्हें भुलाया जा सकता है

मेरे मिट्टी हो जाने से पहले-पहले
तेरी याद का फूल उगाया जा सकता है

झूठी तेरी बातें, वादे सब झूठे हैं
झूठ से अच्छा जी बहलाया जा सकता है

मेरा दिल नाज़ुक था ख़ुद ही टूट गया है
किस पर ये इल्ज़ाम लगाया जा सकता है

दिल को टुकड़ों में तुमने तब्दील किया है
हर टुकड़े में तुम्हें बिठाया जा सकता है

वस्ल की बारिश पल भर हो तो सदियों तक भी
हिज्र की मिट्टी को महकाया जा सकता है

तारा-तारा टूटी शब मेरी आँखें
ख़्वाब सजाएँ कैसे कब मेरी आँखें

चढ़ता सूरज यूँ बैठा है नज़रों में
शाम तलक डूबेंगी अब मेरी आँखें

दश्तो-सहरा अपनी प्यास बुझा लेंगे
पानी-पानी होंगी जब मेरी आँखें

नामाबर के होटों से चिपकी है अब
मेरी बीनाई मतलब मेरी आँखें

नाच क़लंदर उसकी धुन में नाच ज़रा
देख रही जिसके करतब मेरी आँखें

ख़ुश्क हवाएँ और नहीं सह पाउँगी
सूख गई हैं अब यारब मेरी आँखें

उसके भीतर का कैसा है सन्नाटा
मेरे अंदर चीख़ उठा है सन्नाटा

एक उदासी लिपटी छत के पंखे से
और कमरे में घूम रहा है सन्नाटा

मेरी और उसकी भी आँखें भीगी हैं
हाय लबों पर आ बैठा है सन्नाटा

मुझसे मिलने आता भी तो कैसे वो
उसके पैरों से लिपटा है सन्नाटा

पहले शोर मचा फिर हाहाकार हुई
लेकिन आख़िर जीत गया है सन्नाटा

यादें नींदों पर दस्तक देती रहती
देर तलक जागा करता है सन्नाटा

कल तक था ख़ुद पर इतराता घर का शीशा
जाने कैसे टूटके बिखरा घर का शीशा

यूँ तो है बस काँच का टुकड़ा घर का शीशा
सबको ही आईना दिखलाता घर का शीशा

एक मुखौटा.. हँसता हुआ पहना है मैंने
रोज़ शिकायत में रहता था.. घर का शीशा

हर चेहरे के पीछे ज़िंदा एक कहानी
मेरा क़िस्सा कहता रहता.. घर का शीशा

रोज़ नये किरदार बदलती रहती हूँ मैं
मुझमें मुझको ढूँढ के लाता घर का शीशा

जाने कितने चेहरे ओढ़ लिए हैं मैंने
थक जाता है अक्स उठाता, घर का शीशा

नाम	: रहमतुल्लाह अली उर्फ़ मो. रहमत अली
जन्मतिथि	: 30 दिसम्बर, 1951
शिक्षा	: हायर सेकंडरी
प्रकाशित कृतियाँ	: अँधेरे में जुगनू (जल्द आ रही है), अनेकों पत्रिकाओं में ग़ज़लें छप चुकी हैं
सम्मान/पुरस्कार	: दायरे अदबिया आरा, जनहित परिवार भोजपुर तथा हिंदी-उर्दू साहित्य सम्मलेन भोजपुर द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति	: बिज़नस
संपर्क	: वलीगंज, वार्ड नं 33, आरा, भोजपुर - 802301
मोबाइल	: 8507606402

❀

कौन मुश्किल में नहीं किसको परेशानी नहीं
ज़िन्दगी की राह में सोचो तो आसानी नहीं

जुस्तजू-ए-रोज़गारे-रोज़ो-शब में लोग हैं
कौन सा ये शहर है चीज़ों की अरज़ानी नहीं

इस सुनहरे दश्त में कैसे बुझे तश्ना-लबी
जिस जगह को जाइए दो बूंद भी पानी नहीं

ज़िंदगी बे-लुत्फ़ है तो क्या हरे शाख़ो-शजर
हाँ नज़र के कैनवस पर रंगे-वीरानी नहीं

चोट जब उसको लगी तो दर्द, दिल मुझको हुआ
शक्ल गरचे मेरी उसकी जानी-पहचानी नहीं

सायबाँ का अपने 'रहमत' तू निगहबानी भी कर
कहना मुश्किल है जहाँ में ज़ोरे-तूफ़ानी नहीं

❀

वो आसमाँ पे ठिकाना तलाश करता है
बहारे-नौ का ज़माना तलाश करता है

बुझाए प्यास वो पानी मिले तो कैसे मिले
ज़मीं उगाए जो दाना तलाश करता है

अब आशिक़ी की कहानी उसे पसंद नहीं
वो ज़िन्दगी का फ़साना तलाश करता है

निगारो-नक़्श बनाकर वो अपने चहरे पर
वो तन-बदन भी ज़नाना तलाश करता है

कोई भी अपनी ज़रूरत ही तक नहीं महदूद
जहाँ का सारा ख़ज़ाना तलाश करता है

वही नदी वही जंगल में झोंपड़े का मकाँ
वो अपना गाँव पुराना तलाश करता है

❀

जब सऊबत से गुज़र के ज़िंदगी कटने लगे
दोस्त बनके दुनिया वाले दुश्मनी करने लगे

आ गई जाने कहाँ से अब के तूफ़ानी हवा
जब चराग़ों को जलाकर रौशनी करने लगे

वो इनायत करने वाला दे रहा था और भी
दरमियानी लोग ही इसमें कमी करने लगे

हमने उनको अपने ज़ख़्मों को दिखाया था फ़क़त
वो नमक उस पर छिड़ककर दिल्लगी करने लगे

या ख़ुदा दुनिया में तेरी ऐसी चल जाए हवा
फिर मुहब्बत आदमी से आदमी करने लगे

कहते हैं कि ज़िंदगी इक ख़ूबसूरत है सफ़र
लोग क्यों 'रहमत' जहाँ में ख़ुदकुशी करने लगे

क़लील उम्र मिली जाएजा लिया ही नहीं
पता चला कि अभी मैंने कुछ किया ही नहीं

हम अपने जेबो-गरेबाँ को देखते ही रहे
फटा हुआ था जो दामन उसे सिया ही नहीं

तू मेरी प्यास का हमदर्द है ये कैसे कहूँ
तेरे गिलास का पानी अभी पिया ही नहीं

कई तरह से बिखरती है रौशनी-ए-हयात
कि एक रंग में जलता है वो दिया ही नहीं

न उसको दर्द का एहसास है न जौक़े-जमाल
जो ख़ारो-गुल से मुहब्बत कभी किया ही नहीं

ये दो दिलों की मुहब्बत बड़ी सुनहरी है
कि रंगे-ताजमहल सिर्फ़ दूधिया ही नहीं

❀

न देगा फूल न अब फल ख़राब मौसम है
झुलस रहा है ये पीपल ख़राब मौसम है

अभी तो धूप की खलिहान में ज़रूरत थी
बरस रहा है जो बादल ख़राब मौसम है

घटाएँ कहती है इक दाना तेरे घर में नहीं
उठा न हाथ में बोतल ख़राब मौसम है

फ़िज़ा-ए-शहर में चलती है छेड़ने की हवा
बचा के चलिएगा आँचल ख़राब मौसम है

लगे किसी को बयाबाँ हरा-भरा लेकिन
हमारा शहर है जल-थल ख़राब मौसम है

नई सदी में है बेचैनियों की आबो-हवा
क़रार ढूँढ न पागल ख़राब मौसम है

❀

नाम : राज बाला 'राज'
जन्मतिथि : 05-01-1981
शिक्षा : कहानी लेखन महाविद्यालय अंबाला छावनी से लेख व फ़ीचर लेखन का कोर्स।
प्रकाशित कृतियाँ : 1. दिया बिन बाती (कविता-संग्रह)
2. भीगा मन (लघुकथा-संग्रह)
सम्मान/पुरस्कार : साहित्य शिरोमणि उपाधि 2016; कवि शिरोमणि उपाधि 2016; काव्य कुमुद सम्मान 2016; के.बी. नवांकुर रत्न सम्मान 2016; हिंदी भाषा रत्न सम्मान 2017; डॉक्टर महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान 2017; काव्य किरण सम्मान 2017; शब्द श्री उपाधि 2017; साहित्य गौरव सम्मान 2018; विशिष्ट साहित्य सम्मान 2018; ‘विद्या वाचस्पति उपाधि 2019
व्यवसाय/सम्प्रति : प्रांतीय अध्यक्ष, सखी साहित्य परिवार हरियाणा एवं राष्ट्रीय मंच की प्रमुख संचालिका, साहित्य राज मंच / संस्था (साहित्यिक) अध्यक्ष / संस्थापिका
संपर्क : ग्राम/पोस्ट-राजपुरा (सिसाय), ज़िला - हिसार 125049 (हरियाणा)
मोबाइल : 8569853471 / 8708043431
ई-मेल : rajbalaraj35@gmail.com

बात ये भी ज़रा सोचकर देखते
कैसे करती है नारी बसर देखते

काम पर, राह में, घर पे भी ज़ुल्म हैं
सारे क़ानून हैं बेअसर देखते

जो दरिंदे हैं वहशी हैं बदमाश हैं
हुक्मराँ लेके उनकी ख़बर देखते

सहमी-सहमी सी नारी मिली हर कहीं
हम निगाहें उठाकर जिधर देखते

इतनी कमज़ोर होती न बेटी कोई
बेटियों को भी ममता से गर देखते

ज़ुल्म बढ़ते न दुनिया में इतने कभी
बेटों की हरकतें तुम अगर देखते

‘राज’ कैसे बनेगी गुरू सी ग़ज़ल
काश अपने में ऐसा हुनर देखते

देख दुनिया उसे भूल जाना पड़ा
प्यार को दिल ही दिल में दबाना पड़ा

आज भी वो है मेरा ही जान-ए-जिगर
राज़ दुनिया से लेकिन छुपाना पड़ा

दूर रहकर भी है उसकी हर इक ख़बर
इस तरह उसको दिल में समाना पड़ा

मेरे ख़्वाबों में अब भी महकते हैं वो
इसलिए अपने घर को सजाना पड़ा

डस रही थी ज़माने की हमको नज़र
यूँ चराग़-ए-मुहब्बत बुझाना पड़ा

'राज' थी उसमें इतनी ही रंगीनियाँ
उसकी यादों में जीवन बिताना पड़ा

ज़रा तू सोच तो इतना बड़ा सवाल नहीं
यक़ीन ले के जो आया है उसको टाल नहीं

मैं तेरा साथ न दूँगी ग़मों के मौसम में
दिलो-दिमाग़ में ऐसे ख़याल पाल नहीं

मैं रात दिन ही जुटी हूँ तुम्हारी ख़िदमत में
मैं देखती हूँ कि तुमको मिरा ख़याल नहीं

जहान भर में तलाशो तो तुम ज़रा पहले
मिलेगी तुमको हमारी कहीं मिसाल नहीं

किया पसंद है तुझको तो मैंने मर्ज़ी से
मुझे जो फाँस ले ऐसा तो कोई जाल नहीं

तुझे ये 'राज' ख़बर तो ज़रूर ही होगी
बग़ैर बोझ के झुकती शजर की डाल नहीं

ज़रा सी बात पे नाराज़ होते जाते हैं
बड़े अजीब से ये आज रिश्ते-नाते हैं

ज़माने भर के सितम आप हमपे ढाते हैं
कलेजा देखिये हम मुस्कुराये जाते हैं

इसी से ख़ुश हूँ मैं देखो हज़ार ग़म में भी
हर एक ख़्वाब में बस आप झिलमिलाते हैं

ख़ुशी से झूमने लगती हूँ बल्लियों मैं भी
वो मेरे सामने जब-जब भी मुस्कुराते हैं

ये एक बात ही उनकी नहीं पसंद मुझे
ज़रा सी देर में नाको चने चबाते हैं

ऐ 'राज' आते ही उनके बहार आती है
जो बाग़े-दिल के सभी फूल खिलखिलाते हैं

अब करिश्मा ये रब्बा दिखा दीजिए
फूल फिर से चमन में खिला दीजिए

हर तरफ़ ग़मज़दा-ग़मज़दा लोग हैं
मेरे मोहन इन्हें अब हँसा दीजिए

भूखा-प्यासा न मर जाये कोई यहाँ
हाथ अपनी दया का बढ़ा दीजिए

मेरी विनती है गिरधर यही आपसे
इस वबा को जहाँ से भगा दीजिए

जाने कितने भटकते हैं परदेश में
इनको अपनों से दाता मिला दीजिए

वक़्त है ये कठिन आज सबके लिए
कोई ऐसे में मुश्किल-कुशा दीजिए

नाम : राजेश कुमारी 'राज'
जन्मतिथि : 10 जून, 1956
शिक्षा : स्नाकोत्तर, बी.एड
प्रकाशित कृतियाँ : 1. हृदय के उद्गार (साझा विधाओं पर) 2. साहिल पर सीपियाँ (ग़ज़ल संग्रह) 3. डाली गुलाब पहने हुए (ग़ज़ल संग्रह) 4. पारा-पारा ख़्वाहिशें (ग़ज़ल संग्रह) 5. काव्य कलश (छंदात्मक) 6. गुल्लक (लघुकथा संग्रह); *विधा* : गीत, नवगीत, छंद, ग़ज़ल, लघु कथा; साझा काव्य सँग्रह - 50 के लगभग; विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सतत लेखन; आकाशवाणी नजीबाबाद से काव्य पाठ; दूरदर्शन देहरादून से काव्य पाठ
सम्मान/पुरस्कार : अंतर्राष्टीय ब्लॉगर सम्मेलन में ब्लॉग प्रथम आने पर तस्लीम सम्मान लखनऊ, परिकल्पना सम्मान लखनऊ 2008 में, जश्ने ग़ज़ल इलाहबाद में ग़ज़ल गौहर, साहित्य रत्न भोपाल, कविता लोक रत्न हिसार, काव्य रत्न लखनऊ, ओपन बुक्स ओनलाइन साहित्य रत्न हल्द्वानी, साहित्य रत्न देहरादून, कवि कौविद सम्मान इंदौर, गुरू गोबिंद सम्मान दिल्ली, अंतराष्ट्रीय हिंदी उत्सव सम्मान पोर्ट लुई मॉरीशस में देश की विभिन्न लायब्रेरी में प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध, इस्राइल की भारतीय एमबेसी व भारतीय सँस्कृति कोष में तीन पुस्तकें शामिल, दुबई, मालदीव में परिकल्पना साहित्य रत्न सम्मान; अगला लक्ष्य-दो पुस्तकों पर कार्य चल रहा है
संपर्क : H2, AFI building, Marine lines, Mumbai Pin - 400020
मोबाइल : 8126539706, 8326755713
ई-मेल : rajeshvirendra@gmail.com

सहमा सा परिंदा है सहमी हुई तितली है
हर शाख़ पे काँटे हैं पज़मुर्दगी लिपटी है

जाएँ तो कहाँ जाएँ भँवरे ये मुहब्बत के
पत्तों में निहाँ तूफ़ाँ हर फूल में बिजली है

ता-उम्र बचाकर जो रक्खा था तिजोरी में
है सख़्त बड़ी ये जाँ सब छोड़ के निकली है

इस झील को लूटा है इस तरह ज़माने ने
कुंभीर बचे इसमें इक भी तो न मछली है

हर शख़्स परीशाँ है पथराई सी हैं आँखें
ख़्वाबों की हथेली में तूफ़ान की चिट्ठी है

क्या ख़ूब हुनर पाया है भूख छुपाने का
रोती हुई हँसती है मुफ़लिस की ये बच्ची है

किसने गुल के हाथ में तलवार रख दी
मज़हबों के बीच में ललकार रख दी

पहले फेंकी शहर में माचिस की तीली
आँधी के पँखों पर फिर रफ़्तार रख दी

एक ने एहराम कसदन फाड़ डाला
दूसरे ने आग पर ज़ुन्नार रख दी

बिलबिलाया भूख से मुफ़लिस का बच्चा
माँ ने बेबस बोसे की पुचकार रख दी

नातवाँ गुल मर गया खिलने से पहले
किसने उसकी कोठे पे महकार रख दी

रूठकर बारात दुख़्तर की चली जब
सामने इक बाप ने दस्तार रख दी

❀

❀

हौसलों से यक़ीं से निकलेगा
इक सिकन्दर हमीं से निकलेगा

ये मसाइल यहीं से निकले हैं
रास्ता भी यहीं से निकलेगा

आसमाँ गर निगल गई क़ुदरत
एक सूरज ज़मीं से निकलेगा

ज़लज़ले ये जहाँ से निकले हैं
इक चमन उस ज़मीं से निकलेगा

इक ज़ुबाँ है, कमाँ है, आँखें हैं
तीर बेशक कहीं से निकलेगा

इस चमन में नये ख़ँजर ये कमाँ कैसे हैं
गुल के रुख़्सार पे अश्कों के निशाँ कैसे हैं

सूख जाती है ज़ुबाँ कैसे कहें किससे कहें
यार हालात ये मोहताज-ए-बयाँ कैसे हैं

आइने देख चुके खोखली दीवारों को
आपके ज़ेहन में मीनार-ए-गुमाँ कैसे हैं

देखकर इनको क़यामत भी पशेमाँ होगी
दौर-ए-तख़रीब में चश्मे ये रवाँ कैसे हैं

है अगर अम्न तेरे शहर में फिर ये तो बता
आइनों पर लगे पत्थर के निशाँ कैसे हैं

आग जाती है न इन तक न धुआँ जाता है
दश्त-ए-आतिश में ये कागज़ के मकाँ कैसे हैं

❀

❀

जिनसे हाथ मिलाने निकले
लोग वही बेगाने निकले

अपने मुँह की खाई हमने
जब-जब हम समझाने निकले

ग़ैरों की ही अलमारी में
घर के राज़ छुपाने निकले

थक-कर घर जाते सूरज को
जुगनू आँख दिखाने निकले

पत्थर के नकली हीरे को
पॉलिश से चमकाने निकले

कैसे होता दूर अँधेरा
जुगनू ही दीवाने निकले

नाम	: रामनाथ 'बेख़बर'
जन्मतिथि	: 08-11-1978
शिक्षा	: M.A, B.ed
प्रकाशित कृतियाँ	: 1- 'भले हूँ बेख़बर लेकिन'(ग़ज़ल संग्रह-2019) 2 - 'सूरज ढलने तक' (काव्य-संग्रह-2020)
सम्मान/पुरस्कार	: आदर्श शिक्षक सम्मान (कोलकाता-2018) आदर्श शिक्षा रत्न (मथुरा-2019) मुक्त-मुक्तक सम्मान (माँडवी प्रकाशन-2013) शिल्पालोक सम्मान (2015)
व्यवसाय/सम्प्रति	: अध्यापन
संपर्क	: 8/1 एस.एम.बाई लेन, बाँसबाग़ान, चापदानी पोस्ट-वैद्यवाटी, ज़िला - हुगली, (पश्चिम बंगाल) - 712222
मोबाइल	: 79806 30154
ई-मेल	: ramnathy41@gmail.com

ज़मीं को खा रही है आसमान की ख़्वाहिश
जहाँ में फिर भी बढ़ी है उड़ान की ख़्वाहिश

भटक रहे हैं सभी शहरे-नौ के जंगल में
घरों से दूर ले आई मकान की ख़्वाहिश

शिखर पे बैठ समंदर नसीब कैसे हो
नदी के मन में जगी है ढलान की ख़्वाहिश

कुचल रहे थे जो सदियों से यार फूलों को
उन्हीं के सर पे चढ़ी फूलदान की ख़्वाहिश

हमें भी जाना है दुनिया से चार काँधे पर
जहाँ में छोड़ के सारे जहान की ख़्वाहिश

❀

कहाँ ये और किसी रास्ते से गुज़रेगा
मलाल साथ तेरे बैठने से गुज़रेगा

जो तेरी सुरमई आँखों से हो के गुज़रा है
नहीं वो शख़्स कभी मयकदे से गुज़रेगा

जिसे तलाश रही हैं निग़ाहें सदियों से
अभी वो शख़्स मेरे सामने से गुज़रेगा

यक़ीन मानिए वो दिल में मेरे रहता है
किसी भी पल वो मेरे दायरे से गुज़रेगा

न हार हौसले को आज बेख़बर ऐसे
बुरा है वक़्त तेरे हौसले से गुज़रेगा

ढाला है जैसे वक़्त ने वैसे ही ढल गए
चलने लगे तो पाँव के काँटे निकल गए

कब तक अमीरे-शह्र में मुफ़लिस बचे भला
पूरे वतन को बन के वो अजगर निगल गये

मुझको बहुत ग़रूर था अपने चराग़ पर
कमबख़्त उस चराग़ से घर-बार जल गए

मुश्किल भरी सी राह थी कोई न साथ था
खोकर तुम्हारी याद में मीलों ही चल गए

कैसे हरा-भरा रहे अब बेख़बर चमन
जब बाग़बाँ ही बाग़ की कलियाँ मसल गए

❀

❀

ख़्वाब आँखों में ज़रा हटके सजाने होंगे
रेत पर फूल हर इक सम्त खिलाने होंगे

पास मंज़िल तो कभी चल के नहीं आती है
यार कुछ और क़दम और बढ़ाने होंगे

तीरगी ख़ुद ही कहीं दूर चली जायेगी
हाँ, मगर द्वार पे कुछ दीप जलाने होंगे

बस यही देख घिन आती है सियासत से बहुत
दुश्मनों से भी हमें हाथ मिलाने होंगे

बे-ख़बर चैन सुकूँ से है अगर जीना तो
अपनी ख़्वाहिश पे ज़रा ब्रेक लगाने होंगे

जब कहीं भी कोई फ़ैसला कीजिए
बस सही को सही कह दिया कीजिए

चाहे कोई भी जग में ख़ता कीजिए
अपने महबूब को मत ख़फ़ा कीजिए

हो रही बेअसर मुझ पे हर इक दवा
मेरे हक़ में अभी से दुआ कीजिए

रुक गए तो समझिए वहीं मौत है
धीरे-धीरे सही पर चला कीजिए

दर्द आँखों से होकर उतर जाएगा
हो सके गर ज़रा रो लिया कीजिए

'बेख़बर' रूठकर दूर जाना नहीं
गर शिकायत है मुझसे कहा कीजिए

❀

नाम : रेखा किंगर 'रौशनी'
जन्मतिथि : 9 फ़रवरी
शिक्षा : एम. कॉम, (बिजनेस मैंनेजमेंट) एल. एल.एम. एम. ए.(उर्दू)
प्रकाशित कृतियाँ : प्रकाशित साझा संकलन, दुष्यंत के बाद ग़ज़लें (दूसरे भाग में), कागळ माँ नदीओ उतारी : गुजराती कवयित्री संकलन; जान-ए-ग़ज़ल : उर्दू ख़वातिन का साझा संकलन : बिहार
सम्मान/पुरस्कार : इंदिरा रत्न पुरस्कार एम.पी.सी.सी. 2019
जनकवि नज़ीर बनारसी सम्मान (लखनऊ)
देश की अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
आजीवन सदस्य : हिंदुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई
व्यवसाय/सम्प्रति : वरीय अधिवक़्ता, मुंबई उच्च न्यायालय
संपर्क : 2/24 साँई लीला, कैलाश नगर, डोम्बिवली वेस्ट, थाणे, महाराष्ट्र
मोबाइल : 8779873139
ई-मेल : rekhakinger5@gmail.com

सोज़ है, दर्द है, बक़ा क्या है
ज़िंदगी तेरा फ़लसफ़ा क्या है

पूछते क्या हो मुद्दआ क्या है
मेरी दुनिया में अब बचा क्या है

ये जफ़ाओं का सिलसिला क्या है
दर्द की मेरे अब दवा क्या है

तू कहीं भी नज़र नहीं आता
हर जगह तू, ये माजरा क्या है ?

इश्क़ तेरा है, जुस्तजू तेरी
मेरी दुनिया में मासिवा क्या है

अक्स उसका दिखाई देता है
आईने को ये हो गया क्या है

जाने क्या हो गई ख़ता मुझसे
दोस्त रखते हैं फ़ासला मुझसे

तिश्नगी, बेख़ुदी, तड़प, आहें
ज़िंदगी चाहती है क्या मुझसे

तेरा चेहरा दिखाई देता है
सहमा-सहमा है आइना मुझसे

तू मेरी ज़ीस्त का है सरमाया
तेरा मिलता है सिलसिला मुझसे

दर्द-ओ-ग़म से हुई शनासाई
जबसे तू हो गया जुदा मुझसे

उसकी हर बात दिल दुखाती है
उसको हरदम रहा गिला मुझसे

तज़किरा-ए-वफ़ा से क्या मतलब ?
हर घड़ी इल्तजा से क्या मतलब ?

हमको तेरी रज़ा से मतलब है
दूसरों की रज़ा से क्या मतलब ?

जुस्तजू तेरी, आरज़ू तेरी
और कोई दुआ से क्या मतलब ?

उसकी फ़ितरत बदल नहीं सकती
अब वफ़ा से, जफ़ा से क्या मतलब ?

मयकदा, ख़ानक़ाह, चौराहा
रिंद को पारसा से क्या मतलब ?

ये मरज़ ला-दवा है चारागर
दर्दे-दिल को दवा से क्या मतलब ?

ये तो क़िस्मत के वार लगते हैं
यार क्यों शर्मसार लगते हैं

कौन किसका यहाँ ज़माने में ?
सब ही मतलब के यार लगते हैं

इक मुखौटा है सबके चहेरों पे
आइने दाग़दार लगते हैं

क़त्ल मेरा किया है लोगों ने
आप उनमें शुमार लगते हैं

ये ग़ज़ल आपकी अमानत है
आपके सब अशआर लगते हैं

ये बहारें हैं मुन्तज़िर तेरी
फूल भी अब तो ख़ार लगते हैं

ये जफ़ाओं का सिलसिला कम कर
कुछ सज़ा दे दे कुछ सज़ा कम कर

ज़ख़्म मेरे हरे ही रहने दे
दर्द की मेरे तू दवा कम कर

दोस्ती का मेरी भरम तो रख
दुश्मनों से मेरे मिला कम कर

इश्क़ में लोग जान देते हैं
मेरे बारे में सोचना कम कर

हर तरफ़ दर्द, ग़म, सितम, आहें
फिर भी तक़दीर से गिला कम कर

चार दिन की ही ज़िंदगानी है
रूठे लोगों से फ़ासला कम कर

नाम	: लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'
जन्मतिथि	: 6 अप्रैल 1957
शिक्षा	: स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ	: 1) दरिया में मँझधार बहुत हैं - 1996 2) तुक - 2018
सम्मान/पुरस्कार	: महाकवि बिहारी पुरस्कार - 2007
व्यवसाय/सम्प्रति	: व्यापार
संपर्क	: सी-140, अशोक पथ, श्याम नगर, जयपुर-19 (राजस्थान)
मोबाइल	: 9414077820 (WhatsApp)
ई-मेल	: lokeshsahil@yahoo.com

❀

बिछड़ के जान गये हम थे बेख़बर कितना
हमें अज़ीज़ था अपना वो हमसफ़र कितना

युगों-युगों से भटकते हैं तुझसे मिलने को
छलेगी हमको ये मज़हब की रहगुज़र कितना

अगर नसीब ही पासों का खेल बन जाये
लगायें हम भी भला ख़ुद को दाँव पर कितना

ठिठुरती रात में काटी है ज़िंदगी जिसने
उसी ने धूप को पाया है मोतबर कितना

तमाम ज़िन्दगी काग़ज़-कलम में बीत गयी
दु:खों से काम लिया हमने उम्र भर कितना

लरज़ते दीप ने घबरा के जुगनुओं से कहा
लड़ेंगे हम भी अँधेरे से रात भर कितना

यूँ तो काँटों की राजधानी था
पर बज़ाहिर वो रातरानी था

जितने सपने हुए धराशायी
रंग सबका ही आसमानी था

कौन है वो जो सबको मार गया
मुझको लगता है ज़िन्दगानी था

मेरा किरदार मुझसे कहता है
तू किसी और की कहानी था

वो तबस्सुम सधा हुआ था बहुत
जाने किस दर्द की निशानी था

कैसी दुनिया बना के छोड़ गया
क्या ख़ुदा भी हमारा फ़ानी था

पैरहन सब हिरास बैठे थे
लोग क्यों बे-लिबास बैठे थे

आग रूहों के पास रक्खी थी
लोग जिस्मों के पास बैठे थे

रहमतें सब थीं देवदारों पर
हमने खोदी थी घास बैठे थे

मंज़िलें इन्तिज़ार करती थीं
रास्ते बदहवास बैठे थे

जो भी थे मेरे चाहने वाले
सब तेरे आस-पास बैठे थे

रंग गहरा रहा था दरिया का
दोनों 'साहिल' उदास बैठे थे

थकन की फ़ब्तियाँ छालों का दान माँगेगा
ज़माना मुझसे सफ़र के निशान माँगेगा

ज़रूरतों ने ही नोचे हैं बालो-पर इसके
मेरा ज़मीर किसी दिन उड़ान माँगेगा

ये इक पड़ाव भी आना है इश्क़ में शायद
जो थक के बैठ गया वो थकान माँगेगा

इसी उमीद में किरदार को बदलता हूँ
कभी तो कोई मेरी दास्तान माँगेगा

अभी जो तोड़ के सोया है अपनी गुड़िया को
उठेगा तो उसी गुड़िया में जान माँगेगा

नियम ही खेल के तुमने बदल दिये सारे
तो क्या शिकार भी इक दिन मचान माँगेगा

पूछ-पूछकर था भरमाया कौन हूँ मैं
लेकिन अब तक समझ न पाया कौन हूँ मैं

आग, हवा, पानी, मिट्टी, आकाश सनी
किसकी है ये पूरी काया कौन हूँ मैं

कौन मेरे भीतर है मेरा क्या है वो
क्या मैं उसका ही हूँ साया कौन हूँ मैं

कड़ी धूप में साथ मेरे चलते-चलते
पूछ रही है मेरी छाया कौन हूँ मैं

राग-द्वेष अलगाव-नेह पत्थर-दर्पण
क्या है मेरा कुल सरमाया कौन हूँ मैं

कभी बिखरता, कभी सँवरता रहता हूँ
कभी नहीं पूरा बन पाया कौन हूँ मैं

नाम : प्रो. वशिष्ठ अनूप
जन्मतिथि : 1962
शिक्षा : एम.ए., पी.एच.डी., डी. लिट.
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल और गीत-संग्रह : 1. स्वप्न के बाद 2. बंजारे नयन 3. रौशनी ख़तरे में है 4. बेटियों के पक्ष में 5. रौशनी की कोंपलें 6. अच्छा लगता है 7. मशालें फिर जलाने का समय है 8. तेरी आँखें बहुत बोलती हैं 9. इसलिए 10. बारूद के बिस्तर पर 11. घरों पर गिद्ध मड़राने लगे हैं (ग़ज़ल और गीत-संग्रह) इनके अलावा हिंदी ग़ज़ल का स्वरुप, प्रवृत्तियाँ, भाषा, शिल्प, व्याकरण, लिपि एवं आलोचना पर दर्ज़नों पुस्तकों का संपादन; साहित्यिक पत्रिका शब्दार्थ का संपादन
कुछ गीत फ़िल्मों और धारावाहिकों में, कुछ गीत और ग़ज़लें विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल
कुछ कविताओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद
व्यवसाय/सम्प्रति : प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी
संपर्क : 204/11, राजेन्द्र अपार्टमेंट, रोहित नगर (नरिया) वाराणसी - 221005
मोबाइल : 94158 95812
ई-मेल : vanoopbhu09@gmail.com

❀

उम्र तो है गुड़िया से खेलें, नज़र टिकी ग़ुब्बारों पर
नंगे पाँव चले हैं बच्चे, दहक रहे अंगारों पर

सर पर भारी बोझ लिये बैदेही पैदल भटक रही
टूटी चप्पल, दूर है मंज़िल, चलना है तलवारों पर

स्वाभिमान से जो जीते थे, आज भिखारी जैसे हैं
संकट में भी क्रूर सियासत, थू ढोंगी हत्यारों पर

कई दिनों से भूखी-प्यासी माँ की छाती सूख गई
नाज़ुक बच्चा हुआ अधमरा, लानत है मक्कारों पर

खाना नहीं मिला पर लाठी अक्सर ही खा लेते हैं
साँसें टँगी हुई हैं इनकी, मंज़िल की मीनारों पर

सब कुछ खोकर सड़क किनारे भी रुकने को जगह नहीं
नेताओं की हँसती फोटो चिपकी है दीवारों पर

रिक्शा, ठेला, साइकिल, पैदल, गिरते-पड़ते निकल पड़े
अकथ दर्द की कविता कैसे लिख दूँ इन बंजारों पर

मशालें जो हम-तुम जलाए हुए हैं
अँधेरे बहुत तिलमिलाए हुए हैं

उन्हें खल रही है ये हिम्मत हमारी
कि क्यों लोग परचम उठाए हुए हैं

दिलों में कोई आग दहकी हुई है
पलाशों के मुँह तमतमाए हुए हैं

हमारे पसीने की आभा है इनमें
जो गुल लॉन में मुस्कराए हुए हैं

ये बेख़्वाब आँखें, ये बेजान चेहरे
उन्हीं ज़ालिमों के सताए हुए हैं

अजब है जो निकले थे ज़ुल्मत मिटाने
वे दरबार में सर झुकाए हुए हैं

ये कब अंत:पुरों के रूप का गुणगान करती है
हमारी लेखनी तो सत्य का संधान करती है

रवायत जब जकड़ लेती है हमको बेड़ियाँ बनकर
कोई मीरा बग़ावत का तभी ऐलान करती है

नदी, पर्वत-पिता के घर दुबारा जा नहीं सकती
यही सब सोचकर रोते हुए प्रस्थान करती है

बग़ावत के बिगुल फूँकेगी इक दिन देख लेना तुम
जो पीढ़ी हर घड़ी अपमान का विषपान करती है

बुराई हर घड़ी काँटे बिछाती सबकी राहों में
भलाई दूसरों की मुश्किलें आसान करती है

दरवाज़े के पीपल जैसे सब सहते थे बाबूजी
हमें देखकर पढ़ते-लिखते, ख़ुश दिखते थे बाबूजी

अम्मा तो कह भी देती थीं, कभी-कभी मन की बातें
कम खाते थे, ग़म खाते थे, चुप रहते थे बाबूजी

पैरों में चप्पलें पुरानी, हर मौसम धोती-कुर्ता
दुबले तन पर मज़बूती से, सब सहते थे बाबूजी

फ़ीस, किताबें, होली-खिचड़ी, तीज, रज़ाई, मेला, हाट
बुनकर के ताने-बाने-सा, सब बुनते थे बाबूजी

घर भर की सारी ज़रूरतें गुप-चुप वो पढ़ लेते थे
अपनी कोई भी अभिलाषा कब कहते थे बाबूजी

नाती-पोतों की ख़ातिर वो कविता और कहानी थे
शाम ढले तो अक्सर यादों में बहते थे बाबूजी

था कहाँ तैयार झुकने को किसी दरबार में
पर ग़रीबी ले गई अपमान के संसार में

फिर किसी बुधिया की काया बेकफ़न रक्खी रही
फिर किसी होरी की बेटी बिक गई बाज़ार में

छोड़कर घर चल पड़ा हल्कू मजूरी के लिए
पेट तक भरता नहीं खेती के कारोबार में

रक़्स करती अप्सराएँ पारदर्शी वस्त्र में
संत जन दिखने लगे हैं काम के अवतार में

चारणी सत्ता की, विज्ञापन की हैं रंगीनियाँ
सच कहाँ तुमको मिलेगा आज के अख़बार में

नाम	: विकास
जन्मतिथि	: 31-12-1978
शिक्षा	: विधि स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ	: 'उछालो यूँ नहीं पत्थर' (ग़ज़ल संग्रह)
सम्मान/पुरस्कार	: अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति	: सदस्य स्थायी लोक अदालत, भागलपुर
संपर्क	: गुलज़ार पोखर, मुंगेर (बिहार) - 811201
मोबाइल	: 8709156853, 9934224359 (WhatsApp)
ई-मेल	: bikashmunger676@gmail.com

हवस परस्त है दिल का मकान ले लेगा
दिलों में रह के भी रिश्तों की जान ले लेगा

उसे तो फ़िक्र है अपनी ही हक़-परस्ती की
कभी ज़मीन, कभी आसमान ले लेगा

लबों के झूठ को सच में बदलने की ख़ातिर
वो अपने हाथ में गीता-क़ुरान ले लेगा

किसे पता था कि पैदल निकल पड़ेंगे सब
नया ये रोग ज़माने की शान ले लेगा

उसे यक़ीन न होगा मेरी वफ़ा पर तो
हँसी-हँसी में मेरा इम्तिहान ले लेगा

कभी जुनून की हद से जो दूर जाएगा
वो अपने हक़ में फ़लक का वितान ले लेगा

धूप की आहटें शजर भी है
और छोटा सा एक घर भी है

कुछ उधर की हवा शरारत की
कुछ नयी सी हवा इधर भी है

चलते-चलते कभी थका हूँ मैं
आज मुश्किल कोई सफ़र भी है

क्या करेंगे मुझे पता है सब
मेरी उनकी तरफ़ नज़र भी है

रोज़ होती है बात ग़ज़लों से
ज़िन्दगी में कोई बहर भी है

❀

प्यार धड़कन दिल नहीं है
आज ये महफ़िल नहीं है

क्या चलूँगा साथ तेरे
तू मेरे क़ाबिल नहीं है

मैं उसे कैसे सज़ा दूँ
क़त्ल में शामिल नहीं है

है नहीं आसान सब कुछ
हाँ मगर मुश्किल नहीं है

जल रहे बेख़ौफ़ दीपक
अब हवा क़ातिल नहीं है

❀

मुकम्मल काफ़िला टूटा पड़ा है
सफ़र में था नया टूटा पड़ा है

हुआ है क्या गली में आज यारो
किसी का देवता टूटा पड़ा है

चलेंगे दूर तक कैसे बताओ
यहाँ भी रास्ता टूटा पड़ा है

चराग़ों की नई तहज़ीब देखो
हवा का हौसला टूटा पड़ा है

बदल लो फ़ैसला ख़ामोश रहकर
तुम्हारा फ़ैसला टूटा पड़ा है

❀

नहीं है तुझमें वफ़ा की नीयत
है तुझमें शामिल दग़ा की नीयत

जला रहा हूँ चराग़ फिर से
पता है लेकिन हवा की नीयत

कहीं न कोई मिला सफ़र में
किसे बताऊँ घटा की नीयत

हरा रहेगा ये ज़ख़्म मेरा
नयी-नयी अब दवा की नीयत

फ़ज़ा में ख़ुशबू बिखर रही है
यही तुम्हारी अदा की नीयत

नाम	: विजय वाजिद
जन्मतिथि	: 14 सितंबर, 1968
शिक्षा	: M.A., B.Li.S.
प्रकाशित कृतियाँ	: रिसालों और अख़बारों में प्रकाशित
सम्मान/पुरस्कार	: कई अदबी इदारों से.. नवरंग लिटरेरी सोसाइटी, लुधियाना; अदबी कुंज, जम्मू, मेरठ लिटरेचर फेस्टिवल, मेरठ; ग़ज़ल कुंभ, दिल्ली, और भी कई
व्यवसाय/सम्प्रति	: सरकारी नौकरी
संपर्क	: गली नंबर-6, ईशर नगर, ब्लॉक-C, बैक साईड GNE कॉलेज, लुधियाना - 141006
मोबाइल	: 9779136576, 9463354684 (WhatsApp)
ई-मेल	: mvp-11@live.in / vijayvajid68@gmail.com

❀

भीड़ के मंज़र में कुछ दिलचस्पियाँ भी आएँगी
आज मेले में यहाँ पर लड़कियाँ भी आएँगी

देखने को खेल बच्चे धूप में बैठे रहे
जानते थे आख़िरी में कुल्फ़ियाँ भी आएँगी

ढूँढ़ना है हर किसी को अपना-अपना रोज़गार
जल उठे हैं दीप तो फिर आँधियाँ भी आएँगी

बंद दरवाज़ों के अंदर सोचता रहता हूँ मैं
इन मकानों में कभी तो खिड़कियाँ भी आएँगी

साज़िशों में सिर्फ़ शामिल तो न थे गन्दे दिमाग़
नाम जब आने लगे तो कुर्सियाँ भी आएँगी

हँस रहे हैं औरों की नाक़ामियों पर जो 'विजय'
ये कहो उनसे कि उनकी बारियाँ भी आएँगी

सुनी सुनाई हुई दास्तान बाक़ी है
नये नगर में पुराना मकान बाक़ी है

ये बात सुन के किसी को यक़ीं नहीं आता
कि मेरे शहर में अम्नो-अमान बाक़ी है

अभी नुमायाँ हैं आसार ज़िंदगानी के
अभी बदन में हरारत है, जान बाक़ी है

इसी मलाल में हैं मुझको लूटने वाले
कि मेरे सर पे अभी आसमान बाक़ी है

अभी कमी है 'विजय' उसकी मेहरबानी में
अभी कोई न कोई इम्तिहान बाक़ी है

दिखावे की सही लेकिन मुहब्बत करनी पड़ती है
हमें झूठे ज़माने की हिमायत करनी पड़ती है

यहाँ साँसों पे भी हक़मारी होती है ज़माने की
यहाँ जीने की ख़ातिर भी सियासत करनी पड़ती है

ज़माना हाथ ही जब काटने की सोच लेता है
हुनर वालों को भी फिर तो तिजारत करनी पड़ती है

बड़ी मजबूरियाँ हैं इस जहाँ में हम ग़रीबों की
कि जिनसे लुट रहे हैं उनकी इज़्ज़त करनी पड़ती हैं

कहाँ बच्चे समझते हैं किसी के मशविरों को भी
'विजय' माँ-बाप को लेकिन नसीहत करनी पड़ती है

है बाँटा पूरा ही संसार काग़ज़ पर
बनाकर उसने इक दीवार काग़ज़ पर

मुहब्बत, दोस्ती, दिल, प्यार काग़ज़ पर
ये लिखते ही गिरी तलवार काग़ज़ पर

नहीं घर तो बने, तोड़े गये लेकिन
बड़े सपने हुये साकार काग़ज़ पर

बनाकर टहनियाँ, कुछ तितलियाँ, कुछ फूल
बनाया हमने इक गुलज़ार काग़ज़ पर

बना तस्वीर पहले ठहरे पानी की
फिर इक लाकर तू पत्थर मार काग़ज़ पर

'विजय' भी कह रहा है घर बनाया है
बनाकर कुछ दरो-दीवार काग़ज़ पर

हर नज़र में भी रहे हुस्न-ए-ज़माना भी बने
हाँ मगर हर तीर का थे हम निशाना भी बने

इक शजर मैंने लगाया है यही बस सोचकर
छाँव भी दे, वो परिंदों का ठिकाना भी बने

चाहता हूँ बा-हुनर हो इस जदीदी दौर में
सीख जाये दाँव बेटा, कुछ सयाना भी बने

सोचता तो हूँ मगर कैसे बनेगी बात ये
खेत भी बच जायें मेरे कारख़ाना भी बने

किसलिए चुप है ज़ुबाँ इस पर ज़माने की 'विजय'
जो मुहब्बत की है हमने तो फ़साना भी बने

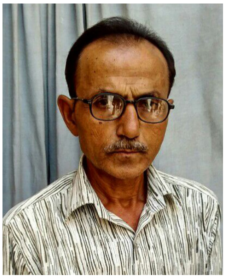

नाम	: विनय कुमार जायसवाल उर्फ़ विनय साग़र
जन्मतिथि	: 29 जनवरी 1953
शिक्षा	: इंटर
व्यवसाय/सम्प्रति	: पूर्व पत्रकार
संपर्क	: 846, शाहबाद, गोंदनी चौक, बरेली - 243003
मोबाइल	: 8218594623, 7520298865 (WhatsApp)
ई-मेल	: vinayjaiswal 2901@gmail.com

❀

जिस ओर देखियेगा उधर भेड़चाल है
अहले-ख़िरद की सोच भी यूँ पायमाल है

ऐ दोस्त एहतियात से चल के भी थक गये
इस दौर की फ़िज़ाओं में जीना मुहाल है

पंछी के जैसे क़ैद में इंसान जी रहा
आलम ही इस जहान का अब ख़स्ता-हाल है

मजबूर होके ग़म को लगाना पड़ा गले
ढूँढे कहाँ ख़ुशी को अलम डाल-डाल है

हर आदमी है आज परेशाँ ये सोचकर
क़ुदरत से पार पाना भी किसकी मजाल है

इक शै में दिख रही है हमें मात ही फ़क़त
शतरंज की बिसात पे ये कैसी चाल है

'साग़र' ग़ज़ल में हुस्न का चर्चा भी क्या करें
हर इक ख़याल में ही ग़मों का ख़याल है

❀

तुम प्यार में मुझको ये सज़ा तो नहीं दोगे
मिलने की मियादों को घटा तो नहीं दोगे

मैं पीछे पड़ी रहती हूँ हरदम ही तुम्हारे
इल्ज़ाम मेरे सर ये लगा तो नहीं दोगे

आती हूँ मैं छुप-छुप के सहर शाम ही मिलने
ये बात ज़माने को बता तो नहीं दोगे

परदेस चले जाओ मगर इतना बता दो
तुम मेरी मुहब्बत को भुला तो नहीं दोगे

इक रोज़ यही देंगे मुहब्बत की गवाही
ख़त मेरे कहीं तुम ये जला तो नहीं दोगे

रक्खे थे किताबों में जो दोनों के तबस्सुम
वो अपनी किताबों से हटा तो नहीं दोगे

❀

अगरचे इक घड़ी को मेरी ये तदबीर सो जाती
किसी की ज़ुल्फ़ ही मेरे लिए ज़ंजीर हो जाती

कहीं भी चैन से रहने नहीं देती मुझे ज़ालिम
ये तेरी याद जो हर दिन नई इक पीर बो जाती

हमारे प्यार का छप्पर कभी ये गिर नहीं पाता
निगाहे-यार गर बनकर खड़ी शहतीर हो जाती

ये आहों की नदी बहने न दी आँखों से यूँ हमने
किताबे-दिल पे ये लिक्खी हुई तहरीर धो जाती

किसी के हुस्न की रानाइयों में यूँ नहीं डूबे
यही था डर हमें तेरी कहीं तस्वीर खो जाती

हमीं ने तोड़ दी तक़दीर की ज़ंजीर ऐ 'साग़र'
वगरना उम्र भर इंसान की तदबीर सो जाती

वो अश्क हर नज़र में थे इक-इक करोड़ के
दामन सजा रहा था कोई दिल निचोड़ के

तुम जामे-ग़म गये जो मेरे नाम छोड़ के
वो पी रहा हूँ आज भी 'साग़र' निचोड़ के

उसके मिलन का कितना नज़ारा हसीन था
माला बनाई उसने दुपट्टा मरोड़ के

करता है एहतियात से वो शख़्स गुफ़्तगू
लफ़्ज़ों को तोड़ के कभी लफ़्ज़ों को मोड़ के

इक दिन उफ़क़ पे होगा मेरे दिल का आफ़ताब
सीढ़ी बना रहा हूँ हर इक दिल को जोड़ के

यारो ग़रूरे-हुस्न का आलम तो देखना
क्या लुत्फ़ ले रहा है वो आईना तोड़ के

❀

देख लेता हूँ तुम्हें ख़्वाब में सोते-सोते
चैन मिलता है शबे-हिज्र में रोते-रोते

इक ज़रा भीड़ में चेहरा तो दिखा था उसका
रह गई उससे मुलाक़ात यूँ होते-होते

इक तिरे ग़म के सिवा और बचा ही क्या है
बच गई आज ये सौग़ात भी खोते-खोते

प्यार फलने ही नहीं देते बबूलों के शजर
थक गये हम तो यहाँ प्यार को बोते-बोते

बेवफ़ा कह के चिढ़ाता है ज़माना उसको
मर ही जाये न वो इस बोझ को ढोते-ढोते

आ गया फिर कोई गुलशन में शिकारी शायद
हर तरफ़ दिख रहे आकाश में तोते-तोते

❀

नाम : विज्ञान व्रत
जन्मतिथि : 17 अगस्त 1943
शिक्षा : बी.ए. हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी तथा चित्रकला
एम.ए. ललित कला
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह* : 'बाहर धूप खड़ी है', 'चुप की आवाज़', 'जैसे कोई लौटेगा', 'तब तक हूँ ', 'मैं जहाँ हूँ'; *दोहा संग्रह* : 'खिड़की भर आकाश'; *नवगीत संग्रह* : 'नेपथ्यों में कोलाहल'; *ग़ज़ल संचयन* : 'लेकिन ग़ायब रौशनदान', 'मेरा चेहरा वापस दो', 'याद आना चाहता हूँ '
सम्मान/पुरस्कार : *साहित्य के क्षेत्र में* : 'अन्तर्राष्ट्रीय वातायन सम्मान' (लन्दन), 'सुरुचि सम्मान' (गुरूग्राम), 'परम्परा सम्मान' (बिजनौर), 'सारस्वत-समन्वय सम्मान' (सहारनपुर), 'हिन्दी गौरव सम्मान' (नीदरलैंड), 'साहित्य सम्मान' (सिंगापुर), 'कंवल सरहदी सम्मान' (मेरठ), 'मनु स्मृति सम्मान' (दिल्ली), 'नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहानसबर्ग में, काव्य पाठ के लिये आमन्त्रित', 'साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा, काव्य पाठ के लिये आमन्त्रित'
कला के क्षेत्र में : 'ललित कला अकादमी लखनऊ द्वारा पुरस्कृत', 'संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सीनियर फ़ैलोशिप', 'IAFA अमृतसर द्वारा पुरस्कृत', 'ललित कला अकादमी दिल्ली द्वारा मेरे चित्रों का प्रदर्शन', 'आईफ़ैक्स दिल्ली द्वारा सम्मानित'

व्यवसाय/सम्प्रति : कृषि, लेखन तथा चित्रकला
संपर्क : एन-138, सैक्टर-25, नोएडा - 201301
मोबाइल : 98102 24571(WhatsApp)
ई-मेल : vigyanvrat@gmail.com

ख़ामुशी मेरी ज़बाँ है
वो मगर सुनता कहाँ है

सामने हैं आप लेकिन
आप तक रस्ता कहाँ है

जानता हूँ दुश्मनों को
फिर मुझे ख़तरा कहाँ है

छोड़िए भी मुस्कुराना
दर्द चेहरे से अयाँ है

ढूँढना क्या है तुझे अब
मैं जहाँ हूँ, तू वहाँ है

❀
वो मेरा चेहरा न हुआ
मैं भी शर्मिन्दा न हुआ

उसका मैं हिस्सा न हुआ
मुझको ये धोखा न हुआ

सब उसका सोचा न हुआ
वो मेरा रस्ता न हुआ

जब उसकी भाषा न हुआ
तो मेरा चर्चा न हुआ

होने को क्या-क्या न हुआ
मैं ही बस अपना न हुआ

❀
उसने ख़ुद को पाने तक
छाने हैं तहख़ाने तक

बस किरदार बचाने तक
ज़िन्दा है मर जाने तक

सिर्फ़ मुझे ही सोचेगा
वो मुझसा हो जाने तक

मुझको ढूँढ न पाएगा
मुझमें गुम हो जाने तक

बिल्कुल बे-पहचान हुआ
इक पहचान बनाने तक

जाने कितनी बार मरा
वो आख़िर मर जाने तक

मुझ पर कर दो जादू-टोना
एक नज़र ऐसे देखो ना

इतने दिन में घर आये हो
घर जैसे कुछ देर रहो ना

बादल हो तुम या ख़ुशबू हो
बरसो खुलकर या बिखरो ना

ढूँढ न पाया ख़ुद को घर में
छान फिरा हूँ कोना-कोना

तुमसे ख़ुद को वापस क्या लूँ
रक्खो अब तुम ही रक्खो ना
❀

और सुनाओ कैसे हो तुम
अब तक पहले जैसे हो तुम

अच्छा अब ये तो बतलाओ
कैसे अपने जैसे हो तुम

यार सुनो घबराते क्यूँ हो
क्या कुछ ऐसे-वैसे हो तुम

क्या अब अपने साथ नहीं हो
तो फिर जैसे-तैसे हो तुम

ऐशपरस्ती ? तुमसे ? तौबा !!
मज़दूरी के पैसे हो तुम
❀

नाम	: शब्बीर अहमद
जन्मतिथि	: 27-05-1964
शिक्षा	: आई कॉम
प्रकाशित कृतियाँ	: गुलबुन, माहरुख़, हिदायत, इन्शा, शहूद, रूहे-अदब, तीर-ए-नीमकश, हाली, सूरत इत्यादि पत्रिकाओं में ग़ज़लें प्रकाशित
सम्मान/पुरस्कार	: ग़ालिब अवार्ड के.जी.एन. वेलफ़ेयर एजुकेशन एंड कल्चर सोसाइटी, प्रेस क्लब डिहरी, उर्दू निदेशालय, पटना इत्यादि द्वारा सम्मानित
व्यवसाय/सम्प्रति	: वसीका नवीसी सह अधिवक़्ता लिपिक
संपर्क	: खिलनगंज, थाना-पोस्ट सासाराम ज़िला रोहतास बिहार - 821115
मोबाइल	: 75493 12215 (WhatsApp)

आँख से टपका पानी देख
दरिया की तुग़्यानी देख

कितने चेहरे निगल गया
वक़्त का तेवर फ़ानी देख

सन्नाटों को चीर गई
कोई बला तूफ़ानी देख

चेहरा-चेहरा अफ़्सुर्दा
घर-घर है वीरानी देख

औरों पे तनक़ीद न कर
तू है कितना ज्ञानी देख

दीवारों पे रौशन हैं
आयाते-क़ुरआनी देख

साथ न दे 'शब्बीर' तेरा
ये मग़रूर जवानी देख

❀

उजड़ी-उजड़ी सी ये हयात न ले
मुझसे ज़ख़्मों की कायनात न ले

छोड़ जायेंगे लोग राहों में
सबके हमराह अपनी ज़ात न ले

अक्स अपना तुझे डराएगा
दिल से अंदेशा-ए-निजात न ले

दिल में यादों का अक्स रहने दे
मेरा सरमाया-ए-हयात न ले

कौन था जिसने ये कहा 'शब्बीर'
अपने दामन में काली रात न ले

❀

शोर तनहाई के मकान में है
कौन पोशीदा मेरी जान में है

वो थकन का शिकार क्या होगा
जो परिंदा नयी उड़ान में है

धूप दह्लीज़ पे खड़ी है मगर
तीरगी अब भी सायबान में है

दे न पायेगा वो जवाब मिरा
गुम अभी अपने ही धियान में है

वो मिरी दस्तरस से है बाहर
और ये भी गुमाँ कि जान में है

सच है 'शब्बीर' हर ख़ुशी अपनी
ख़्वाहिशों की नयी दुकान में है

दिल को अक्सर तड़पाया है ऐसे कई सवालों ने
रस्ते का क्यों पत्थर जाना मुझको दुनियावालों ने

दुःख का चेहरा कौन पढ़ेगा किसको इतनी फ़ुर्सत है
बीनाई तो छीन ली सबकी अब रंगीन रिसालों ने

अँधे कुँए में वक़्त के रह के मैंने जीना सीख लिया
वो मंज़िल तक कैसे पहुँचे लूटा जिसको उजालों ने

दश्ते-हया से पिछले पहर शब कौन इधर से गुज़रा है
मुझसे पूछा मेरे दिल की दौलत लूटने वालों ने

❀

बहुत ज़ख़्म खाए सँभलते रहे
बसर ज़िन्दगी यूँ भी करते रहे

हम हैं इक दुःखी की सदा दोस्तो
ये फ़ितरत है अपनी कि हँसते रहे

जलाकर लहू का दिया रात-भर
हथेली की तहरीर पढ़ते रहे

हर इक सम्त बस राख का ढेर था
मकाँ आग की लौ में जलते रहे

तू अब तक रहा मुझसे ना-आशना
तेरे साथ सदियों से चलते रहे

उमीदों का दामन न हाथ आ सका
खिलौनों से सदियों बहलते रहे

वो टूटा हुआ ख़्वाब था आज तक
जो पलकों पे 'शब्बीर' चुनते रहे

❀

नाम : शरद रंजन 'शरद'
जन्मतिथि : 19 अप्रैल, 1958
शिक्षा : स्नातकोत्तर
प्रकाशित कृतियाँ : 'एक ही तो है आखर' भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित, 'आदमी के लिए जगह' प्रकाशनाधीन
सम्मान/पुरस्कार : लेखन व पत्रकर्म के लिए विभिन्न सम्मान
व्यवसाय/सम्प्रति : पत्रकारिता, संपादन एवं रंगकर्म, देश के एक बड़े समाचार पत्र समूह के मुंबई एवं पटना संपादकीय कार्यालय में वरीय पदों पर कार्य, कुछ पत्र-पत्रिकाओं में संपादन सहयोग, आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी संबद्ध
संपर्क : 'जिजीविषा', राम-रमा कुंज, विवेक विहार, हनुमान नगर, पटना - 800020
मोबाइल : 73198 80575 (WhatsApp)
ई-मेल : sharadranjansharad@gmail.com

ज़रूरी है नहीं हर ज़ुल्म का चेहरा दिखाई दे
किसी आईने में सब कुछ कहाँ सच्चा दिखाई दे

अकेले में कभी बातें बहुत करता है ख़ुद से वो
जो भारी भीड़ में चलते हुए तन्हा दिखाई दे

भरोसा है सँभालेगा अगर मुश्किल पड़ी कोई
अलग होकर भी अपने साथ ही साया दिखाई दे

भरे पूरे यहाँ लगते हैं सब इफ़रात में लेकिन
बहुत ख़ाली मेरी उम्मीद से दुनिया दिखाई दे

बढ़ाता हौसला बच्चा वही दु:ख-दर्द में भी जो
बहाकर अश्क आँखें पोंछता हँसता दिखाई दे

अलग लगते भले जड़ और चेतन सच तो है फिर भी
सभी में कण वही तो सृष्टि का पहला दिखाई दे

ये माना हर तरफ़ फैला है ज़ुल्मत का घना साया
'शरद' मुमकिन कहीं सूरज नया उगता दिखाई दे

चलें हवायें ज़रा धूप भी तो आने दो
बँधी क्यों ज़िंदगी इसको तो कोई माने दो

न फेरो मुँह जो बनाते उन्हें बनाने दो
बची है दोस्ती थोड़ी उसे निभाने दो

गुज़ारो वक़्त तो कुछ कर गुज़रना हो मक़सद
कहोगे रास्तों से कब तलक कि जाने दो

जुटाया जोड़ा बहुत पर किसी की ख़ातिर कब
दो पानी पौधों को इन पंछियों को दाने दो

भरा ख़ज़ाना बड़ा मान फिर भी बेचैनी
कहाँ सँजोये वो माँ से मिले जो आने दो

ख़ुशी जहाँ मिले जितनी सँभाल कर रखना
ग़मों के साथ जो रिश्ता उसे निभाने दो

अभी है क्या पता कहकर चला जाये
जो बिखरा है उसे तह कर चला जाये

ठहर कर सोच कर आये नया अनुभव
जमी संवेदना महकर चला जाये

नदी से क्यों अलग तट इस तरह कटकर
न ऐसा हो कि सब बहकर चला जाये

कहीं दिखता न कोई सच भरा पूरा
वो थोड़े दिन सही रहकर चला जाये

नहीं होता कभी इतिहास बेबुनियाद
क्यों यूँ ही भीत सा ढहकर चला जाये

कहाँ मिलता है दिल इन महफ़िलों में अब
कोई तो हाथ ये गहकर चला जाये

दुनिया की सूरत ही बदल जायेगी
ये औरत जो घर से निकल जायेगी

सब भागेंगे उड़न खटोलों पर चढ़
वो लथपथ पाँवों के बल जायेगी

गेंद समझ कर फेंक रहे आज़ादी
गिर-गिर कर कैसे वो सँभल जायेगी

थामा है जब उम्मीदों का दामन
क्यों मायूस हो रुत ये बदल जायेगी

उबल रहा कुछ फिर बाहर आने को
आँख भरी तो रूह भी जल जायेगी

शोर हश्र का फिर भी आगे दुनिया
कितनी भी हो उथल-पुथल जायेगी

एक तिनका भी उड़ता आ पहुँचा
कुछ तो जीने का हौसला पहुँचा

हो के लथपथ जो हैं खड़े बेहाल
पास उनके भी कुछ दुआ पहुँचा

मुफ़लिसों के लिए चला था वो
पर बहुत कुछ जहाँ मिला पहुँचा

ज़र्रा-ज़र्रा बड़े हिसाब से था
टूटकर क्यों हिरोशिमा पहुँचा

सारे पन्ने उड़ा गई आँधी
जो रचा हर तरफ़ दिया पहुँचा

फ़िक्र क्यों ख़त में जब पता पूरा
देख वो डाकिया भी आ पहुँचा

नाम	: शाहजहाँ शमसुद्दीन खान 'शाहजहाँ शाद'
जन्मतिथि	: 14-8-1961
शिक्षा	: बी.एस.सी.
प्रकाशित कृतियाँ	: 1.' वो ' देवनागरी; 2.' हम' देवनागरी 3.' तुम ' देवनागरी; 4.' काग़ज़ी फूल' 5.' फिर यूँ हुआ ' उर्दू में; 6.' दर्द जागा है ' उर्दू में 7.' ग़म नहीं है ' उर्दू में (प्रेस में)
सम्मान/पुरस्कार	: गुजरात साहित्य एकादमी से तीन बार पुरस्कृत
व्यवसाय/सम्प्रति	: बिज़नस
संपर्क	: 171, रंग अवधूत सोसायटी-2, रामनगर, रांदेर रोड, सूरत, गुजरात - 395005
मोबाइल	: 7984386043, 9879506884 (WhatsApp)
ई-मेल	: Shaadkhan41@gmail.com

❀

रस्ता नहीं जहाँ, वहाँ रस्ता निकालिए
सहरा के दिल को चीर के दरिया निकालिए

मुश्किल घड़ी है सोचिए रुक-कर ज़रा हुज़ूर
चलने से पहले पाँव से काँटा निकालिए

दौलत भी आप ही की है मेहनत भी आपकी
लेकिन ग़रीब लोगों का हिस्सा निकालिए

लहजे से बेलिबास तो पहले से आप हैं
अब नोच के बदन से भी कपड़ा निकालिए

लड़ियेगा जंग बाद में पर उससे पेश्तर
दुश्मन की सोच-ओ-फ़िक्र का नक़्शा निकालिए

किसको है मरना बाद में और किसको पेश्तर
चलिए उछाल लेते हैं सिक्का निकालिए

दर्द की इन्तहा हुए हम-तुम
इक लुटा क़ाफ़िला हुए हम-तुम

ये बिछड़ना नहीं उजड़ना था
जिस तरह से जुदा हुए हम-तुम

जिसका मुमकिन नहीं इलाज कोई
ऐसा इक मसअला हुए हम-तुम

जिसको इन्साफ़ की ज़रूरत है
वो ग़लत फ़ैसला हुए हम-तुम

जो न पहुँचेगा अपनी मंज़िल तक
अब वही रास्ता हुए हम-तुम

जो कभी भी क़ुबूल होती नहीं
वो लबों की दुआ हुए हम-तुम

मैं हूँ रस्ता नहीं हूँ मंज़िल मैं
कशमकश हूँ नहीं हूँ हासिल मैं

वक़्त ने मुँह पे मारा है थप्पड़
वक़्त से हो गया था ग़ाफ़िल मैं

करते कोशिश तो मैं सुलझ जाता
मैं हूँ आसाँ, नहीं हूँ मुश्किल मैं

तुम पुकारो मुझे मैं हाज़िर हूँ
तुम समन्दर हो और साहिल मैं

तुम बताओ किसे सज़ा दोगे
मैं ही मक़्तूल और क़ातिल मैं

एक जाहिल को मैं कहूँ जाहिल
फिर वो बेहतर है और जाहिल मैं

तेरे मरने से मेरे मरने से
कुछ नहीं होगा आह भरने से

इश्क़ तो अपने आप होता है
इश्क़ होता नहीं है करने से

तुम उजड़ना किसी का क्या समझो
तुमको फ़ुर्सत नहीं सँवरने से

काम ख़ामोश रह के होता है
नाम होता है शोर करने से

इन गुलाबी लबों पे है लानत
वादा करके तेरे मुकरने से

ये मुहब्बत कहीं न मर जाये
तेरे इतने सवाल करने से

आपको शिकवा ज़िन्दगी से है
और मुझे मेरी मुफ़्लिसी से है

ऐसे भी लोग हैं ज़माने में
जिनको तकलीफ़ हर किसी से है

रौशनी होगी किस तरह हासिल
आपको इश्क़ तीरगी से है

क्यूँ लगाती हो रंग होंटों पर
इसकी क़ीमत तो सादगी से है

तेरा अन्जाम मुझको है मालूम
दोस्ती तेरी मतलबी से है

दो घड़ी तो हमारी बीत गयी
अब तो मतलब भी दो घड़ी से है

नाम : शिव कुमार 'पराग'
जन्मतिथि : 03 जुलाई, 1959
शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा गाँव में, माध्यमिक शिक्षा क्वींस कॉलेज, वाराणसी, उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से
प्रकाशित कृतियाँ : 'देख सको तो देखो' (ग़ज़ल संग्रह)-1993, 'देश बड़ा बेहाल' (दोहा संग्रह)-2000, 'बर्फ़ की तहें टूट रही हैं (मुक्तछंद कविताएँ)-2001, 'रौशनी के शब्द' (गीत संग्रह)-2003, 'काहें रउवा बानी मनबेधिल' (भोजपुरी कविताओं का संग्रह)-2003, कई पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
'नया सप्तक', 'वसुधारा', 'रौशनी के शब्द', 'ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद', 'ग़ज़ल यात्रा', 'समकालीन हिन्दी ग़ज़लें.. 'हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी-1', 'भोर की आहट', 'हिन्दी ग़ज़ल एक प्रतिमान', 'प्रतिरोध 'विरासतों के साये से निकलकर, 'नवगीत नई दस्तकें', 'नई सदी के प्रतिनिधि दोहाकार', 'दोहा-दशक-3', ' कबीर से उत्तर कबीर' आदि कविता संकलनों में रचनाएँ संग्रहित
सम्मान/पुरस्कार : 'परिवेश सम्मान', मुरादाबाद (उ.प्र.)-2003, विद्याश्री न्यास से 'पं. श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान'-2017, 'सोच-विचार पत्रिका/साहित्यिक संघ, वाराणसी द्वारा सेवक साहित्य श्री सम्मान'-2018, 'ठाकुर प्रसाद सिंह स्मृति सम्मान'-2018
अन्य : आकाशवाणी व दूरदर्शन से रचनाएँ प्रसारित, जन-आन्दोलनों में रचनाएँ, इप्टा, जसम तथा अन्य नुक्कड़ नाट्य टीमों के साथियों के साथ
व्यवसाय/सम्प्रति : 'अभिनव क़दम', (पत्रिका) के सम्पादन से सम्बद्ध
संपर्क : एस-ए-5/140, एस-10, संजय नगर कॉलोनी, अकथा, रमरेपुर, वाराणसी - 221007 (उ.प्र.)
मोबाइल : 9415694361

❀

आँखों से नींद दूर कहीं जाने लगी है
आँगन को बाँटने की महक आने लगी है

लौटा हूँ घर से दर्द, चुभन, उलझनें लिये
मुझ पर उदास रात क़हर ढाने लगी है

भाई की, माँ की, बाप की यादों को क्या कहूँ
रह-रह के मेरी आँख डबडबाने लगी है

'तुम हो तो क्या नहीं है' कहा करते थे जो लोग
अब उनकी नज़र जेब से टकराने लगी है

मन की हज़ार पर्तों के भीतर दबी पड़ी
अनबन न जाने कैसे सर उठाने लगी है !

❀
सिंहासन पा गये हैं
बहुत इतरा गये हैं

सही को देखते ही
ग़लत झुँझला गये हैं

उजाला चाहिए था
अँधेरे छा गये हैं

वे ख़तरे क्यों उठायें
जो सब कुछ पा गये हैं

हमें जाना कहाँ था
कहाँ हम आ गये हैं

❀
भूख से बच्चे मेरे अकुला गये
चाँद को रोटी समझकर खा गये

स्वागतम के पोस्टर दिखने लगे
लग रहा है शहर में हम आ गये

आस्तीनें कल अचानक हँस पड़ीं
हम ठगे से रह गये, घबरा गये

रस्सियों पर चलते नट की आँख में
याचना के स्वर मुझे उलझा गये

कटते-कटते रात आख़िर कट गयी
चलते-चलते हम सवेरा पा गये

देश-दुनिया से कट रहे हैं लोग
और ख़ुद में सिमट रहे हैं लोग

इतने मज़हब हैं जोड़ने के लिये
और तेज़ी से बँट रहे हैं लोग

संतुलन हो तो किस तरह हो जब
सत्य की ओर घट रहे हैं लोग

भूलकर आचरण का अनुशासन
संस्कारों को रट रहे हैं लोग

रेत को जल समझ के दौड़े हैं
जल से अब दूर हट रहे हैं लोग
❀

ऐसी कविता प्यारे लिख
जो मन को झँकारे लिख

लौट के धरती पर आ जा
अब ना चाँद-सितारे लिख

हवा-हवाई ही मत रह
कुछ तो ठोस-करारे लिख

पाला मार रहा, सबको
लिख, जलते अंगारे लिख

समझौतों की रुत में भी
ख़ुद्दारी ललकारे लिख

सिर पर है बाज़ार चढ़ा
जो ये ज्वार उतारे लिख

हार-जीत जो हो, सो हो
लेकिन मन ना हारे लिख
❀

नाम : शुचि 'भवि'
जन्मतिथि : 24 नवंबर
शिक्षा : एम.एस.सी. (इलेक्ट्रॉनिक्स, गोल्डमेडलिस्ट), बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ : 1. 'मेरे मन का गीत' (ओ३म् दोहा चालीसा), 2. 'बाँहों में आकाश' (दोहा सतसई), 3. 'सबसे अच्छा काल' (बाल दोहा शतक), 4. 'ख़्वाबों की ख़ुशबू' (काव्य संग्रह), 5. 'आर्यकुलम् की नींव' (महर्षि दयानंद दोहा शतक), 6. 'मसाफ़त-ए-ख़्वाहिशात' (ग़ज़ल संग्रह)
अन्य प्रकाशन विवरण : 1. 'दोहा एकादशी', 'दोहा दुनिया', दोहा मंथन, 'विविध प्रसंग', 101 महिला ग़ज़लकार, कथांजली व बूँद-बूँद में सागर (लघुकथा संग्रह), शेषामृत (गीत संग्रह) व अन्य साझा संकलन; 2. हरिगंधा, अदबी दहलीज़, अर्बाबे-क़लम आदि पत्रिकाओं सहित अनेक समाचार पत्रों एवं ई-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन; अन्य-दूरदर्शन व आकाशवाणी रायपुर से रचनाओं का समय-समय पर प्रसारण
सम्मान/पुरस्कार : 1. शारदा साहित्य मंच खटीमा (उत्तराखंड) द्वारा प्रदत्त- 'दोहा-शिरोमणि' की मानद उपाधि, 2. दोहा दंगल साहित्य मंच (साहिबाबाद) द्वारा प्रदत्त-'दोहा रत्न' की मानद उपाधि, 3. विश्व वाणी हिन्दी संस्थान जबलपुर द्वारा 'दोहा श्री' अलंकरण, 4. छन्द-मुक्त अभिव्यक्ति मंच द्वारा 'गुरूत्व' एवं 'शब्द श्री' सम्मान, 5. छंदमुक्त अभिव्यक्ति मंच द्वारा प्रदत्त 'सृजन सम्मान', 'शब्द शिल्पी' सहित समय-समय पर अनेक सम्मान
व्यवसाय/सम्प्रति : अध्यापन, डिपार्टमेंट हेड (फ़िज़िक्स)
संपर्क : बी-512, सड़क-4, स्मृति नगर, भिलाई नगर - 490020 छत्तीसगढ़
मोबाइल : 98268 03394 (WhatsApp)
ई-मेल : shuchileekha@gmail.com

ज़माना हमको ख़ुद से भी किसी दिन दूर कर देगा
सँभालें ख़ुद को हम कैसे हमें मग़रूर कर देगा

तुम्हारे पास दिल है देख लो शीशा नहीं कोई
तो मामूली सा इक पत्थर इसे क्या चूर कर देगा

जो फ़न से दूर लेकिन ग़ैर के रहमो-करम पर हैं
उन्हें भी देख लेना कल कोई मशहूर कर देगा

वो शाइर है नशा तुमसे ज़ियादा रख के चलता है
अरे साक़ी ज़रा सम्हलो तुम्हें मख़मूर कर देगा

जो 'भवि' ये चाहती है हो भलाई सारी दुनिया की
उसे चाहेगा तू भी दिल तेरा मजबूर कर देगा

सुन के आसान बड़ा लगता है
सच पे चलिए तो पता लगता है

हम नज़र आते नहीं हैं उनको
आँख में तिनका पड़ा लगता है

बात करता है उसूलों की बहुत
शहर में वो तो नया लगता है

अम्न के शह्र में दंगे हैं बहुत
बदला-बदला सा समा लगता है

लाशें सब जलते हुए देखते हैं
'भवि' लहू सबका जमा लगता है

इन खिलौनों से बहुत ही दूर हैं
हम फ़क़त बच्चे नहीं मज़दूर हैं

सरहदों पे जो जवाँ जख़्मी पड़े
अपनी माँ की आँखों के वो नूर हैं

जिनके दम से कल निखरते थे सभी
आज ख़ुद ही वो हुए बेनूर हैं

फ़न जिन्हें ढोलक बजाने का नहीं
उनको क़िस्मत से मिले संतूर हैं

सो नहीं सकते जो बेटी हो जवां
बाप इतने क्यों भला मजबूर हैं

दर्द दुनिया के लिए 'भवि' जो बने
आज उन्हीं के पास सुख भरपूर हैं

वो जो ऊँचे मकान वाले थे
कागज़ी बस बयान वाले थे

मोह उनसे कहो है इतना क्यों
सिर्फ़ क्या वो ज़ुबान वाले थे

आज क्या हाल उनका है देखो
जो कभी आसमान वाले थे

रात-दिन धन जिन्होंने पूजा है
संत क्या वो निशान वाले थे

अपनी क़िस्मत से क्यों गिला होगा
हम भी तो ख़ुद अज़ान वाले थे

उनकी ख़ुश्बू से 'भवि' भी जो महकी
इत्र की वो दुकान वाले थे

भला कोई किसी का है कहाँ सारे ज़माने में
लगे हैं सबके सब इक दूसरे को आज़माने में

हमेशा उसकी थी, उसकी हूँ, उसकी ही रहूँगी मैं
मज़ा आता है फिर भी जाने क्यों उसको जलाने में

कहानी लिख रहे हैं ग़ैर के बदनाम पहलू पर
भले हों लाख वो बदनाम ख़ुद अपने फ़साने में

भले गुरबत में है लेकिन अजब दौलत कमाता है
दुआयें रोज़ मिलती हैं उसे पानी पिलाने में

सरलता से कहा है सच, लगे अच्छा-बुरा जो भी
सुकूँ मिलना नहीं 'भवि' को कभी बातें बनाने में

नाम : संदेश जैन 'संदेश'
जन्मतिथि : 30.01.1980
शिक्षा : नर्सिंग
सम्मान/पुरस्कार : काव्य सुधा गौरव सम्मान ; जैन गौरव सम्मान
व्यवसाय/सम्प्रति : मेल नर्स
संपर्क : कोठारी हवेली के सामने महालक्ष्मी चौक, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मोबाइल : 97990 80559 (WhatsApp)
ई-मेल : sandeshj92@gmail.com

कोरोना को हराने की शिद्दत बनी रहे
निकलो न आप घर से ये आदत बनी रहे

आए न नौबतें कभी फैले मरज़ यहाँ
मेरे ख़ुदा वतन पे इनायत बनी रहे

चूँ फैलता है आदमी से आदमी में ये
दूरी बनाइए ये ज़रूरत बनी रहे

हाथों को बार-बार ही धोना है दोस्तों
कोरोना से तुम्हारी हिफ़ाज़त बनी रहे

अब हैण्ड शेक छोड़ नमस्ते करें हुज़ूर
आदत बनी रहे ये रवायत बनी रहे

कर्तव्य पर डरे बिना रहते हैं रात-दिन
कोरोना कर्मवीरों की इज़्ज़त बनी रहे

'संदेश' वायरस को हरायेंगे एक दिन
मिल-जुल के काम करने की आदत बनी रहे

मेरी आँखों से आब ले जाओ
चाहे जो भी जनाब ले जाओ

तेरी यादों में जो बहें शब भर
आँसुओं का हिसाब ले जाओ

बद-नज़र से तुम्हें बचायेगा
साथ अपने हिजाब ले जाओ

वो नवाज़ेगा अपनी रहमत से
नेकियाँ बेहिसाब ले जाओ

नफ़रतों के सवाल हो लाखों
बस मुहब्बत जवाब ले जाओ

दे दो कुछ तो सुकून इस दिल को
दर्दे-दिल इज़्तिराब ले जाओ

हवायें भी बदली सी है इस गगन में
ख़िज़ाँ का है मौसम अभी इस चमन में

चराग़ों को दर पर जलाये ही रखना
बहुत तीरगी है अभी अंजुमन में

है सहमा बशर भी डरी सी हवायें
सिहरने लगा है अजब डर बदन में

सियासत की चालें ये मज़हब के झगड़े
घुली नफ़रतें क्यूँ हैं मेरे वतन में

ज़माने से बढ़ती गई है रक़ाबत
बसाया है जबसे तुम्हें अपने मन में

जिन्हें अपना समझा वो निकले पराये
सुनें दर्द क्या वो तो हैं अपनी धुन में

चेहरे का है या नूर कोई माहताब का
मिलता नहीं जवाब तुम्हारे शबाब का

कोई नज़र न बद लगे तुझको मेरे सनम
रखना जमाल पर सदा पहरा हिजाब का

अब तो बता दे मुझको ख़ताएँ मेरी सनम
बरसों से मुन्तज़िर हूँ मैं तेरे जवाब का

क़ातिल निगाहें तेरी अदायें ये शोख़ियाँ
दीवाना दिल को कर रहा नखरा जनाब का

बहके से हैं क़दम मेरे छू कर तेरा बदन
बदनाम व्यर्थ में हुआ प्याला शराब का

रौशन हुई अँधेरी डगर तेरे नाम से
तेरे ख़याल में है गुमाँ आफ़ताब का

बरसे जम के सवाब की बारिश
काश हो ऐसी आब की बारिश

नेकियाँ डाल दे तू दरिया में
फिर न होगी अज़ाब की बारिश

सारे पैमाने टूट जायेगें
जब भी होगी शराब की बारिश

बद नज़र से बचायें जो साहिब
कर दे ऐसे हिजाब की बारिश

जब भी बैठोगे आ के पहलू में
हम करेंगे गुलाब की बारिश

उसके लाखों सवाल है मुझसे
अब करूँगा जवाब की बारिश

नाम : सईद रहमानी
जन्मतिथि : 25 जून, 1936
शिक्षा : स्नातक 1958
प्रकाशित कृतियाँ : रौशन इबारत (ना'तों और ग़ज़लों का मजमुआ) 1995, रहमतों का सायबाँ (नातिया मजमुआ)-2000, हर्फ़े-सुख़न (ग़ज़लियात), शनासा चेहरा (मज़ामीन), क़ाशें (क़त'आत, रुबाइयात, माहिए और हाइकू), नक़दो-नज़र (तब्सरे), 300 से भी ज़्यादा मज़ामीन मुख़्तलिफ़ अख़बारात-ओ-रसाइल की ज़ीनत बन चुके हैं। ये मज़ामीन अदबी, सियासी, भूगोल, विज्ञान और खेलकूद से सम्बंधित हैं
व्यवसाय/सम्प्रति : रिटायर्ड हेड-मास्टर, अदबी महाज़ और सदा-ए-ओड़ीसा (उर्दू) के प्रधान संपादक
संपर्क : प्रधान संपादक, अदबी महाज़, दीवान बाज़ार, कटक, ओड़ीसा - 753001
मोबाइल : 79784 39220 (WhatsApp)
ई-मेल : sayeedrahmani@gmail.com

कभी राहू निकलता है कभी केतू निकलता है
मगर ये भी है शर से ख़ैर का पहलू निकलता है

हमें रहता है ख़तरा, अपने लुट जाने का हर लम्हा
बदलकर भेष रहबर का अगर डाकू निकलता है

ख़ज़ाने का पता पाने की दिल में आरज़ू लेकर
ख़ुदाई जब भी होती है तो फिर बालू निकलता है

मैं जब भी देखता हूँ अपने बच्चों के खिलौने को
कभी खँज़र निकलता है, कभी चाक़ू निकलता है

बला की मौज में जब भी ख़ुदा को याद करता हूँ
भँवर के दरमियाँ मेरे लिए टापू निकलता है

भरोसा उठ गया है अब 'सईद' इंसान से अपना
जिसे साधू समझता हूँ वही डाकू निकलता है

बरहम मिज़ाज होने लगा रहनुमाओं का
जारी है हम पे सिलसिला उनकी जफ़ाओं का

आने लगी हैं शहरी हवाएँ जो इस तरफ़
चेहरा बदलता जाता है अब मेरे गाँवों का

शहरे-सितम की धूप लगी करने बदहवास
सब ढूँढने लगे हैं पता ठंडी छाँवों का

अहले-ज़मीं के मसअले बाक़ी हैं आज तक
कुछ लोग सैर करते हैं लेकिन ख़लाओं का

महफ़ूज़ मुझको रखता है शिद्दत की धूप से
है सर पे सायबान जो माँ की दुआओं का

ख़ामोशियों की खोज में निकला हूँ मैं 'सईद'
पीछे है मेरे कारवाँ तीखी सदाओं का

क्यों इस तरह दिखाते हो तुम अपना ताव-भाव
मैं मुन्तज़िर हूँ देर से मिलने कभी तो आओ

हर दिल अज़ीज़ होगे अगर याद ये रहे
दिल सब का मोह लेता है किरदार का सुभाव

आता नहीं इधर कभी ख़ुशियों का क़ाफ़िला
फ़ौजे-अलम का वादी-ए-दिल में हुआ पड़ाव

हर इक क़दम उठाना बड़े एहतियात से
मंज़िल की राह में हैं कई पुर-ख़तर घुमाव

आती नहीं है सुबह की कोई किरण इधर
आँगन में मेरे रात के लश्कर का है पड़ाव

दुश्मन हमें मिटाने को हैं मुत्तहिद उधर
बाक़ी हमारे दरमियाँ लेकिन है भेद-भाव

निकलता नहीं अब कोई अपने घर से
सभी सहमे-सहमे हैं अनजाने डर से

कोई बात सीधी वो करते नहीं हैं
जो कहते हैं वो भी अगर और मगर से

मैं ये सोचकर राह तकने लगा हूँ
वो गुज़रेंगे शायद इसी रहगुज़र से

मुरादों की मंज़िल तलक कैसे जाऊँ
बहुत थक चुका हूँ मैं तूले-सफ़र से

उड़ानों की तहरीक देता है पहले
वो करता है महरूम फिर बालो-पर से

ज़मीर अपना जो बेचता है यहाँ पर
गिराती है दुनिया उसे फिर नज़र से

मैं मुहब्बत को आम करता हूँ
ख़ुशबुओं की तरह बिखरता हूँ

फ़िक्र की धूप आँच देती है
दर्द की झील में उतरता हूँ

एक पल भी सुकूँ नहीं मिलता
रोज़ जीता हूँ रोज़ मरता हूँ

मेरी आदत है मुँह पे कहने की
इसलिए सबको मैं अखरता हूँ

ज़िन्दगी इक सुलगता सहरा है
और मैं तश्नालब गुज़रता हूँ

मशअलों के अमीक़ दरिया में
डूबता हूँ कभी उभरता हूँ

नाम : सत्य नारायण पाठक 'सत्य चंदन'
जन्मतिथि : 4 मार्च, 1972
शिक्षा : M. Sc.
प्रकाशित कृतियाँ : ग़ज़ल संग्रह 'तेरी यादों के साये में' राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर से प्रकाशित-2011, ग़ज़ल संग्रह 'मेरे एहसास' प्रकाशनाधीन
सम्मान/पुरस्कार : 1. जॉन पॉल नादिर सम्मान से सम्मानित, झाँसी-2015, 2. साहित्य गौरव सम्मान, 3. साहित्य शिरोमणि सम्मान, 4. भारतीय भाषा रत्न सम्मान, (भारतीय साहित्य संस्था, सिरूगुप्पा द्वारा), 5. सहित्यरत्न सम्मान साहित्य सरोवर अखिल भारतीय पत्रिका द्वारा, 6. उत्कृष्ठ साहित्य सेवा पर, गढ़ी नाडू संघ द्वारा सम्मान, 7. संस्कार भारती, मेरठ प्रान्त द्वारा सम्मानित, 8. देश के प्रथम ऐतिहासिक हिंदी भवन, काल्पी द्वारा सम्मान पत्र प्राप्त
व्यवसाय/सम्प्रति : पब्लिक लिमिटेड कंपनी में मैनेजर
संपर्क : 24/56 स्वर्ण पथ, मानसरोवर, जयपुर - 302020
मोबाइल : 80777 01940 / 96800 68040
ई-मेल : satyachandan.jpr@gmail.com

ज़रूरी तो नहीं हर वक़्त दिल की ही सुना कीजे
मुहब्बत में ख़िरद को भी कभी तो रहनुमा कीजे

इलाज-ए-मर्ज़ मुमकिन ही नहीं तो फिर दुआ कीजे
जो मुमकिन है तो क्यों रोते हैं अच्छे से दवा कीजे

मुसाफ़िर के लिए मुश्किल से घबराना नहीं अच्छा
सफ़र आसाँ लगेगा आप कुछ तो हौसला कीजे

जहाँ पर फ़ैसला लेना बहुत दुश्वार लगता हो
वहाँ पर रूह से मिलिए, उसी से मशवरा कीजे

मुहब्बत भी ज़रूरी है सुकूँ भी चाहिए हमको
किसे दिल में जगह दीजे किसे दिल से जुदा कीजे

जवाब-ए-इश्क़ जो होगा वो देखा जाएगा लेकिन
अभी इस कशमकश की क़ैद से हमको रिहा कीजे

बला का ज़ब्त भी है और बला का सब्र भी लेकिन
जिगर का दर्द आँखों से छलक जाए तो क्या कीजे

बिखर न जाऊँ कहीं, ज़िन्दगी संभाल मुझे
अकेलेपन के समंदर से अब निकाल मुझे

बहुत कहा था कि दिल से न तू निकाल मुझे
अब अपनी आँख में आँसू बना के पाल मुझे

बिछड़ के उससे भला उम्र जी लिया कैसे
कचोटता है शब-ओ-रोज़ ये सवाल मुझे

उरूज यूँ न मेरे सर पे रक़्स कर वरना
तलाश लेगा यक़ीनन अभी ज़वाल मुझे

अभी सहल हूँ मगर हो न जाऊँ कल मुश्किल
मैं एक प्रश्न हूँ ऐ ज़िन्दगी न टाल मुझे

डुबो ही देगा ये गिरदाब-ए-गर्दिश ए दौराँ
मेरी हयात किनारे को अब उछाल मुझे

दुनिया की चकाचौंध के झाँसे में न आओ
ये एक सराये है सराये सा निभाओ

जाने को कहानी से बहाने न बनाओ
दामन ही छुड़ाना है अगर साफ़ बताओ

हर शख़्स यहाँ ख़ुद की तरक्क़ी में लगा है
ऐसे में भला किससे कहें हमको उठाओ

मैं सब्र का हामी हूँ तलब ग़ौर से सुन लो
ऐसा न हो फिर बाद में तुम शोर मचाओ

अल्फ़ाज़, ख़यालात, ग़ज़ल सब ही ख़फ़ा हैं
सबकी है यही ज़िद कि उसे ढूँढ के लाओ

अब दिल मैं तुम्हारी न कोई बात सुनूँगा
हर वक़्त निगाहों से सिफ़ारिश न कराओ

हौसलों के साथ जब निकले करिश्मा हो गया
जिस तरफ़ को चल पड़े माक़ूल रस्ता हो गया

क्या मिला मुझसे बिछड़ कर संग दिल तुझको बता
मैं इधर बिखरा उधर तू भी अधूरा हो गया

शुक्रिया मेरे सफ़र की अनगिनत दुश्वारियों
अब मसाफ़त का इरादा और पक्का हो गया

चल रहा था जब तलक गुमनाम था मेरा सफ़र
जब मुझे रोका गया मशहूर कितना हो गया

छोड़िये ईमान की बातें, अना के फ़लसफ़े
आजकल व्यापार इन जिंसों का मंदा हो गया

हादसों पर हादसे सहकर भी बिखरे ही नहीं
आदमी इस दौर का पत्थर सरीखा हो गया

नाम	: सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'
जन्मतिथि	: 20/08/1975
शिक्षा	: एम.ए.बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ	: 1. हर्फ़-हर्फ़, 2. ख़ुश्बू
सम्मान/पुरस्कार	: गुजरात साहित्य एकादमी से तीन बार पुरस्कृत
व्यवसाय/सम्प्रति	: सरकारी शिक्षक
संपर्क	: ग्राम व पोस्ट पीपलसाना, मुरादाबाद (उ.प्र.)
मोबाइल	: 96396 42112 (WhatsApp)
ई-मेल	: sarfarazm379@gmail.com

मैं कब ये माहो-अख़्तर चाहता हूँ
तुम्हारा साथ शब भर चाहता हूँ

उदासी का अजब आलम है हर-सू
हसीं जलवों का मन्ज़र चाहता हूँ

मिरी तन्हाईयाँ डसतीं हैं मुझको
तिरी यादों के लश्कर चाहता हूँ

दिलों से जो मिटा दें नफ़रतों को
मुहब्बत के वो पैकर चाहता हूँ

भुलाने को ग़म-ए-दिल जाने-जानाँ
तिरी आँखों के साग़र चाहता हूँ

जहाँ में इल्म कहते हैं जिसे सब
मैं वो नायाब गौहर चाहता हूँ

'फ़राज़' उठने लगे शैतानी फ़ितने
ज़बाँ पर नादे-हैदर चाहता हूँ

हया आँखों में मुखड़ा ख़ूबसूरत
नहीं है कोई तुझ-सा ख़ूबसूरत

तिरा चेहरा चमकता है कुछ ऐसे
हो जैसे कोई शीशा ख़ूबसूरत

मिरी आँखों को ऐ मेरे सनम बस
लगे तेरा ही जलवा ख़ूबसूरत

अजब सी है खनक बातों में तेरी
तिरा लहजा है कितना ख़ूबसूरत

हमें पागल न कर डाले कहीं ये
हसीं ज़ुल्फ़ों का गजरा ख़ूबसूरत

बढ़ाता है तिरे नयनों की शोभा
बरेली का ये सुरमा ख़ूबसूरत

सुनी हैं जबसे तुम्हारे शबाब की बातें
भुला दीं हमने जहाँ के निसाब की बातें

हसीन लगने लगा हमको ये जहाँ सारा
ये किसने छेड़ दीं जाम-ओ-शराब की बातें

हमारा रश्क़े-क़मर है हमारी नज़रों में
न कीजे हमसे किसी माहताब की बातें

जिसे भी देखिए गूगल पे सर्च करता है
किसे है याद यहाँ अब किताब की बातें

हुज़ूर देखिए कितनी हसीन लगतीं हैं
हसीं लबों पे तुम्हारे गुलाब की बातें

हसीन रुख़ पे वो चिल्मन गिराए बैठे हैं
सभी के लब पे हैं उनके हिजाब की बातें

ज़हर भेजो या तुम दवा भेजो
जो भी चाहो ऐ दिलरुबा भेजो

उसको अकसीर हम समझ लेंगे
आप हमको जो ख़ाके-पा भेजो

भर गया दिल नज़र के तीरों से
कोई तोहफ़ा तो अब नया भेजो

ये ही रस्ता है वस्ल का हमदम
आप आओ या फिर पता भेजो

दिल से उसको ही हम लगा लेंगे
अपनी तस्वीर ही ज़रा भेजो

क्या ख़बर मिल न पाएँ फिर हमदम
करके मुझको न यूँ ख़फ़ा भेजो

उल्फ़त का यहाँ कोई क़दरदान नहीं है
लगता है यहाँ कोई भी इन्सान नहीं है

क्यों दर्दे-जिगर अपना दिखाते हो सभी को
हर शख़्स यहाँ दोस्तो लुक़मान नहीं है

इक भीड़ लगी रहती है यादों की तुम्हारी
ये दिल की हवेली अभी वीरान नहीं है

क्या बात गिराँ गुज़री मिरी जान बता तो
क्यों आज तिरे चेहरे पे मुस्कान नहीं है

तू बेवफ़ा है मुझको ये तस्लीम है लेकिन
ये कैसे कहूँ तू मिरा अरमान नहीं है

जो अहले-नज़र हैं वो ये कहते हैं हमेशा
सौदे में कभी प्यार के नुक़सान नहीं है

नाम	: सागर सियालकोटी
जन्मतिथि	: 18 जनवरी 1951
प्रकाशित कृतियाँ	: *ग़ज़ल संग्रह :* एहसास-2004, आवाज़े-2013, एहतिज़ाज़-ए-ग़ज़ल-2017
आनेवाली पुस्तके	: *कहानी संग्रह :* जाएँ तो जाएँ कहाँ-2021, एक ग़ज़ल संग्रह प्रेस में 2021
सम्मान/पुरस्कार	: जश्न साहिर साहित्य कलश ग़ज़ल सम्मान
व्यवसाय/सम्प्रति	: रिटायर्ड बैंक मेनेजर
संपर्क	: 1077, फेज़ नं.1, अर्बन एस्टेट, डुगरी रोड, लुधियाना - 141013
मोबाइल	: 98768 65957
ई-मेल	: sagarsiyalkoti@gmail.com

❀

पराई आग में अक्सर बहुत से लोग जलते हैं
कहो कैसा ये रिश्ता है कि पत्थर भी पिघलते हैं

मुहब्बत में नफ़ा-नुकसान तो होता ही रहता है
समंदर में कभी लहरें कभी तूफ़ाँ मचलते हैं

सभी अपनी जगह बहतर शिवाला हो भले मस्जिद
अगर दिल में अक़ीदत हो तो पत्थर भी पिघलते हैं

शजर बूढ़ा भी हो जाए तो यक्सर काम आता है
दुआ देगा परिंदों को यहाँ बस ख़्वाब पलते हैं

मेरी तहज़ीब में गंगा कहीं, मस्जिद, कलीसा है
कि हर दिल में रिसालत के हमेशा साज़ बजते हैं

यक़ीं किस पर करें 'सागर' बड़ा मुश्किल हुआ अब तो
ये कैसे लोग हैं हर पल कई चहरे बदलते हैं

जो सफ़र है तवील मत करना
ज़िन्दगी बस ज़लील मत करना

मेरा दुश्मन अगर सच्चा है तो
मेरे हक़ में अपील मत करना

प्यार में हार-जीत क्या मा'नी
पेश दावा दलील मत करना

जिसके बारे में इल्म ही ना हो
उसके क़द को क़लील मत करना

हो अगर रूह में इमाँ ज़िन्दा
झूठ का फिर वकील मत करना

बात हक़ की कहीं भी हो 'सागर'
फिर खड़ी तू फ़सील मत करना

कितना आसान है औरों से शिकायत करना
और दुश्वार है रिश्तों की हिफ़ाज़त करना

कल तलक मेरे मरासिम रहे साबित जिनसे
आज मुश्किल है मुहब्बत में तिजारत करना

ऐसा किरदार कहानी में नज़र आया मुझे
फिर मेरी रूह ने सीखा न जसारत करना

कल जो सोये थे सिसकते हुए अरमान लिये
आज तनहाई में मुश्किल है वज़ाहत करना

रोज़ गुलदान को होती है नयेपन की सदा
शे'र कहना ही सलीक़ा है बलाग़त करना

मुझे हिन्दू-मुसलमाँ में तो बस इंसान दिखता है
सियासत करने वालों को तो इक शैतान दिखता है

यहाँ सब लोग अच्छे हैं ये सच मानो जहाँ वालो
मुझे हर शख़्स में बस राम या रहमान दिखता है

जियो औरों को जीने दो यही सच्चा धरम यारों
यही दस्तूर बन जाए तो फिर ईमान दिखता है

मिटाकर आपसी झगड़े अमीने-कारवाँ हों सब
सदा-ए-अर्श में गीता कहीं क़ुरआन दिखता है

सियासत करने वालों से गुरेज़ाँ ही रहा 'सागर'
लड़ाकर फिर इन्हें हर-सू नफ़ा-नुक़सान दिखता है

शख़्स वो क्या कमाल करता है
काम हर बेमिसाल करता है

हुस्न सौ बार चुप रहे लेकिन
इश्क़ फिर भी सवाल करता है

किसको अपना कहें बता मौला
कौन किसका ख़याल करता है

इश्क़ करना उसे निभा देना
दर्द वरना बेहाल करता है

लोग उसको नवाज़ देते हैं
जो दिलों में उजाल करता है

कश्मकश रात भर रही 'सागर'
कौन किसको हलाल करता है

नाम : सुधीर कुमार सिंह
जन्मतिथि : 1 अक्टूबर 1961
शिक्षा : बी.एस.सी., पी.जी. डिप्लोमा इन सॉफ़्टवेयर इंजीनियरिंग
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह* : 1. अनुपम, 2. अंगग़ज़ल, 3. उधार की हँसी
काव्य संग्रह : अंगरथ (भागलपुर विश्वविद्यालय स्नातक पाठ्यक्रम में शामिल) *कहानी* : खरसूप; *नाटक* : 1. विधवा की बेटी, 2. चमचे का चुनाव 3. ख़ामोश अदालत, 4. तीन कट्टो बेटा, 5. भूषणा सिनूर छपड़ फाड़ी कॅ
संपादन : क्रांति पुत्र, मंज़िल, प्रगति
सम्मान/पुरस्कार : दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा बाबा साहेब आंबेडकर फेलोशिप सम्मान, गोपाल सिंह नेपाली रजत सम्मान-2016, महाकवि आरसी प्रसाद सिंह रजत सम्मान-2017, लगभग 200 से अधिक साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कार
मैथिली-भोजपुरी अकादमी दिल्ली द्वारा गणतंत्र दिवस-2017 के पूर्व संध्या पर आयोजित कवि सम्मेलन में अंगिका का प्रतिनिधित्व
व्यवसाय/सम्प्रति : महासचिव, अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच, भागलपुर
संपर्क : अंगलोक पार्वती मिल, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार - 813213
मोबाइल : 93349 22674
ई-मेल : skp11061@rediffmail .com

चाँद-तारों से अलग है
तेज धारों से अलग है

माँ पिता बोझा नहीं ये
अन्य भारों से अलग है

हार फूलों का मिले तो
मोल हारों से अलग है

चौक पर बत्ती का मतलब
उन इशारों से अलग है

एक रोटी चार टुकड़े
स्वाद नारों से अलग है

❀
ये रात आख़िरी है
सौग़ात आख़िरी है

साँसे बता रहीं हैं
हर बात आख़िरी है

आँखों से झरने वाली
बरसात आख़िरी है

बहती हवा बचा लो
उत्पात आख़िरी है

लंबी क़तार वाली
बारात आख़िरी है

झूठ, सच से ख़फ़ा-ख़फ़ा होता
प्यार ऐसे न बेवफ़ा होता

दुश्मनी मोल लेके क्या होगा
दोस्ती से बड़ा नफ़ा होता

प्यार का एक बोल ही उनका
मेरे हिस्से का तोहफ़ा होता

देखने को मिली अदालत में
मामला भी रफ़ा-दफ़ा होता

कोई रहमान का करिश्मा है
ग़ैर होता तो ये सफ़ा होता
❀

❀
चाहे हक़ मारी करेगा
या कलाकारी करेगा

देखना जल्दी ही कोई
घोषणा जारी करेगा

आपका विश्वास लगता
कुछ तो ग़द्दारी करेगा

अब निकम्मे ऍप सारे
लोड लाचारी करेगा

क़ीमतें बस आप देंगे
तय तो व्यापारी करेगा

वक़्त से संवाद शायद
कोई अवतारी करेगा

धरती से अंबर तक ये हालात नहीं
मौसम पर क़ब्ज़ा कर ले औक़ात नहीं

मुर्दा बनकर ज़िन्दा तो रह लेते हम
ज़िन्दा दिखना सबके वश की बात नहीं

हुनर, हिम्मत, मेहनत, ख़ून-पसीने की
मज़दूरी लेते हैं हम, ख़ैरात नहीं

ग़ज़लों की थाली में, ताली से बढ़कर
शाइर को भाती कोई सौग़ात नहीं

आँखों से ज़्यादा क्या, मेघ बरसते हैं
'प्रोग्रामर' ने देखी ये बरसात नहीं
❀

नाम : सुभाष पाठक 'ज़िया'
जन्मतिथि : 15 सितम्बर, 1990
शिक्षा : बी.एस.सी, बी.एड., एम.ए.
प्रकाशित कृतियाँ : शेरी मजमुआ 'दिल धड़कता है', (मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल से प्रकाशित), कविता कोश, रेख़्ता, पर उपस्थित, कादम्बिनी, ग़ज़ल के बहाने, नई ग़ज़ल 'समकालीन स्पंदन', अभिनव प्रयास, गर्भनाल, एवं देश/ विदेश की अनेकों साहित्यिक पत्रिकाओं, ग़ज़ल विशेषांकों में ग़ज़लें प्रकाशित

विशेष- विभिन्न ग़ज़ल गायकों तथा एहमद रज़ा, मुंबई द्वारा आकाशवाणी इंदौर से, राखी चटर्जी द्वारा केरल लिटरेचर फेस्टिवल में, अज़हर मेवान ने राष्ट्रीय कला महोत्सव दिल्ली में, 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' के लिए गीत 'उम्मीद' मशहूर सिंगर मुहम्मद वकील ने गाया

सम्मान/पुरस्कार : 'अदबी उड़ान युवा ग़ज़लकार सम्मान' लोकभूषण साहित्य सम्मान झाँसी, क़लमकार सम्मान ग्वालियर सभी 2017 में, मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन भोपाल द्वारा पुनर्नवा सम्मान भोपाल 2018, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पटना द्वारा, हिंदी साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान (युवा) पटना 2019 एवं विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

व्यवसाय/सम्प्रति : अध्यापक, शासकीय माध्यमिक विद्यालय, समोहा
संपर्क : ग्राम/ पोस्ट समोहा तहसील करेरा, ज़िला शिवपुरी (मध्यप्रदेश) - 473660
मोबाइल : 88783 55676
ई-मेल : subhashpathak817@gmail.com

कुछ देर तो रुकूँ कि अभी गुल नहीं खिले
तितली को रोक लूँ कि अभी गुल नहीं खिले

मौसम बहार का है चमन में ख़िज़ाँ है पर
रो-रो के मैं हसूँ कि अभी गुल नहीं खिले

इक उम्र में तो आये हैं शाख़ों पे ख़ार ही
इक उम्र फिर जियूँ कि अभी गुल नहीं खिले

रंगत है मेरी सुर्ख़ महकता मिज़ाज है
सो ख़्वाब ही तो हूँ कि अभी गुल नहीं खिले

मुद्दत के बाद बाग़ से माँगी हैं ख़ुशबूएँ
फिर भी वही सुनूँ कि अभी गुल नहीं खिले

तन्हाइयों में ख़र्च न करिये 'ज़िया' शबाब
बाक़ी रखो जुनूँ कि अभी गुल नहीं खिले

ग़रीब आँख के घर में पले बढ़े हैं ख़्वाब
तभी तो नींद की क़ीमत समझ रहे हैं ख़्वाब

उमीदे-फ़स्ल न कीजे बग़ैर पानी के
भरी-भरी हैं जो आँखें हरे-भरे हैं ख़्वाब

हक़ीक़तों में तू किस-किससे रूबरू मिलता
सहूलतें तुझे हों इसलिये बने हैं ख़्वाब

तुम्हारे हिज्र ने तासीर ख़ूब पाई है
उड़ी है नींद हमारी उड़े हुये हैं ख़्वाब

उदासियों के सबब ही तो ख़्वाब देखे थे
उदासियों का सबब ही तो बन गये हैं ख़्वाब

अधूरी नींद में किसने जगा दिया हमको
ख़फ़ा हुये हैं बहुत मुँह बना रहे हैं ख़्वाब

शाम समेट रही है आँचल मेरे पास रहो
फैल रहा है रात का काजल मेरे पास रहो

चाँद-सितारों ने ओढ़ा है बादल का कम्बल
कूक उठी है दिल में कोयल मेरे पास रहो

तुम बिन जीना भी मुश्किल है, मरना भी मुश्किल
हर मुश्किल का है ये इक हल मेरे पास रहो

वक़्त हुआ क्या, क्यूँ सोचूँ इतवार शनीचर को
मुझको ही चाहो तुम हर पल मेरे पास रहो

ज़ख़्मों को सेको साँसों से फिर मरहम रक्खो
फिर डालो तुम अपना आँचल मेरे पास रहो

सब अपने-अपने जैसों के पास ही बैठे हैं
तुम पागल हो, मैं भी पागल, मेरे पास रहो

ऐ चाँद माँग तीस दिनों को 'ज़िया' का साथ
जैसे दुल्हन ने माँगा सदा को पिया का साथ

तू माँगना ख़ुदा से मुझे उस यक़ीन से
बाती ने जिस यक़ीन से माँगा दिया का साथ

वनवास में भी साथ रहें हम, महल में भी
हो साथ यूँ हमारा कि रघुवर, सिया का साथ

मिसरे मेरे नसीब के हो जायेंगे ग़ज़ल
बस तू रदीफ़ बनके निभा क़ाफ़िया का साथ

हर रोज़ मत बदलना मेरे दिल तू ख़्वाहिशें
मैं दे सका नहीं किसी बहरूपिया का साथ

जैसे गुलों में गंध है, तितली में रंग हैं
वैसे ही साँस-साँस 'ज़िया' 'अर्ज़िया' का साथ

ये दिल धड़क-धड़क के बढ़ाये है मुश्किलें
धड़के तुम्हारे नाम पे सो कुछ न कह सकें

मेरा क़ुसूर क्या है मुझे छेड़ते हैं क्यूँ
उसने चुराया दिल कहें जो भी उसे कहें

जिसमें हैं मेरे शाने पे ज़ुल्फ़ें तिरी खुलीं
तस्वीर वो लगाएँगे हम लोग 'हॉल' में

रेशम विसाल का रखें दिल में संभालकर
यादों की धूप आये तो चादर बुना करें

होने लगूँ ख़मोश तो है फ़र्ज़ आपका
दरिया-ए-दिल में याद का इक संग फेंक दें

आओ कि साहिलों पे घरोंदे बनाये हम
तुम थप-थपाओ रेत सनम पाँव हम रखें

नाम : सुमित कुमार सिंह 'मीत'
जन्मतिथि : 05-03-1987
शिक्षा : स्नातक (गणित), परास्नातक (ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन) व एम. बी. ए. (मानव संसाधन एवं विपणन)
व्यवसाय/सम्प्रति : प्राइवेट नौकरी
संपर्क : ग्राम व पोस्ट मूढापान्डे तहसील व ज़िला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश - 244926
मोबाइल : 82189 81617 (WhatsApp)
ई-मेल : sumitcrazy.2008@rediffmail.com

पागल मन में जितनी उलझन होती है
बाहर सबसे उतनी अनबन होती है

जब-जब ग़ुस्सा, घबराहट, डर बढ़ते हैं
तब-तब साँसों में इक सिहरन होती है

जिसकी साँसें भीतर सधने लगती हैं
उससे पूछो कैसी थिरकन होती है

उस घर की दीवारें गिरने लगती हैं
जिसकी बुनियादों में सीलन होती है

रमना मतलब एक जगह घुल-मिल जाना
बेमतलब चलना तो भटकन होती है

कौन बुझा सकता है उस लौ को, बोलो
जो उसकी मर्ज़ी से रौशन होती है

यूँ डसती है उम्र फिसलकर हाथों से
जैसे इक ज़हरीली नागन होती है

चलते-चलते जब मैं थकने लगता हूँ
मेरी हिम्मत मेरा ईंधन होती है

भले सीने में ग़म की दास्ताँ है
मगर पत्थर कभी रोता कहाँ है

ये दुनिया इक किराए का मकाँ है
फ़क़त दो-चार दिन रुकना यहाँ है

चले जाना, बहुत ज़ल्दी है तुमको
ये महफ़िल रोज़ अब सजती कहाँ है

जिसे बूढ़ा समझती है ये दुनिया
अभी वो दिल से पूरा नौजवाँ है

किसी इँसाँ का गिर-गिरकर संभलना
मुकम्मल हौसले की दास्ताँ है

तुम्हारा इश्क़ है औ' सिर्फ़ मैं हूँ
नहीं कोई भी अपने दरमियाँ है

रात उसके हिज्र की कुछ इस क़दर भारी रही
याद उसकी मेरे दिल पर हर घड़ी तारी रही

ज़िंदगी में रंग ख़ुशियों के भरे हर पल, मगर
मुश्किलों से इक मुसलसल जंग भी जारी रही

जिसमें रखते थे संजोकर हम खुली आँखों के ख़्वाब
बाद तेरे बंद ही वो दिल की अलमारी रही

अपने दिल से पार पाना बस ज़रा मुश्किल रहा
पर मुहब्बत, नफ़रतों पर हर घड़ी भारी रही

ख़ूबसूरत दिल था उसका सो मुहब्बत हो गई
और फिर ता-उम्र मुझको ये ही बीमारी रही

कहने को तो सारा गुलशन ही महकता था मगर
जिसमें सादा फूल थे, बस याद वो क्यारी रही

अक्सर भूलें हो जाती हैं कुछ जाने-अनजाने में
और उतरना पड़ता है फिर यादों के तहख़ाने में

कुछ आँसू बाँटे थे मैंने वो अब मेरे हिस्से हैं
अब आकर महसूस हुआ क्या दर्द बँटा अनजाने में

इक दिन दुनिया मिट्टी कहकर मुझसे नाता तोड़ेगी
लेकिन मुश्किल होगी मेरी यादों को दफ़नाने में

सच का रस्ता चलने वाला एक मुसाफ़िर काफ़ी है
आस की एक किरन भी अच्छी लगती है वीराने में

उफ् उसकी बातों का जादू सबके सर चढ़ जाता है
मैं भी आ जाता हूँ उसके बहलाने-फुसलाने में

रोज़ छलकते देखा करता था मैं जिस पैमाने को
आज मशक्क़त देखी उसकी कुछ बूँदों को पाने में

भले सीने में ग़म की दास्ताँ है
मगर पत्थर कभी रोता कहाँ है

ये दुनिया इक किराए का मकाँ है
फ़क़त दो-चार दिन रुकना यहाँ है

चले जाना, बहुत ज़ल्दी है तुमको
ये महफ़िल रोज़ अब सजती कहाँ है

जिसे बूढ़ा समझती है ये दुनिया
अभी वो दिल से पूरा नौजवाँ है

किसी इंसाँ का गिर-गिरकर संभलना
मुकम्मल हौसले की दास्ताँ है

तुम्हारा इश्क़ है औ' सिर्फ़ मैं हूँ
नहीं कोई भी अपने दरमियाँ है

नाम	: सोनिया वर्मा
शिक्षा	: M.Sc.(Maths), B.Ed.
प्रकाशित कृतियाँ	: आधी आबादी के दोहे, 101 महिला ग़ज़लकार (साझा संकलन)
व्यवसाय/सम्प्रति	: लेक्चरर
संपर्क	: एम. आई . जी-528, वीर सावरकर नगर, हीरापुर, रायपुर (छ.ग.) - 492099
मोबाइल	: 83578 03400 (WhatsApp)
ई-मेल	: vermasonia783@gmail.com

❀

तू ढूँढ रहा है जिसे बेताबी से बाहर
रहता है कहीं वो तो तेरी रूह के अन्दर

क्यों भूख ग़रीबी से घिरी अपनी धरा है
कोई तो दे मासूम के इस प्रश्न का उत्तर

क्यूँ याद में तेरी मैं बहाती रही आँसू
जानी कि तुझे भूल के जीना ही है बेहतर

ये रात बहुत सर्द है कैसे हो गुज़ारा
है पास मेरे एक फटी मैली-सी चादर

सहती रही तकलीफ़ को नारी बनी मीरा
कान्हा तुम्हीं तारो इसे अब धरती पे आकर

बेतरह लगीं बंदिशें इंसान पे लेकिन
हारा न कभी हौसला अपना वो गँवाकर

तुमसे तो मेरी होड़ नहीं कोई ओ भाई
हट क्यों गया तू पीछे क़दम अपने बढ़ाकर

अच्छा हरदम सच्चा होता है
सच्चे सँग ही अच्छा होता है

मन से मन को जो बाँधे रखता
वो ही प्यारा रिश्ता होता है

जो करता है बहकी बातें
कच्ची नींद से जागा होता है

ऐसे युद्ध को जीता हारा क्या
जिसमें सब कुछ सोचा होता है

बातें दिल भी समझेगा इक दिन
बस दिल को समझाना होता है

कितना भी शक्कर डालो इसमें
सागर का जल खारा होता है

आईना, आईने से ये पूछ रहा है
क्या तू दाग़ कभी मेरा भी देख सका है

मन के भावों पर क़ाबू पाना है मुश्किल
लेखन तो इक लत है, धुन है और नशा है

यूँ मत छेड़ो बह जाएगा दरिया बनकर
सदियों से पलता आँखों में इक सपना है

कोई मरे अति से तो कोई मरे कमी से
दुनिया में रहने का क्या ये नियम बना है ?

साथ रहे ख़ुशियों की कश्ती ग़म की डूबे
मरते-मरते तेरे लिए ये एक दुआ है

आँखों के ही रस्ते से अब दिल में समाना है
ये प्यार की है भाषा पढ़ना व पढ़ाना है

ज़ालिम ये ज़माना है इतना ही समझ ले तू
पड़कर के मुहब्बत में दिल टूट ही जाना है

रस्ता न बताना तुम मत राह दिखा देना
कलियुग में चले जैसे, वैसे ही चलाना है

जब टूटी-पुरानी सब चीज़ों को बदलते हो
रिश्ता भी दुकानों पर अब चेंज कराना है

ख़ाली थे तुम्हारे हाथ ख़ाली ही रहे 'सोनी'
रेखाएँ लिए आए रेखाएँ ले जाना है

अपनी इच्छाएँ मार देता है
जब वो बच्चों को प्यार देता है

हो नदी, ताल हो कि सागर हो
पानी, बादल उधार देता है

पथ की बाधाओं से नहीं डरना
कष्ट सबको निखार देता है

रास्ते पर रखो नज़र अपनी
एक पत्थर सुधार देता है

बीच मँझधार में फँसा इंसाँ
डूबने से नकार देता है

बहता दरिया भी पत्थरों पर ही
अपना ग़ुस्सा उतार देता है

घर में इक कामयाब बच्चा ही
सबका जीवन सँवार देता है

नाम : हरेराम नेमा 'समीप'
जन्मतिथि : 13 अगस्त, 1951
शिक्षा : स्नातक (वाणिज्य एवं विधि), साहित्यरत्न, उर्दू डिप्लोमा उर्दू अकादमी, दिल्ली
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह*- हवा से भीगते हुए, आँधियों के दौर में, कुछ तो बोलो, किसे नहीं मालूम, इस समय हम, है तो सही, *दोहा संग्रह*- जैसे, साथ चलेगा कौन, चलो एक चिट्ठी लिखें, आँखें खोलो पार्थ, पानी जैसा रंग, *कविता संग्रह*- मैं अयोध्या, शब्द के सामने, *हाइकु संग्रह*- बूढ़ा सूरज, *कहानी संग्रह*- समय से पहले, *आलोचना*- समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार-एक अध्ययन (चार खण्ड), हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा (प्रकाशनाधीन)
सम्मान/पुरस्कार : समकालीन दोहा कोश, समकालीन महिला ग़ज़लकार, कथाभाषा पत्रिका का सम्पादन, निष्पक्ष भारती मासिक का ग़ज़ल अंक तथा मसिकागद त्रैमासिकी का दोहा अंक सम्पादित
अनुवाद : नोबेल पुरस्कार विजेता लेखकों के साहित्य (विशेषकर आक्टावियो पॉज़ व नादिन गार्डिमर) का (प्रकाशन विभाग हेतु) अनुवाद कार्य, चर्चित दूरदर्शन धारावाहिक नक्षत्र-स्वामी की पटकथा व गीत लेखन
व्यवसाय/सम्प्रति : बिज़नस
संपर्क : 395, सेक्टर-8, फ़रीदाबाद - 121006
मोबाइल : 98716 91313 **ई-मेल** : sameep395@gmail.com

तेरे मन तक आ पहुँचे
हम गुलशन तक आ पहुँचे

मन के पंछी थके-थके
घर-आँगन तक आ पहुँचे

निकले थे हम पूजन को
सम्मोहन तक आ पहुँचे

बैठ के सोचो, कैसे हम
इस अनबन तक आ पहुँचे

ख़ूनी पंजे वहशत के
जन-जीवन तक आ पहुँचे

अमृत-घट भी निकलेगा
हम मंथन तक आ पहुँचे

एक मुजस्सम सूनापन हूँ
बंद पड़े घर का आँगन हूँ

यूँ तो मैं तुझको अर्पन हूँ
जाने क्यों तेरा दुश्मन हूँ

भटक रही कमरे में चिड़िया
उसका खोया वातायन हूँ

दोष किसे दूँ बर्बादी का
मैं ही तो इसका कारन हूँ

जिसके रहा ख़िलाफ़ सदा मैं
अब उसके सुख का साधन हूँ

नाग बसे हैं मुझमें कितने
कहने को चंदन का वन हूँ

गुज़रे लम्हे गुबार छोड़ गए
मेरी आँखों में ख़ार छोड़ गए

जिनसे उम्मीद थी ख़ुशी देंगे
वो मुझे ज़ार-ज़ार छोड़ गए

क़ाफ़िले के वो रहनुमा मुझको
राह में अश्क-बार छोड़ गए

पाँव दलदल में धंसते जाते हैं
किस मुसीबत में यार छोड़ गए

रोज़ अख़बार मेरे आँगन में
ग़म के कुछ इश्तिहार छोड़ गए

यूँ बवँडर उठे मेरे दिल में
दुःख यहाँ बेशुमार छोड़ गए

भरी पड़ीं इतिहास कथाएँ अनबन की
उनमें एक तलाशूँ मैं अपनेपन की

धोकर रोज़ सुखाता हूँ मैं सपनों को
इक जोड़ी पोशाक मेरे अंतर्मन की

इच्छाओं के पैर बहुत लम्बे-लम्बे
चादर मेरी छोटी है संसाधन की

इक ग़रीब का चौका देखा है जबसे
परिभाषा स्पष्ट हो गयी शोषण की

मरें मवेशी रोज़ रेल के नीचे ज्यों
अकस्मात ही मौत आज हर जीवन की

बढ़ती जायेगी जब दिल की बेचैनी
सीमाएँ भी टूटेंगी अनुशासन की

तुम्हें ख़ूब उड़ने का अधिकार होगा
शिकारी की इच्छा के अनुसार होगा

विलायत से मुस्कानें आयात करके
तुम्हारी उदासी का उपचार होगा

तुम्हारे ज़हन में भी कितनी घुटन है
मुझे था, कि ये तो हवादार होगा

हमें क्या पता था, कि अपना मसीहा
परत-दर-परत यूँ गुनहगार होगा

कि इस भीड़ को किस तरफ़ हाँकना है
ये संसद की चर्चा का आधार होगा

वो इस शर्त पर मुंसिफ़ी पा गया है
कि वो हाकिमों का मददगार होगा

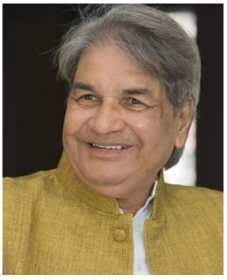

नाम : हस्तीमल 'हस्ती'
जन्मतिथि : 11 मार्च 1946
शिक्षा : बी.एस सी.

प्रकाशित कृतियाँ : 1) यादों के गुलाब (मुक्तक संग्रह) 2) क्या कहें किससे कहें (ग़ज़ल संग्रह) (महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत) 3) कुछ और तरह से भी (ग़ज़ल संग्रह) (अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार द्वारा सम्मानित) 4) ना बादल ना दरिया जाने (ग़ज़ल संग्रह) (सोन इन्दर, पुणे द्वारा पुरस्कृत) 5) नए परिंदे (उर्दू ग़ज़ल संग्रह) 6) प्यार का पहला ख़त (प्रतिनिधि ग़ज़लें) 7) कई संपादित काव्य संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित

सम्मान/पुरस्कार : महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का अखिल भारतीय राम मनोहर त्रिपाठी साहित्य सेवी सम्मान, डॉ. हरिवंशराय बच्चन स्मृति पुरस्कार, ठाणे, स्वानंद सारस्वत सम्मान, तेरा पंथ युवक परिषद द्वारा सांताक्रुज रत्न सम्मान, आमेट मित्रमंडल, मुंबई द्वारा आमेट गौरव सम्मान, प्रियदर्शिनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शिनी सम्मान, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का राज्य स्तरीय साने गुरूजी सम्मान, देशभर की विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं एवं अख़बारों में रचनाएँ प्रकाशित, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि देशभर के विभिन्न प्रसारण माध्यमों से समय-समय पर उपस्थिति, पिछले 35 वर्षों से विभिन्न कार्यक्रमों में रचना पाठ, लोकप्रिय ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह और पंकज उधास, अनूप जलोटा आदि द्वारा ग़ज़लों का गायन, साहित्यिक पत्रिका 'अनभय' का हस्तीमल 'हस्ती' पर केंद्रित विशेषांक, श्रेष्ठ साहित्यिक मासिक पत्रिका 'समावर्तन' का रचनाकार हस्तीमल 'हस्ती' के रचनाकर्म पर विशेष आयोजन, समय-समय पर कई साहित्यिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन, विभिन्न विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कविताएँ शामिल

व्यवसाय/सम्प्रति : बिज़नस

संपर्क : 501, करन अपार्टमेंट, यात्री होटल के पास,
प्रभात कालोनी, सांताक्रूज़ (पूर्व) मुंबई - 400055
- ज्वेलरी एमपोरियम, पोस्ट ऑफ़िस के सामने,
नेहरू रोड, सांताक्रूज़ (पूर्व) मुंबई - 400055

मोबाइल : 98205 90040 / 022-26106201

चराग़ दिल का मुक़ाबिल हवा के रखते हैं
हर एक हाल में तेवर बला के रखते हैं

मिला दिया है पसीना भले ही मिट्टी में
हम अपनी आँख का पानी बचा के रखते हैं

हमें पसंद नहीं जंग में भी मक्कारी
जिसे निशाने पे रक्खें बता के रखते हैं

कहीं ख़ुलूस कहीं दोस्ती कहीं पे वफ़ा
बड़े करीने से घर को सजा के रखते हैं

बस एक ख़ुद से ही अपनी नहीं बनी वरना
ज़माने भर से हमेशा निभा के रखते हैं

अना पसंद हैं 'हस्ती जी' सच सही लेकिन
नज़र को अपनी हमेशा झुका के रखते हैं

वक़्त मेरी मस्तियाँ क्या ले गया
लुत्फ़ सारी ज़िंदगी का ले गया

मुझसे जल्दी हारकर मेरा हरीफ़
जीतने का लुत्फ़ सारा ले गया

हमसे तो कुछ यूँ निभाई वक़्त ने
घर दिखाकर घर का रस्ता ले गया

इक उचटती सी नज़र डाली थी बस
वो न जाने मुझसे क्या-क्या ले गया

सारे तूफ़ाँ देखते ही रह गए
ख़ुशबूओं का लुत्फ़ झोंका ले गया

मुहब्बत का ही इक मोहरा नहीं था
तेरी शतरंज पर क्या-क्या नहीं था

सज़ा मुझको ही मिलनी थी हमेशा
मेरे चेहरे पे जो चेहरा नहीं था

कोई प्यासा नहीं लौटा वहाँ से
जहाँ दिल था भले दरिया नहीं था

हमारे ही क़दम छोटे थे वरना
यहाँ परबत कोई ऊँचा नहीं था

किसे कहता तवज्जो कौन देता
मेरा ग़म था कोई क़िस्सा नहीं था

रहा फिर देर तक वो साथ मेरे
भले वो देर तक ठहरा नहीं था

ख़ुशनुमाई देखना ना क़द किसी का देखना
बात पेड़ों की कभी आए तो साया देखना

ख़ूबियाँ पीतल में भी ले आती है कारीगरी
जौहरी की आँख से हर एक गहना देखना

झूठ के बाज़ार में ऐसा नज़र आता है सच
पत्थरों के बाद जैसे कोई शीशा देखना

ज़िदगानी इस तरह है आजकल तेरे बग़ैर
फ़ासले से कोई मेला जैसे तन्हा देखना

देखना आसाँ है दुनिया का तमाशा साहिबान
है बहुत मुश्किल मगर अपना तमाशा देखना

नाम : हिमकर श्याम
जन्मतिथि : 16 जनवरी, 1973
शिक्षा : राँची विश्वविद्यालय से वाणिज्य और पत्रकारिता एवं जन-सम्पर्क में स्नातक
प्रकाशित कृतियाँ : युद्धरत हूँ मैं' (काव्य संग्रह), 'बाद-ए-सबा' (साझा ग़ज़ल संग्रह), सीरीज के चार खण्डों के अलावा आधा दर्जन से अधिक साझा काव्य संग्रह, दिल बंजारा (ग़ज़ल संग्रह) प्रकाशानाधीन
संपादित पुस्तकें : 'बाद-ए-सबा' साझा ग़ज़ल संग्रह का संपादन, ज़िंदगी@लॉकडाउन (साझा काव्य संग्रह) और 'पगडंडियाँ' (साझा लघुकथा संग्रह) शीघ्र प्रकाश्य
सम्मान/पुरस्कार : बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से शती-वर्ष में साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान, बिहार लोक जीवन की ओर से 'सृजन शिखर सम्मान', विश्ववाणी हिंदी संस्थान, जबलपुर और साहित्य संगम संस्थान, नई दिल्ली की ओर से 'दोहाश्री' सम्मान
व्यवसाय/सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
संपर्क : B-1, शांति इंक्लेव, रोड नम्बर-4A, कुसुम विहार, निकट चिरंजीवी पब्लिक स्कूल, मोराबादी, राँची, झारखण्ड - 834008
मोबाइल : 86031 71710
ई-मेल : himkarshyam@gmail.com

❀

घाव भरते ही नए ज़ख़्म उभर जाते हैं
रोज़ जीते हैं ज़रा रोज़ ही मर जाते हैं

सोच के निकले थे हर हाल में जाना वापस
इनको जाना था कहाँ और किधर जाते हैं

भूख है प्यास है लिपटी है थकन पाँवों में
दूर तक चलते हैं, कुछ देर ठहर जाते हैं

क्या भरोसा है कि वो हक़ में ज़ुबाँ खोलेंगे
अपनी बातों से कई बार मुकर जाते हैं

कोई अंदाज़ा नहीं ख़ौफ़ रहेगा कब तक
लोग मज़लूम हैं बे-मौत ही मर जाते हैं

वक़्त आता है बुरा और चला जाता है
दर्द की आँच में तपते हैं निखर जाते हैं

यूँ लगे हर दिन हुआ इतवार है
ज़िंदगी की थम गई रफ़्तार है

ढूँढता था दिल कभी फ़ुर्सत मिले
फ़ुर्सतों ने कर दिया बेज़ार है

इक वबा ने हाल ऐसा कर दिया
क़ैद होकर रह गया संसार है

गुम हुई अफ़वाह में सच्ची ख़बर
चार-सू अब झूठ का व्यापार है

ज़ख़्म क़िस्तों में मिला है वक़्त से
वक़्त के आगे बशर लाचार है

ज़िंदगी का क्या भरोसा दोस्तो
किसलिए ये रंजिश-ओ-तकरार है

आज अपने हुए हैं बेगाने
काश! कोई तो दर्द पहचाने

कैसे आया हुजूम सड़कों पर
कोई आता नहीं है बतलाने

साथ चलते हैं दर्द के मंज़र
चल रहे हैं मगर ये दीवाने

राह में मौत भी खड़ी होगी
जानकर भी बने हैं अनजाने

मुफ़लिसी चैन छीन लेती है
भूख देती नहीं है सुस्ताने

जो हैं बीमार वो कहाँ जाएँ
बंद हैं शहर के शिफा-ख़ाने

सहमी हुई ज़मीन है, अम्बर उदास है
कुछ तो हुई है बात कि मंज़र उदास है

बेचैन आदमी है, बुरा वक़्त चल पड़ा
अख़बार में ख़बर छपी हर घर उदास है

महफ़ूज़ कब तलक हैं नहीं जानता कोई
क़ुदरत का क़हर ऐसा सुख़नवर उदास है

सारा जहान क़दमों में रखने का शौक़ था
ठोकर लगी है जब से सिकंदर उदास है

पड़ता नहीं है फ़र्क़ मुझे कोई बात से
मेरी हँसी को देख सितमगर उदास है

सुनसान रास्ता है सफ़र कर रहे हैं लोग
तन्हा खड़ा है मील का पत्थर उदास है

नाम शोहरत गुमान लेता है
वक़्त सब छीन-छान लेता है

कैसा करने लगा है वो धँधा
तीर देकर कमान लेता है

उससे कुछ भी छुपा नहीं रहता
बात दिल की भी जान लेता है

आदमी है उसूल का पक्का
सबसे लड़ने की ठान लेता है

जिसके चर्चे हैं बेवफ़ाई के
वो मेरा इम्तिहान लेता है

जब भी आता है क़हर क़ुदरत का
कितनी क़िस्तों में जान लेता है

नाम : हृदयेश 'मयंक'
जन्मतिथि : 18 सितम्बर, 1951
शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), मुंबई विश्वविद्यालय से बी.एस.सी.
प्रकाशित कृतियाँ : *ग़ज़ल संग्रह*-अपने हिस्से की धूप, दिल से निकली दिल की बात, *कविता संग्रह*-मैं शहर और सूरज, युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियायें, ठहराव के विरुद्ध, अभी भी बचा हुआ है बहुत कुछ, हम ये जो मिट्टी के बने हैं, सिवान में बाँसुरी (शीघ्र प्रकाश्य)
गीत नवगीत संग्रह- एक महक सोंधी माटी की (गीत नवगीत संग्रह), सायरन से सन्नाटे तक (गीत संग्रह), कोयलिया चुपके से कूक (गीत-नवगीत संग्रह, शीघ्र प्रकाश्य), *कहानी संग्रह*- रेत पर बनते ढहते घरौंदे, विरसे की कहानियाँ (शीघ्र प्रकाश्य), *आलोचना*- मेरी बस्ती में रौशनी है अभी, मुंबई का साहित्यिक परिदृश्य : एक पुनरावलोकन
सम्मान/पुरस्कार : 1. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का संत नामदेव पुरस्कार, 2. महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का अन्ना भाऊ साठे राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, 3. भारतीय सद्विचार मंच का डॉ. राममनोहर त्रिपाठी सम्मान, 4. प्रियदर्शनी एकेडमी पुरस्कार, 5. भारतीय प्रसार परिषद् का भारती गौरव सम्मान, 6. डॉ. हरिवंश राय बच्चन सम्मान, 7. स्वानंद बाबा साहित्यिक सम्मान, 8. अभियान का उत्तर साहित्य श्री सम्मान, 9. डॉ. अनिल मिश्र स्मृति गीत सम्मान, 10. सोनइंदर प्रतिष्ठान पूणे का सोनइंदर सम्मान, 11. लोकायन संस्था का लोकायन साहित्यिक सम्मान
मोबाइल : 98691 18707
ई-मेल : chintandisha@gmail.com

थोड़े से में बसर नहीं होता
अब दुआ का असर नहीं होता

ज़ीस्त में प्यार भी ज़रूरी है
सोने का घर तो घर नहीं होता

ये घरौंदे तो ख़्वाब जैसे हैं
इनको मिटने का डर नहीं होता

जिससे छावों की कुछ उमीद न हो
वो शजर तो शजर नहीं होता

जो जगा दे दबे ज़मीर 'मयंक'
ऐसा कोई गजर नहीं होता

दिल के हर ज़ख़्म में नमी निकली
कितनी मजरूह ज़िन्दगी निकली

कोई इल्ज़ाम क्यों दूँ क़िस्मत को
कोशिशों में ही कुछ कमी निकली

देखकर चाँद सा खिला चेहरा
सहमी-सहमी सी चाँदनी निकली

जिनको चाहा था दोस्तों की तरह
हमसे क्यों उनकी दुश्मनी निकली

मेरी मुस्कान हर ख़ुशी मेरी
मेरे होठों की बेबसी निकली

धूप अटकी थी बादलों में 'मयंक'
बाद अरसे के रौशनी निकली

गुलों में रहा तितलियों में रहा
रहा जब कभी, सुर्ख़ियों में रहा

ग़ज़ल के हसीं क़ाफ़ियों की तरह
रहा जब कभी, बोलियों में रहा

ज़ुबाँ में घुला मिसरियों की तरह
रहा जब कभी, लोरियों में रहा

हवा में रहा ख़ुशबुओं की तरह
रहा जब कभी, ख़ूबियों में रहा

सुरों में खनकती धुनों की तरह
रहा जब कभी, ठुमरियों में रहा

क्या चमन से एक सैलानी गया
धीरे-धीरे दाना और पानी गया

गाँव में थी इक नदी तालाब था
अब नहीं तो गाँव का मानी गया

गाँव डूबे, खेत डूबे बाढ़ में
डूबकर सब कुछ हरा धानी गया

इक नदी अब रह गई तारीख़ में
उस सरोवर में बहुत पानी गया

उस सदी में लाज तो बेची गई
इस सदी में आँख का पानी गया

जब भी देखा उसे जुदा पाया
मैंने हर बार इक ख़ुदा पाया

उसकी हर साँस में दुआ देखी
प्यार आँखों में चौगुना पाया

जाने कब जागती व सोती है
जब भी देखा उसे जगा पाया

जब भी लौटा कहीं से ना-उम्मीद
उसमें उम्मीद को बचा पाया

उसको देखा जहाँ भी जैसे भी
मैंने बस दूध में धुला पाया

माँ सा चेहरा कोई नहीं होता
जब भी देखा तो हौसला पाया

नाम : ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
जन्मतिथि : 09/02/1979
शिक्षा : एम.ए., बी.एड.
प्रकाशित कृतियाँ : अमिय-कलश (काव्य), सर्द मौसम की ख़लिश (ग़ज़ल संग्रह)
सम्मान/पुरस्कार : सृजन रत्न
व्यवसाय/सम्प्रति : शिक्षक
संपर्क : 96, टी.एन.बी रोड, शुकचर (घोषपाडा), सोदपुर, 24 परगना (उत्तर) कोलकाता-115 (पश्चिम बंगाल)
मोबाइल : 96813 07939 (WhatsApp)
ई-मेल : gyanprakashpandey45@gmail.com

सर पे गठरी, गोद में बच्चा, पेट है ख़ाली कैसे जायें ?
पाँव थके हैं प्यास लगी है हाली-हाली कैसे जायें

धूप पहनकर, भूख दबाकर इस गर्मी में पैदल-पैदल
बेचारी है पेट से धुन्नन की घरवाली कैसे जायें

एक न रोटी सब हैं भूखे बउआ-बिट्टी सूख गये हैं
आँखो के आगे की दुनिया बिल्कुल काली कैसे जायें

क्या छोड़ें क्या साथ रखें अब सबसे ही तो अपनापन है
झोला, बक्सा, बटुई, कल्छुल, लोटा, थाली कैसे जायें

घरवालों से मिल पाऊँगा या रस्ते की भेंट चढ़ूँगा
कलकत्ता से मिर्ज़ापुर अब, हे माँ काली ! कैसे जायें

पौरुष ज़रा सा आप भी दिखलाइये हुज़ूर
नारी विमर्श चल रहा है आइये हुज़ूर

पहले तो आस-पास जो उनको चिकोटिये
हक़ की उठे जो बात तो चिल्लाइये हुज़ूर

ये आदमी नहीं हैं ये बकरी हैं, भेड़ हैं
बहलाया सबने आप भी बहलाइये हुज़ूर

मंदिर किसी के पास है मस्जिद किसी के पास
हम लड़ रहे हैं पर्दे पे अब आइये हुज़ूर

बस्ती ये राख हो गई आये न आप, ख़ैर
अर्थी तो संविधान की उठवाइये हुज़ूर

लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ राज़ खोलेगी
बात निकली है बात बोलेगी

चाँदनी तो गुज़र चुकी कब की
रात अब नक़्शे-पा टटोलेगी

इन अमीरों को कौन समझाए
मुफ़लिसी टाट पर ही सो लेगी

अब न आँगन के और टुकड़े कर
ये सियासत है ज़हर घोलेगी

ग़म तो ये है कि दार पर सूरज
बारे-ज़ुल्मत तो आँख ढो लेगी

एक पूरा जहान अंदर है
अश्क क़तरा नहीं समंदर है

हर तरफ़ राज है अँधेरे का
तर-ब-तर ख़ूँ से पोरबंदर है

आदमी की नज़र से देखो तो
देवता आदमी के अंदर है

पैरहन है भले क़लंदर सा
कैसे कह दूँ कि वो क़लंदर है

मुश्त भर खाक़ ही तो है दुनिया
लाख बोले कोई सिकंदर है

फटी गंजी, फटी पनही मगर ये शान तो देखो
लिए कंधे पे हल जाते हुए दहक़ान तो देखो

फ़क़त दो जून की रोटी लँगोटी और इक छप्पर
समुंदर के हृदय में बूँद सा अरमान तो देखो

निराती, गोड़ती, हँसती, चहकती कोल बालायें
दहकते टेसू के फूलों सी ये मुस्कान तो देखो

न लफ़्ज़ों में बयाँ करने की है तौफ़ीक़ क्या बोलूँ
अनाजों से भरे स्वर्णिम सुघर खलिहान तो देखो

नमक-रोटी, दो टुकड़ा प्याज़, अमचुर औ' हरी मिर्ची
हमारे अन्नदाताओं के दस्तरख़ान तो देखो

नाम : ज्ञान प्रकाश 'विवेक'

जन्मतिथि : 30/01/1949

शिक्षा : एम.ए. हिंदी

प्रकाशित कृतियाँ : ग्यारह कहानी संग्रह, सात उपन्यास, छः ग़ज़ल संग्रह, तीन ग़ज़ल आलोचना पुस्तकें, स्मृति आख्यान - कम आवाज़ों का शहर, कविता संग्रह तथा दो पुस्तकें सम्पादित

सम्मान/पुरस्कार : संस्कृत मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014-2015 हिंदी ग़ज़ल पर सीनियर फ़ेलोशिप प्राप्त

व्यवसाय/सम्प्रति : सेवानिवृत

संपर्क : 1875, सेक्टर-6, बहादुरगढ़, हरियाणा

मोबाइल : 98134 91654

ई-मेल : gyanpvivek@gmail.com

❀

इस बात की लड़ाई उस बात की लड़ाई
हर बात पे हमारी होती रही लड़ाई

हम सबकी ज़िन्दगी की इतनी-सी है कहानी
हर शख़्स लड़ रहा है इक काग़ज़ी लड़ाई

तक़रार छोटी-मोटी अच्छी थी घर के अन्दर
अब आम हो गई है तेरी-मेरी लड़ाई

तुम हो कि जीतने का वरदान पा चुके हो
मैं हूँ कि लड़ रहा हूँ हारी हुई लड़ाई

यारो, पतंग जैसी थी ज़िन्दगी हमारी
साँसों की डोर टूटी तो ख़त्म थी लड़ाई

उसके बदन के सारे कपड़े फटे हुए हैं
वो लड़ के आ रही है कोई बड़ी लड़ाई

इस दौर की सियासत लगती है इक क़बीला
सरदार लड़ रहे हैं बेवजह की लड़ाई

अपने भवन में तुमने बारिश का जश्न देखा
कच्चे घरों से पूछो, कैसे लड़ी लड़ाई

❀

तुम्हें जीने का लालच हमको मर जाने की आदत है
कि हम हैं बुलबुले हमको बिखर जाने की आदत है

कि तुम तो धूप में छतरी उठाकर घर से चलते हो
मगर पेड़ों तले मुझको ठहर जाने की आदत है

मेरा दिल एक ज़िद्दी-सा कोई बिगड़ैल बच्चा है
मैं जाता हूँ इधर, उसको उधर जाने की आदत है

तमाशा देखना साहिल पे बेशक शौक़ है तेरा
मगर मुझको तो दरिया में उतर जाने की आदत है

मैं बेघर हूँ कई जन्मों की आदत है भटकने की
कि तेरा घर है, तुझको अपने घर जाने की आदत है

मेरा दुःख तो बहुत मैला-कुचैला है मेरे अन्दर
मगर तेरी ख़ुशी को बन-सँवर जाने की आदत है

जो भी मिलता है उसी का दुःख बड़ा है
इस नगर में हर किसी का दुःख बड़ा है

लौटा कर आया नहीं है राम अब तक
मूक अकेली जानकी का दुःख बड़ा है

लोग अपने दुःख पे जलसा कर रहे हैं
साहिबो ! ये इस सदी का दुःख बड़ा है

गिर गई जो हाथ से मेरे अचानक
मुझको यारो उस घड़ी का दुःख बड़ा है

जिसकी सारी मछलियाँ तुम ले गए हो
रहनुमाओ, उस नदी का दुःख बड़ा है

मौत का सोचेंगे जब फ़ुरसत मिलेगी
इन दिनों तो ज़िंदगी का दुःख बड़ा है

❀

❀

बस्ती में तो दूर तलक सन्नाटा है
फिर ये कैसा शोर सुनाई देता है

उसकी सूखी आँखों को देखो लोगो
लगता है वो आँसू बेच के आया है

वक़्त का मारा शायद कोई आ जाए
मैंने दरवाज़े को खोल के रक्खा है

हाथ छुड़ाकर बिछुड़ गए सारे साथी
बहुत अकेला ये जीवन का मेला है

चलते हुए व्याकुल लगता है वो जैसे
अँगारों के जूते डाल के आया है

उसने मेरे दिल में अँधेरा देखा था
उसने ख़त में जुगनू मुझको भेजा है

हाथ पकड़कर चल पड़ती हैं छोटी-छोटी बातें
लगता है बच्चों जैसी हैं छोटी-छोटी बातें

तख़्ती, क़लम, दवात, पुराना बस्ता और पहाड़े
बचपन की कितनी सारी हैं छोटी-छोटी बातें

लेकर सब सामान मैं अपने घर को छोड़ रहा हूँ
मुझसे आकर लिपट रही हैं छोटी-छोटी बातें

हम दोनों चाय का कप आधा-आधा पीते हैं
हम दोनों के जीवन की हैं छोटी-छोटी बातें

मुँह को धोया, कंघी कर ली और लगा ली बिन्दी
तेरी सब अच्छी लगती हैं छोटी-छोटी बातें

आप बड़े हैं बड़ी-बड़ी बातें करते रहते हैं
मैं छोटा हूँ और मेरी हैं छोटी-छोटी बातें

❀

नाम : सिद्धेश्वर
जन्मतिथि : 20/06/1959 पटना (बिहार)
शिक्षा : स्नातक (कला)
प्रकाशित कृतियाँ : बूंद -बूंद सागर (लघुकथा संग्रह, पुरस्कृत), इतिहास झूठ बोलता है (कविता संग्रह, पुरस्कृत), ढलता सूरज ढलता शाम (कहानी संग्रह, पुरस्कृत), उपन्यास अंश : दहशतज़दा (लघुकथा), कलश (काव्य पुस्तिका), भीतर का सच (लघुकथा संग्रह), संपादित पुस्तकें : आदमीनामा (बिहार के लघुकथाकारों की पहली पुस्तक), उत्कर्ष (पुरस्कृत लघुकथाएँ), टूटते-जुड़ते संदर्भों के बीच (कविता संग्रह), ग़ज़ल यात्रा (ग़ज़ल संकलन), शताब्दी की कविताएँ (काव्य संकलन), सोच विचार (मासिक पत्रिका का बिहार ब्यूरो चीफ़), संपादक और प्रकाशक : अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका (त्रैमासिक)
सम्मान/पुरस्कार : राष्ट्रीय स्तर पर रेल मंत्रालय द्वारा मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, बिहार सरकार द्वारा रेणु पुरस्कार, साहित्यकार संसद द्वारा अज्ञेय शिखर सम्मान, वर्तमान साहित्य द्वारा श्रीकृष्णप्रताप स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत, सारिका द्वारा सर्वभाषा कहानी एवं लघुकथा प्रतियोगिता में "बोहनी" पुरस्कृत, अखिल भारतीय लघुकथा मंच सम्मान प्राप्त, मीडिया में अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका ग्रुप का एडमिन
व्यवसाय/सम्प्रति : प्रकाशक
संपर्क : "सिद्धेश् सदन" अवसर प्रकाशन, (किड्स कार्मल स्कूल के बाएं) पोस्ट : बीएससी, द्वारिकापुरी रोड नंबर:02 हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना (बिहार)
मोबाइल : 9234760365
ई-मेल : sidheshwarpoet.art@gmail.com

नज़र और कुछ दे रही है गवाही
कसक दिल की होटों पे लाना मनाही

मेरा आशियाना जला मेरे आगे
मुहब्बत की क़िस्मत में है बस तबाही

सिखाया हमें आँधियों ने सँवरना
कि काँटों से भी हमने हँसकर निबाही

तलाशे-गुहर में है खोई मुहब्बत
अभी दूर है लज़्ज़तों की सुराही

न 'सिद्धेश' को कोई शिकवा शिकायत
है बेख़ौफ़ जिस पर हो फ़ज़्ले-इलाही

‘2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें’ के ग़ज़लकारों की शहरवार विवरणी

राज्य	शाइर/शाइरा का नाम	शहर	रचनाओं की पृष्ठ संख्या
ओड़ीसा			
	सईद रहमानी	कटक	230
	डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति	राउरकेला	154
उत्तराखंड			
	डॉ. राकेश जोशी	गढ़वाल	176
	कृष्ण सुकुमार	रुड़की	112
	के.पी. ‘अनमोल’	रुड़की	116
	पंकज गर्ग	रुड़की	216
गुजरात			
	शाहजहाँ शाद	सूरत	282
छतीसगढ़			
	देववंश दुबे	अंबिकापुर	192
	शुचि ‘भवि’	भिलाई	386
	सोनिया वर्मा	रायपुर	304
झारखण्ड			
	कविता विकास	धनबाद	104
	ख़ुर्शीद तलब	बेरमो	120
	देवेंद्र गौतम	राँची	196
	हिमकर श्याम	राँची	310
पंजाब			
	करन कटारिया	भटिंडा	102
	जगजीत क़ाफ़िर	लुधियाना	130
	विजय वाजिद	लुधियाना	272
	सागर सियालकोटी	लुधियाना	296

प.बंगाल

नूर मुहम्मद नूर		कोलकाता	214
रणविजय कुमार श्रीवास्तव		कोलकाता	248
रामनाथ 'बेख़बर'	चाप्दानी	कोलकाता	262
ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	सोदपुर	कोलकाता	314

बिहार

रहमत अली उर्फ़ रहमतुल्लाह अली	आरा	256
डॉ. नूतन सिंह	जमुई	160
गोविन्द राकेश	दलसिंहसराय	124
अनिल कुमार सिंह	पटना	88
आराधना प्रसाद	पटना	94
कुंदन आनंद	पटना	108
कुमार पंकजेश	पटना	114
ज़फ़र सिद्दीक़ी	पटना	132
ज्योति मिश्रा	पटना	146
डॉ. (प्रो.) एहसान शाम	पटना	152
डॉ. शँकर प्रसाद	पटना	178
डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'	पटना	184
नाशाद औरंगाबादी	पटना	210
प्रेम किरण	पटना	224
फ़रीदा अंजुम	पटना सिटी	230
भगवती प्रसाद द्विवेदी	पटना	232
रमेश 'कँवल'	पटना	250
शरद रंजन 'शरद'	पटना	280
कुमार नयन	बक्सर	110
मनीष 'मोहक'	बेगुसराय	240
इकराम हुसैन 'शाद'	भागलपुर	98

दिनेश 'तपन'	भागलपुर	188
डॉ. फ़रहत हुसैन 'ख़ुशदिल'	भागलपुर	166
सुधीर कुमार 'प्रोग्रामर'	भागलपुर	298
अनिरुद्ध सिन्हा	मुंगेर	86
विकास	मुंगेर	270
डॉ. आरती कुमारी	मुज़फ्फ़रपुर	150
डॉ. पंकज कर्ण	मुज़फ्फ़रपुर	162
डॉ. भावना	मुज़फ्फ़रपुर	170
सिद्धेश्वर	पटना	316

मध्यप्रदेश

अशोक मिज़ाज	सागर	92
महेश कटारे 'सुगम'	सागर	244
रवि खण्डेलवाल	इंदौर	252
प्रमोद रामावत 'प्रमोद'	नीमच	220
ज़हीर क़ुरैशी	भोपाल	138
सुभाष पाठक 'ज़िया'	शिवपुरी	300

महाराष्ट्र

पूजा भाटिया	नवी मुंबई	228
ज़ीनत एहसान क़ुरैशी	मुंबई	144
नवीन जोशी 'नवा'	मुंबई	206
नवीन सी. चतुर्वेदी	मुंबई	208
प्रेम रंजन 'अनिमेष'	मुंबई	226
राजेश कुमारी 'राज'	मुंबई	260
रेखा किंगर 'रौशनी'	मुंबई	264
हस्तीमल 'हस्ती'	मुंबई	308
हृदयेश 'मयंक'	मुंबई	312

मोहसिन 'आफ़ताब' केलापुरी	यवतमाल	246

उत्तर प्रदेश

अशोक अंजुम	अलीगढ़	90
गोविन्द गुलशन	ग़ाज़ियाबाद	122
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	ग़ाज़ियाबाद	168
देवेन्द्र आर्य	गोरखपुर	194
कमलेश भट्ट	नॉएडा	100
डॉ. अब्दुल क़ादिर	नॉएडा	148
विज्ञान व्रत	नॉएडा	276
अक़ील नोमानी	बरेली	78
विनय 'साग़र'	बरेली	274
ज़मीर दरवेश	मुरादाबाद	134
ज़िया ज़मीर	मुरादाबाद	142
डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'	मुरादाबाद	156
डॉ. मुजाहिद फ़राज़	मुरादाबाद	174
डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर	मुरादाबाद	180
मंसूर उस्मानी	मुरादाबाद	236
सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'	मुरादाबाद	294
सुमित सिंह 'मीत'	मुरादाबाद	302
गौरव कुमार नायक	रामपुर	126
कुँवर कुसुमेश	लखनऊ	106
नज़्म सुभाष	लखनऊ	204
केशव शरण	वाराणसी	118
धर्मेन्द्र गुप्त साहिल	वाराणसी	200
प्रो. वशिष्ठ अनूप	वाराणसी	268
अजय नमन	सीतापुर	84

राजस्थान

डॉ. सीमा विजयवर्गीय	अलवर	182
डॉ. प्रेम भंडारी	उदयपुर	164
अखिलेश तिवारी	जयपुर	80
जया गोस्वामी	जयपुर	136
मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'	जयपुर	242
लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'	जयपुर	266
सत्य चंदन	जयपुर	292
अकमल नईम सिद्दीक़ी	जोधपुर	76
संदेश जैन 'संदेश'	बाँसवाड़ा	288
पवन शर्मा	हनुमानगढ़	222
मंगल सिंह 'नाचीज़'	हनुमानगढ़	234
ए.ऍफ़.नज़र पिपलाई	सवाई माधोपुर	96

हरियाणा

दिनेश बंसल	कैथल	190
अजय अज्ञात	फ़रीदाबाद	82
हरेराम नेमा 'समीप'	फ़रीदाबाद	306
ज्ञान प्रकाश विवेक	बहादुरगढ़	316
डॉ. सुनीता सिंह 'शोहरत'	रोहतक	186
राज बाला 'राज'	हिसार	258
निर्मल आर्या	पानीपत	212

हिमाचल प्रदेश

ज़ाहिद अबरोल	ऊना	140
नकुल गौतम	नाहन	202

डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'		हमीरपुर	158

केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली

देवेन्द्र माँझी	द्वारिका	नयी दिल्ली	198
प्रताप सोमवंशी	मयूर विहार	नयी दिल्ली	218
मधुवेश	यमुना विहार	दिल्ली	238

केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़

रश्मि शर्मा		चंडीगढ़	254
चाँद शुक्ला हदियाबादी		डेनमार्क	128

2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें के शाइरों की डिग्रियाँ

अकमल नईम सिद्दीक़ी	M.A. (Urdu, Hindi, English, Islamic Studies)
अक़ील नोमानी	बी. ए.
अखिलेश तिवारी	एम.एस सी.
अजय अज्ञात	मेकेनिकल इंजिनयरिंग
अजय नमन	एम.ए. (हिंदी), बी.एड.
अनिरुद्ध सिन्हा	स्नातकोत्तर
अनिल कुमार सिंह	एम.ए. समाजशास्त्र
अशोक 'अंजुम'	एम.ए.(डबल), बी.एड.
अशोक मिज़ाज	एम.एस सी., रसायन शास्त्र
आराधना प्रसाद	एम.एस सी., वनस्पति शास्त्र
ए.एफ.'नज़र',	एम.ए. (हिंदी), बी.एड.
इकराम हुसैन 'शाद'	मैट्रिक
कमलेश भट्ट 'कमल'	एम.एस सी., सांख्यिकी
कमल कटारिया 'करन'	12 वीं
कविता विकास	एम.ए. (अंग्रेज़ी, अर्थशास्त्र), पी.जी. डिप. इन जर्नलिस्म
कुँवर कुसुमेश	एम.एस सी., गणित
कुंदन आनंद	बी.ए. हिंदी प्रतिष्ठा (छात्र)
कृष्ण सुकुमार	स्नातक
कुमार पंकजेश	वैमानिकी अभियंत्रण में स्टूडेंटशिप और वर्कशॉप टेक्नोलॉजी, (सेक्शन-ए) में उत्तीर्ण
के. पी. अनमोल	एम.ए. (हिन्दी), डिप्लोमा इन वेब डिजाइनिंग
केशव शरण	अप्राप्त
ख़ुर्शीद तलब	बी.कॉम.
गोविन्द गुलशन	कला स्नातक

गोविन्द राकेश	बी.एस सी., एल.एल.बी.
गौरव कुमार नायक	बी.ए.
चाँद शुक्ल हदियाबादी	अस्पष्ट
जगजीत काफ़िर	मैट्रिक
मुहम्मद ज़फ़र सिद्दीक़ी	इंटरमीडिएट
ज़मीर दरवेश	एम.ए.
जया गोस्वामी	एम.ए. (संस्कृत), एम. ए. (समाज शास्त्र)
ज़हीर क़ुरैशी	बी.एस सी.
ज़ाहिद अबरोल	एम.एस सी. फ़िज़िक्स
ज़िया ज़मीर	एम.एस सी. मैथ्स
ज़ीनत एहसान क़ुरैशी	एम.ए. हिंदी साहित्य और समाज शास्त्र
ज्योति मिश्रा	एम.ए. राजनीति विज्ञान
डॉ. अब्दुल क़ादिर	एम.बी.ए., पी.एच.डी. UGC (नेट)
डॉ. आरती कुमारी	एम.ए. (अंग्रेज़ी), एम.एड, पी.एच.डी. (अंग्रेज़ी), नेट (शिक्षाशास्त्र)
डॉ. (प्रो.) एहसान शाम	एम.ए., पी.एच.डी.
डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति	एम.ए., पी.एच.डी.
डा. कृष्णकुमार 'नाज़'	एम.ए.(समाजशास्त्र, उर्दू व हिंदी), पीएचडी (हिंदी)
डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'	एम. ए., एम.फ़िल., पी.एच.डी.
डॉ. नूतन सिंह	एम.ए.(इतिहास), पी.एच.डी.
डॉ. पंकज कर्ण	एम.ए, पी.एच.डी.
डॉ. प्रेम भंडारी	एम. ए, संगीत और समाज शास्त्र, पी.एच.डी.
डॉ. फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल	एम.ए. (डबल), पी.एच.डी.
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	एम.ए., पी.एच.डी. (हिन्दी)
डॉ. भावना	एम.एस सी., पी.एच.डी.
डॉ. मुजाहिद फ़राज़	बी.यू.एम.एस, एम.ए (उर्दू)
डॉ. राकेश जोशी	एम.ए., एम.फ़िल., डी.फ़िल. (अंग्रेज़ी साहित्य में)

डॉ. शँकर प्रसाद	एम. ए., पी.एच.डी.
डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर	एम. ए. (हिन्दी एवं दर्शनशास्त्र), पी.एच.डी.
डॉ. सीमा विजयवर्गीय	एम.ए. (हिंदी), एम.ए.(संगीत), पी.एच.डी.
डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा 'सावी'	एम.ए., पी.एच.डी.
डॉ. सुनीता सिंह 'शोहरत'	एम.ए., पी.एच.डी.
दिनेश तपन	एम.एस सी.(मैथ)
दिनेश बंसल	बी.कॉम.
देववंश दुबे	एम.ए.
देवेन्द्र आर्य	एम.ए. (इतिहास)
देवेंद्र गौतम	बी.ए.
देवेन्द्र माँझी	स्नातक
धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'	एम.कॉम., बी.एड.
नकुल गौतम	अभियाँत्रिकी स्नातक
नज़्म सुभाष	बी.ए., एल.एल.बी.
नवीन जोशी 'नवा'	बी.कॉम, कंपनी सेक्रेटरी
नवीन सी. चतुर्वेदी	बी.कॉम
नाशाद औरंगाबादी	बी.कॉम
निर्मला आर्या	अप्राप्त
नूर मुहम्मद 'नूर'	बी.कॉम
पंकज गर्ग	एम.ए. (अर्थशास्त्र)
प्रताप सोमवंशी	एम.ए. (हिंदी)
प्रमोद रामावत 'प्रमोद'	विधि स्नातक
पवन शर्मा	एम.ए.
प्रेम किरण	स्नातक
प्रेम रंजन 'अनिमेष'	एम.ए. (अंग्रेज़ी)
पूजा भाटिया	M.Sc.(biotech), B.Ed.
फ़रीदा अंजुम	स्नातक

भगवती प्रसाद द्विवेदी	एम.एससी (रसायन विज्ञान)
मंगल सिंह 'नाचीज़'	M.A. (English), MA(Pol. Sc.), B. Ed.
मंसूर उस्मानी	एम.ए. उर्दू, विशेष योग्यता फ़ारसी
मधुवेश	एम.ए. (हिन्दी)
मनीष 'मोहक'	बी.ए., एम.ए. (छात्र)
मनोज कुमार मित्तल 'कैफ़'	लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर
महेश कटारे 'सुगम'	हाई स्कूल
मोहसिन 'आफ़ताब' केलापुरी	एम.ए. (इतिहास/ उर्दू)
रणविजय कुमार श्रीवास्तव	बी.एस सी., एम.ए. (हिंदी)
रमेश 'कँवल'	बी.एस सी., अदीब
रवि खण्डेलवाल	स्नातक
रश्मि शर्मा	बी.ए., बी.एड.
रहमत अली रहमत	हायर सेकेंडरी
राज बाला 'राज'	कहानी लेखन महाविद्यालय अंबाला छावनी से लेख व फ़ीचर लेखन का कोर्स
राजेश कुमारी 'राज'	स्नाकोत्तर, बी.एड.
रामनाथ 'बेख़बर'	एम.ए., बी.एड
रेखा किंगर 'रौशनी'	एम.कॉम, (बिजनेस मैंनेजमेंट), एल.एल.एम. एम.ए.(उर्दू)
लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'	स्नातक
प्रो. वशिष्ठ अनूप	एम.ए., पी.एच.डी., डी.लिट.
विकास,	विधि स्नातक
विजय वाजिद	M.A., B.Li.Sc.
विनय साग़र	इंटर
विज्ञान व्रत	एम.ए. चित्रकला
शरद रंजन 'शरद'	स्नातकोत्तर
शाहजहाँ 'शाद'	विज्ञान स्नातक

शिव कुमार 'पराग'	अस्पष्ट
शुचि 'भवि'	एम.एस.सी.(इलेक्ट्रॉनिक्स, गोल्डमेडलिस्ट), बी.एड.
संदेश जैन 'संदेश'	मेल नर्स
सईद रहमानी	स्नातक
सत्य चंदन	एम.एस सी.
सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'	एम.ए., बी.एड.
सागर सियालकोटी	अप्राप्त
सुधीर कुमार प्रोग्रामर	बी.एस.सी., पी.जी. डिप. इन सॉफ़्टवेयर इंजिनियरिंग
सुभाष पाठक 'ज़िया'	बी.एस.सी, बी.एड., एम.ए.
सुमित सिंह 'मीत'	परास्नातक (ग्रामीण विकास एवं प्रबंधन) व एम.बी.ए. (मानव संसाधन एवं विपणन)
सोनिया वर्मा	एम.एस सी., बी.एड.
हरेराम नेमा 'समीप'	स्नातक (वाणिज्य एवं विधि), साहित्यरत्न + उर्दू
हस्तीमल 'हस्ती'	एम.फ़िल.
हिमकर श्याम	वाणिज्य और पत्रकारिता एवं जन सम्पर्क में स्नातक
हृदयेश 'मयंक'	अप्राप्त
ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	एम.ए, बी.एड.
ज्ञान प्रकाश 'विवेक'	एम.ए. हिंदी

'2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें' के सुख़नवरों की शिक्षा की डिग्रियाँ

अंडर ग्रेजुएट	07
अभियंत्रण स्नातक	02
विधि स्नातक	02
स्नातक/ कला स्नातक	15
वाणिज्य स्नातक	08
विज्ञान स्नातक	04
स्नातकोत्तर एम.ए. (3+)	01
स्नातकोत्तर एम.ए.डबल (1 +)	07
स्नातकोत्तर एम.ए.	27
पी.एच.डी.	16
एम.फिल./डी.फ़िल./डी.लिट.	04
एम.कॉम.	02
एम.एस सी.	13
डॉक्टर्स	
एम.बी.बी.एस.	01
बी.यू.एम.एस.	01
अन्य	03
अप्राप्त	06
कुल	119

‘2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें’ की महिला ग़ज़लकार

आराधना प्रसाद

कविता विकास

जया गोस्वामी

ज़ीनत एहसान क़ुरैशी

ज्योति मिश्रा

डॉ. आरती कुमारी

डॉ. नलिनी विभा नाज़ली

डॉ. नूतन सिंह

डॉ. भावना

डॉ. सीमा विजय वर्गीय

डॉ. सुधा सिन्हा सावी

डॉ. सुनीता सिंह शोहरत

निर्मल आर्या

पूजा भाटिया

फ़रीदा अंजुम

रश्मि शर्मा

राजबाला राज

राजेश कुमारी राज

रेखा किंगर रौशनी

शुचि भवि

सोनिया वर्मा

सुख़नवरों के जन्मदिन

जनवरी

01	मधुवेश	1956
02	अनिल कुमार सिंह	1959
05	कुमार नयन	1955
05	इकराम हुसैन शाद	1975
05	डॉ. फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल	1958
05	रणविजय कुमार श्रीवास्तव	1959
05	राज बाला 'राज'	1981
08	देवेंद्र गौतम	1955
10	डा. कृष्णकुमार नाज़	1961
15	नाशाद औरंगाबादी	1935
15	गोविन्द राकेश	1955
15	प्रेम किरण	1953
16	हिमकर श्याम	1973
18	सागर सियाल कोटी	1951
20	डॉ. (प्रो.)एहसान शाम	1949
21	ज़ीनत एहसान क़ुरैशी	1970
23	अशोक मिज़ाज	1957
24	महेश कटारे सुगम	1954
29	पंकज गर्ग	1961
29	विनय साग़र	1953
30	ज्ञान प्रकाश विवेक	1949
30	संदेश जैन संदेश	1980
31	दिनेश तपन	1940

फ़रवरी

03	कुँवर कुसुमेश	1950
05	जया गोस्वामी	1939
07	गोविन्द गुलशन	1957
09	रेखा किंगर रौशनी	----
09	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	1979
11	देववंशदुबे	1961
13	कमलेश भट्ट कमल	1959
16	डॉ. (प्रो.) सुधा सिन्हा सावी	----
20	डॉ. भावना	1976
22	कुंदन आनंद	1994
28	कविता विकास	----

मार्च

01	डॉ. मुजाहिद फ़राज़	1962
01	मंसूर उस्मानी	1954
04	सत्य चंदन	1972
05	सुमित कुमार सिंह 'मीत'	1987
11	हस्तीमल हस्ती	1946
21	चाँद शुक्ल हदियाबादी	1946
24	अजय अज्ञात	1961
25	डॉ. आरती कुमारी	1977

अप्रैल

06	लोकेश कुमार सिंह साहिल	1957
10	देवेन्द्र माँझी	1957
13	अकमल नईम सिद्दीक़ी	1974

18	प्रेम रंजन अनिमेष	1968
19	शरद रंजन शरद	1958

मई

02	अनिरुद्ध सिन्हा	1957
05	प्रमोद रामावत प्रमोद	1949
19	अक़ील नोमानी	1958
23	आराधना प्रसाद	1974
25	फ़रीदा अंजुम	1995
27	अखिलेश तिवारी	1966

जून

08	अजय नमन	1990
10	मनोज कुमार मित्तल कैफ़	1956
10	राजेश कुमारी राज	1956
16	कुमार पंकजेश	1963
18	देवेन्द्र आर्य	1957
18	डॉ. कुमार प्रजापति	1959
25	सईद रहमानी	1936
30	ए.ऍफ़.नज़र	1979

जुलाई

01	नज़्म सुभाष	1986
01	भगवती प्रसाद द्विवेदी	1955
03	शिव कुमार पराग	1959
04	डॉ. शँकर प्रसाद	1946
07	ज़िया ज़मीर	1977

07	धर्मेन्द्र गुप्त साहिल	1964
07	ज्योति मिश्रा	----
17	नवीन जोशी नवा	1967
20	नकुल गौतम	1981
30	जगजीत काफ़िर	1979

अगस्त

05	ज़हीर क़ुरैशी	1950
11	पूजा भाटिया	1977
12	डॉ. सुनीता सिंह शोहरत	1978
13	हरेराम नेमा समीप	1951
14	शाहजहाँ शाद	1961
15	मोहसिन आफ़ताब केलापुरी	1986
17	नूर मुहम्मद नूर	1952
17	विज्ञानव्रत	1943
20	सरफ़राज़ हुसैन 'फ़राज़'	1975
23	केशव शरण	1960
25	ख़ुर्शीद तलब	1967
25	रमेश कँवल	1953
26	मंगल सिंह नाचीज़	1983

सितम्बर

01	डॉ. अब्दुल क़ादिर	1978
09	डॉ. राकेश जोशी	1970
14	रवि खण्डेलवाल	1951
14	विजय वाजिद	1968
15	सुभाष पाठक ज़िया	1990

18	हृदयेश मयंक	1951
19	के. पी. अनमोल	1989
23	डॉ. प्रेम भंडारी	1949
25	अशोक अंजुम	1966
25	पवन शर्मा	1961
28	कमल कटारिया करन	1984

अक्तूबर

01	सुधीर कुमार प्रोग्रामर	1961
05	डॉ. पंकज कर्ण	1976
15	कृष्ण सुकुमार	1954
20	सोनिया वर्मा	----
25	दिनेश बंसल	1977
27	नवीन सी. चतुर्वेदी	1968
28	डॉ. ब्रह्मजीत गौतम	1940
30	ज्ञान प्रकाश विवेक	1949

नवम्बर

02	गौरव कुमार नायक	1997
03	डॉ. सीमा विजयवर्गीय	----
08	रामनाथ बेख़बर	1978
10	निर्मल आर्या	1966
11	मो. ज़फ़र सिद्दीक़ी	1954
15	डॉ. नूतन सिंह	1969
18	मनीष मोहक	1998
24	शुचि भवि	----

दिसम्बर

08	ज़मीर दरवेश	1943
	डॉ. नलिनी विभा नाज़ली	1954
17	रश्मि शर्मा	1954
18	डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर	1954
20	ज़ाहिद अबरोल	1950
20	प्रताप सोमवंशी	1968
30	रहमत अली उर्फ़ रहमतुल्ला	1951
31	विकास	1978

‘2020 की नुमाइन्दा ग़ज़लें’ उम्रवार विवरणी

अवतरण का वर्ष	शायर	शाइरात	कुल
1935 से 1940 में	04	01	05
1941 से 1950 में	12	00	12
1951 से 1955 में	18	01	19
1956 से 1960 में	17	01	18
1961 से 1965 में	12	01	13
1966 से 1970 में	09	03	12
1971 से 1975 में	05	03	08
1976 से 1980 में	09	04	13
1981 से 1990 में	09	01	10
1991 से 1998 में	03	01	04
जन्म वर्ष अप्राप्त	00	06	06
कुल	**98**	**22**	**120**

2020 के नुमाइन्दा सुख़नवरों के नुमाइन्दा अशआर

चाँदनी कब रही मुक़द्दर में
उम्र भर धूप में जला हूँ मैं
देववंश दूबे

तीरगी से पूछ लेना तुम मेरे घर का पता
इस नगर की रौशनी मुझसे अभी वाक़िफ़ नहीं
देवेन्द्र माँझी

नई तहज़ीब के लोगो, मैं झूठोंसे नहीं डरता
मैं उन सच्चों से डरता हूँ जो सच कहने से डरते हैं
डॉ. राकेश जोशी

तुम नसीबों से मिलीं
ज़िन्दगी जन्नत हुई
रमेश 'कँवल'

दिख गया चाँद आज दुपहर में
ये हक़ीक़त है कोई ख़्वाब नहीं
डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

कुछइस तरह मेरेसपनों मे तुम न आया करो
कि आते आते ही जाने की ज़िद मचाया करो
डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

चाँद को छूने की कोशिश में तो नाकामी मिली
हाँ मगर, नादान बच्चे को उछलना आ गया
डॉ. कृष्ण कुमार नाज़

अभी से ही मुकरने तुम लगे हो
सियासत में बहुत हुशियार हो क्या
गोविन्द राकेश

ख़ुशनसीबी किसी से कहती है
तुमसे तो बदनसीब अच्छे हैं
केशव शरण

इन अँधेरों से कोई ख़ौफ़ नहीं है मुझको
मैं समझती हूँ यहाँ नूर की बारिश होगी
डॉ. आरती कुमारी

आँखों में, ज़िहन-ओ-दिल में कहाँ हूँ ख़बर नहीं
पहली नज़र का इश्क़ हूँ मेरा पता न पूछ
ज़ाहिद अबरोल

ये ज़लालत ना झेलनी पड़ती
बाहुनर से जो बेहुनर होता
डॉ. प्रेम भंडारी

ज़माने में ग़म के फ़साने बहुत हैं
मुसर्रत के भी तो तराने बहुत हैं
डॉ. नूतन सिंह

ज़िन्दगी से तो बस ये मिला तज्रिबा
मौत से गर डरे आप मर जायेंगे
अनिल कुमार सिंह

मेरी क़िस्मत लिखनेवाला
ख़ुद हाथ दिखाता फिरता है
मंगल सिंह 'नाचीज़'

क़ैद था जो इक परिंदा मुद्दतों से दोस्तों
तोड़कर वो आज मिट्टी के क़फ़स को उड़ गया
आराधना

करेगा कौन अब दीदार मेरे
उठी है सामने दीवार मेरे

तुम्हारे बिन नहीं छुट्टी से लगते
महीने के सभी इतवार मेरे
अजय नमन

ख़ुशबूएँ पढ़कर नमाज़ें हो गईं रुख़्सत मगर
फूल शाख़ों पर ही शबनम से वुज़ू करते रहे
गोविंद गुलशन

एक सच है जिसे ख़्वाबों ने बचा रक्खा है
इस मुहब्बत को किताबों ने बचा रक्खा है

कोई अच्छा न रहे तो न रहेगी दुनिया
थोड़े अच्छों को ख़राबों ने बचा रक्खा है
प्रेम रंजन 'अनिमेष'

टूटकर 'भवि' जब कभी बिखरी हूँ मैं
आप के ही दिल से राहत है मुझे
शुचि 'भवि'

इक झलक पाने की ख़ातिर चिलचिलाती धूप में
मारा-मारा फिरता है दीवाना तेरे शहर में
इक़बाल दानिश

बंदगी के भी कुछ उसूल तो हैं
सजदा हर जा नहीं किया जाता
रेखा किंगर'रौशनी'

लोग मज़हब लिख रहे हैं, ख़ंजरों से, ख़ून से
तितलियों ने फूल पर होठों से मज़हब लिख दिया
प्रमोद रामावत प्रमोद

काट रही है सब्ज़ी वो या काट रही है अपने दिन
सच्चाई तो चाकू जाने या जाने बेचारी माँ
प्रेम किरण

सारे सिक्के पड़े थे 'साहिल' पर
और दरिया में सिर्फ़ पानी था
लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

ये फ़साना नहीं हक़ीक़त है
ज़िंदगी मौत की अमानत है
शकील सासरामी

दिये हैं आज को दुःख दर्द तो क्या
हमारा कल तो बेहतर हो गया है
धर्मेन्द्र गुप्त साहिल

इक वायरस ही मज़हबी नहीं हुआ 'रवि'
फल-सब्जियाँ भी हिन्दू-मुसलमान हो गईं
रवि खण्डेलवाल

मेरे खिड़की किवाड़ों में नमी आने लगी है
मेरे घर की बगल में पेड़ काटे जा रहे हैं
राजेश कुमारी राज

जुगनू को हिक़ारत की निगाहों से न देखो
दिखने में ये छोटा सा है, किरदार बड़ा है
सत्य चंदन

उँगलियाँ जो उठाता है सबकी तरफ़
रू-ब- रू उसके भी आइना कीजिए
हिमकर श्याम

एक बच्चे की तरह से देखना
ज़िंदगी को इस वजह से देखना

सुर्ख़रू होकर वो निकलेगा 'शरद'
सुबह तक उसको सिये से देखना
शरद रंजन शरद

क्या तुम उस वक़्त मिलने आओगे
साँस जब घर बदल रही होगी
नवीन सी. चतुर्वेदी

मुझे क़बूल है जो भी मिला है उस दर से
दिया है फूल का उसने जवाब पत्थर से
कुँवर कुसुमेश

किस क़दर अब चारसू हालात हैं बिगड़े
सैकड़ों में एक चिट्ठी ख़ैरियत की है
मधुवेश

- संकलन /प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

हार्दिक आभार संसूचन

अकमल नईम सिद्दीक़ी
अखिलेश तिवारी
अजय नमन
अनिल कुमार सिंह
अशोक मिज़ाज
ए.एफ नज़र
कमलेश भट्ट कमल
कविता विकास
कुंदन आनंद
कृष्ण सुकुमार
के. पी. अनमोल
ख़ुर्शीद तलब बेरमो
गोविन्द राकेश
चाँद शुक्ल हादियाबादी
ज़फ़र सिद्दिक़ी
जया गोस्वामी
ज़ाहिद अबरोल
जीनत एहसान क़ुरैशी
डॉ. अब्दुल क़ादिर
डॉ. एहसान शाम
डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'
डॉ. नूतन सिंह
डॉ. प्रेम भंडारी
डॉ. ब्रम्ह्जीत गौतम
डॉ. मुजाहिद फ़राज़
डॉ. शँकर सागर
डॉ.सीमा विजयवर्गीय

अक़ील नोमानी
अजय अज्ञात
अनिरुद्ध सिन्हा
अशोक 'अंजुम'
आराधना प्रसाद
इकराम हुसैन शाद
कमल कटारिया 'करन'
कुँवर कुसुमेश
कुमार नयन
कुमार पंकजेश
केशव शरण
गोविन्द गुलशन
गौरव कुमार नायक
जगजीत काफ़िर
ज़मीर दरवेश
ज़हीर क़ुरैशी
ज़िया ज़मीर
ज्योति मिश्रा
डॉ. आरती कुमारी
डॉ. कुमार प्रजापति
डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली'
डॉ. पंकज कर्ण
डॉ. फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल
डॉ. भावना
डॉ. राकेश जोशी
डॉ. स्वदेश कुमार भटनागर
डॉ. सुधा सिन्हा 'सावी'

डॉ. सुनीता सिंह ‘शोहरत’
दिनेश बंसल
देवेन्द्र आर्य
देवेन्द्र माँझी
नकुल गौतम
नवीन जोशी ‘नवा’
नाशाद औरंगाबादी
नूर मोहमद नूर
प्रताप सोमवंशी
पवन शर्मा
प्रेम रंजन ‘अनिमेष’
फ़रीदा अंजुम
मंगल सिंह ‘नाचीज़’
मधुवेश
मनोज कुमार मित्तल ‘कैफ़’
मोहसिन आफ़ताब केलापुरी
रमेश ‘कँवल’
रश्मि शर्मा
राज बाला ‘राज’
रामनाथ ‘बेख़बर’
लोकेश कुमार सिंह ‘साहिल’
विकास
विनय सागर
शब्बीर सासारामी
शिव कुमार ‘पराग’
शुचि ‘भवि’
सईद रहमानी
दिनेश तपन
देववंश दुबे
देवेन्द्र गौतम
धर्मेन्द्र गुप्त ‘साहिल’
नज़्म सुभाष
नवीन सी चतुर्वेदी
निर्मल आर्या
पंकज गर्ग
प्रमोद रामावत ‘प्रमोद’
प्रेम किरण
पूजा भाटिया
भगवती प्रसाद द्विवेदी
मंसूर उस्मानी
मनीष ‘मोहक’
महेश कटारे सुगम
रणविजय कुमार श्रीवास्तव
रवि खण्डेलवाल
रहमत अली
राजेश कुमारी ‘राज’
रेखा किंगर ‘रौशनी’
वशिष्ठ अनूप
विजय वाजिद
विज्ञान व्रत
शरद रंजन ‘शरद’
शाहजहाँ ‘शाद’
संदेश जैन ‘संदेश’
सत्य चंदन

सरफराज़ हुसैन 'फ़राज़'
सुधीर कुमार 'प्रोग्रामर'
सुमित सिंह 'मीत'
हरेराम समीप
हिमकर श्याम
ज्ञान प्रकाश पाण्डेय
सिद्धेश्वर

सागर सियालकोटी
सुभाष पाठक 'ज़िया'
सोनिया वर्मा
हस्तीमल हस्ती
हृदयेश 'मयंक'
ज्ञान प्रकाश विवेक

- संकलन /प्रस्तुति : रमेश 'कँवल'

नाम : रमेश प्रसाद

जन्म तिथि : 25 अगस्त, 1953

धर्मपत्नी : मंजू प्रसाद (परिणय 22 जून 1978)

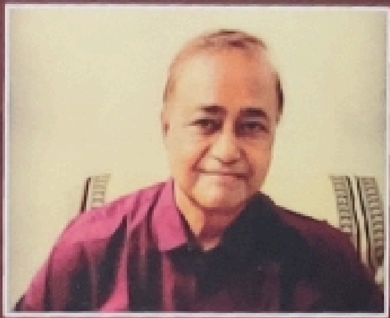

मुहब्बतों का शायर
रमेश "कँवल"

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह

- लम्स का सूरज (उर्दू) • सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में
- शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में • रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में
- स्पर्श की चाँदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल-नज़्म) 2019 में
- अक़ीदत के फूल : संकलित काव्य संग्रह (ग़ज़ल-नज़्म) 2020

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :

- रंगारंग शायरी (संपादक - प्रकाश पंडित)
- ग़ज़ल इंटरनेशनल (संपादक - मंसूर उस्मानी)
- ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक - दीक्षित दनकौरी)
- बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक - अताउल्लाह ख़ाँ अल्वी)
- 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक - नीरज गोस्वामी)
- संदल सुगंध भाग ४ (संपादक - पवन जैन, क्षिप्रा खरे)
- हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक - अनिरुद्ध सिन्हा)

कविताकोश :

- www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
- www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें
- www.rekhta.org पर 10 ख़ूबसूरत ग़ज़लें
- 2 e-book 1. लम्स का सूरज (उर्दू)
  2. रंग-ए –हुनर (उर्दू)

सम्प्रति : बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत (पटना में लगभग 3 साल तक ए. डी. एम. लॉ एण्ड आर्डर रहे) अब सफ़ीरे-शहरे-शेरो-अदब

चेयरपर्सन : बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ पटना - 800014

सम्पर्क : 70915 96715 / 87897 61287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com

Anybook

www.anybook.org

ISBN 978-93-86619-693

₹499.00